Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी प्रकाशक १९६८

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

G.K.Y. LIB HARIDWAR

CC-0. Domain, Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
078047

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078047

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078047

जनवरी, १९६८ अंक ८

हिन्दी प्रकाशक

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

24-1-69

शिक्षा की विश्वविख्यात पुस्तकों के नवीन हिन्दी संस्करण

• • • •

• *प्राथमिक स्कूल की अध्यापन विधियाँ*—रूबी एच० वार्नर मूल्य : ३.००

इस पुस्तक में अनुभवी लेखिका ने प्राथमिक स्कूलों में क्या अध्यापन-विधियाँ होनी चाहिएँ और उनके निर्धारण पर कौन-सी बातें प्रभाव डालती हैं आदि विषयों का विश्लेषण करते हुए प्राथमिक स्कूलों की प्रगति के मूल्यांकन को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।

• *माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षा की पद्धतियाँ*—एच० सेमुअर फाड़लर मूल्य : ३.००

प्रस्तुत पुस्तक माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षा का इतिहास और रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इसमें हाई स्कूल के प्रत्येक विज्ञान-विषय पर विज्ञान-शिक्षा के परम्परात्मक दृष्टिकोण से सम्यक् विचार किया गया है।

• *अध्यापन-वृत्ति*—टी० एम० स्टिनेट मूल्य : ३.००

शिक्षा की यह एक आधारभूत सचाई है कि शिक्षा की किस्म काफी हद तक शिक्षक की किस्म पर निर्भर करती है। अतीत में भी और वर्तमान में भी, अच्छी शिक्षा अच्छे अध्यापक द्वारा ही दी जा सकी है। विश्व के सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री टी० एम० स्टिनेट ने प्रस्तुत पुस्तक में अध्यापकों की शिक्षा को सुधारने और उनका वृत्तिक स्तर ऊँचा उठाने की समस्या का हल और अध्यापन-वृत्ति का विवेचन प्रस्तुत किया है।

• *अधिगम का मनोविज्ञान*—राल्फ गैरी मूल्य : ३.००

शिक्षण के महत्त्व और इसकी क्षमता में लोगों की रुचि जाग्रत होने के साथ ही प्रमुख शिक्षा-शात्री और अध्येता अधिगम के प्रक्रम और शिक्षण की समस्याओं को एक नए परिप्रेक्ष्य में रखकर देखने लगे हैं। इस पुस्तक में मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोध-कार्यों के आधार पर अधिगम सम्बन्धी कुछ स्थापनाएँ या निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं और विभिन्न संकल्पनाओं या धारणाओं को कसौटी पर कसा गया है।

• *शिक्षा मनोविज्ञान*—चार्ल्स ई० स्किन्नर मूल्य : १५.००

• *शिक्षा और स्वतन्त्रता*—जेम्स बी० कानेण्ट मूल्य : २.००

प्रकाशक

आत्माराम एण्ड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत् के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त की रचनाएँ

अन्तिम यात्रा	२.००	धर्म, संस्कृति और राज्य	८.००	भूल	३.००
अवतरण	६.००	धर्म तथा समाजवाद	६.००	मनीषा	३.००
इतिहास में भारतीय परम्पराएँ	८.००	नगर परिमोहन	६.५०	ममता	३.५०
उन्मुक्त प्रेम	७.५०	नयी दृष्टि	६.००	मानव	५.००
उमड़ती घटाएँ	६.५०	नये विचार नई बातें	४.५०	मायाजाल	५.००
कला	६.००	निर्मल	३.००	मेरी पसन्द	३.००
कामना	४.००	निष्णात	३.००	मैं न मानूँ	३.००
खेल और खिलौने	५.००	न्यायाधिकरण	७.००	यह क्यों है ?	४.००
गंगा की धारा भाग १	६.००	पंकज	३.००	युग-पुरुष राम	२.००
गंगा की धारा भाग २	६.००	पतन का मार्ग	८.००	युद्ध और शांति भाग १	६.००
गुंठन	७.००	पत्रलता	८.५०	युद्ध और शांति भाग २	६.००
चंचरीक	३.००	पथिक	७.५०	लोक-परलोक	५.००
छलना	७.००	परिवर्तन	२.५०	वाममार्ग	७.००
जगत की रचना	२.००	पाणिग्रहण	६.००	विकार	३.००
जन-प्रवाह	८.००	पुष्यमित्र	४.००	विकृत छाया	५.००
जमाना बदल गया—१	१०.००	पूर्वग्रह	७.००	विक्रमादित्य साहसांक	६.००
जमाना बदल गया—२	६.००	प्रगतिशील	२.७५	विडम्बना	७.५०
जमाना बदल गया—३	१०.००	प्रतिशोध	४.००	विद्यादान	३.००
जमाना बदल गया—४	१०.००	प्रवंचना	५.००	विनाशाय च दुष्कृताम्	७.५०
जवाहरलाल नेहरू	८.००	प्रवृत्ति	५.७५	विलोमगति	६.५०
जात न पूछे कोय	३.००	प्रेरणा	७.००	विश्वास	३.००
जीवन ज्वार	८.००	बनवासी	३.००	सम्भवामि युगे-युगे	८.५०
तव और अब	६.००	बहती रेता	५.००	संस्खलन	६.००
दासता के नए रूप	६.००	बिखरे चित्र (कहानी-संग्रह)	३.५०	सभ्यता की ओर	३.००
दिग्विजय	६.००	बीती बात	३.००	साहित्यकार	४.००
देश की हत्या	६.००	भग्नाश	७.५०	स्नेह का मूल्य	३.००
दो भद्र पुरुष	३.००	भाग्य का सम्बल	४.५०	स्वराज्य दान	७.५०
द्रष्टा	५.००	भाग्य रेखा	३.००	स्वाधीनता के पथ पर	७.५०
		भावुकता का मूल्य	६.००		

प्रकाशक

भारती साहित्य सदन

३०/९०, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक

[हिन्दी साहित्य की प्रगति का परिचायक]

वर्ष ५ : अंक ८
जनवरी, १९६८

सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रकाशन व्यवस्थापक
अमरनाथ

•

मूल्य
यह अंक ०.६० वार्षिक ६.००

सम्पादकीय कार्यालय
के ४०/६, भैरवनाथ, वाराणसी-१

प्रकाशन कार्यालय
हिन्दी प्रकाशक
/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

स्वामित्व
खिल ...तीय हिन्दी प्रकाशक संघ
...दरियागंज, दिल्ली-६

३.००
३.००
३.५०
५.००
५.००
३.००
३.००
४.००
२.००
६.००
६.००
५.००
७.००
३.००
५.००
६.००
७.५०
३.००
७.५०
६.५०
३.००
८.५०
६.००
३.००
४.००
३.००
७.५०
७.५०

सम्पादकीय

मछली-मछली कितना पानी

राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने शनिवार २३ दिसम्बर, १९६७ को पुस्तक-विक्रय तथा प्रकाशन से सम्बन्धित दो गोष्ठियाँ आयोजित की थीं। एक का विषय था 'मासिक पुस्तक प्रदर्शनी योजना' और दूसरी का विषय था 'विश्वविद्यालय स्तर के हिन्दी प्रकाशन।' पुस्तक प्रदर्शनी गोष्ठी का उद्घाटन किया राज्य शिक्षा मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने, विषय प्रवर्तन किया श्री रामलाल पुरी ने तथा प्रमुख वक्ता थे—सर्वश्री लक्ष्मीचन्द्र जैन, विष्णु प्रभाक..., यशपाल जैन, मन्मथनाथ गुप्त और डॉ० विजयेन्द्र स्नातक। अध्यक्ष थे श्री रघुनाथसिंह, भूतपूर्व संसद सचिव। दूसरी गोष्ठी 'विश्वविद्यालय स्तर के हिन्दी प्रकाशन' के अध्यक्ष थे डॉ० नगेन्द्र। उद्घाटन किया डॉ० सिद्धेश्वर प्रसाद ने, विषय-प्रवर्तन किया श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने तथा विषय का प्रसार किया डॉ० गोपाल शर्मा तथा डॉ० ओमप्रकाश शर्मा ने।

दोनों ही गोष्ठियों में ऐसा लगा कि जो लोग सार्वजनिक क्षेत्र में पुस्तक प्रकाशन का कार्य कर रहे हैं उन्हें निजी प्रकाशकों की कठिनाइयों का थोड़ा-थोड़ा एहसास होने लगा है। प्रकाशकों के प्रति वक्ताओं का रुख बहुत कुछ बदला हुआ था। प्रो० शेरसिंह ने हिन्दी में उच्च स्तर की पुस्तकों के अभाव का कारण प्रकाशकों की उदासीनता नहीं बताया। उन्होंने कहा—"आजादी के बीस वर्ष बाद भी हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाएँ न तो शासन के काम-काज में स्थान पा सकीं और न ही पूरी तरह शिक्षा का माध्यम ही बन पाईं। फिर भी माध्यम न होते हुए भी कुछ लोगों ने प्रयास किया और अच्छी पुस्तकें निकालीं।" डॉ० विजयेन्द्र स्नातक ने पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता के मर्म को अनुभव करते हुए उसकी कठिनाइयों पर सहानुभूतिपूर्वक प्रकाश डाला। डॉ० गोपाल शर्मा ने कहा—"विवादग्रस्त काम में धन लगाने के प्रति और संस्थाओं में संकोच चाहे न हो। प्रकाशकों के मन में जरूर हिचक होगी, उन्हें तो व्यापार करना है, और जवाब देना है तो अपनी ही पूँजी को।" उन्होंने आगे कहा "प्रकाशकों के अनुभवों से सरकार का लाभ उठाना सभी के हित में होगा।" डॉ० नगेन्द्र ने दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा उनके निर्देशन में किये जा रहे वैज्ञानिक प्रकाशनों के प्रकाशन का अनुभव सुनाया—पुस्तक का अनुवाद हुआ, पुस्तक छप भी गयी और अब समस्या आयी उसके विक्रय की। और तभी उनका कार्यालय पुस्तकों का गोदाम बन गया। अब कार्यालय के अलावा गोदाम की तलाश हुयी उसके किराये के लिए भारी रकम चाहिए यानी प्रकाशन में लगी रकम के अलावा अतिरिक्त धन उसके रखरखाव के लिए चाहिए, क्योंकि वे छपते ही तो नहीं बिक जायंगी। बेचने के लिए प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारती भवन की नई प्रकाशन-योजना

पाश्चात्य समालोचना ग्रंथमाला की प्रथम भेंट

रिचर्ड्स के आलोचना-सिद्धान्त

लेखक

शम्भुदत्त झा, एम. ए., पी-एच. डी.

योजना-निर्देशक एवं सम्पादक

आचार्य देवेन्द्र शर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय

आई. ए. रिचर्ड्स की असाधारण कृति 'प्रिन्सिपल ऑफ लिटररी क्रिटिसिज्म' अंग्रेज़ी के विद्वानों के लिए भी सुगम नहीं है, कारण कि उनकी अभिव्यंजना दुरूह एवं जटिल है। किन्तु यह पुस्तक इतने सुन्दर ढंग से लिखी गई है एवं सुसम्पादित हुई है कि रिचर्ड्स द्वारा प्रतिपादित आलोचना-सिद्धान्तों का विशद ज्ञान सुगमता से प्राप्त हो जाता है। रिचर्ड्स के प्रतिपादित सिद्धान्तों को इस पुस्तक के चौदह अध्यायों में क्रमिक ढंग से भारतीय सिद्धान्तों के साथ तुलनात्मक अध्ययन के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह इसकी अपनी महत्ता है। विद्वान् और अध्येता दोनों ही वर्ग के पाठकों के लिए यह एक अभूतपूर्व प्रामाणिक ग्रंथ है। शुद्ध और आकर्षक छपाई मन मोह लेने वाली है।

पृष्ठ संख्या : २०० *मूल्य : ५ रु० ५० पैसे*

• • •

इस ग्रंथमाला की पहली किस्त में प्रकाशित होने वाले अन्य ग्रन्थ

१. **उपन्यास का शिल्प :** गोपालराय, एम.ए., डी. लिट्.
विदेशी ख्यातनामा आलोचकों की कृतियों के आधार पर उपन्यास के शिल्प का विवेचन।

२. **पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र :** कुमार विमल, एम. ए., डी. लिट्.
पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र के स्वरूप, सिद्धान्त, उपयोगिता और सार्थकता की प्रामाणिक मीमांसा।

३. **शैली :** रामचन्द्र प्रसाद, एम. ए. पी-एच.डी., डी. लिट्.
विदेशी मान्य अर्वाचीन विचारकों की कृतियों पर आधारित शैली का सर्वांगपूर्ण विश्लेषण।

४. **मनोविश्लेषण और साहित्यालोचन :** कलीमुद्दीन अहमद, रूपान्तर : देवेन्द्रनाथ शर्मा।
'साइको अनेलिसिस एण्ड लिट्ररी क्रिटिसिज्म' नामक ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर।

५. **सौन्दर्यशास्त्र और भाषाशास्त्र :** बेनेदेत्तो क्रोचे, रूपान्तर : देवेन्द्रनाथ शर्मा
अभिव्यंजनावाद के प्रतिष्ठापक क्रोचे के ग्रंथ का हिन्दी रूपान्तर।

भा र ती भ व न

एग्जिबीशन रोड, पटना-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आमंत्रित किया गया किन्तु २५ प्रतिशत कमीशन पर कोई राजी नहीं हुआ और न किसी ने उत्तर ही दिया। एक तिहाई कमीशन तक आगे बढ़ने पर सारी प्रतियाँ उठा कर अपने गोदाम में भरने और रखरखाव का उत्तरदायित्व लेने को कोई तैयार नहीं।

डॉ० नगेन्द्र का यह अनुभव प्रकाशकों के लिए शुभ है क्योंकि उन्होंने प्रकाशकों के मर्म को जाना है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक और तकनीकी आयोग पुस्तकों की लागत आंकते समय अनेक खर्चे तो जोड़ते ही नहीं, पुस्तक के भारी स्टाक के रखरखाव और गोदाम पर होने वाले खर्चे की बात तो बहुत दूर है। तीन हजार प्रतियों में से हजार प्रतियाँ यदि सरकार ने ले भी लीं तो पत्थर के अचार दो हजार प्रतियों का क्या होगा। अब शासन के अनुदान से जो विश्वविद्यालय तथा राज्य सरकारें प्रकाशन कर रही हैं उन्हें यद्यपि पुस्तक में लगी रकम की चिन्ता नहीं है क्योंकि वह तो सरकारी धन है और वह भी अनुदान। किन्तु पुस्तकों के विशाल संग्रह की चिन्ता अवश्य है। उसकी जवाबदेही तो उन पर है।

डॉ० नगेन्द्र ने वर्तमान शासनतन्त्र की चर्चा करते हुए योजना आयोग का अनुभव बताया कि आज ८० प्रतिशत धन कर्मचारी, अधिकारी, इमारत, फर्नीचर, साज-सज्जा और भत्ते पर व्यय हो जाता है और केवल २० प्रतिशत मूल कार्य पर। यह कैसी विडम्बना है कि जो धन मूल कार्य पर व्यय होना चाहिए वह उसके संचालन संयोजन पर ही व्यय हो जाता है।

डॉ० नगेन्द्र ने इस दुश्चक्र को भेदकर ईमानदारी के साथ शिक्षा के माध्यम का निर्णय करने का आग्रह करते हुए कुछ मौलिक सुझाव दिये—

१. मूर्धन्य लेखकों के प्रामाणिक ग्रंथ प्रकाशित किये जाएँ।

२. शासन मध्यस्थ बनकर पाण्डुलिपियाँ तैयार कराये। पाण्डुलिपियाँ तैयार कराने का व्यय (आशुलिपिक, कार्यालय, लेखक, अनुवादक का अग्रिम) शासन वहन करे।

३. व्यावहारिक कार्य प्रकाशक करें। अच्छे प्रकाशकों से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित कर १० प्रतिशत रायल्टी पर उन्हें पुस्तकें प्रकाशित करने को दी जाएँ।

४. शैक्षिक कार्य सरकार का है और व्यावसायिक कार्य प्रकाशक का। प्रकाशक अन्धेरगर्दी करते हैं, यह कहना सर्वथा भूल है।

डॉ० नगेन्द्र ने जो सुझाव दिये हैं, प्रकाशक संघ ने अपने ज्ञापन में वही निवेदन प्रो० शेरसिंह से किये थे।

आशा है डॉ० नगेन्द्र के इस अनुभव तथा सुझाव से सरकार लाभ उठाएगी और अच्छा तो यह होगा कि सभी विश्वविद्यालयों के प्रकाशन निदेशकों को एकत्र कर पूछ लिया जाय—'मछली-मछली कितना पानी।'

समन्वय, सहयोग और संगठन की आवश्यकता

गोष्ठी में सभी वक्ताओं ने समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया। सभी ने यह मत प्रकट किया कि हिन्दी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाना है तो एक निश्चित योजनापूर्वक पुस्तकें निकालनी होंगी। प्रो० शेरसिंह ने कहा—"काम का क्षेत्र बहुत बड़ा है और सब मिल कर इसमें लगें तब ६-७ वर्षों में हम काफी साहित्य निकाल सकेंगे।"

डॉ० नगेन्द्र ने बताया कि गत बीस वर्षों में हुए कार्यों का लेखा-जोखा लेने के साथ-साथ ५ वर्षों के लिए एक निश्चित योजना (ब्लू प्रिन्ट) बनाने की आवश्यकता है। किन-किन अनुशासनों (विषयों) के लिए कौन-कौन-सी पुस्तकों की अपेक्षा है। विश्वविद्यालय के गौरवस्तम्भ उन अध्यापकों से जिन्होंने भारतीय भाषाओं में अध्ययन नहीं किया है, उनका सहयोग भी लेने की आवश्यकता है। डॉ० गोपाल शर्मा ने इस विशाल कार्य को सम्पन्न करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर सम्मिलित सलाहकार बोर्ड तथा बुक फाइनेंसिंग कॉरपोरेशन के संघटन की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ० ओमप्रकाश शर्मा ने प्रकाशकों का केन्द्रीय संगठन बनाकर इस उत्तरदायित्व को वहन करने का सुझाव दिया है।

इन सारे सुझावों की पृष्ठभूमि में राज्य शिक्षा मन्त्री प्रो० शेरसिंह की यह घोषणा है—"अभी इस बात का निर्णय नहीं हो पाया है कि प्रकाशक इसमें कितना हाथ बँटा सकेंगे, सरकार किस स्तर तक इसमें उनको शामिल कर सकेगी। राज्य सरकारें और विश्वविद्यालय कहाँ तक इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ लेखकों की चुनी हुई पुस्तकें पढ़िये

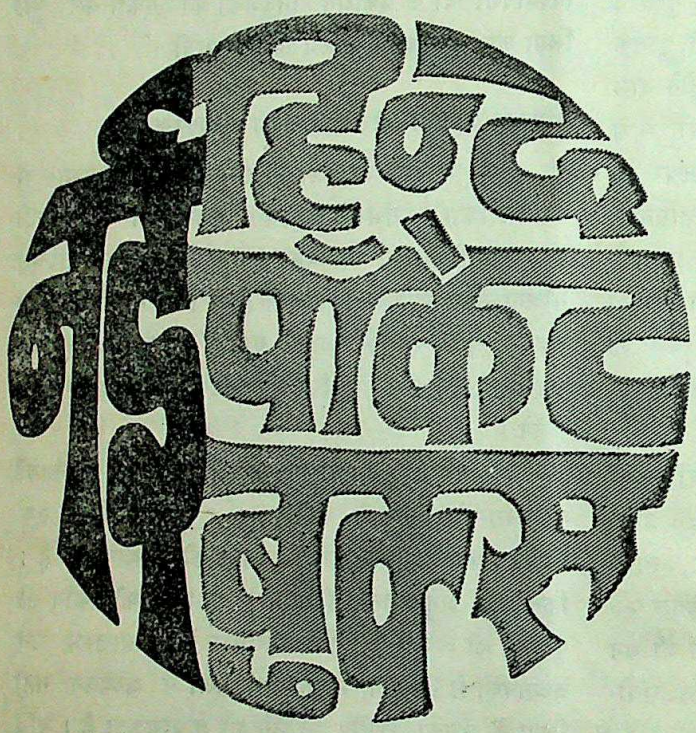

- सागर और सरोवर (उपन्यास)
  गुरुदत्त
  ३.००
- पराजय (उपन्यास)
  कृश्न चन्दर
  २.००
- बेगम (उपन्यास)
  ताराशंकर वन्द्योपाध्याय
  २.००
- संसार के प्रसिद्ध जासूस और उनके कारनामे (जासूसी)
  कर्नल रंजीत
  २.००
- सेठ बांकेमल (हास्य-व्यंग्य)
  अमृतलाल नागर
  १.००
- कल क्या होगा (विज्ञान)
  अनु० अजय
  १.००
- सफलता के सूत्र (जीवनोपयोगी)
  सन्तराम बी० ए०
  १.००
- हुस्न-ओ-इश्क़ (काव्य-शायरी)
  सं० प्रकाश पंडित
  २.००

अपने नगर के पुस्तक-विक्रेता, रेलवे बुकस्टाल या रोडवेज़ बुकस्टाल से खरीदिये। सूचीपत्र के लिए हमें लिखिए।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि०, जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम को हाथ में ले सकेंगे। जिन पुस्तकों का अनुवाद करना आवश्यक है या विषयों पर अच्छी पुस्तकें लिखवानी हैं। इस प्रकार के काम में अलग-अलग प्रदेशों में समन्वय पैदा करने के लिए १ और २ फरवरी को काशी हिन्दी विश्व-विद्यालय में एक बैठक बुलाने का निर्णय किया गया है जिसमें हिन्दी-भाषी राज्यों के शिक्षा सचिव तथा उपकुल-पति भाग लेंगे।"

शासन का यह निर्णय सर्वथा सराहनीय है किन्तु आज सभी यह अनुभव करने लगे हैं कि शासन की सभी इकाइयाँ मिलकर पुस्तकें भले ही तैयार करा लें किन्तु अल्प समय में उनके मुद्रण, प्रकाशन और विक्रय की व्यवस्था कर सकना उसके लिए सम्भव नहीं। साथ ही यदि स्तर की अनुकूलता बनाये रखनी है, द्विगुणन् से बचना है तो यह आवश्यक है कि उन सभी इकाइयों के सम्मेलन में प्रकाशकों के प्रतिनिधि विशेषकर अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया जाए। इससे प्रकाशन की व्यावहारिक कठिनाइयों का ज्ञान होगा, अपव्यय से बचा जा सकेगा और प्रकाशकों के अनुभवों से कार्य-संचालन में सुगमता होगी।

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के मार्ग में आज सबसे बड़ी बाधा यह है कि जो विषय के ज्ञाता हैं उन्हें भाषा का ज्ञान नहीं और जिन्हें भाषा का ज्ञान है, विषय का बोध नहीं। इसी प्रकार जिन्हें प्रकाशन के लिए धन दिया जाता है उन्हें व्यवसाय का अनुभव नहीं और जिन्हें व्यवसाय का ज्ञान है, उनके पास धन नहीं है।

आशा है हमारे क्रान्तिकारी शिक्षा मन्त्री तथा प्रबुद्ध राज्य शिक्षा मन्त्री-द्वय इन सभी इकाइयों में समन्वय, सहयोग और संगठन का मार्ग ढूंढ़ निकालेंगे।

दूसरा राष्ट्रीय पुस्तक मेला

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित दूसरा राष्ट्रीय पुस्तक मेला प्रदर्शनियों, सम्मेलनों, नाटकों, समारोहों, दूतावासों, होटलों, क्लबों और आन्दोलनों की राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नगरी दिल्ली में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। राष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसैन जो अत्यन्त कोमल और मधुर हिन्दुस्तानी के लिए विख्यात हैं, ने उद्घाटन भाषण अंग्रेजी में दिया क्योंकि ट्रस्ट ने उनसे सारा पत्राचार अंग्रेजी में किया था। अतः यह वाजिब था कि ट्रस्ट के अतिथि बन कर उपस्थित डॉ० जाकिर हुसैन ट्रस्ट की गौरव-रक्षा के लिए अंग्रेजी में ही भाषण करते। यद्यपि नाम है नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया पहले पुस्तकें निकाली गईं अंग्रेजी में और ट्रस्ट-सचिव के शब्दों में उनकी माँग है विदेशों में—तालियाँ, तालियाँ। विदेशी मुद्रा अर्जित करना आज राष्ट्रीयता का प्रथम तकाजा है। अतः उचित होगा कि इसका नाम रख दिया जाय नेशनल बुक ट्रस्ट इंटर नेशनल। यह नाम और भी सार्थक होगा क्योंकि इस राष्ट्रीय मेले का आयोजन किया गया था फ्रांकफुर्त में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले के ढर्रे पर। कैसी विडम्बना है इस देश की और क्यों न हो राष्ट्रीय शक्तियों को जागृत करने के बजाय हमारे नेता अन्तर्राष्ट्रीय जागृति के लिए यूरोप और अमेरिका की यात्रा जो करते हैं। दिल्ली का यह राष्ट्रीय पुस्तक मेला हमारी संक्रान्ति-कालीन संस्कृति का प्रबल प्रतीक है। योजना आयोग के एक वरिष्ठ सदस्य ने कहा है—विकासशील देशों को विक-सित देशों की पद्धति नहीं अपनानी चाहिए, उन्हें अपने देश, अपनी परिस्थितियों और अपनी संस्कृति के अनुसार अनुकूलित करनी चाहिए।

काश हमारे नेताओं और आयोजकों ने मेले की चका-चौंध और भव्यता के नीचे के अन्धकार को भी देखा होता। उन प्रकाशकों से पूछा होता कि इस मेले से उन्हें क्या उप-लब्धि हुई और दर्शकों के मानस पर कितना प्रभाव पड़ा, उन्हें कितनी प्रेरणा मिली।

डॉ० गोपाल शर्मा के शब्दों में—"स्वातन्त्र्योत्तर काल में राष्ट्रीयता की अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीय का भाव अधिक मात्रा में जागृत हो गया है और जैसा कि हम जानते हैं, आम जनता अन्तर्राष्ट्रीयता से लाभ तो उठाना चाहती है मगर उसके जरिये जो भाषा और संस्कृति थोपी जा रही है, उसे स्वीकार नहीं करती।"

लेखक और प्रकाशक

पिछले दिनों दिल्ली के हिन्दी बुक सेंटर में १९६६-६७ में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित हुई। इस प्रदर्शनी में आयोजित समारोह के दौरान एक विश्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की नई टैक्निकल पुस्तकें

● **आल्टरनेटिंग करेंट (लेखक प्रो० नरेन्द्रनाथ)**

उच्चकोटि की इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग परीक्षाओं के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। ए० सी० बिजली सम्बन्धी समस्त ज्ञान देनेवाली सरल हिन्दी भाषा की पुस्तक। ए० सी० सर्किट, सिंगल फ़ेस-थ्री फ़ेस, ए० सी० जनरेटर्ज़, मीटर्ज़, मोटर, ट्रांसफारमर्ज़, मापक यन्त्र इत्यादि का व्यावहारिक तथा क्रियात्मक पूर्ण विस्तृत वर्णन, मूल्य साढ़े सोलह रुपये।

● **लाइनमैन तथा वायरमैन गाईड (लेखक प्रो० नरेन्द्रनाथ)**

विद्युत् जनरेशन, परिवहन तथा वितरण-सम्बन्धी व्यावहारिक तथा क्रियात्मक जानकारी देनेवाली प्रथम हिन्दी पुस्तक, मूल्य साढ़े सोलह रुपये।

● **मशीनिस्ट गाईड (लेखक प्रो० नरेन्द्रनाथ)**

टैक्निकल स्कूलों के विद्यार्थियों के लिये वर्कशाप में प्रयोग होने वाली समस्त प्रकार की मशीनों, टूलों, औजारों तथा सम्बन्धित क्रियाओं का सचित्र परिचय। आई० टी० आई० के विद्यार्थियों के लिये उपयोगी। मूल्य साढ़े सोलह रुपये।

● **माडर्न सोप एण्ड सोप पाउडर इण्डस्ट्री (लेखक सुरेशचन्द्र)**

साबुन विज्ञान व्यवसाय-सम्बन्धी हिन्दी की प्रथम प्रामाणिक पुस्तक। साबुन, सोप पाउडर, औषधिकृत साबुन, औद्योगिक साबुन, सुगन्ध, शैम्पू, तरल साबुन आदि तैयार करने की प्रामाणिक एवं नवीनतम वैज्ञानिक विधियाँ एवं तत्सम्बन्धी यन्त्रों का विशद व रोचक विवरण। मूल्य साढ़े सोलह रुपये।

● **फिटिंग शाप प्रैक्टिस (वर्कशाप टैक्नोलोजी) (लेखक आनन्दस्वरूप)**

अनेकों टैक्निकल व इन्जीनियरिंग कालेजों के फर्स्ट इयर इन्जीनियरिंग कोर्स के सिलेबस के आधार पर लिखी हुई प्रथम प्रामाणिक पुस्तक। मूल्य साढ़े सात रुपये।

प्रकाशक

देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

हिन्दी की तकनीकी पुस्तकें प्रकाशित करने वाली सर्वप्रथम प्रकाशन-संस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालय के प्राध्यापक ने दूसरे प्राध्यापक से कहा—"लोग कहते हैं कि हिन्दी की पुस्तकें बिकती नहीं ? क्या इन प्रकाशकों को देखकर, उनके ठाट-बाट और रहन-सहन को देखकर, कोई कैह सकता है कि हिन्दी की पुस्तकें बिकती नहीं ? यह जरूर है कि हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री का हिन्दी के लेखक को पता नहीं चलता।" इस सन्दर्भ में दिल्ली के एक साप्ताहिक ने जिसके सम्पादक हिन्दी के विख्यात साहित्यकार हैं, टिप्पणी जड़ते हुए लिखा—"बात अपनी जगह सही है।"

प्राध्यापक के उपर्युक्त कथन में उनके मन का असन्तोष और ईर्ष्या अभिव्यक्त हुई है, गैरईमानदारी का आरोप भी प्रकाशक पर बड़े ही सहज ढंग से लगा दिया गया है और तारीफ यह कि एक गण्यमान साप्ताहिक ने उस पर अपनी मुहर भी लगा दी।

जिस प्रकाशक से लेखक यह आशा करता है कि वह उसकी पुस्तक सुन्दर-से-सुन्दर प्रकाशित करे, उसका भव्य प्रचार करे, अच्छी बिक्री करे और उस पर लम्बी रकम रायल्टी के रूप में दे, उस प्रकाशक के ठाट-बाट और रहन-सहन पर भी इन्हें आपत्ति है। उसके सामाजिक स्तर पर आपत्ति है और सबसे बड़ी चोट यह है कि हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री का हिन्दी के लेखक को पता नहीं चलता। यानी वह पुस्तकें अधिक छाप कर बेच लता है। लेखक को बताता नहीं और रायल्टी की रकम हड़प जाता है और ऐसे ही प्रकाशक लेखकों की कमाई पर ठाट-बाट से रहते हैं और मौज उड़ाते हैं।

'हिन्दी प्रकाशक' उपर्युक्त प्राध्यापक के असन्तोष पर खीझ व्यक्त करने के बजाय उसकी अज्ञानता पर तरस करता है। खीझ तो उन सम्पादक महोदय पर आती है जिन्होंने बड़ी सहजता से फतवा दे दिया कि "बात अपनी जगह सही है।" उन्हें तो इस व्यवसाय के प्रति इतना अज्ञान नहीं है। एक-एक प्रकाशक के व्यवसाय पर विचार करें, उसके ठाट-बाट और उसकी व्यावसायिक हैसियत को देखें तो सत्य प्रकट होगा। साहित्यिक पुस्तकों की बिक्री से कोई प्रकाशक धनवान नहीं बन सका है। या तो असाहित्यिक पुस्तकों की बिक्री से अथवा पाठ्य पुस्तकों की बिक्री के लाभ से ही प्रकाशक अपनी हैसियत बना सका है। जिन साहित्यिक पुस्तकों को अपनी प्रतिष्ठा के लिए वह प्रकाशित करता रहा है उससे उसे आर्थिक लाभ तो मिला ही नहीं क्योंकि उसकी बिक्री सीमित रही और लेखक ने उसे बेईमान प्रचारित कर बदनाम भी कर दिया।

सामान्यत: हिन्दी का लेखक जिसकी एक पुस्तक भी किसी प्रकाशक ने प्रकाशित कर दी वह सोचने लगता है कि उसकी एक पुस्तक की बदौलत वह प्रकाशक जी रहा है, उसका व्यवसाय चल रहा है और ठाट-बाट दिखा रहा है। साथ ही वह यह भी ईर्ष्या-आरोप प्रकट करता है कि प्रकाशक ने अमुक लेखक की इतनी पुस्तकें छाप लीं, उसे इतनी रायल्टी दी और मुझे तो कुछ भी नहीं दिया। यहाँ हमारा उद्देश्य लेखकों की कलई खोलना या उन पर कोई आरोप लगाना नहीं है, रहम आता है उनके मन की ईर्ष्या और अज्ञान पर।

बात एक प्राध्यापक ने कही है इसलिए उनसे निवेदन है कि वे अपने सहयोगी प्राध्यापकों के ठाट-बाट को भी देखें जिनके प्रति भी उनकी ईर्ष्या कम नहीं है। जो तिकड़म और छद्मनामों से पाठेय समितियों के सदस्य और समीक्षक के रूप में पुस्तकें लगवा-लगवाकर हजारों रुपये प्रकाशक से प्राप्त करते हैं और वे अपने वेतन की सीमा से अधिक व्यय करते हैं। निवेदन इतना ही है कि जो प्रकाशक लेखक को उसकी कृति प्रकाशित कर प्रतिष्ठा और पैसा देता है उसके विषय में इस प्रकार के भ्रामक प्रचार न करें। यह हिन्दी लेखक के लिए सर्वथा अशोभनीय है और यदि कहीं भी जाएँ तो एक जिम्मेदार पत्र को उसे सटिप्पण उद्धृत भी नहीं करना चाहिए।

उपर्युक्त टिप्पणी में आगे एक और बात कही गयी है—"सच तो यह है कि हिन्दी के प्रकाशक और विक्रेता के लिए हिन्दी का लेखक और पाठक उतना महत्व नहीं रखते जितना रखना चाहिए।" लगता है प्रकाशक के ठाट-बाट ने लेखक को ईर्ष्याग्नि से इतना भस्मीभूत कर दिया है कि वह अपना मानसिक सन्तुलन भी खो बैठा है जो सर्वथा परस्पर विरोधी बातें कह रहा है। हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन का यह व्यवसाय आज जितने कलंक का बना हुआ है उतना शायद कोई दूसरा नहीं। उसके लिए प्रकाशक जितना जिम्मेदार है उससे लेखक कहीं अधिक जिम्मेदार है। आज का लेखक क्या पाठक को दृष्टि में रख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नेशनल' के नव-वर्ष के प्रमुख आकर्षण

मेरी दृष्टि में

श्री मोरारजी देसाई

देश की विभिन्न ज्वलन्त समस्याओं से सम्बन्धित ३४ महत्त्वपूर्ण भाषण।

•

अपने पार....

राजेन्द्र यादव

शीर्षस्थ कथाशिल्पी राजेन्द्र यादव का नया कथा-संग्रह।

•

कहानी : स्वरूप और संवेदना

राजेन्द्र यादव

अपने समय के स्वर और कहानी को समझने के लिए एक अपरिहार्य और अनिवार्य ग्रन्थ।

•

पहाड़ी चित्रकला

किशोरीलाल वैद्य

आधुनिक भावबोध और कला-संचेतना के समक्ष पहाड़ी चित्रकला का मूल्यांकन। दुर्लभ, ऐतिहासिक तथा कलात्मक चित्रों से सज्जित।

आस्था के चरण

डॉ० नगेन्द्र

तीस वर्षों की सर्जनात्मक साधना का नवनीत। १०१ समीक्षात्मक निबन्धों का महत्त्वपूर्ण संग्रह।

•

मध्यकालीन हिन्दी-काव्य में भारतीय संस्कृति

डॉ० मदनगोपाल गुप्त

पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शतियों के हिन्दी-काव्य की विविध धाराओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं समाज का अनुशीलन।

•

हिन्दी-समस्या-नाटक

डॉ० मान्धाता ओझा

हिन्दी में समस्यापूर्ण नाटकों के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालने वाला महत्त्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध।

•

महिमभट्ट

डॉ० ब्रजमोहन चतुर्वेदी

आचार्य महिमभट्ट की कृतियों का प्रथम महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

चन्द्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य निर्माण कर रहा है, क्या वह व्यक्तिगत कुंठा और संत्रास से पूर्ण साहित्य की रचना नहीं कर रहा है। क्या उसने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि पाठक उसका साहित्य पसन्द करते हैं या नहीं। सारा दोष प्रकाशक के मत्थे मढ़ देना कितना सहज है। पुस्तक ठीक छपी नहीं (जब कि प्रूफ स्वयं लेखक ने आग्रह कर देखा) तो प्रकाशक मूर्ख, पुस्तक बिकी नहीं तो प्रकाशक जिम्मेदार, पत्र-पत्रिकाओं ने समीक्षा प्रकाशित नहीं की तो प्रकाशक पर इल्जाम कि उस पत्र के सम्पादक से प्रकाशक के सम्बन्ध अच्छे नहीं। या उस तक उसकी पहुँच नहीं आदि-आदि। सीधे-सीधे यह क्यों नहीं कहा जाता कि साहित्य का सारा ठेका प्रकाशक ने ही ले रखा है, लेखक बीच में कहाँ आता है ?

पुस्तकों की थोक खरीद

इसी टिप्पणी में आगे यह कहा गया है कि "उसका सारा ध्यान पुस्तकों को सरकारी संस्थाओं और पुस्तकालयों में खपा देने पर केन्द्रित रहता है।" इन पंक्तियों के लेखक महोदय से निवेदन यह है कि आज सामान्यतः जैसा साहित्य लिखा जा रहा है यदि उस साहित्य को सरकारी संस्थाओं और पुस्तकालयों में खपा देने का प्रयत्न न किया जाय तो एक पुस्तक की पाँच सौ प्रतियाँ भी खुले बाजार में बिक सकना असम्भव हो जाय। सच तो यह है कि आज बड़ा से बड़ा लेखक प्रकाशक के पास आता है और रहस्य प्रकट करता है कि अमुक कार्यालय में (यहाँ नाम नहीं लेना चाहता) जहाँ पुस्तकों की थोक खरीद होती है मेरे परिचित मित्र हैं, वे इतनी प्रतियाँ जरूर खरीद लेंगे। इस पुस्तक को छाप दो। इतना ही नहीं इसी सोर्स के आधार पर वे प्रकाशक से अग्रिम धन भी प्राप्त कर लेते हैं और उस सरकारी खरीद के अलावा उस पुस्तक का क्या होता है इसे प्रकाशक से अधिक लेखक स्वयं जानता है। इसी थोक खरीद के आधार पर कितने लेखक प्रकाशक बन बैठे जिन्होंने दूसरे प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित अपनी पुस्तकें भी जबर्दस्ती छाप लीं। कहना नहीं चाहिए दिल्ली इसका केन्द्र बना हुआ है जहाँ केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, विदेश विभाग, रेडक्रास, सेना, दूतावास आदि विभागों द्वारा पुस्तकों की इस प्रकार की थोक खरीद होती है। आज हर लेखक और हर प्रकाशक दिल्ली की दौड़ लगाता रहता है। राज्यों में जहाँ जिला परिषद के विद्यालयों तथा पुस्तकालयों के लिए थोक खरीद होती है वहाँ की हालत और बुरी है। पटना, लखनऊ, भोपाल आदि सभी राजधानियों में पुस्तक खरीद क्या है राजनीतिक अनाथों को दी जाने वाली बखशीश है।

इन राजनीतिज्ञ महाप्रभुओं की कृपा से आज हिन्दी लेखन और प्रकाशन व्यवसाय को जो क्षति पहुँची है और पहुँच रही है वह अवर्णनीय है। शासन की पुस्तकों सम्बन्धी किसी समिति में क्या अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ को आमंत्रित किया जाता है, क्या उससे पुस्तक व्यवसाय के मसलों पर विचार-विमर्श किया जाता है ? आज शिक्षा के प्रमुख माध्यम पुस्तकों के प्रकाशन में लगे हुए समाज की कठिनाइयों पर भी क्या विचार किया जाता है ? क्या इसे थोक खरीद और राष्ट्रीयकरण के नाम पर परमिट और कोटे का व्यवसाय नहीं बना दिया गया है।

हमें आशा है हमारे राष्ट्रीय शिक्षा मन्त्री श्री त्रिगुणसेन तथा उनके यशस्वी सहयोगी इस दिशा में भी समुचित कदम उठाएँगे।

पाठकों की तलाश

हिन्दी प्रकाशकों पर चलते-चलते एक और तोहमत लगायी गयी है—"एक पाठक वर्ग तैयार करना और उसका निरन्तर विकास करना उसका उद्देश्य जैसे नहीं है। इससे अच्छा तो पुराना जमाना था जब हिन्दी में पुस्तकों का लिखा जाना और उनका प्रकाशन दोनों का ही धन्धा इतना तेज नहीं था। उस समय विक्रेता पुस्तकें लाद कर घर-घर पहुँचाता था और अपने पाठक बनाता था। यह काम विक्रेताओं ने समाप्त कर दिया।"

प्रकाशक के ठाट-बाट से कुपित उपर्युक्त पंक्तियों का लेखक न केवल अपना अज्ञान प्रकट कर रहा है वरन् परस्पर सन्दर्भ विरोधी बातें भी कह रहा है।

आज हिन्दी में ऐसे प्रकाशक हैं जिन्होंने पॉकेट पुस्तकों के माध्यम से हिन्दी पुस्तक जगत् में एक क्रान्ति ला दी है। घरेलू पुस्तकालय योजना के अन्तर्गत इन प्रकाशकों ने एक पाठक वर्ग तैयार कर लिया है और निरन्तर उनका विकास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नवीन प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध :

प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास
डॉ० प्रभासचन्द्र शर्मा २०.००

साधारणीकरण : शास्त्रीय अध्ययन
डॉ० रामलखन शुक्ल १७.५०

रसखान और उनका काव्य
डॉ० माजिदा असद १५.००

उदासी संप्रदाय और संत कवि रेणु
डॉ० सच्चिदानन्द शर्मा १२.५०

आलोचना :

प्रतिनिधि कहानीकार रामचरण महेन्द्र ७.५०

नाटक :

सीमा-संरक्षण हरिकृष्ण प्रेमी २.००

कहानी-संग्रह :

घूमते चेहरे डॉ० हरिदत्त भट्ट ३.५०

दीप से दीप जले
(सचित्र, किशोरोपयोगी)
ब्रजभूषण ४.००

काव्य :

कवितांजलि होशियारसिंह चौहान ४.००

तृष्णा डॉ० प्रभासचन्द्र शर्मा ५.००

शीघ्र ही प्रकाश्य :

भारतीय नवजागरण : प्रणेता तथा आन्दोलन गौरीशंकर भट्ट १५.००

हिन्दी भक्त वार्ता साहित्य
(शोध प्रबन्ध) डॉ० लालता प्रसाद दुबे

हिन्दी नाटक में त्रासदी
(शोध प्रबन्ध) डॉ० कैलाशपति ओझा

हमारे अन्य कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध :

हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास
डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र १५.००

हिन्दी भाषा और साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव
डॉ० विश्वनाथ मिश्र १२.५०

रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
डॉ० शिवलाल जोशी १२.५०

हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन
डॉ० शांतिगोपाल पुरोहित १२.५०

आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक-विधान
डॉ० नित्यानन्द शर्मा १५.००

आलोचना :

प्रतिनिधि एकांकीकार डॉ० रामचरण महेन्द्र ६.५०

कबीर और जायसी का रहस्यवाद एवं तुलनात्मक विवेचन डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ६.००

तुलसीदास और उनका साहित्य
डॉ० विमल कुमार जैन ७.००

तुलनात्मक साहित्यशास्त्र : इतिहास तथा समीक्षा डॉ० विष्णुदत्त राकेश १२.५०

उपन्यास :

उखड़े हुए लोग	राजेन्द्र यादव	१०.००
पुतलीघर	मामा वरेरकर	१०.००
मनुष्य और देवता	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	४.००
त्रिवेणी	कंचनलता सब्बरवाल	५.००
खेल और खिलौने	गुरुदत्त	५.००
पतन का मार्ग	,,	८.००
मनीषा	,,	३.००
अवतरण	,,	६.००
संभवामि युगे-युगे	,,	८.००
विनाशाय च दुष्कृताम्	,,	७.५०
प्रेरणा	,,	७.००

अन्य :

भारत में समाजशास्त्र, प्रजाति और संस्कृति गौरीशंकर भट्ट २०.००

भारतीय संस्कृति : समाजशास्त्रीय समीक्षा गौरीशंकर भट्ट १७.५०

नवरंग (अभिनेय व्यंग्य एकांकी-संग्रह) ३.५०

साहित्य सदन, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हो रहा है। ज्यों-ज्यों हमारे पाठकों की रुचि विकसित होगी, वे आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होंगे, त्यों-त्यों पुस्तकों के स्तर तथा विषयों में भी उन्नति होती जायेगी। पाठकों की क्षमता के साथ ही साथ प्रकाशकों की क्षमता भी बढ़ेगी। प्रकाशकों से अव्यावहारिक तथा असम्भव अपेक्षा करना उचित नहीं। उसके पास एक सीमित पूंजी होती है, उस पूंजी को जैसे-जैसे गति मिलेगी उसका कार्य क्षेत्र भी विस्तृत होता जायेगा। शासन जो प्रतिवर्ष एक निर्धारित रकम व्यय करने का संकल्प करता है वही इस प्रकार के प्रयोग कर सकता है। नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से शासन यह कार्य कर भी रहा है।

यह कहना कि प्रकाशकों ने पाठकों की रुचि जानने का कोई प्रयास नहीं किया, भूल होगी। हिन्दी के अनेक प्रकाशकों ने इस प्रकार के सर्वेक्षण किये हैं और उनसे जो निष्कर्ष निकले हैं उनमें से कुछ हैं—

१—पाठकों की बहुत बड़ी संख्या गाँवों और कस्बों में रहती है। वहाँ हिन्दी पुस्तकें पहुँच नहीं पातीं क्योंकि वहाँ की जनता में पुस्तकें पढ़ने की रुचि तो है किन्तु खरीद सकने की क्षमता नहीं है।

२—ये पाठक यह अपेक्षा करते हैं कि उनके गाँव अथवा कस्बे में पुस्तकालय खुलें और वहाँ से उन्हें मनचाही पुस्तकें पढ़ने को मिलें।

३. गाँवों की बहुत बड़ी जनता अपने पेशे से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ना चाहती है, मजबूरी यही है कि उनमें खरीदने की क्षमता नहीं है, यदि क्षमता है भी तो खरीद कर पढ़ने की प्रवृत्ति नहीं है।

४. और जहाँ प्रवृत्ति है वहाँ डाक-व्यय बाधक है। एक रुपये की पुस्तक और एक रुपया डाक-व्यय।

इस प्रकार के अनेक निष्कर्ष सर्वेक्षण पत्रों के माध्यम से ज्ञात हुए हैं। हमारे देश में पाठक उत्पन्न करने वाले पुस्तकालयों का सर्वथा अभाव है। आज भी विकसित तथा सम्पन्न देशों में पुस्तकों की बहुत बड़ी संख्या पुस्तकालयों द्वारा ही खरीदी जाती है।

पुराने जमाने का हवाला देते हुए कहा गया है कि उस समय विक्रेता पुस्तकें लाद कर घर-घर पहुँचाता और अपने पाठक बनाता था। इस सन्दर्भ में हमें यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के वर्तमान अध्यक्ष श्री कृष्णचन्द्र बेरी बचपन में ही पुस्तकें पीठ पर लाद कर बर्मा और मलाया-जैसे देशों में बसे भारतीयों के बीच जाकर हिन्दी पुस्तकें बेचते थे। इस सम्बन्ध के उनके अनुभव 'हिन्दी प्रकाशक' में प्रकाशित किये जाएँगे। उस समय हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन और विक्रय व्यवसाय नहीं था, सेवा, त्याग, देशभक्ति और क्रान्ति थी। संकीर्ण राजनीति से आवृत आज के जनतन्त्र में क्या त्याग और देशभक्ति का कोई मूल्य शेष रह गया है जो हिन्दी के पुस्तक विक्रेता और प्रकाशकों से ही यह अपेक्षा की जाय? उस समय हिन्दी लेखकों में जो निष्ठा, लगन और त्याग और भक्ति थी वह भी आज नहीं है।

स्वतन्त्रता के पूर्व पाठकों का एक बहुत बड़ा समाज जमींदार वर्ग था जो अपने फुरसत के समय में पुस्तकें पढ़ता था। ये लोग नियमित रूप से पुस्तकें खरीदते थे, पुस्तक-विक्रेता पुस्तकें ले-लेकर उनके पास पहुँचते ही थे, डाक द्वारा भी ये पुस्तकें मंगा कर पढ़ते थे। उस समय देश में मानसिक तनाव की स्थिति नहीं थी। स्वतन्त्रता के पश्चात् शिक्षा का प्रसार हुआ, नये-नये बड़े छोटे उद्योग स्थापित हुए, औद्योगिक बस्तियों में पढ़ने की रुचि उत्पन्न हुई। रंग-बिरंगे साप्ताहिक, मासिक तथा उत्तेजक साहित्य पढ़ने की प्रवृत्ति इनमें जागृत हुई। फिर भी साहित्यिक पुस्तकें खरीदकर पढ़ने वालों की संख्या नहीं बढ़ रही है क्योंकि हमारे पाठकों का स्तर अभी उन्नत नहीं है, स्तर के उन्नत न होने का कारण बुद्धिजीवी वर्ग में अंग्रेजी की प्रतिष्ठा है। अंग्रेजी प्रतिष्ठा जब समाप्त होगी एक बहुत बड़ा वर्ग हिन्दी पुस्तकों विशेषकर साहित्यिक पुस्तकों की ओर अग्रसर होगा। तब हमारे हिन्दी लेखकों पर यह जिम्मेदारी होगी जिसे आज प्रकाशकों पर थोपा जाता है कि वे उन पाठकों के स्तर के अनुकूल तथा आवश्यक साहित्य दे पाते हैं अथवा नहीं।

आज हिन्दी में पाठक बढ़े हैं, वे खरीदकर नहीं किन्तु किराये पर पुस्तकें लेकर पढ़ते हैं। वहाँ उन्हें उत्तेजक साहित्य मिलता है क्योंकि देश में ऐसे पुस्तकालय नहीं हैं जहाँ से उन्हें नयी से नयी पुस्तकें मिलती रहें। सच पूछें आज शासन, लेखक, प्रकाशक, पाठक सभी अपना उत्तर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी मास
के
नवीन प्रकाशन

सीधी-सच्ची बातें : **श्री भगवतीचरण वर्मा** रु० १५.००

१९३९ से १९४८ तक के भारत की राजनीति, इतिहास और समाज का बोलता दर्पण। सशक्त कथा, अविस्मरणीय उपन्यास। ६८४ पृष्ठों में हमारे युग का यथार्थ। आकर्षक सज्जा।

काल और कला : **श्री दिनकर कौशिक** रु० ८.००

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कलाकार दिनकर कौशिक द्वारा प्रस्तुत भारतीय कला का निष्पक्ष आकलन। ४१ प्लेटें आर्ट पेपर पर सुमुद्रित।

प्यास की आग : **श्री सरदार जाफ़री** रु० ७.००

सरदार जाफ़री की चुनी हुई नज़्मों का हिन्दी में पहला संग्रह। नए एशिया के नए जागरण की ताज़गी से सराबोर ये नज़्में बार-बार पढ़ी जायेंगी।

जौहर की ज्योति : **डा० रामकुमार वर्मा** रु० ३.५०

सुविख्यात नाटककार का नवीनतम ऐतिहासिक नाटक। चुस्त संवादों में राजस्थान की वीरभूमि का एक सुनहरा प्रसंग, देशभक्ति से ओतप्रोत। भारतीय संस्कृति का एक उजागर पृष्ठ।

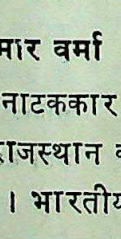

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायित्व निभाने के बजाय एक-दूसरे पर दोष मढ़ रहे हैं। ज्ञान का प्रसार किसी एक व्यक्ति अथवा वर्ग का काम नहीं है, समूचे देश की शक्तियाँ जब इसमें लगती हैं तभी देश शिक्षित होता है।

आगे एक शिकायत और है—"हिन्दी का यह दुर्भाग्य है कि हिन्दी की पुस्तकों के प्रकाशक और विक्रेता अभी भी साधारण पाठक से दूर हैं। साधारण पाठकों तक पहुँचना तो दूर उनके लिए सुविधाजनक योजनाएँ भी उनके पास नहीं हैं। विभिन्न वर्गों को ध्यान में रख कर पुस्तकों का प्रकाशन, किस्तों पर अदायगी की व्यवस्था तथा उनके लिए हर तरह की पुस्तकें सुलभ करने की योजना उनके पास नहीं है।"

जो लेखक साधारण पाठक से स्वयं दूर हैं, जो उनकी सीमाओं से अनभिज्ञ हैं, जो शीततापनियन्त्रित विशाल सजे सजाए भवनों में बैठ कर सोचते-देखते हैं और लिखते हैं उन्होंने साधारण पाठक के लिए बड़ी ही कोमल सहानुभूति प्रकट की है।

क्या शासन ने या किसी अन्य संगठन ने साधारण पाठक, प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता की कठिनाई और आवश्यकता को समझने का प्रयास किया है? आज देश में आवश्यकता की सूची में पुस्तकों का क्रम सबसे अन्त में होता है जबकि सबसे ऊपर होना चाहिए। किश्त पर थोड़े मूल्य की वस्तुएँ बेचना व्यावहारिक नहीं है, किन्तु किश्त के रूप में अदायगी के नाम पर कितने पुस्तकालय तथा शिक्षण संस्थाएँ पुस्तकें ले जाती हैं और पाँच-पाँच वर्ष में भी भुगतान नहीं करतीं। पुस्तकों के बिलों पर कोई ब्याज देने को राजी नहीं होता। यहाँ तक कि पढ़े-लिखे सम्पन्न लोग भी पुस्तकें उधार ले जाकर समय से या स्मरण दिलाने पर भी रकम चुकाने का नाम नहीं लेते। पुस्तकों का प्रसार लेखक, प्रकाशक, विक्रेता और पाठक चारों की समस्याओं के सम्मिलित सर्वेक्षण तथा उसके निराकरण से ही सम्भव है। चारों आज एक ऐसी अँधेरी कोठरी में बन्द हैं जो बारी-बारी से एक-दूसरे को ही पकड़कर अन्धकार का दोष ठहराते हैं।

जीवन्त पुस्तकालयों की आवश्यकता

आज देश में जीवन्त पुस्तकालयों की आवश्यकता है। ऐसे पुस्तकालय जो सतत जीवित हों, वर्ष में एक बार अनुदान व्यय करते समय उन्हें जीवित करने का नाटक न किया जाय। प्रति सप्ताह इन पुस्तकालयों में नई पुस्तकें आती रहनी चाहिए ताकि पुस्तकालयों और पुस्तकों में पाठकों का आकर्षण बना रह सके। पुस्तकें खुली अलमारियों में प्रदर्शित होनी चाहिए, उन तक पाठकों की सीधे पहुँच होनी चाहिए। ध्यान रहे पुस्तकालय न तो अजायबघर हैं और न गोदाम। बच्चों के लिए जो आगे आने वाली पीढ़ी हैं, एक अलग कक्ष होना चाहिए जहाँ नित नयी पुस्तकें, नये खिलौनों की भाँति रखी जानी चाहिए ताकि नये ज्ञान और कर्म की उनकी प्रवृत्ति को दिशा मिलती रहे। राजनीति से नहीं व्यवहार से, संस्कृति से देश की पीढ़ी को सुसंस्कृत करें, निश्चय ही एक दिन वह निर्माण की बड़ी से बड़ी योजना में निष्ठा, लगन और ईमानदारी प्रकट करेंगी। हम यह न भूलें—राजनीति तोड़ती है, संस्कृति जोड़ती है।

हिन्दी पुस्तक व्यवसाय की भयावह स्थिति

इसी अंक में यशपाल साहित्य के प्रकाशक विप्लव प्रकाशन की संचालिका श्रीमती प्रकाशवतीपाल का पत्र 'आपका पत्र' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित है। यशपाल जैसे यशस्वी, जीवन्त और लोकप्रिय लेखक के एकमात्र प्रकाशक की आज क्या मनःस्थिति है, यह पुस्तक व्यवसाय की वास्तविक परिस्थिति का द्योतक है। अन्य प्रकाशकों की निष्ठा पर सहजता से आरोप लगाया जाता है किन्तु जहाँ लेखक और प्रकाशक पति-पत्नी हैं, वहाँ क्या स्थिति है, यह विचारणीय विषय है। राजनीति, अभाव तथा महंगाई से आक्रान्त भारतीय समाज में आज पुस्तक और पठन-पाठन के लिए कहाँ गुंजायश शेष रह गयी है और क्या उगती हुई इस पीढ़ी से जनतन्त्र के उज्ज्वल भविष्य की आशा की जा सकती है?

हिन्दी मृत्युदण्ड से बची

राजभाषा विधेयक आखिर संशोधित रूप में पास हो गया। बेचारे कांग्रेसी सदस्यों ने जनता के बीच भुजाएँ उठा-उठा कर कहा था कि इसे संसद में पारित नहीं होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• श्रेष्ठ उपन्यास

अस्तंगता	'भिक्खु'	६.००
अठारह सूरज के पौधे	रमेश बक्षी	३.००
जुलूस	फणीश्वरनाथ 'रेणु'	३.५०
जो	डा० प्रभाकर माचवे	३.००
महाश्रमण सुनें ! [द्वि० सं०]	'भिक्खु'	३.००
सूरज का सातवाँ घोड़ा [च० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	२.००
पीले गुलाब की आत्मा [द्वि० सं०]	विश्वम्भर 'मानव'	४.००
अपने-अपने अजनबी [द्वि०सं०]	अज्ञेय	३.००
पलासी का युद्ध	तपनमोहन चट्टोपाध्याय	३.५०
ग्यारह सपनों का देश [द्वि० सं०]	सं० लक्ष्मीचन्द्र जैन	५.००
राजसी :	देवेशदास आई०सी०एस०	२.५०
शतरंज के मोहरे [पुरस्कृत, द्वि० सं०]	अमृतलाल नागर	६.००
गुनाहों का देवता [नौ० सं०]	डॉ० धर्मवीर भारती	५.००
संस्कारों की राह [पुरस्कृत]	राधाकृष्ण प्रसाद	२.५०
रक्त-राग [द्वि० सं०]	देवेशदास आई०सी०एस०	३.००
तीसरा नेत्र [द्वि० सं०]	आनन्द प्रकाश जैन	२.५०
मुक्तिदूत [द्वि० सं०]	वीरेन्द्रकुमार जैन	५.००

पाँच रुपये अथवा इससे अधिक राशि की पुस्तकें एक साथ मँगाने पर डाक-व्यय मुक्त।

?

क्या आपने भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रवर्तित राष्ट्र के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार (एक लाख रुपये) द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्याय के बांग्ला उपन्यास—

ग ण दे व ता

का

श्री हंसकुमार तिवारी द्वारा किया गया हिन्दी रूपान्तर पढ़ा है ?

डिमाई आकार : पृष्ठ संख्या ६३८
सुरुचिपूर्ण श्रेष्ठ मुद्रण तथा नयनाभिराम कलात्मक आवरण से अलंकृत।

मूल्य : १६.००

•

अपने निकटतम पुस्तक-विक्रेता से प्राप्त करें अथवा सीधे हमें लिखें।

•

मात्र पन्द्रह रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजकर पुस्तक रजिस्ट्री डाक द्वारा प्राप्त करें।

भा र ती य ज्ञा न पी ठ

३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

कलकत्ता • वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देंगे। अब संसद में हाथ उठा कर पारित करा दिये जाने के पश्चात् बड़ी मासूमियत से कहते हैं—बेचारी हिन्दी मृत्यु-दण्ड से बच गई। बधाई है कि उन्होंने मृत्युदण्ड की सजा कालेपानी में बदलवा दी। ये नेता हैं—श्रीमती सुचेता कृपलानी (भूतपूर्व मुख्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश), डॉ० सुशीला नैय्यर (गांधी जी की दाहिनी भुजा), श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा (जिन्हें विद्यार्थियों के गुस्से पर प्यार आता है), श्री अमृतलाल नहटा, श्री तुलसीदास यादव, श्री प्रेमचन्द और श्री वाल्मीकि चौधरी। हमें तो हिन्दी के भामाशाह सेठ गोविन्ददास पर गर्व है जिन्होंने नारा दिया 'एकला चलो रे' (कांग्रेसी संसद सदस्यों में एकमात्र सेठजी ने विधेयक के विरोध में मत दिया) बेधड़क बनारसी के शब्दों में—

माना, सदन में तर्क से बहुमत न पा सके
हिन्दी के प्रश्न पर नहीं उनको जगा सके
पर दिल की बात कर रहे थे 'एकला चलो' वह
हम तो कृतज्ञ 'बेधड़क' गोविन्ददास के।

पुस्तकें नहीं, कमीशन चाहिए

टिप्पणी के इस शीर्षक को देख कर चौंकें नहीं। हमारे देश में हिन्दी के विकास के लिए केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा स्थापित केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय को पुस्तक नहीं, कमीशन चाहिए। इसी अंक में सन्दर्भ-ग्रंथों के विख्यात प्रकाशक, ज्ञानमण्डल लि० के व्यवस्थापक पं० देवनारायण द्विवेदी का पत्र केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री त्रिगुण सेन के नाम प्रकाशित है। यह कैसी विडम्बना है कि एक ओर शिक्षा मन्त्रालय पुस्तकों के विकास और उच्चस्तरीय ग्रंथों के प्रकाशन पर करोड़ों रुपया व्यय (अपव्यय अधिक) कर रहा है, दूसरी ओर प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा प्रभूत धन लगा कर प्रकाशित सन्दर्भ ग्रंथों पर चालीस प्रतिशत कमीशन की मांग की जाती है। यदि पुस्तकों की खरीद का आधार कमीशन ही बना लिया गया तो ४० ही क्यों, ६०-७० प्रतिशत तक कमीशन मिल जायेगा, किन्तु महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ और कृतियां नहीं। यदि उक्त मद में पुस्तकों की खरीद के लिए निर्धारित रकम कम है तो प्रकाशक से अधिकाधिक कमीशन के रूप में उसकी आपूर्ति कराने के के बजाय क्यों न ग्रंथ की प्रतियाँ ही कम खरीदी जाएँ।

पुस्तक प्रकाशन के मर्म के प्रति सर्वथा एकांगी दृष्टि-कोण रखने के कारण ही आज हिन्दी-प्रकाशकों को श्रेष्ठ तथा उच्चकोटि के ग्रन्थों के प्रकाशन की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन नहीं मिलता। और, सरकार उन पर स्वार्थी तथा अदूरदर्शी होने का आरोप लगा कर स्वयं पुस्तक-प्रकाशन का कार्य अपने हाथ में लेती है, परिणाम क्या होता है, कर द्वारा वसूल की गयी जनता की गाढ़ी कमायी पुस्तकों के रूप में गोदामों में भर दी जाती है। टेंडर प्रणाली द्वारा पुस्तकों की खरीद एक दूसरी विडम्बना है। पुस्तक विकास के मार्ग में कमीशन, टेंडर, भारी डाक-व्यय आदि भ्रष्टाचारी अवरोधों को जब तक समाप्त नहीं किया जायेगा, पुस्तकों का विकास नहीं होगा और देश में स्वस्थ जनतन्त्र का निर्माण भी नहीं हो सकेगा।

प्रेमचन्द युग की एक कड़ी और टूटी

पं० सुदर्शन हिन्दी के वयोवृद्ध कहानीकार, फिल्मों के गीत, संवाद और कहानी लेखक का ७२ वर्ष की अवस्था में १२ दिसम्बर, १९६७ को प्रातः ८ बज कर ४० मिनट पर बम्बई के हरकिशनदास अस्पताल में मृत्यु हो गयी। गत नौ दिसम्बर से वे रक्तचाप तथा पीलिया के कारण शय्याग्रस्त थे। पिछले कई दिनों से वे अचेत थे और उन्हें आक्सीजन दी जा रही थी। प्रेमचन्द युग के महान कथा-कार पं० सुदर्शन भी प्रेमचन्द की भाँति उर्दू से हिन्दी में आये। कहते हैं एक बार साक्षात्कार के अवसर पर उन्होंने एक रसिक मुस्कान बखेरते हुए अपनी धर्मपत्नी की ओर देख कर यह बतलाया था कि उर्दू से वे हिन्दी में इसलिए आये क्योंकि उनकी पत्नी को उर्दू नहीं आती थी।

उनकी पहली कहानी १९२० ई० में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई। 'हारजीत' उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कहानी है। उनके निधन से हिन्दी साहित्य की अपूरणीय क्षति हुई है। 'हिन्दी प्रकाशक' दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है और उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीनिवास जी नहीं रहे

'हिन्दी प्रकाशक' को यह सूचना देते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि किताब महल, इलाहाबाद के यशस्वी संचालक श्री श्रीनिवास अग्रवाल की हृदयगति अचानक रुक जाने के कारण ४ जनवरी १९६८, बृहस्पतिवार को इलाहाबाद में अल्प आयु में उनकी मृत्यु हो गयी। अपने कठोर परिश्रम एवं सूझ-बूझ से उन्होंने हिन्दी प्रकाशन उद्योग में ही नहीं, भारतीय प्रकाशन उद्योग में प्रमुख स्थान बना लिया था और किताब महल से अब तक एक हजार से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें हिन्दी के ख्यातिलब्ध लेखकों की कृतियाँ हैं। उनकी अवस्था लगभग ४८ वर्ष की ही थी। 'हिन्दी प्रकाशक' प्रकाशन उद्योग में हुई इस अपार क्षति के प्रति चिन्ता व्यक्त करता है और प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है तथा उनके परिवार के हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

आवश्यक सूचना

'अ० भा० हि० प्रकाशक संघ' की ओर से प्रकाशित किये जाने वाले हिन्दी-पुस्तक विक्रेताओं तथा प्रकाशकों के पतों के सैट फरवरी के अन्तिम सप्ताह तक विक्रयार्थ उपलब्ध होंगे। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी निम्नलिखित पते पर पत्र लिखकर प्राप्त करें :—

सूची व्यवस्थापक
द्वारा अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
७/१६ दरियागंज, दिल्ली-६

गांधी-जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में हमारा अभिनव प्रकाशन

गांधी : संस्मरण और विचार

- यह ग्रन्थ गांधीजी की आगामी पुण्य तिथि पर ३० जनवरी, १९६८ को प्रकाशित होगा।
- इसमें विश्व के महापुरुषों, भारत के राजनेताओं तथा समाज सेवियों के गांधीजी द्वारा लिखे संस्मरण होंगे। साथ ही गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के समय अर्थात् सन् १९१६ से लेकर १९२२ तक के चुने हुए विचार भी।
- ग्रन्थ डबल क्राउन अठपेजी आकार के ६०० पृष्ठों का होगा।
- ग्रन्थ की छपाई सुरुचिपूर्ण, कागज बढ़िया, आवरण आकर्षक तथा जिल्द मज़बूत होगी।
- ग्रन्थ का मूल्य केवल ३०) होगा।
- जो महानुभाव ३१ जनवरी १९६८ तक अपनी माँग तथा पशगी मूल्य भेज देंगे, उन्हें ग्रन्थ फ़ी कापी २०) के हिसाब से मिलेगा। भेजने का खर्च 'मण्डल' देगा।

यह विशेष रियायत
केवल ३१ जनवरी १९६८ तक प्राप्त आर्डरों पर दी जायगी।

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
शाखा : जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय प्रकाशक संघ द्वारा

राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर आयोजित

दो गोष्ठियाँ

दिनांक २३-१२-६७

राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर संघ ने दो गोष्ठियाँ आयोजित की थीं। रात्रि में कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया किन्तु घनघोर वर्षा के कारण कविसम्मेलन नहीं हो सका। इन गोष्ठियों तथा कविसम्मेलन के आयोजक ने—सर्वश्री दयानन्द वर्मा, रामलालपुरी, कन्हैयालाल मलिक तथा श्री ओमप्रकाश शर्मा।

इस अवसर पर पढ़े गये निबन्धों में से डा० गोपाल शर्मा का निबन्ध इस अंक में अन्यत्र देखें।

शेष निबन्ध आगामी अंकों में प्रकाशित होंगे।

'मासिक पुस्तक प्रदर्शनी' गोष्ठी के अवसर का चित्र (बायें से दायें) सर्व श्री दयानन्द वर्मा (प्रधानमन्त्री-प्रकाशक संघ) रामलाल पुरी (संयोजक) प्रो० शेरसिंह (शिक्षा राज्य मन्त्री) रघुनाथसिंह (सभापति) श्री कृष्णचन्द बेरी (अध्यक्ष-प्रकाशक संघ)

'विश्वविद्यालय स्तर के हिन्दी प्रकाशन' विषय की गोष्ठी में अपना निबन्ध पढ़ते हुए डा० ओमप्रकाश (बायें से दायें) सर्वश्री विजयेन्द्र स्नातक, डा० ओमप्रकाश, डा० गोपाल शर्मा, डा० नगेन्द्र (सभापति), कृष्णचन्द बेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके पुस्तकालय के लिए

• कथा-साहित्य		
शांतला (कन्नड़ उपन्यास)	के० वी० अय्यर, अनु० डॉ० हिरण्मय	७.००
मनोमती (असमिया उपन्यास)	रजनीकान्त बर्दलै, अनु० लोकनाथ भराली	५.००
दशकुमार चरित	महाकवि दण्डी, अनु० हवलदार त्रिपाठी	३.००
बन्द आँखें (कहानी-संग्रह)	'आरिगपूड़ि'	४.००
तमिल गाथाएँ (पुरस्कृत)	म० ना० भारतीभक्त	१.२५
मराठी गाथाएँ	क्षीरसागर	०.५०
मलयालम् कहानियाँ	गोपाल कृष्ण	०.७५
विदेशी कहानियाँ	सदानन्द झा	१.००
साहस की सच्ची कहानियाँ	छविनाथ पाण्डेय	१.२०
गुलिस्ताँ की कहानियाँ	त्रिपुरेश्वर पाण्डेय	०.८०
मृत्यु से मुठभेड़ें	धनराजपुरी	१.४०
धरती पर धावा	वीरेन्द्र नारायण	१.००
एक गुलाम की कहानी	हिमांशु श्रीवास्तव	१.००
• जीवनी		
भारतरत्न	म० ना० भारतीभक्त	१.२५
विश्व के नेता	हरिहर प्रसाद राय	१.३०
राष्ट्रपिता	छविनाथ पाण्डेय	०.६९
हमारे युगनिर्माता	सदानन्द झा	१.२५
• कविता		
वनवाणी	रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० यु० नवलपुरी	७.००
सेतुबन्ध	केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'	६.५०
अशोक	रामदयाल पाण्डेय	२.००
कबीर	यमुना प्रसाद नीरज'	१.२५
मिस इड़ा (व्यंग्य)	रंजन शर्मा	२.००
विष्णु शर्मा ने कहा (बालोपयोगी)	,,	०.६०
आओ गाएँ ,,	म० ना० भारतीभक्त	०.८५
चन्दा मेरा मामा ,,	शान्ति उपाध्याय	१.००
रंग-बिरंगे पंख ,,	,,	१.००
टुनमुन ,,	महन्त धनराजपुरी	०.८५
आओ सुनो कहानी ,,	,,	०.८५
भारत के कलातीर्थ ,,	सत्यदेवनाराण अष्ठाना	० ६०
• विज्ञान		
गुफा के महल (बालोपयोगी)	डी० एन० मिश्र	०.६०
पेड़ हमारे जीवनदाता ,,	,,	१.००

ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालयों के लिए पुस्तक-प्रकाशन

डॉ० गोपाल शर्मा

(प्रधान संपादक—केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय)

सांस्कृतिक और शैक्षिक उपनिवेशवाद

भारतीय सांस्कृतिक क्रान्ति आज एक आन्तरिक संघर्ष से पीड़ित है। हमने वैज्ञानिक, तकनीकी और औद्योगिक उन्नति के कदम बढ़ाते समय अपनी भाषा की राह नहीं पकड़ी। किसी ने इस बात का मनन नहीं किया कि विदेशी भाषा द्वारा विज्ञान और टेक्नालाजी की शिक्षा भी एक नये तरह का सांस्कृतिक और शैक्षिक उपनिवेशवाद है। हमारे विद्वान तथा अध्यापक और दूसरे लोग भी लेना ही लेना, चाहे उधार की बतौर या दान में लेने, के बुरी तरह आदी हो गए हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में पश्चिम द्वारा यह एक नये किस्म की दिमागी धुलाई (ब्रेन वाश्इंग) है। स्वातंत्र्योत्तर काल में राष्ट्रीयता की अपेक्षा अन्तर्राष्ट्रीयता का भाव अधिक मात्रा में जागृत हो गया है और जैसा कि हम जानते हैं कि आम जनता अन्तर्राष्ट्रीयता से लाभ तो उठाना चाहती है मगर उसके जरिये जो भाषा और संस्कृति थोपी जा रही है उसे स्वीकार नहीं करती।

प्रगति और परम्परा

हमारी सांस्कृतिक क्रान्ति को कमजोर बनाने वाली दो चीजें हैं—विज्ञान टेक्नालाजी एक ओर और प्रशासन तथा कानून दूसरी ओर। एक प्रगति से अभिभूत है और दूसरी परम्परा से। दोनों ही क्षेत्र पराजय की भावना से आतंकित हैं। उनमें कर्मठता और बड़े पैमाने पर जोखिम लेकर दृढ़ता और धैर्य से काम करने की वृत्ति का अभाव है। उनका नारा तो है जल्दबाजी न की जाय जिसका अर्थ उनके अनुसार होता है आप कुछ न करें, हमें तो कुछ करना ही नहीं है।

संदर्भ भाषा

आज वक्त ने करवट ली है। हमारे अच्छे वैज्ञानिक यह समझने लगे हैं कि विश्वविद्यालय में ही विज्ञान जैसे-तैसे पढ़ा कर नई पीढ़ी को आगे धकेल देने से काम नहीं चलेगा। सारे राष्ट्र की वैज्ञानिक भावना को जगाने के लिए विज्ञान उनकी भाषाओं के माध्यम से उन तक पहुँचाना होगा। इसलिए शिक्षा का स्तर उठाने के लिए, शिक्षा की मार्मिक उपलब्धि के लिए हमारी भाषाओं को तुरन्त ही माध्यम के रूप में अपनाना ही श्रेयस्कर है। तो जहाँ हमें इस बात की मायूसी है कि हिन्दी का नाम राष्ट्रभाषा से (लिंग्वा फ्रांक्आ) सम्पर्क-भाषा हो गया है वहाँ इस बात से आपको राहत भी मिलनी चाहिए कि शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन लिखने वालों ने अंग्रेजी भाषा का नाम अन्तर्राष्ट्रीय भाषा से लाइब्रेरी की भाषा रख दिया है। अब हमें अंग्रेजी की बात करते वक्त उसे (लिंग्वा लाइब्रेरिया) 'संदर्भ-भाषा' कह कर सम्बोधित करना चाहिए और संदर्भ-भाषाएँ अनेक भाषाएँ हो सकती हैं। इस आधिकारिक विचार से प्रकाशकों को आश्वस्त हो जाना चाहिए।

भारतीय पाठ्य-ग्रन्थों, अध्यापन योग्य निदेश संदर्भ-ग्रन्थों का सर्वेक्षण

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में विचार करते वक्त कुछ बातों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। पहले पुस्तकें हों या पहले माध्यम परिवर्तन की घोषणा और एक निश्चित कार्यक्रम। मेरे विचार से दोनों ही एक-दूसरे पर आश्रित हैं। पहले शुरू करने के लिए कुछ आधारभूत पाठ्य-पुस्तकें चाहिएँ। कम से कम प्रथम डिग्री स्तर के कला और विज्ञान विषयों की एक-एक दो-दो पुस्तकें आवश्यक हैं। इनके तैयार कराने का काम एक क्षेत्र के विश्वविद्यालय मिल कर और व्यवस्थित रूप से काम बाँट कर कर सकते हैं। इतिहास, अर्थशास्त्र, गणित, राजनीति, मनोविज्ञान शिक्षा आदि से सम्बन्धित डिग्री स्तर की पुस्तकें काफी मात्रा में कम से कम हिन्दी क्षेत्रों में उपलब्ध हैं। कुछ अनुवाद हैं, कुछ मौलिक या अनुकूलित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे भाषा क्षेत्रों का एक सर्वेक्षण करना आवश्यक है जिससे यह पता लग जाय कि उनके यहाँ अपनी भाषाओं में डिग्री स्तर की कितने विषयों की पुस्तकें मौजूद हैं। तो सबसे पहला काम तो सारी भाषाओं में डिग्री स्तर की अच्छी पुस्तकों के सर्वेक्षण, परीक्षण और सूची बनाने का है जिससे यह पता चल जाय कि कौन-कौन से क्षेत्र अभावग्रस्त हैं। हमें किस ओर ध्यान देना है ? किस तरफ पैसा लगाना है ?

यह काम सरकार के विभाग को या विश्वविद्यालय बोर्ड या अनुदान आयोग के तत्वावधान में होना चाहिए। एक प्रामाणिक सूची प्राप्त हो जाने पर उन पुस्तकों का इस दृष्टि से परीक्षण करना आवश्यक होगा कि उनमें क्या खामियाँ हैं। उन्हें कहाँ अपटूडेट बनाना है उनमें उदाहरणों, चित्रों, चार्टों आदि में कहाँ क्या परिवर्तन-परिवर्धन करना है ? आपको आश्चर्य होगा कि हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली, तेलगु आदि भाषाओं में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विषय पढ़ाने की आवश्यकता से ऊपर सामग्री विद्यमान है और हमारे विश्वविद्यालय तथा अध्यापक उनके बारे में या तो अनभिज्ञ हैं या जानना नहीं चाहते। यदि आज पुस्तकों की सामग्री अपर्याप्त और गलत मालूम पड़ती है तो अभी तक हमारे विद्वान अध्यापकों ने उसके प्रति प्रकाशकों और लेखकों का ध्यान क्यों नहीं आकर्षित किया ? अपने सुझाव क्यों नहीं भेजे ? मैं इस काम को बहुत महत्वपूर्ण समझता हूँ और यह लगभग सरकारी स्तर पर या विश्वविद्यालय संघ के स्तर पर हो और उसकी ही ओर से विषयवार समीक्षा सहित ग्रन्थ-सूची तुरन्त प्रकाशित की जाय। इसमें प्रकाशक भी अपना पूरा सहयोग दें जिससे यह काम शीघ्रातिशीघ्र हो सके। इसके बाद भारतीय ग्रंथों का परस्पर अनुवाद प्रकाशन शुरू किया जाय। इसमें न तो विनिमय मुद्रा की आवश्यकता होगी और न अनुवाद की कठिनाई। साथ ही हमारी विभिन्न भाषा की पाठ्य-पुस्तकों के दूसरी भाषा के संस्करण, एक अखिल भारतीय प्रतिभा की पुस्तकों का भण्डार प्रत्येक भाषा में तैयार करने में सहायक होंगे और हम बहुत से फिजूल खर्च से बच जायेंगे। हमारी भाषाओं में परस्पर अनुवाद भी सरलता से हो सकता है।

अनुवाद और अनुकूलन

अनुवाद या अनुकूलन की चर्चा में सबसे पहली बात विदेशी पाठ्य पुस्तकों की प्रामाणिक सूची है।

अंग्रेजी या दूसरी विदेशी भाषाओं के ग्रन्थों की सर्वमान्य प्रामाणिक सूची कैसे बनाई जाय ? यह एक बड़ा जटिल प्रश्न है। दूसरी भाषाओं का तो प्रश्न उपस्थित ही नहीं होता क्योंकि हमारे बहुत कम प्राध्यापक जर्मन, जापानी या अन्य मौलिक ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं। इसके सिवाय यह विद्वान मण्डली रुचियों की विविधता के लिए भी विख्यात है। कोई इस विचार स्कूल के हैं कोई उस विचार स्कूल के हैं, किसी को यह पुस्तक प्रामाणिक मालूम पड़ती है तो दूसरे को दूसरी और। इस उलझी हुई परिस्थिति में पैसा लगाने से पहले यह बहुत जरूरी है कि इसके लिए कोई पंच-फैसला हो और वह पंच-फैसला प्रामाणिक स्तर पर यू० जी० सी० या शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में हो और प्रत्येक विषय के अनुवाद योग्य पुस्तकों की एक प्रामाणिक सूची तैयार की जाय। फिर चाहे उस सूची पर प्रकाशक कार्य करें या विश्वविद्यालय या सरकार। क्योंकि विवादग्रस्त काम में धन लगाने के प्रति और संस्थाओं में संकोच चाहे न हो, प्रकाशकों के मन में जरूर हिचक होगी। उन्हें तो व्यापार करना है और जवाब देना है तो अपनी ही पूंजी को।

इसके सिवाय शिक्षा के क्षेत्र में आये दिन समर स्कूल और सेमिनार होते रहते हैं जिनमें विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ सलाह देने के लिए आमंत्रित किये जाते हैं। उदाहरण के लिए गणित या विज्ञान पढ़ाने की सेमिनार या समर स्कूल। इन आयोजनों में स्थिति को (अप-टू-डेट) बनाया जाता है, विषय का पुनर्गठन किया जाता है। इन निर्णयों की सूचना भी पुस्तक प्रकाशकों को दी जानी चाहिए। हो सकता है कि किसी प्रकाशक ने गणित की एक किताब हाथ में ली हो जिसकी विषय-रचना समर स्कूल में तय की गई रचना से भिन्न हो और समर स्कूल से वापस जाकर प्राध्यापक यूनिवर्सिटी की पाठ्यक्रम समिति में कोर्स को नये ढंग से गठित कर दें तो प्रकाशक द्वारा की जा रही पुस्तक बेकार साबित हो सकती है। तो इस मामले में हमें सब तरफ से चौकन्ना रहना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078047

अनुवाद-अधिकार

पुस्तकें चुन लेने के बाद दूसरी समस्या जिसका कि हल करने की कोशिश की जा रही है अनुवाद—अधिकार प्राप्त करने की है।

विदेशी प्रकाशकों से कापी राइट लेने में विनिमय मुद्रा की आवश्यकता होती है और जब हम एक बार ऐसी बहु-मूल्य विनिमय मुद्रा के उपयोग का विचार करते हैं, तो इस सम्बन्ध में हमें और भी सतर्कता बरतने की जरूरत पड़ती है क्योंकि प्रत्येक विदेशी प्रकाशक एक सीमित समय के लिए अर्थात् पाँच-आठ या दस वर्ष के लिए अनुवाद अधिकार देता है और प्रामाणिक ग्रन्थ ४००,५००, १०००, १५०० पृष्ठों तक के होते हैं। कापी राइट लेने में आठ-दस महीनों से लेकर वर्ष-दो वर्ष तक का समय लग जाता है। जिस गति से हमारे अनुवादक, चाहें वे विश्वविद्यालयों में हों चाहें संस्थाओं में हों, काम कर रहे हैं उसको देखते हुए कभी-कभी विदेशी प्रकाशक का दिया हुआ समय अपर्याप्त प्रतीत होने लगता है। इसके सिवाय जब तक हमारा अनुवाद तैयार होता है तब तक विदेशी पुस्तकों के दूसरे संस्करण बाजार में आ चुकते हैं अथवा किसी विषय की दूसरी प्रामाणिक शब्दावली प्रकाशित हो जाती है। ऐसी अवस्था में सारे कार्य का पुनरावलोकन अनिवार्य हो जाता है।

अतएव यह अत्यन्त आवश्यक है कि अब शब्दावली में कोई परिवर्तन न हो और अनुवाद शीघ्रातिशीघ्र तैयार किया जाय।

जब तक स्टाकहोम का कन्वेन्शन नहीं हुआ था तब तक एक बात पर और विचार किया जा रहा था, वह थी, विदेशों के बड़े-बड़े प्रकाशकों से कई पुस्तकों के विषय में एक ही वक्त थोक सौदा करने की। इससे सम्भवतः दी जाने वाली रकम में कुछ छूट प्राप्त हो सकती थी परन्तु इस बात पर अभी विचार नहीं किया जा सका है। सवाल यह है कि विनिमय मुद्रा लेने की अनुमति तो सरकार के वित्तीय विभाग से मिलनी है। इस तरह अपने-आप ही सरकार का कापी राइट के क्षेत्र में नियन्त्रण कायम रहता है जब ऐसी बात ही है और जब अधिकारिक रूप से किताबों के नाम भी तय होंगे तो कापी राइट दिलाने का काम सरकार के तत्वावधान में ही क्यों न हो। इसके लिए एक सलाहकार बोर्ड की स्थापना करने का आग्रह करना चाहिए, जिसमें कि विश्वविद्यालयों, प्रकाशकों और सहयोगी विदेशी सरकारों के और भारत सरकार के प्रतिनिधि हों जो कि व्यवस्थित रूप से कापी राइट में दुर्लभ विनिमय मुद्रा के व्यय को आपसी परामर्श द्वारा राष्ट्र के अधिक से अधिक लाभ के लिए सम्मिलित निर्णय से निर्धारित करें। ऐसी एक सलाहकार समिति शिक्षा मंत्रालय ने बनायी है। कभी-कभी विदेशी प्रकाशक सरकार से इस बात में सहयोग नहीं करना चाहते क्योंकि उनका यह कहना रहता है कि वे सामान्य व्यावसायिक फर्मों को प्रोत्साहन देना चाहेंगी। प्रस्तावित बोर्ड इस विषय में भी विचार कर सकता है और कोई रास्ता भी निकाला जा सकता है। कापी राइट में जहाँ रुपये से ही काम निकल सकता है वहाँ दो-तीन प्रकाशक प्रतियोगिता करके उसकी रायल्टी बढ़ाने में लग जाते हैं। यह देश और विद्यार्थी दोनों के ही हित में नहीं है। इससे पुस्तकों पर लागत बढ़ जाती है।

एक और प्रश्न विचारणीय है कि हम सर्वमान्य सूची की पुस्तकों का सभी भाषाओं के लिए एक साथ ही अधिकार क्यों न ले लें जिससे कि अलग-अलग प्रकाशनों के लिए अलग-अलग तौर पर विनिमय मुद्रा की मंजूरी न देनी पड़े और साथ ही रियायत भी माँगी जा सके। इसी लिए मेरी राय है कि यह काम केन्द्रित और सम्मिलित रूप से होना चाहिए।

अभी हाल में स्टाकहोम में कापी राइट का कन्वेन्शन हुआ था। भारत के प्रतिनिधि शिक्षा के राज्यमन्त्री प्रोफेसर शेरसिंह ने इस प्रसंग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यद्यपि अभी कुछ खटक बाकी है फिर भी मोटे तौर पर यह तय हुआ है कि प्रत्येक लेखक और प्रकाशक जो पुस्तकें प्रकाशित करे उसका अनुवाद अल्पविकसित देश की भाषाओं में तीन वर्ष के अन्दर प्रकाशित कर दे। यदि ऐसा नहीं हुआ तो अल्पविकसित देश के प्रकाशक अपनी राष्ट्रीय सरकारों के जरिये एक बार अनुरोध भेज सकते हैं और यदि उत्तर न आवे तो उस पुस्तक का अनुवाद किया जा सकता है और जो राष्ट्रीय सरकारें तय करें वह रकम देश की मुद्रा में दी जा सकती है। अभी इस पर सम्भवतः ग्रेट ब्रिटेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सहमति शेष रही है। यह एक बहुत ही लाभकारी निर्णय है जिसके जरिये विकासमान और अल्पविकसित देशों को अपना साहित्य बढ़ाने में काफी मदद मिल सकती है। इसका महत्वपूर्ण अंश है लेखक-प्रकाशक द्वारा स्वयं का प्रकाशन।

भारत की दृष्टि से तीन साल तक यदि किसी पुस्तक का हिन्दी या भारतीय भाषा संस्करण प्रकाशित न हो तो केन्द्र सरकार के जरिये लेखक-प्रकाशक से समझौता कर अनुवाद और प्रकाशन हाथ में लिया जा सकता है और रुपये में भुगतान भी किया जा सकता है। राज्य शिक्षा-मन्त्री प्रोफेसर शेरसिंह के यत्नों से उत्पन्न यह निर्णय हाल की परिस्थिति में बहुत ही महत्वपूर्ण है।

अनुवाद-कार्य

जिस राष्ट्र में मौलिक रूप से वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य प्रचुर मात्रा में न लिखा जा रहा हो वहाँ वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के विदेशी ग्रन्थों के अनुवाद प्रस्तुत करने की अत्यन्त आवश्यकता होती है। विज्ञान की प्रगति सारे विश्व में हो रही है और विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में अद्यतन जानकारी हासिल करना अन्य राष्ट्रों के लिए अनिवार्य सा हो गया है। हिन्दी में विज्ञान के आधारभूत प्रामाणिक और अद्यतन ग्रन्थों का अनुवाद करना बहुत आवश्यक है। चाहे यह अनुवाद सरकारी क्षेत्र में अथवा सार्वजनिक संस्थाओं के तत्वावधान में किया जाय अथवा प्रकाशक कराएँ। हमें बहुत बड़ी मात्रा में तकनीकी और वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद करना है ताकि हम हिन्दी साहित्य को विश्व-साहित्य के हजारों ग्रन्थों से समृद्ध कर सकें। इस कार्यक्रम के साथ ही अनिवार्य रूप से उपयुक्त पाठ्य पुस्तकों का अनुवाद कार्य भी जारी रखना होगा ताकि विश्वविद्यालयों को माध्यम परिवर्तन के लिए हम अद्यतन प्रामाणिक ग्रन्थ दे सकें। ये दोनों कार्यक्रम अल्प और दीर्घकालीन योजनाओं के रूप में चलाने होंगे।

जहाँ तक पाठ्य पुस्तकों के अनुवाद का प्रश्न है, जिनके विषय में हमें शीघ्रता से कार्य करना है, हम काम बाँट करके भी अनुवाद करा सकते हैं। अगर ५०० पृष्ठों से लगा कर १००० पृष्ठों तक की पुस्तक है तो उसका अनुवाद अध्याय बाँट कर भी कराना कोई बुरी बात न होगी। लोग कहेंगे कि इसमें शैली और भाषा की भिन्नता हो सकती है परन्तु विज्ञान की आत्मा तो तथ्य में निहित रहती है और तथ्यों को समझाने के लिए प्रयोग और उदाहरण होते हैं। इस दृष्टि से शैलियों का महत्व वर्णन शैली में अधिक है, भाषा शैली में कम। भाषा शैली को नज़र-अन्दाज कर दें तो वर्णन शैली तो पुस्तक से ही प्राप्त हो जाती है। इस पर विभिन्न अध्यायों के अनुवाद में कोई बहुत बड़ी भिन्नता नजर नहीं आयेगी और काम भी जल्दी हो जायेगा। अनुवाद के विषय में संक्रान्तिकाल में हमें बहुत उच्चादर्शी नहीं बनना चाहिए।

अनुकूलन

इस काम के साथ ही साथ अनुकूलन या (एडाप्टेशन) का काम भी करना चाहिए। यदि आज हम एक ही विषय की १०-१५ पुस्तकें देखें तो ऐसा लगेगा कि विज्ञान की विषय-वस्तु तो मौलिक रूप से एक ही है परन्तु बात समझाने का तरीका, उदाहरण, वातावरण से उसका संबंध थोड़े बहुत घटा-बढ़ा कर अलग-अलग रूप में दिये गये हैं। इस दृष्टि से अधिकांश पुस्तकें मौलिक की मनमानी नकल ही मानी जा सकती हैं। इसलिए अनुकूलन को चोरी नहीं समझना चाहिए बल्कि उसे भी अपने तरीके से हाथ में लेना चाहिए। इसमें कोई शर्म की बात नहीं है।

इस काम में हमें नयी पीढ़ी को ज्यादा से ज्यादा मात्रा में प्रोत्साहित करना चाहिए और बन सके तो विज्ञान की पुस्तकों पर वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा करके वेतन में तरक्की देकर, प्रेरणा प्रदान करनी चाहिए।

पारिभाषिक शब्दावली

भारत सरकार के पारिभाषिक शब्दावली आयोग ने बहुत से विज्ञान और सामाजिक विषयों की डिग्री स्तर तक की शब्दावली प्रकाशित कर दी है। प्रत्येक प्रकाशक को इसे खरीद लेना चाहिए और उसका व्यवहार करना चाहिए। यदि कहीं शब्दावली में कोई शब्द खटके तो उसके लिए रुकने की आवश्यकता नहीं है। उसके स्थान पर देवनागरी में अंग्रेजी शब्द लिखने से काम चल सकता है। परन्तु सभी पुस्तकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हिन्दी शब्दावली तो एक ही होनी चाहिए। यदि कोई बदलना चाहे तो आयोग से सलाह लेकर ही बदले। क्योंकि शब्द अपने आप में अकेले नहीं होते उससे एक बड़े शब्द-मण्डल पर असर पड़ता है। जहाँ कहीं भी भारत सरकार के कोषों में शब्द न मिलें तो मेरा तो सुझाव यह है कि आप सीधे अंग्रेजी का शब्द देवनागरी में लिखवा दें। आवश्यक हो तो पाद टिप्पणी के रूप में लेखक अपना सुझाव भी दे सकता है। यह समय विवाद और बहस का नहीं है काम करने का है और इस काम में अध्यापकों और विश्वविद्यालयों से सहयोग प्राप्त करने का है।

पुस्तक सलाहकार बोर्ड

विश्वविद्यालय की पुस्तकें तैयार करने के लिए जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ, एक नहीं अनेक पुस्तक प्रतिष्ठान बनाने की आवश्यकता है। प्रत्येक विश्वविद्यालय में प्रकाशन की व्यवस्था उत्पन्न करने की आवश्यकता है। दिल्ली विश्वविद्यालय और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भारत सरकार की सहायता से अनेक प्रामाणिक पुस्तकें तैयार हुई हैं। इस कार्य के लिए सक्षम प्रकाशकों से सहयोग भी प्राप्त करने की आवश्यकता है। प्रकाशकों के अनुभवों से सरकार का लाभ उठाना सभी के हित में होगा। परन्तु एक बात से मैं आपको आगाह कर देना चाहता हूँ। यह लाभ कमाने का वक्त नहीं है। इस समय कम से कम लाभ द्वारा यदि भाषाओं को उनके उचित स्थान पर बैठाया जा सके तो आपकी अनेक पीढ़ियाँ लाभ ही लाभ उठा सकेंगी। भारत सरकार की प्रकाशकों के सहयोग से चलने वाली योजना का आप पूरा उपयोग करें। उससे आपको पुस्तक प्रकाशन की लागत तो मिल ही जाती है। इस व्यवस्था में जो देरी होती है उसका हल प्रस्तावित बोर्ड में खोजने की कोशिश की जा सकती है। इस काम में विशेष श्रम पड़ता है। छपाई भी दूसरी तरह की होती है। पाठ्य-पुस्तकों के लिए कागज भी हमें विशेष तरह का चाहिए। हो सकता है कि सरकार की सहायता से प्रत्येक मिल को यह आदेश दिया जा सके कि वह इतने परिमाण में पाठ्य पुस्तक का कागज आवश्यक रूप से तैयार किया करें या वह विदेशों से कागज मँगा कर दें। इन सब बातों को सुनियोजित ढंग से चलाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर सम्मिलित सलाहकार बोर्ड नियुक्त करना मैं बहुत जरूरी मानता हूँ। यह बोर्ड इस विषय की सभी समस्याओं पर विचार करे, हल सुझाये और उपलब्ध पूंजी का विनियोग किस प्रकार किया जाय, इसकी भी व्यवस्था करें। यह भी हो सकता है कि बोर्ड 'बुक फाइनेंसिंग कॉरपोरेशन' नामक कोई संस्था बनाने पर विचार करे और प्रकाशकों को इन पुस्तकों में पैसा लगाने के लिए आसान शर्तों पर कर्ज भी देने की योजना बनायें। आज हमें अपने विद्यार्थी को सस्ते दामों में अच्छे कागज और छपाई वाली पुस्तकें देना है। छपाई और प्रकाशन का खर्च कम कैसे किया जाय इसका भी आपको ही हल खोजना है। अगर दूरदर्शिता और दृढ़ निश्चय से काम किया गया तो मुझे बिल्कुल भी सन्देह नहीं है कि थोड़े ही समय में बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त हो सकती है।

●

'हिन्दी प्रकाशक' के लिए
सामान्य अंक की विज्ञापन-दरें

प्रथम पृष्ठ (आवरण) अनुबद्ध	
चतुर्थ पृष्ठ (आवरण)	९०.००
द्वितीय-तृतीय पृष्ठ (आवरण)	८०.००
साधारण पृष्ठ	६०.००
आधा पृष्ठ	४०.००
चौथाई पृष्ठ	२५.००

विशेष सुविधाएँ

वर्ष में ६ अंकों के अनुबन्ध पर १५ प्रतिशत और १२ अंकों के अनुबन्ध पर २० प्रतिशत छूट।

केवल 'संघ' के सदस्यों के लिए

(क) उपर्युक्त साधारण दरों पर १५ प्रतिशत छूट।

—'हिन्दी प्रकाशक'
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अभिनव प्रकाशन

साहित्यिक-राजनीतिक-किशोर-साहित्य

बिहारी-सतसई : तुलनात्मक अध्ययन

आचार्य पद्मसिंह शर्मा

बिहारी-सतसई के दोहों का संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, उर्दू तथा फारसी के समानार्थक सूक्तियों से सजीव, ओजस्वी और हृदय-ग्राहिणी भाषा में विद्वत्तापूर्ण तुलनात्मक समीक्षा के साथ-साथ सतसई के काव्य-सौष्ठव पर विस्तृत विवेचन हुआ है। मूल्य राजसंस्करण : १२.५०

मूल्य सामान्य : १०.००

साहित्य : विश्लेषण और परख

डॉ० हरगूलाल

हिन्दी की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए उपयुक्त प्राचीन तथा आधुनिक कवियों, प्रमुख धाराओं, विशिष्ट काव्य तथा नाट्य-कृतियों पर विश्लेषणात्मक मौलिक निबन्धों का होना ही ग्रन्थ की उपादेयता है।

मूल्य सजिल्द : ६.००

जयशंकर प्रसाद : नाट्य-शिल्प और कृतियों का मूल्यांकन

श्री सतीश बहादुर वर्मा

इस समीक्षात्मक ग्रन्थ में प्रसादजी के नाट्य-शिल्प और उनकी प्रायः सभी नाट्य-कृतियों का उचित मूल्यांकन नयी सामग्री तथा नये दृष्टिकोण से किया गया है।

मूल्य सजिल्द : ६.५०

भारतीय राजनीति : शंकाएँ और समाधान

श्री हरिदत्त शर्मा

स्वतन्त्र भारत की राजनीति कैसी रही है, आज किस स्थिति में है, आगे चल कर किन-किन स्थितियों और समस्याओं का सामना करने की संभावना है। इन सभी सवालों का उत्तर लेखक ने दिया है। राजनीति के छात्रों के उपयुक्त पुस्तक।

मूल्य : ३.५०

समरजयी

डॉ० ललित शुक्ल

स्वर्गीय लालबहादुरजी के उदात्त और देदीप्यमान कार्यकलापों पर आधारित एकमात्र खण्ड-काव्य, जो साहित्यिक तथा राष्ट्रीय क्षेत्रों की अमूल्य निधि है।

मूल्य सजिल्द : ५.५०

दीप धर्म का, बत्तियाँ ज्ञान की

श्रीव्यथित हृदय

सांस्कृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक कहानियों तथा आधुनिक घटनाओं और प्रसंगों के द्वारा किशोरों तथा प्रौढ़ों को धर्म के दस व्यावहारिक साधनों का बोध कराया गया है।

मूल्य : २.५०

काशी का जुलाहा

श्री प्रेमचन्द्र महेश

मानव-मात्र को समान समझने वाले ऊँच-नीच के भेद-भावों तथा पाखण्डों के विरोधी सन्त कवि कबीर की जीवनी कथा तथा प्रेरणादायक वाणियाँ। मूल्य : २.००

मुक्ति-दूत

श्री शंकर सुलतानपुरी

अहिंसा, त्याग, सत्य एवं शान्ति के अग्रदूत गौतमबुद्ध की जीवनगाथा पर आधारित खण्ड-काव्य। मूल्य : २.५०

दूर हटो ए दुनिया वालो ! हिन्दुस्तान हमारा है

श्री जितेन्द्र कुमार मित्तल

अतीत और वर्तमान में भारत पर हुए आक्रमणों का सजीव वर्णन। भारतीयों की प्रेरणादायक वीरताभरी कहानियाँ।

मूल्य : २.२५

जब धरती डोलती है

श्रीव्यथित हृदय

भूकम्प और ज्वालामुखी के कारणों का वैज्ञानिक परिचय, भूगर्भशास्त्र के माध्यम से कराया गया है।

मूल्य : ३.००

ज्ञानदीप प्रकाशन

२००४, मलकागंज, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरस्कृत-अभिनन्दित

सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार भारत-रूस मैत्री को दृढ़ करने के लिए रूस सरकार द्वारा गत तीन वर्षों से भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। इस कड़ी का यह तीसरा पुरस्कार है जो हिन्दी उपन्यासकार श्री यज्ञदत्त शर्मा को प्रदान किया गया है। प्रथम वर्ष सन् १९६५ में यह पुरस्कार श्री सुमित्रानन्दन पन्त को 'लोकायतन' पर दिया गया था। सन् १९६६ में यह पुरस्कार श्री हरिवंशराय बच्चन को '६४ रूसी कविताएँ' (अनुवाद) पर दिया गया था।

श्री यज्ञदत्त शर्मा हिन्दी के जाने-माने उपन्यासकार हैं। आपका जन्म १८ जनवरी सन् १९१६ में उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के सरावा ग्राम में हुआ। आपने मेरठ कालेज से स्नातक और प्रयाग विश्वविद्यालय से सन् १९४१ में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की। विद्यार्थी काल में ही आपके तीन उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे। आपने अब तक लगभग चालीस उपन्यासों की रचना की है जिनमें छह उपन्यास उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं।

श्री यज्ञदत्त शर्मा के 'शिलान्यास' उपन्यास जिस पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार प्राप्त हुआ है, का नायक निकितिन अफनासी सन् १४६४ में दक्षिण भारत में आया। वह प्रथम रूसी यात्री था जो कैस्पियन और हिन्द महासागर को पार कर भारत आया। भारतीय जनता ने सहृदयतापूर्वक स्वागत किया और उसकी विकट परिस्थितियों में उसका साथ दिया। अफनासी ने भारत आकर भारत रूसी मैत्री का शिलान्यास किया।

'हिन्दी प्रकाशक' इस अवसर पर शर्मा जी को बधाई देता है और उनके चिरायु होने की कामना करता है।

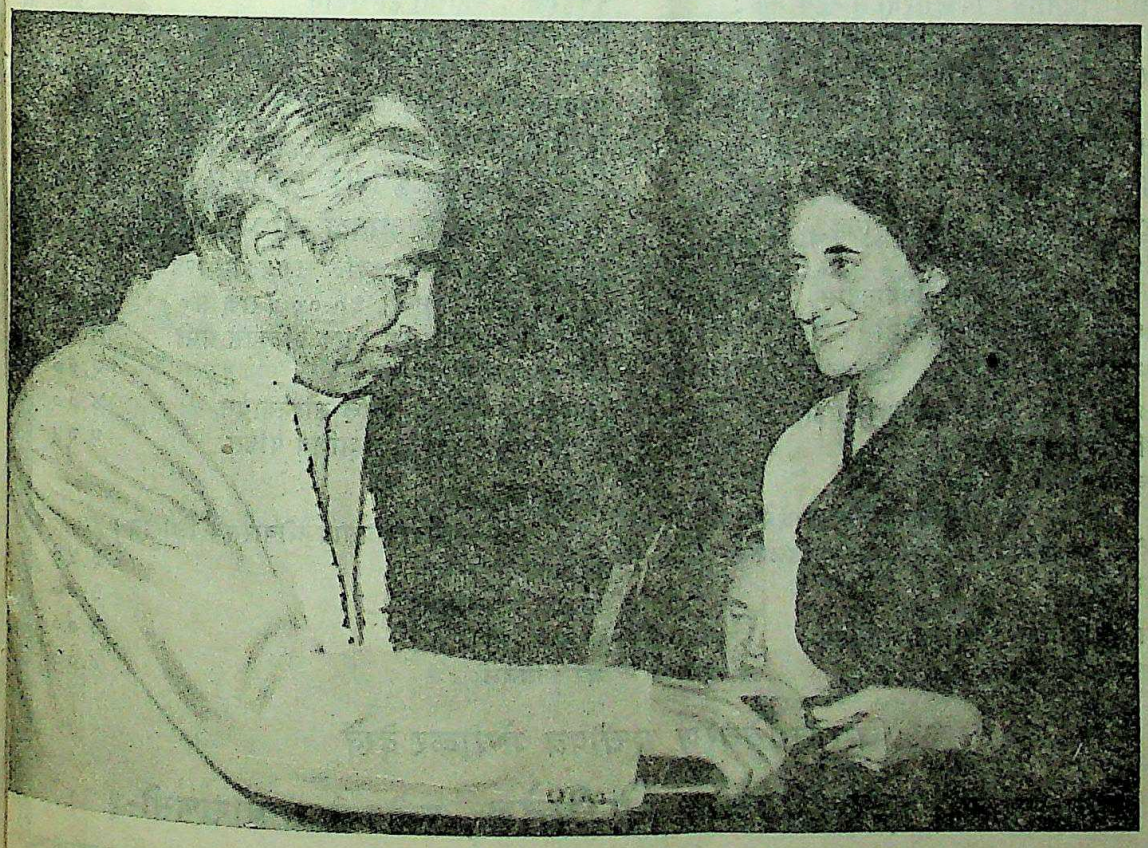

श्री यज्ञदत्त शर्मा प्रधान मन्त्री इन्दिरा गाँधी से १९६७ का 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' लेते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक और उपयोगी कुछ ग्रन्थ

कोश

बृहत् हिन्दी कोश (तीसरा सं०) ३०.००
ज्ञान शब्द कोश १५.००
हिन्दी साहित्य कोश (दो भाग क्रमशः)
२५.०० और २०.००
भाषा विज्ञान कोश २५.००
विधि शब्दावली (कानूनी शब्द) २.५०
वाङ्मयार्णव—पद्यबद्ध संस्कृत विश्वकोश १००.००
म० म० पाण्डेय रामावतार शर्मा
(१९६७ का प्रकाशन)
बृहत् अंग्रेज़ी हिन्दी कोश (दूसरा संस्करण) प्रेस में

संस्कृत ग्रंथ

(आचार्य विश्वेश्वर के हिन्दी भाष्य सहित)

काव्यप्रकाश १८.००
ध्वन्यालोक १२.००
निरुक्त १६.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति : विक्टोरिया से नेहरू तक :
रामगोपाल एम० ए० ११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान : डॉ० सम्पूर्णानन्द ११.००
चीन कल और आज : के० एम० पणिक्कर ५.००
राजनीतिशास्त्र : प्राणनाथ विद्यालंकार ४.५०

धर्म और दर्शन

विश्व के धर्म प्रवर्तक : रघुनाथ सिंह ६.५०
चिद्विलास : डॉ० सम्पूर्णानन्द ५.००
दर्शन का प्रयोजन : डॉ० भगवानदास ३.५०
नीतिशास्त्र : सुश्री शान्ति जोशी ८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार : कमलापति त्रिपाठी ६.५०
भारतीय पत्रकार कला ६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास :
अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ६.५०
आधुनिक पत्रकार कला : रा० र० खाडिलकर ४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान : हंसराज भाटिया ५.००
सामान्य मनोविज्ञान ,, ,, १०.००

संस्मरण

कुछ स्मरणीय मुकदमे : डॉ० कैलाशनाथ काटजू ८.००
मेरे बचपन की कहानी :
श्रीमती नयनतारा सहगल ६.००
महात्माजी और महाराज : झवेरी १.५०
कुछ स्मृतियाँ और कुछ स्फुट विचार :
डॉ० सम्पूर्णानन्द ६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना : रामनरेश वर्मा ४.५०
तुलसीदास और उनका युग :
डॉ० राजपति दीक्षित ८.००
धरातल : शान्तिप्रिय द्विवेदी २.७५
सामयिकी : शान्तिप्रिय द्विवेदी ६.००
विनयपत्रिका (विस्तृत टीका) :
देवनारायण द्विवेदी ६.००
साहित्य सौरभ (निबन्ध-संग्रह) : ब्रजमोहन वर्मा १२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन : महात्मा टालस्टाय ६.५०
कर्तव्याघात : देवनारायण द्विवेदी ५.००
प्रणय : ,, ,, ५.००
पश्चाताप : ,, ,, ४.२५
देशभक्त और देशद्रोही २.५०
गेंजी की कहानी : मुरासाकी शिकाबू ४.५०

इतिहास और आदर्श जीवन-चरित्र

अशोक के अभिलेख : डॉ० राजबली पाण्डेय
(साधारण सं०) ६०.०० (राज सं०) ७५.००
भारतवर्ष का इतिहास : एक इतिहास प्रेमी ८.००
आदि भारत : काश्यप १२.००
सरदार पृथ्वीसिंह : राहुल सांकृत्यायन ४.००
महर्षि कर्वे : प्रभाकर सदाशिव पंडित २.२५

विज्ञान

(प्रो० भगवती प्रसाद श्रीवास्तव लिखित)

विज्ञान की प्रगति ३.५०
विज्ञान के चमत्कार ३.००
परमाणु शक्ति ३.००
घरेलू बिजली ४.००

विस्तृत विवरण सूचीपत्र मँगाकर देखें

प्राप्ति स्थान : **ज्ञानमण्डल लिमिटेड**, कबीरचौरा, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की महिला प्रकाशक-१

श्रीमती शीला संधू

हिन्दी प्रकाशन क्षेत्र में अनेक महिलाएँ अवतरित हुई हैं उनमें विप्लव कार्यालय, लखनऊ की श्रीमती प्रकाशवती-पाल, भारतीय ज्ञानपीठ की अध्यक्षा श्रीमती रमा जैन, राजकमल प्रकाशन की मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीमती शीला सन्धू और नीलाभ प्रकाशन प्रयाग की श्रीमती कौशल्या अश्क। उपर्युक्त सभी महिलाओं ने हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय को उन्नत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राजकमल प्रकाशन की मैनेजिंग डायरेक्टर श्रीमती शीला संधू का परिचय इस परिचयमाला का प्रथम पुष्प है :

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्थापित राजकमल प्रकाशन ने गत दो दशकों में हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय को नयी दिशा प्रदान की है। ऐसे सुविख्यात प्रकाशन संस्थान की वर्तमान संचालिका श्रीमती शीला संधू ने, जो तीन वर्ष पूर्व ही राजकमल प्रकाशन में प्रविष्ट हुईं, हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय की समस्याओं को इतने अल्प समय में ही समझने, विचार करने और निराकरण का पूरा-पूरा प्रयास किया है।

आपका जन्म अविभाजित पंजाब में १९२६ ई० में हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से आपने भूगोल विषय लेकर एम० ए० परीक्षा दी और सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। बारह वर्ष तक आपने सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑव एजुकेशन, दिल्ली में अध्यापन कार्य किया। आपने चीनी भाषा सीखी और 'चीनी शिक्षा पद्धति पर पश्चिम का प्रभाव' विषय पर शोध करने के सिलसिले में चीन और जापान की यात्रा भी की।

१९६५ ई० में राजकमल प्रकाशन से सम्बद्ध हुईं और तदुपरान्त मैनेजिंग डायरेक्टर का दायित्व सम्भाला। इन तीन वर्षों में आपने पुस्तक व्यवसाय का आन्तरिक अध्ययन ही नहीं किया हिन्दी साहित्य जगत् से भी घनिष्ठ परिचय प्राप्त किया, जिससे वे अब तक सर्वथा अपरिचित थीं। ऐसी प्रतिभाएँ हिन्दी प्रकाशन व्यवसाय को उन्नत बनाने के साथ-साथ श्रेष्ठ हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशन का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी।

आपके पति, जिन्होंने अत्यन्त स्नेह और सौजन्यपूर्वक प्रकाशक संघ की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का भोजन पर स्वागत किया, आयात-निर्यात की एक बड़ी संस्था से सम्बद्ध हैं। आपके परिवार में तीन प्रतिभाशाली बच्चे हैं।

—श्रीकांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारक संस्थान
नयी योजनाओं
नये प्रकाशनों
एवं नयी गतिविधियों
के साथ—
आपका हार्दिक स्वागत
करता है !

• • • • • •

व्यवस्था :
कृष्णचन्द्र बेरी
एण्ड संस

संस्थान के नवीनतम प्रकाशनों के सम्बन्ध में
विस्तृत जानकारी के लिए कृपया इस पते
पर लिखें :

हिन्दी प्रचारक संस्थान
(पो० बॉ० सं० १०६)
सी० २१।३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१

फोन : २११४
तार : प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्हण कृत : **राजतरंगिणी** •
भाष्यकार : **रघुनाथ सिंह**
संस्कृत काव्य-साहित्य की एक अनुपम कृति का अध्ययन विश्लेषण। मूल्य ४०.००

प्रतापनारायण श्रीवास्तव : **वन्दिता** •
मोहक और मर्मस्पर्शी भावभूमि, रोचक कथानकवाला
अनुपम सामाजिक उपन्यास। मूल्य ५.००

डॉ० शिवप्रसाद सिंह : **हिन्दी निबन्ध** •
हिन्दी के शीर्ष नये-पुराने निबन्धकारों के श्रेष्ठ निबन्धों का संकलन। मूल्य ४.००

रामगोपाल शर्मा 'रुद्र' : **द्रोण** •
भारतीय-संस्कृति के कालग्रही व्यक्तित्व पर आधारित खण्ड-काव्य। मूल्य ३.००

रघुनाथ सिंह : **बुद्ध-कथा** •
रोचक और दिशा-निर्देशी बुद्ध कथाएँ। मूल्य १५.००

एक कौड़ी एक •
बेढब बनारसी, विश्वनाथ मुखर्जी और डॉ० भानुशंकर मेहता द्वारा
सम्पादित हास्य-व्यंग कृति। मूल्य ५.००

यादवेन्द्र दत्त दुबे : **वन-पशुओं के बीच में** •
हिन्दी साहित्य की अनूठी शिकार-कथाएँ। मूल्य ४.००

शारीरिक शिक्षा की रूपरेखा •
जितेन्द्र कुमार पाठक : अम्बिका प्रसाद द्विवेदी
शिशु पाठशालाओं के लिए अपने विषय की अद्वितीय पुस्तक। मूल्य १.५०

संस्थान के नये प्रकाशन

•
•
•
•

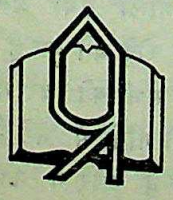

हिन्दी प्रचारक संस्थान

(पो० बॉ० सं० १०६)
सी० २१।३०, पिशाचमोचन, वाराणसी-१
फोन : २११४ तार : प्रकाशक

शाखाएँ :
कलकत्ता
लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का प्रकाशन और सरकार

रघुवीरशरण बंसल

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के तत्वावधान में द्वितीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर २३ दिसम्बर १९६७ को एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस गोष्ठी में एक पत्र डॉ० गोपाल शर्मा, सम्पादक—केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली ने एक प्रबन्ध पढ़ा था जिसमें आपने कहा था कि—

"इस कार्य के लिए सक्षम प्रकाशकों से सहयोग भी प्राप्त करने की आवश्यकता है। प्रकाशकों के अनुभवों से सरकार का लाभ उठाना सभी के हित में होगा। परन्तु एक बात से मैं आपको आगाह कर देना चाहता हूँ। यह लाभ कमाने का वक्त नहीं है। इस समय कम से कम लाभ द्वारा यदि भाषाओं को उनके उचित स्थान पर बैठाया जा सके तो आपकी अनेक पीढ़ियाँ लाभ ही उठा सकेंगी, नहीं तो आरम्भ में ही यह प्रयोग खटाई में पड़ जायेगा। भारत सरकार की प्रकाशकों के सहयोग से चलने वाली योजना का पूरा उपयोग करें। उससे आपको पुस्तक प्रकाशन की लागत तो मिल ही जाती है। इस व्यवस्था में जो देरी होती है, उसका हल प्रस्तावित बोर्ड में खोजने की कोशिश की जा सकती है।"

इसी गोष्ठी के दूसरे प्रबन्ध का पठन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के मुख्य वैज्ञानिक अधिकारी, डॉ० ओमप्रकाश शर्मा द्वारा किया गया था और उन्होंने भी अपने इस प्रबन्ध में यह शिकायत की थी कि केन्द्रीय सरकार को विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने में प्रकाशकों का सहयोग नहीं मिल पा रहा है।

यह बात सत्य है कि वैज्ञानिक शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन में भारतीय प्रकाशक बहुत कम रुचि ले रहे हैं। जिन प्रकाशकों ने इस आयोग की एक या दो पुस्तकें छापी भी हैं, वे भी इस गलती पर पछता रहे हैं और भविष्य के लिए यही सोचते हैं कि वे और कोई काम कर लें किन्तु आयोग की पुस्तकें प्रकाशित न करें।

जब सरकारी मंच से प्रकाशकों के लिए कर्तव्य-परायणता का उपदेश दिया जाता है और कहा जाता है कि लाभ को छोड़ दें तब एक हास्यप्रद स्थिति उत्पन्न होती है। क्या भारतीय सरकार ने प्रकाशकों के लिए कोई क्षेत्र छोड़ा भी है। प्राइमरी और माध्यमिक विद्यालयों की पुस्तकें राष्ट्रीयकरण में सरकार द्वारा छप चुकी हैं। अतः जो लाभ पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशकों को होता था वह अब सरकार स्वयं उठा रही है। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त सरकार ने अपने संस्थान और अर्ध-सरकारी संस्थानों द्वारा सामान्य पुस्तकों का प्रकाशन भी प्रारम्भ कर दिया है। इस सन्दर्भ में पब्लिकेशन डिवीजन, नेशनल बुक ट्रस्ट, चिलड्रन्स बुक ट्रस्ट एवं अन्य प्रान्तीय स्तर की बहुत-से साहित्य-संस्थानों का नाम लिया जा सकता है। सरकार द्वारा प्रकाशित इन सामान्य पुस्तकों की जब जन-मानस में बिक्री न हुई और सरकारी गोदाम भरने लगे तो सरकार ने एक नया ढंग इस्तेमाल किया। उसने हायर सेकेण्डरी स्कूलों और सरकारी व्यय पर चलने वाली संस्थाओं तथा पुस्तकालयों को आदेश दिया कि वे सरकार तथा अर्ध सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को अपने पुस्तकालय बजट में से अवश्य खरीदें। यह कितनी विडम्बना है कि सरकार पुस्तकें छपवाने के लिए प्रथम राष्ट्रीय धन का दुरुपयोग करे और उसके पश्चात् स्वयं ही राष्ट्रीय धन से खरीद ले। इस स्थिति को देखते हुए आज सामान्य साहित्यिक प्रकाशकों के सामने एक प्रश्न है कि वे पुस्तक प्रकाशन का व्यवसाय करें भी अथवा नहीं ?

पुस्तकों के प्रकाशन में टेण्डर प्रणाली तथा अन्य नित्यप्रति के सरकारी व्यवधान मार्ग में रोड़े बने हुए हैं। पुस्तकों के लिए पोस्टेज और रेल-भाड़ा सभी की दर भी काफी मँहगी है और सामान्य पाठक, जो गाँवों में बैठे हैं, जिनके पास न तो कोई पुस्तक-विक्रेता है और न कोई अन्य साधन, वे भी पोस्टेज के कारण पुस्तकें नहीं मँगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते। अतः जब सरकार ने चारों ओर से पुस्तक-प्रकाशन व्यवसाय पर प्रतिबन्ध लगा दिये हैं, उस अवस्था में प्रकाशक किसी प्रकार भी सम्पन्न नहीं हो सकता और वह किस प्रकार मुनाफे की बात सोचेगा। किन्तु सरकार की कहने की बातें और हैं और करने की और। सरकारी अधिकारियों की प्रकाशकों को उलाहना देने की आदत पड़ गयी है और प्रकाशकों को सुनने की। दोनों ही अपनी जगहों पर अडिग हैं और इस प्रकार सरकारी योजनाएँ कागजी योजनाएँ बन कर ही लालफीताशाही के ढेर में दब जाती हैं।

इसी गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ० नगेन्द्र ने कहा था कि, "विश्वविद्यालय स्तरीय पुस्तक प्रकाशन योजना जो सरकार द्वारा चलाई गई है, उस पर ८० प्रतिशत व्यय तो कार्यालय कार्यवाही में ही लग जाता है और २० प्रतिशत या उससे भी कम धन पुस्तक प्रकाशन पर लगता है। वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग ने जिन पुस्तकों का प्रकाशन विश्वविद्यालय अथवा अर्ध-सरकारी संस्थान से कराया, उनकी बिक्री नहीं हुई और वे उनके गोदामों में काफी मात्रा में भरी पड़ी हैं। उनके सामने भी यह चिन्ता है कि पुस्तकें तो प्रकाशित हो गई हैं किन्तु इनको कहाँ बेचा जाय और आज प्रत्येक विश्वविद्यालय इस योजना से मुक्त होना चाहता है।"

वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग की पुस्तकें प्रकाशित करना क्या प्रकाशकों के लिए लाभप्रद है, इसका एक उदाहरण मैं इस लेख में प्रकट करना चाहता हूँ। इस आयोग की कुछ बातें बड़ी ही दोषपूर्ण हैं, जिनके कारण प्रकाशक एक बार पुस्तक प्रकाशित करके दुबारा पुस्तक प्रकाशित नहीं करना चाहता—

१. आयोग द्वारा ३००० प्रतियाँ प्रकाशित करवाने पर केवल १००० प्रतियाँ ही खरीदी जाती हैं। शेष २००० प्रतियों की बिक्री के बारे में कोई व्यवस्था नहीं होती।

२. आयोग जब १००० पुस्तकें खरीदता है तब ३००० प्रतियों की रायल्टी जो ६ प्रतिशत के हिसाब से बनती है, उसे १००० पुस्तकों के बिल में से ही मुजरा कर लेता है। इस प्रकार प्रकाशक की पुस्तकें बिकें या न बिकें, रायल्टी सभी पुस्तकों पर देनी पड़ती हैं।

३. आयोग द्वारा अनुवाद तथा कापी राइट फीस अनुमानतः पूरी पुस्तक पर १४ से १५ प्रतिशत के करीब बैठती है और यह राशि भी १००० पुस्तकों के बिल में से मुजरा की जाती है।

४. आयोग पुस्तकों का मूल्य निर्धारित करते समय भारत सरकार के कन्ट्रोलर, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी, नयी दिल्ली १९५८ के शिड्यूल की दरों के अनुसार मूल्य निर्धारित करता है जो आज के छपाई के व्यय को देखते हुए बहुत ही कम हैं।

५. आयोग अनुवाद-व्यय को पुस्तक के व्यय में जोड़ता तो है किन्तु उस पर कोई अधिक व्यय नहीं देता और जब आयोग पुस्तकें खरीदता है तो कमीशन के रूप में २५ प्रतिशत प्राप्त करता है। इस प्रकार आयोग अनुवाद के व्यय में प्रकाशकों से २५०० से लेकर ३००० रु० तक प्राप्त करता है किन्तु २५ प्रतिशत कमीशन देने के कारण प्रकाशकों को ७००-८०० रु० की नैट हानि होती है।

आयोग की इस योजना से केवल १००० पुस्तकों के ही खरीदने का आकर्षण है और इसके लिए कितनी ही सरकारी अड़चनें हैं। प्रारम्भ में जब यह योजना कार्यरूप में हिन्दी प्रकाशक संघ के सम्मुख आयी तब हिन्दी प्रकाशक के सम्पादकीय लेखों में भी इसकी आलोचना की गयी थी। मैं स्वयं डॉ० ओमप्रकाश शर्मा से इस विषय में कई बार मिला भी, किन्तु मुझे किसी प्रकार का स्पष्टीकरण नहीं मिल सका। इस सन्दर्भ में मैंने एक प्रकाशक, जिसने आयोग की पुस्तक छापी थी, मैसर्स बुकलैंड, चूड़ीवालान्, दिल्ली से मिला और उनसे सारी स्थिति ज्ञात हुई। उनके आँकड़े मैं इस लेख में देकर बताना चाहता हूँ कि वास्तव में आयोग की योजना अपने में कितनी भ्रममूलक है। यह एक चक्रव्यूह है, जिसमें एक प्रकाशक जब अभिमन्यु की भाँति फँस जाता है तो आयोग के द्वारा जीवित बचकर नहीं निकलता।

मैसर्स बुकलैण्ड इण्डिया, चूड़ीवालान्, दिल्ली ने एक पुस्तक 'चिकित्सा और मानव' प्रकाशित की। यह पुस्तक डिमाई आकार की ३१२ पृष्ठों की है। जिल्द बँधाई, जुजबन्दी द्वारा की गई है और उत्तम कार्ड-बोर्ड लगाया गया है। आवरण पृष्ठ रंगीन है। पुस्तक में ४४ पौण्ड का एंटिक कागज लगाया गया है। इस पुस्तक का मूल्य आयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने केवल ७.७० पै० ही निर्धारित किया है।

१००० प्रतियाँ खरीदने पर प्रकाशक का ५७७५ रु० का बिल बैठा जिसमें आयोग ने ४६४१.९९ पै० बिल में से मुजरा करके प्रकाशक को ११३३.०१ पै० वापस दे दिया। इन ४६४१.९९ पै० का विवरण इस प्रकार है :—

२७३०.९९ पै०	अनुवाद-व्यय
१३८६.०० पै०	६ प्रतिशत रायल्टी ३००० पुस्तकों की बिक्री पर
५२५.०० पै०	कापीराइट फीस
४६४१.९९ पै०	

'चिकित्सा और मानव' यदि की ३००० प्रतियाँ पूरी बिक जाएँ तो उसके मुद्रित मूल्य के अनुसार २३,००० रु० की बिक्री होती है, जिस पर रायल्टी व्यय की मद में प्रकाशक से ४६४१ ९९ पै० लिए गए हैं। इस प्रकार यह रायल्टी की दर २० प्रतिशत से अधिक ही बैठती है जो कि कोई भी प्रकाशक चाहे देश का हो, या विदेश का, नहीं दे सकता। इस रायल्टी में किसी प्रकार की गड़बड़ी की सम्भावना तो है ही नहीं, क्योंकि उन्होंने यह रायल्टी १००० पुस्तकों के बिल में से अग्रिम ही ले ली है।

प्रकाशक को २७३०.९९ पै० अनुवाद व्यय के पूरी पुस्तक के दिये गये, अर्थात् ९१ पैसे प्रति पुस्तक अनुवाद-व्यय में जोड़े गये हैं। उस पर २५ प्रतिशत कमीशन काटा गया है। इस तरह प्रकाशक को अनुवाद-व्यय में ६८२ रु० की लागत मूल्य में हानि हुई है।

१००० पुस्तकों की बिक्री पर ३००० पुस्तकों की रायल्टी ले लेना यदि छल-प्रपंच नहीं तो और क्या है? रायल्टी उतनी ही पुस्तकों पर ली जाती है, जितनी बिक जाएँ।

इस प्रकाशक ने बताया कि मैंने इस पुस्तक पर ९००० रु० लगाये थे। ४६४१.९९ पै० आयोग को दिये और उसके बदले में मुझे ५७७५ रु० ही मिले। इस प्रकार अभी तक प्रकाशक का ७८६७ रु० फँसा हुआ है और अधिकारीगण कहते हैं कि सरकारी योजना से आपको पुस्तक-प्रकाशन की लागत तो मिल ही जाती है।

यदि भारत सरकार का शिक्षा मन्त्रालय यह चाहता है कि विश्वविद्यालय स्तर पर प्रकाशन हो तब वह अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के प्रतिनिधियों, शिक्षा-शास्त्रियों एवं शिक्षा मन्त्रालय के अधिकारियों का एक गोलमेज़ सम्मेलन आमन्त्रित करें। सभी पक्ष अपनी-अपनी कठिनाइयों का इसमें निराकरण करके ऐसी योजना बनाएँ, जिससे पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित हों और विद्यार्थियों को पुस्तकें मिल सकें। इसी के साथ उनके मूल्य भी कम-से-कम रखे जाएँ, जिससे विद्यार्थियों को पुस्तकें खरीदने में कोई कठिनाई न हो।

आयोग द्वारा जो पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं, वे विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त विशेष अध्ययन की पुस्तकें हैं जिनका क्रय सामान्य विद्यार्थी बहुत ही कम कर पाएँगे और इसका उपयोग विशेष अध्ययन के छात्र तथा विषय-विषयक अध्यापक ही कर सकेंगे। इस-लिए इन पुस्तकों की बिक्री उन कॉलेज पुस्तकालयों में अत्यावश्यक है, जिनमें हिन्दी के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था है। इस सन्दर्भ में मैंने डॉ० ओमप्रकाश शर्मा से कहा था कि वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से इस सम्बन्ध में सम्पर्क स्थापित करके ऐसी योजना बनाएँ, कि प्रत्येक हिन्दी क्षेत्र का कॉलेज आयोग द्वारा प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक की कम से कम तीन और अधिक से अधिक पाँच प्रतियाँ तो अपने पुस्तकालय के लिए अवश्य ही खरीदे। चाहे इसके लिए वह उस अनुदान का उपयोग ही करे जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पाठ्य-पुस्तकों के क्रय के लिए दिया जाता है। इस योजना से आयोग द्वारा प्रकाशित सारी पुस्तकें कालेज पुस्तकालयों में पहुँच जाएँगी और विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाने-पढ़ने में सुविधा होगी। किन्तु आयोग ने इस योजना पर भी अभी तक कोई विचार नहीं किया।

अतः दोनों ही कार्यों में सुधार होना आवश्यक है। (१) पुस्तकें प्रकाशकों द्वारा छापकर अधिक से अधिक प्रचारित की जाएँ, और (२) सरकार भी उनके प्रचार में अधिकाधिक योग दे। पुस्तकों का मूल्य सस्ता हो और प्रकाशकों को हानि न हो, उसी अवस्था में यह कार्य हो सकेगा अन्यथा आयोग ने जो पुस्तकें विश्वविद्यालयों द्वारा अथवा अर्ध-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित की हैं, उसमें

(शेष पृष्ठ ३७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ३२ का शेष)

राष्ट्रीय धन तो लगा हुआ है ही, उसके साथ ही गोदाम-व्यवस्था में भी और धन-व्यय करना पड़ेगा और जिस उद्देश्य के लिए पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं, वह पूर्ण न होगा। हमें आशा है, सरकार और उसके अधिकारी इस तथ्य को विचार कर प्रकाशकों को ताड़ना अथवा लांछित करने के स्थान पर उनके साथ सहयोग और सद्भावना का व्यवहार करेंगे जिससे कि यह योजना फलीभूत हो और राष्ट्रीय धन का भी दुरुपयोग न हो। यदि यह योजना केवल कल्पना मात्र ही है तो इसे शीघ्र ही बन्द किया जाय और राष्ट्रीय धन का दुरुपयोग होने से रोका जाय क्योंकि भारत सरकार का राष्ट्रीय धन किसी और का नहीं, वरन् भारतीय जन-मानस का है और उसका सदुपयोग करवाना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है।

यदि आप चाहते हैं कि···

'हिन्दी प्रकाशक'

आपको नियमित रूप से हर मास प्राप्त होता रहे तो इसका वार्षिक मूल्य छः रुपये भेजकर इसके वार्षिक ग्राहक बन जाएँ।

व्यवस्थापक :

'हिन्दी प्रकाशक'

७/१६ दरियागंज, दिल्ली-६

हमारे प्रमुख प्रकाशन

संस्कृत-साहित्य

संस्कृत-व्याकरण : डॉ० कपिलदेव द्विवेदी	१२.५०
प्रौढ रचनानुवादकौमुदी : डॉ० कपिल द्विवेदी	१०.००
रचनानुवादकौमुदी : डॉ० कपिलदेव द्विवेदी	३.८०
प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी : डॉ० कपिलदेव द्विवेदी	१.५०
संस्कृत शिक्षा, भाग १ से ५ : डॉ० कपिलदेव द्विवेदी	६.५०
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश संग्रह : डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा रविनाथ मिश्र	१२.५०
वेदचयनम् : विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी	६.५०
किरातार्जुनीयम्-सर्ग १ : डॉ० राजमणि पाण्डेय	१.००
कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय) : ,,	१.००
कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) : त्रिपाठी तथा सनाढ्य	३.००
भोज-प्रबन्ध (संक्षिप्त) : डॉ० देवर्षि सनाढ्य	१.५०
चन्द्रालोक (पंचम मयूख) : विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी	४.००
भामिनी विलास (अन्योक्ति) : जनार्दन शास्त्री	२.५०

इतिहास और संस्कृति

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ : डॉ० श्रीराम गोयल	२०.००
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ : ,,	६.००
भारतीय संस्कृति : डॉ० लल्लनजी गोपाल तथा डॉ० ब्रजनाथसिंह यादव	५.००
Studies in Indian Art : V. S. Agrawal	25.00
Dupleix and Clive : H. H. Dodwell	15 00
India Under Wellesley : P. E Roberts	15.00

साहित्य-सिद्धान्त और समीक्षा

काव्यशास्त्र : डॉ० भगीरथ मिश्र	१०.००
पाश्चात्य साहित्यालोचन और हिन्दी पर उसका प्रभाव : डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा	६.००
समीक्षालोक : भगीरथ दीक्षित	१०.००
साहित्य का मूल्यांकन : ले० डब्ल्यू० बी० वर्सफोल्ड, अनु० डॉ० रामचन्द्र तिवारी	३.००
सृजन के आयाम : ज्वालाप्रसाद खेतान	४.५०
हिन्दी का गद्य साहित्य : डॉ० रामचन्द्र तिवारी (द्वितीय संस्करण)	१५.००
छायावादोत्तर हिन्दी-गद्य-साहित्य : डॉ० विश्वनाथ तिवारी	१५.००
मध्ययुगीन काव्य साधना : डॉ० रामचन्द्र तिवारी	४.५०
कामायनी-विमर्श : भगीरथ दीक्षित	१०.५०

विश्वविद्यालय प्रकाशन, भैरवनाथ, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साहसपूर्ण चरण

हिन्दी के अनुवाद-साहित्य की गौरवमय परम्परा में दो नवीन संयोजन

● बेगम मेरी विश्वास

विमल मित्र

भारत में अंग्रेज़ व्यापार करने आये, लेकिन शासक बन बैठे। कैसे ? इसका उत्तर देने में ऐतिहासिक एक-मत नहीं हैं। मध्ययुग के अवसान और आधुनिक युग के पदार्पण का वह संधिकाल था। सिराजुद्दौला सूबे बंगाल का नहीं, तत्कालीन भारत का सर्वाधिक विवादपूर्ण व्यक्तित्व है। उसने आनेवाली पीढ़ियों के सामने एक महान् सत्य को प्रकट किया—जनसाधारण के चरित्र-दोष से ही राज्य नष्ट होता है। बंगला के श्रेष्ठ उपन्यासकार विमल मित्र ने अठारहवीं सदी के बंगाल का जो इतिहास 'बेगम मेरी विश्वास' में उपस्थित किया वह इतिहास से अधिक सत्य है। यह उस काल का सत्य है, उस काल के जन-जीवन का सत्य है जो शाश्वत भी है और ऐतिहासिक भी।

● डिमाई साइज ● चौरंगा कवर ● पृष्ठ संख्या लगभग ६०० ● मूल्य लगभग २८·००

● लाल किला

प्रमथ नाथ बिशी

इस उपन्यास का नायक है दिल्ली। दिल्ली—इस नाम में कितना रहस्यमय आकर्षण है ! दिल्ली पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक भारत का मर्मस्थल है। लाल किला उसी दिल्ली का प्रतिनिधि और उत्थान-पतन का मूक साक्षी है। दिल्ली और लाल किले के माध्यम से विगत शती के जीते-जागते वर्तमान को लेखक ने पाया और उसका तथ्य-निष्ठ चित्रण किया है। राजे-रजवाड़ों की लड़ाई में जनता किस तरह पिसती है, यह १८५७ में ही पहली बार देखा गया। उसी दुर्योग में जनता की कराह गगनभेदी हो गई थी। बिशीजी बंगला के यशस्वी उपन्यासकार हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के क्षेत्र में उनका विशिष्ट अधिकार है। 'कैरी साहब का मुंशी' के बाद यह उनका उल्लेखनीय सर्जन है।

● डिमाई साइज ● चौरंगा कवर ● पृष्ठ संख्या ६६८ ● मूल्य २२·००

दोनों महान् ऐतिहासिक उपन्यास जनवरी में प्रकाश्य

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

३ राउण्ड बिल्डिंग, बम्बई-२ १७ महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पुस्तक व्यवसाय में एक अभिनव प्रयोग

हिन्दी बुक सैन्टर

आज हिन्दी जनभाषा ज्ञानभाषा से आगे बढ़कर राजभाषा की ओर अग्रसर हो रही है। ऐसी स्थिति में हिन्दी प्रकाशकों और विक्रेताओं का दायित्व बहुत बढ़ गया है। हिन्दी में आज विविध विषयों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं किन्तु उनके विक्रय अथवा उपलब्धि की केन्द्रीय व्यवस्था न होने के कारण पाठकों से उनका मिलन नहीं हो पाता। इस दृष्टि से २८ नवम्बर से १ दिसम्बर १९६७ तक हिन्दी बुक सेन्टर, दरियागंज, दिल्ली में १९६६-६७ में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी आयोजित हुई। श्री रामधारीसिंह दिनकर ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् पुस्तक-व्यवसाय पर एक गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें सर्वश्री हरिवंशराय बच्चन, डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, डॉ० नगेन्द्र, अज्ञेय और कुलभूषण ने अपने विचार व्यक्त किये।

दिनकर जी ने कहा—"आज हिन्दी का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। एक प्रदेश के प्रकाशनों की जानकारी दूसरे प्रदेशों तक पहुँचाने के लिए इस प्रकार की पुस्तक-प्रदर्शनियाँ अच्छा माध्यम हैं। इस प्रदर्शनी में इन दो वर्षों में छपी लगभग ६०० हिन्दी पुस्तकें प्रदर्शित की गई हैं। इस संग्रह को देख कर ज्ञात होता है कि हिन्दी में काफी पुस्तकें आ रही हैं।"

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के प्रवाचक श्री विजयेन्द्र स्नातक ने हिन्दी में व्यक्तिगत पाठकों की कमी पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा—"आज पुस्तकों की बिक्री केवल पुस्तकालयों तक सीमित रह गई है। यह उत्कृष्ट साहित्य के प्रकाशन में बाधा है। हिन्दी की बिक्री कम होने का कारण बताते हुए कहा जाता है कि हिन्दी की पुस्तकें महँगी हैं लेकिन यह वास्तविकता नहीं है। हिन्दी की पुस्तकें अंग्रेजी पुस्तकों की अपेक्षा सस्ती हैं।"

"लेखक, विक्रेता और प्रकाशक इन तीनों का उत्साह पाठकों की वृद्धि से बढ़ सकता है लेकिन मुझे खेद से कहना पड़ता है कि हिन्दी के लेखक और अध्यापक जिनकी जीविका का साधन पुस्तक और लेखनी है वे भी पुस्तकें खरीदकर नहीं पढ़ते। अब सुना गया है कि विदेशों में हिन्दी की पुस्तकें जाने लगी हैं। इससे हो सकता है प्रकाशन-व्यवसाय की स्थिति सुधरे।"

हिन्दी के मूर्धन्य कवि संसद सदस्य डॉ० हरिवंशराय बच्चन ने कहा—"यदि अब तक हमारा देश पिछली कुछ शताब्दियों में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक कृतियाँ नहीं दे सका तो उसका कारण हमारी दो सौ वर्ष की गुलामी थी। हम गुलामी के कारण कुछ आलसी और कुंठित हो गये थे। अंग्रेजी में छपे ज्ञान-विज्ञान को हिन्दी में अनूदित करने की हमारे देशवासियों को आदत पड़ गई थी वर्ना हमारे ही पूर्वज पानी की कड़ियों से तारों और नक्षत्रों की चाल का पूरा हिसाब रख सकने में समर्थ थे, बिना यन्त्रों के, वे महत्वपूर्ण खोजें किया करते थे।"

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सहायक निदेशक श्री कुलभूषण ने पिछले बीस वर्षों के प्रकाशनों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा—"ज्ञान-वर्धन का साहित्य भारत में कम लिखा जाता है, वह इसलिए कि उसकी मांग कम है। विज्ञान विषय के लिए आमतौर पर अंग्रेजी की शरण ली जाती रही है। बाल साहित्य में आकर्षण गुण का विकास बेशक हुआ है किन्तु विषय वस्तु की ओर उदासीनता बरती गई है। स्कूली पुस्तकों का स्तर घटा है। शायद यह स्तर तब तक ऊँचा न होगा जब तक सरकार उनके चुनाव के बारे में निष्पक्ष ढंग नहीं अपनाएगी। कालेज स्तर की पुस्तकें हिन्दी में बहुत कम है और वे तब तक कम रहेंगी जब तक अंग्रेजी चलती रहेगी। तकनीकी साहित्य की कमी हिन्दी में अब तक है।"

पुस्तक उद्योग के विकास में बाधाओं की चर्चा में श्री कुलभूषण ने टेंडर प्रणाली और डाकखर्च का भी उल्लेख किया। (शेष पृष्ठ ४१ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ समाचार

संघ कार्य-समिति की बैठक

राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के अवसर पर संघ की कार्यसमिति की एक बैठक शुक्रवार दिनांक २२-१२-१९६७ को अपराह्न ३-३० बजे हिन्दी बुक सेंटर, दरियागंज, दिल्ली में श्री कृष्णचन्द्र बेरी की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में निम्नलिखित विषयों पर विचार हुआ :

१. आगरा कार्यसमिति की कार्रवाई की पुष्टि हुई।

२. आगामी वर्ष के सभापति पद के लिए श्रीकृष्णचन्द्र बेरी के ४, श्री कन्हैयालाल मलिक के ३, श्री रामलाल पुरी के २ तथा श्री भोलानाथ अग्रवाल के एक नामांकन पत्र प्राप्त हुए। श्री भोलानाथ अग्रवाल ने अस्वस्थता के कारण पत्र लिख कर सभापति पद के लिए अपना नामांकन स्वीकार न करने का अनुरोध किया। अध्यक्ष श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने सुझाव दिया कि सभापति पद पर नये व्यक्ति को ही आने देना चाहिए।

३. आगामी अधिवेशन के सम्बन्ध में कानपुर तथा हैदराबाद के प्रस्तावों पर विचार हुआ। निश्चय हुआ कि आगामी वर्ष के अध्यक्ष के चुनाव के पश्चात् अधिवेशन स्थल का निर्णय किया जाय।

४. संघ को फेडरेशन से सहयोजित करने पर विचार हुआ, इस सम्बन्ध में फेडरेशन के अध्यक्ष श्री दीनानाथ मल्होत्रा से सम्पर्क कर सहयोजन की रूपरेखा अगली कार्य-समिति में प्रस्तुत करने का निश्चय किया गया।

५. राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तक मेला में संघ द्वारा आयोजित दो गोष्ठियों तथा कवि सम्मेलन के लिए बजट स्वीकार किया गया।

६. श्री प्रेमनारायण गुप्त, संचालक प्रभाकर पुस्तक मन्दिर, आगरा की मोटर दुर्घटना में हुई मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

७. राष्ट्रीय पुस्तक समारोह के अवसर पर श्री अमरनाथ ने स्टार बुक सेंटर में सदस्यों को चाय पान कराया, श्री दयानन्द वर्मा तथा श्री गोविन्दवर्मा ने अपने निवास-स्थान जंगपुरा में २२ दिसम्बर को रात्रि-भोज पर आमन्त्रित किया। २३ दिसम्बर शनिवार को श्री कन्हैयालाल मल्लिक, संचालक नेशनल पब्लिशिंग हाउस ने सदस्यों को यार्क होटल में मध्याह्न भोजन पर तथा श्रीमती शीला संधू मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० ने अपने निवासस्थान में रात्रि-भोज पर आमन्त्रित किया।

८. राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर संघ ने २४ दिसम्बर, १९६७ को दिल्ली में एक प्रैस कान्फ्रेन्स बुलाई जिसमें पुस्तकों के प्रकाशन, प्रचार, प्रसार तथा पठन-रुचि के विकास के सम्बन्ध में संघ के अधिकारियों ने पत्रकारों से वार्ता की और समाचारपत्रों से पुस्तक प्रसार अभियान में सहयोग देने की कामना की।

महानगर परिषद्, दिल्ली से संघ के प्रतिनिधि-मण्डल की भेंट

संघ का एक प्रतिनिधि-मण्डल २९ नवम्बर, १९६७ को महानगर परिषद्, दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा से दिल्ली की शिक्षा-संस्थाओं में पुस्तकालयों के लिए पुस्तकें खरीद करने की प्रथा में व्याप्त भ्रष्टाचार में सुधार करने का अनुरोध किया। प्रतिनिधि-मण्डल ने निम्नलिखित माँगें प्रस्तुत कीं—

(क) टेंडर प्रथा समाप्त कर कमीशन की एक उचित दर निश्चित कर दी जाय।

(ख) पुस्तकों के लिए अनुदान वित्तीय वर्ष की समाप्ति के तीन-चार महीने पूर्व ही दिया जाना चाहिए ताकि जल्दी में घटिया साहित्य न खरीद कर सुविधा से सत्साहित्य खरीदा जा सके।

(ग) पुस्तकों के लिए आवंटित रकम में जो कटौती की गई है उसे समाप्त कर रकम और बढ़ा देनी चाहिए और किसी भी स्थिति में पुस्तकों पर व्यय की जाने वाली रकम घटानी नहीं चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधि-मंडल के सदस्य थे सर्वश्री सत्यप्रकाश (राजकमल प्रकाशन), कन्हैयालाल मलिक (नेशनल पब्लिशिंग हाउस), श्रीनारायण दत्त मिश्र (बाल साहित्य प्रकाशन), प्रो० धर्मचन्द संत (सहयोगी), दयानन्द वर्मा (पंजाबी पुस्तक भण्डार), रमेश सन्त (उमेश प्रकाशन), रामतीर्थ भाटिया (राजधानी ग्रन्थागार)।

ग्रामों में पुस्तक प्रसार

यूनेस्को के सहयोग से संघ द्वारा संचालित ग्रामों में पुस्तक-प्रसार-योजना का प्रतिवेदन (रिपोर्ट) हिन्दी तथा अंग्रेजी में संघ के अध्यक्ष तथा योजना के निदेशक श्री कृष्णचन्द बेरी ने प्रस्तुत कर दिया है। चित्रों सहित, डिमाई आकार में सुन्दर आवरण सहित मुद्रित यह प्रतिवेदन संघ के दिल्ली कार्यालय में उपलब्ध है।

●

(पृष्ठ ३९ का शेष)

अन्त में प्रदर्शनी के संयोजकों की ओर से श्री दयानन्द वर्मा ने कहा—"प्रकाशक कहते हैं कि पुस्तक बिकती नहीं, पाठक कहते हैं कि उन्हें उनकी मनपसन्द पुस्तक मिलती नहीं—दोनों ही अपनी जगह सही हैं। उन दोनों की शिकायत का मुख्य कारण यह है कि पुस्तक और पाठक के बीच की कड़ियाँ स्पष्ट नहीं है। एक तो प्रचार के अभाव के कारण प्रकाशकों की बात पाठक तक नहीं पहुंच पाती। दूसरे अधिक डाक खर्च के कारण पाठक तक पुस्तक अधिक महँगी होकर पहुँचती हैं। तीसरे यह कि हिन्दी के क्षेत्र में समर्थ पुस्तक-विक्रय संस्थानों की कमी है। हिन्दी बुक सेन्टर की स्थापना एक विक्रय-संस्थान के रूप में की गयी है। इसकी ओर से इस प्रदर्शनी के आयोजन का होना प्रकट करता है कि यह संस्था अपने कार्यक्षेत्र में काफी उत्साहपूर्ण है।"

यह प्रदर्शनी २९ नवम्बर से एक दिसम्बर तक तीन दिनों के लिए खुली रही और लगभग एक हजार दर्शकों ने इसे देखा और 'हिन्दी बुक सेंटर' के वैयक्तिक प्रयास की सराहना की।

●

दक्षिण से कुछ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ

कर्नाटक की भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, धर्म आदि विविध विषयों पर ग्रन्थ निकालने की योजना बनी है। इसमें कन्नड से हिन्दी में अनूदित और मौलिक दोनों प्रकार के ग्रन्थ होंगे। अब तक नीचे लिखे शीर्षक प्रकाशित हैं :—

रजतोत्सव ग्रन्थ	८.००	जयगीत	१.९०
अेकलव्य	१.००	मलेनाड-चित्र	४.००
अक्कमहादेवी के वचन	१.९०	कर्नाटक-शिवशरणियाँ	१.२५
तुषार-हार	१.२५	हिन्दी-कन्नड नागरी-बोधिनी भाग-१	०.९०

भारतवाणी सभा की मुख-पत्रिका है। यह कर्नाटक में होने वाले हिन्दी-प्रचार की गतिविधियों की ही नहीं, कर्नाटक के साहित्यिक, सांस्कृतिक विषयों की भी परिचायिका है।

अधिक जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें:—

मंत्री,

कर्नाटक प्रान्तीय हिन्दी प्रचार सभा

धारवाड़-१ (मैसूर राज्य)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किताबों के सरकारी कारखाने के समाचार

लाटरी से पुस्तकें लीजिए

लीजिए, सुनिए, पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का अधिकार लाटरी से लीजिए, अपनी किस्मत आजमाइए। जिनके लिए पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं उनकी किस्मत हमारी सरकार आज़मा रही है। लगे हाथ आप भी आज़मा लीजिए। दिल्ली में हलवाइयों को लाटरी से चीनी मिलेगी और उत्तर प्रदेश में प्रकाशकों को लाटरी से पुस्तकें। दिल्ली में जनसंघ का प्रशासन है और उत्तर प्रदेश के शिक्षा मन्त्री जनसंघी हैं। दोनों में अभूतपूर्व तालमेल है।

लखनऊ उत्तर प्रदेश की राजधानी की खबर है, जहाँ पाठ्य-पुस्तकों के सरकारी कारखाने का एक बहुत बड़ा प्रशासकीय कार्यालय है—पाठ्य-पुस्तक अधिकारी—जो प्रदेश के कक्षा अ से कक्षा ८ तक की पाठ्य-पुस्तकों का विधाता है, जहाँ प्रतिवर्ष प्रदेश के प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं और मुद्रकों को एक निश्चित संख्या में शासन की ओर से पुस्तकें छापने और प्रकाशित करने के लिए कोटा और परमिट के रूप में बख्शीशी आदेश प्रदान किये जाते हैं। इस बार वह लाटरी से बाँटी जायेगी क्योंकि बख्शीश लेने वालों की संख्या अधिक है और बख्शीश की संख्या कम।

गत वर्ष आम चुनाव के अवसर पर अनेक प्रकाशकों ने कांग्रेसी नेताओं के लिए चुनाव-दंगल लड़े, उनके प्रचार-पत्र पोस्टर छापे, उन्हें कांग्रेसी महाराजाओं द्वारा जागीरों के रूप में एक नहीं पाँच-पाँच नामों से पुस्तकें प्रकाशित करने को दी गईं। परिणाम यह हुआ कि आवश्यकता से कई गुनी पुस्तकें प्रकाशित हो गईं और जिसका फल यह है कि ये पुस्तकें चालीस प्रतिशत तक कमीशन पर बिक रही हैं। ज्ञान प्रदायिनी पुस्तकों के क्षेत्र में राजनीतिक महाप्रभुओं द्वारा किये जा रहे प्रयोग और बख्शीश देश को कहाँ ले जाएँगे, ईश्वर ही जाने।

दिल्ली में भी पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

दिल्ली का जनसंघी प्रशासन चीनी का स्वाद ले चुकने के बाद पाठ्य-पुस्तकों के स्वाद की ओर अग्रसर हो रहा है। दिल्ली प्रशासन ने ८ नवम्बर को यह घोषणा की है कि १९६९ ई० तक राजधानी में समस्त पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण हो जायेगा। प्रमुख कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मलहोत्रा का कथन है कि विशेषज्ञों द्वारा पुस्तकों का संशोधन किया जा रहा है और उन्हें अप-टु-डेट (कांग्रेसी शासन से जनसंघी शासन तक?) बनाया जा रहा है। वे सभी स्कूल, जो दिल्ली प्रशासन द्वारा मान्यता प्राप्त हैं अथवा उन्हें दिल्ली प्रशासन से सहायता मिलती है, उन सभी स्कूलों को जनसंघी शासन कृत पुस्तकों को पढ़ाना होगा।

दिल्ली के इन्हीं स्कूलों का एक अन्य समाचार है कि वहाँ लड़कियों को गृह-विज्ञान के अन्तर्गत अनिवार्य रूप से सामिष खाद्य पदार्थ बनाने का आदेश दिया जाता है, क्योंकि गृह-विज्ञान के पाठ्यक्रम में मांस श्रेष्ठ तथा संतुलित आहार के एक मात्र विशिष्ट नमूने के रूप में वर्णित है। बधाई है जनसंघी प्रशासन को जिसने नई पुस्तकों में संतुलित आहारों की सूची में अन्य पदार्थों के साथ सामिष पदार्थों के आगे भी शब्द जोड़ने का आदेश प्रदान किया है। सम्भवतः यह इसी प्रकार है—कांग्रेसी प्रशासन के बाद जनसंघी प्रशासन ने 'भी' राष्ट्रीयकृत पुस्तकों की दौड़ में भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना भार

उपकुलपतियों की समिति

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उच्चतर शिक्षा के विकास तथा नीति निर्धारण हेतु १० से १५ उपकुलपतियों की एक अनौपचारिक समिति बनायी है। वर्ष में दो अथवा तीन बार इसकी बैठक होगी। यह समिति विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रादेशिक तथा अखिल भारतीय स्तर पर सामंजस्य स्थापित करेगी।

विशिष्ट पुस्तकालय संघ

गत मास २७ दिसम्बर को दिल्ली में अखिल भारतीय विशिष्ट पुस्तकालय संघ (IASLIC) का सातवाँ वार्षिक अधिवेशन हुआ। चार-दिवसीय यह अधिवेशन दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किया गया। इसमें देश के ८० पुस्तकालय विज्ञान-विशेषज्ञों ने भाग लिया।

पलकों की अभिव्यक्ति

'कह माँ एक कहानी—राजा था या रानी'—बालहठ व पक्षाघात से पीड़ित माता की विवशता। रोग ने वाणी छीन ली थी और अशक्त हाथ लिख नहीं सकते थे। लेकिन माँ की ममता अन्तर के सारे प्यार को लिए आँखों की राह उमड़ आयी। बच्चे को कहानी जो सुनानी थी। शब्दों के लिए राह निकल आयी और माँ के प्यार की अमर-कथा का सृजन हुआ। एण्टवर्प की एक महिला श्रीमती मोएनसेन्स, जिसके सारे शरीर में लकवा मार गया था, जो न बोल सकती थी और न हाथ ही उठा सकती थी, केवल आँख की पलकें झपका कर एक कहानी पुस्तक की रचना कर डाली। सेंट एलिजाबेथ अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रही श्रीमती गोडलीक के सम्बन्धी तथा परिचारिकाएँ बारी-बारी से उनके निकट बैठते तथा अक्षर बोलते जाते। जिस अक्षर का चयन श्रीमती गोडलीक को करना होता वे धीरे से आँख झपका देतीं। इस प्रकार अक्षरों का चयन हुआ, शब्द उभरे, वाक्य बने और अन्त में एक कहानी की रचना हुई।

आनन्द पुस्तक भवन

आनन्द पुस्तक भवन के अध्यक्ष डॉ० सम्पूर्णानन्द सूचित करते हैं कि उनका प्रकाशन कार्यालय औसानगंज से अपने नवनिर्मित भवन ईश्वरगंगी में स्थानान्तरित हो गया है। उनका नया पता है—आनन्द पुस्तक भवन, ईश्वरगंगी, वाराणसी-१।

आन्दोलन और प्रकाशक

राजभाषा विधेयक विरोधी आन्दोलन में आगरा के तीन प्रकाशकों सर्वश्री प्रतापचन्द्र जैसवाल (प्रकाशक एवं पत्रकार), सरस्वती पुस्तक सदन, ओमप्रकाश बंसल, नवनिर्माण प्रकाशन, किशनलाल गर्ग, गर्ग एण्ड कम्पनी ने संसोपा कार्यकर्ताओं के साथ १६ दिसम्बर १९६७ को धारा १४४ का उल्लंघन करते हुए जुलूस निकाल कर सत्याग्रह किया और जेल गए।

दुर्घटना

गत १४ नवम्बर को हापुड़ व मेरठ के बीच कार-दुर्घटना हो गई जिसमें विनोद पुस्तक मन्दिर के संचालक तथा प्रकाशक संघ के उपाध्यक्ष श्री भोलानाथ अग्रवाल, आगरा कालेज के प्रवक्ता श्री विश्वम्भर 'अरुण' तथा कार-ड्राइवर भीषण रूप से घायल हो गए और प्रभाकर पुस्तक मन्दिर, आगरा के संचालक श्री प्रेमनारायण गुप्त की तत्काल मृत्यु हो गई। श्री भोलानाथ अग्रवाल एवं श्री विश्वम्भर 'अरुण' दोनों के सिर में सांघातिक चोट आयी और अब वे लगभग स्वस्थ हो गए हैं। ड्राइवर भी खतरे से बाहर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक समीक्षा अभिषद

राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर आयोजित पुस्तक-समीक्षा गोष्ठी में नेशनल बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में पुस्तक समीक्षा के लिए एक अभिषद खोलने का निश्चय किया गया जो पुस्तकों की समीक्षा कर पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशनार्थ भेजा करे।

एक लाख का जुर्माना

मानहानि के एक मामले में हैदराबाद के अतिरिक्त मुख्य जज श्री के० के० राजू ने बम्बई के हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' के सम्पादक, मुद्रक तथा प्रकाशक (बेनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी) को आदेश दिया है कि वे वादी को एक लाख रुपये दें तथा कम्पनी द्वारा प्रकाशित सभी पत्रों में शीर्षकों में बिना शर्त क्षमा याचना करें ताकि वादी के सम्मान की रक्षा हो सके।

श्री राजू ने प्रख्यात उर्दू लेखिका श्रीमती इस्मत चुगतई को भी आदेश दिया है कि वह वादी डॉ० सी०एल० मोदी को, जो हैदराबाद के हैं, क्षति-पूर्ति के रूप में २००० रुपये दे।

१ लाख रुपये के मानहानि के मुकद्दमे में डॉ० सी० एल० मोदी ने कहा कि 'धर्मयुग' के गणतन्त्र दिवस के अंक में 'सज़ा' नामक जो कहानी प्रकाशित हुई थी उसमें मेरे उस समय के आचरण पर आक्षेप किया गया था जब मैं हैदराबाद तथा महाराष्ट्र सरकार की सेवा में था।

तमिल-भाषी हिन्दी लेखक को पुरस्कार

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ने इस वर्ष एक हज़ार रुपये का अहिन्दी भाषा-भाषी ग्रन्थ-पुरस्कार, तमिल भाषी हिन्दी लेखक डॉ० मलिक मोहम्मद को देने का निश्चय किया है।

डॉ० मोहम्मद केरल विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक हैं। ३ जनवरी को उन्हें यह पुरस्कार सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने एक समारोह में दिया।

साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री अमृतलाल नागर को उनके उपन्यास 'अमृत और विष' पर १९६७ ई० के साहित्य अकादमी पुरस्कार की घोषणा हुई है। हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेज़ी, मलयालम, तमिल तथा उर्दू कृतियों पर भी पुरस्कार की घोषणा हुई है। अकादमी पुरस्कार के रूप में इन साहित्यकारों को एक विशेष समारोह में एक ताम्र-मंजूषा और पाँच-पाँच हज़ार रुपये प्रदान किये जाएँगे। 'अमृत और विष' का प्रकाशन लोक भारती, इलाहाबाद ने किया है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय से संस्थापित केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में शिक्षण तथा साहित्य के सम्मिश्र दो स्तरीय पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं जिनके साहित्यिक स्तर क्रमशः बी० ए० (ऑनर्स) और एम० ए० (प्री०) और शिक्षण-स्तर क्रमशः बी० एड० और एम० एड० हैं। इन दोनों परीक्षाओं के विस्तृत पाठ्य-विवरण की प्रति निःशुल्क प्राप्त कर पाठ्य-विषय से सम्बन्धित अन्य कोई उपयोगी पाठ्य-पुस्तक/सन्दर्भ-ग्रन्थ आपके यहाँ से प्रकाशित हुई हो या आपके यहाँ उपलब्ध हो, तो उसकी सूची निदेशक को भेजनी चाहिए ताकि वे उन पुस्तकों को भी पाठ्य विवरण में सम्मिलित करने की दिशा में प्रयत्न कर सकें।

हिन्दी-भाषी विश्वविद्यालय के उपकुलपतियों का सम्मेलन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० अमरचन्द जोशी ने देश के उन सभी विश्वविद्यालयों के वाइस चांसलरों का सम्मेलन आगामी १ और २ फरवरी को हिन्दू विश्वविद्यालय में बुलाया है जो अपने विश्वविद्यालयों में शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी को अपनाना चाहते हैं।

ऐसा समझा जाता है कि इस सम्मेलन में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री डॉ० त्रिगुण सेन, शिक्षा मन्त्रालय में राज्य-मन्त्री द्वय प्रो० शेरसिंह एवं श्री भागवत झा आज़ाद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डॉ० डी० एस० कोठारी और कई शिक्षाविद भाग लेंगे।

विश्वविद्यालयों में शिक्षण का माध्यम हिन्दी करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पद्धति एवं साधनों पर सम्मेलन में विचार किया जायेगा। विभिन्न विषयों में हिन्दी की अच्छी तथा उच्च-स्तरीय पुस्तकों की कमी को दूर करने के प्रश्न पर भी इसमें विचार होगा।

प्रकाशक सम्मेलन

उत्तर प्रदेशीय शिक्षा-सम्मेलन के अन्तर्गत गाज़ियाबाद में उत्तर प्रदेश के कुछ प्रकाशकों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें पं० बद्रीप्रसाद शर्मा (भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़), श्री केदारनाथ (स्टेण्डर्ड बुक डिपो, कानपुर), श्री पाराशर (राकेश प्रकाशन) आदि सम्मिलित हुए।

सम्मेलन के संयोजक जवाहर प्रकाशन के संचालक श्री हरभजन लाल ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर सरकार से माँग की कि पाठ्यक्रम में सरकार जो परिवर्तन प्रति वर्ष करती है उनकी सूचना प्रकाशकों एवं विद्यालयों को सत्र प्रारम्भ होने से छः मास पूर्व देनी चाहिए। ऐसा न होने से विद्यार्थियों एवं प्रकाशकों—दोनों की हानि होती है। अध्यापकों को भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

दूसरे प्रस्ताव में सरकार से कहा गया कि तकनीकी पुस्तकों को हिन्दी में लाने के लिए सरकार प्रकाशकों का सहयोग ले और जो प्रकाशक ऐसी क्षमता रखते हों, उनकी वित्तीय सहायता करे। सरकार ने जिन पुस्तकों का राष्ट्रीय-करण कर रखा है उनके लिए प्रकाशकों की एक समिति नियुक्त करे जो समर्थ एवं अनुभवों के बारे में सरकार को सलाह दे सकें।

रघुवीर सहाय का नया कविता-संग्रह

आत्महत्या के विरुद्ध

आज के कुचले हुए व्यक्ति की छटपटाती भाषा में उसका अस्वीकार और उसका स्वीकार इन कविताओं का अभिप्राय है : अकेले भीड़ के जंगल में फँसा हुआ कवि अपने को उसमें एक साथ खो देना और पा लेना चाहता है और बाहर निकलने की कोई सामाजिक-राजनीतिक शर्त स्वीकार नहीं करता। नतीजा : ये कविताएँ।

इनमें मनुष्य को नंगे बदन छूने की कोशिश है, और है जो कुछ बनाता है उसे बनाए रखने की लालसा और जो कुछ तोड़ता है उसे तोड़ने का संकल्प। इनका एक उद्देश्य है—पर वह जानकर आप क्या कीजिएगा—कविताएँ पढ़िए।

मूल्य : चार रुपए

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-६ पटना-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

मोरिशस से एक पत्र

हिन्दी प्रचारिणी सभा
हिन्दी भवन,
मोंतांई लोंग,
मोरिशस
३-११-६७

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्कार,

आपका २४-१०-६७ का लिखा पत्र हमें प्राप्त हुआ। प्रसन्नता की बात है कि श्री बखोरी साहब भारत पहुँच गए। सबसे बड़ी प्रसन्नता की बात तो यह है कि अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के मुखपत्र के सम्पादक का ध्यान हमारी ओर गया। इसमें आश्चर्य और दुविधा और दुख की कोई बात नहीं क्योंकि **स्वयं भारत की अभी तक दुर्भाग्यवश कोई निश्चित मातृभाषा नहीं।** मोरिशस में भारत के सांस्कृतिक प्रतिनिधि की जितनी आवश्यकता है उतनी राजनयिक प्रतिनिधि की नहीं।

बहुत दिनों बाद गत जुलाई मास में हिन्दी के दो प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री दिनकर और श्री सुमन जी आये थे। दो पखवारे वे यहाँ रहे। देश का तूफानी दौरा किया। भारत और हिन्दी के प्रति काफी उत्साह और प्रेम जागृत किया। इस तरह के विद्वानों को यहाँ त्रैमासिक आना चाहिए। दिनकर जी ने एक सांस्कृतिक प्रतिनिधि भेजने को कहा था, उन्होंने आज तक नहीं भेजा।

मोरिशस, भारत के हिन्दी पत्रकार लोग क्यों नहीं आते? जटिल प्रश्न है यह। आपको शायद नहीं मालूम विधाता ने दुनिया का घरौंदा रचने के पूर्व पहले यह मारीच नगरी मोरिशस को रचा था। भारतीय पत्रकारों को उन उपनिवेशों में जाना चाहिए जहाँ भारतीय बसे हैं। भारत के शाश्वत सन्देश को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाना चाहिए जिस प्रकार मध्ययुग में बौद्ध भिक्षुकों ने जावा, बाली, सुमात्रा आदि देशों में अपने सन्देश को पहुँचाया। भारत से हमें काले अंग्रेजों की आवश्यकता नहीं, काले यूरोपियन तो हमी लोग हैं। हम भारतीय-आत्मा का दर्शन करना चाहते हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की हम सभी परीक्षाएँ आयोजित करते हैं—केवल साहित्य भाग। शेष अपनी प्रवेशिका और हिन्दी परिचय भी। हमारी सभा के साथ १८५ शालाएँ सम्बद्ध हैं जिनमें १० माध्यमिक हैं। सम्मेलन की विवरण पत्रिका तो आपके पास होगी, अपना पाठ्यक्रम भेजते हैं।

पुस्तकें भी हमने प्रकाशित की हैं, हिन्दी पर विशेष विवरण भी हम भेजेंगे बाद में। अभी हम परीक्षाओं एवं उपाधि—वितरण समारोह को सम्पन्न करने की दिशा में लगे हुए हैं, जो दिसम्बर के उत्तरार्ध में होंगे।

हमारे प्राथमिक पाठशालाओं में प्रचलित पाठपोथियाँ कुछ पुरानी हो चली हैं। प्राथमिक पाठशाला के अनुकूल पाठ्य-पुस्तकों के नमूने भेजते तो बड़ी कृपा होती।

अब तो एयर इण्डिया की पाक्षिक सर्विस शुरू हो गई है। कम भारतीय यहाँ आ रहे हैं। मोरिशस एक रमणीक टूरिस्ट-केन्द्र है। संसार भर के सैलानी यहाँ पर हर समय मौजूद रहते हैं पर भारतीय कम। वजह क्या है? विदेशी मुद्रा का अभाव?

उत्तर दीजिए।

भवदीय
ह० एस० एम० भगत
मन्त्री

हिन्दी प्रकाशकों के प्रतिनिधियों से

एम० वी० शेषाद्रि एण्ड कम्पनी
३०७ सूबेदार चतराम रोड,
बंगलोर-६
१८ दिसम्बर १९६७

महोदय,

मैं आपका ध्यान निम्नलिखित बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। क्या इस अव्यावसायिक प्रवृत्ति को रोकने अथवा दूर करने का कोई उपाय है?

हिन्दी प्रकाशकों के अनेक एजेंट बंगलोर आते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्डर प्राप्त करने की धुन में वे अध्यापकों, हिन्दी प्रचारकों तथा कालेज और विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों से भी आर्डर प्राप्त कर लेते हैं और उन्हें अधिकाधिक कमीशन देते हैं। हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या कम है, अतः हम उनके हाथ भी मुश्किल से ही पुस्तकें बेच पाते हैं। फल यह होता है कि हिन्दी पुस्तकें रखने का हमारा उत्साह भंग हो जाता है। क्या प्रतिनिधियों की इस प्रवृत्ति को रोकने का कोई उपाय है ?

हिन्दी प्रकाशनों के हित के लिए ही क्या उन्हें पुस्तक विक्रेताओं से सम्पर्क स्थापित कर आर्डर नहीं प्राप्त करने चाहिए। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो प्रकाशकों के ये प्रतिनिधि हिन्दी प्राध्यापकों को जो हमारी दुकान पर आते हैं हमारी उपस्थिति में ही अधिक कमीशन का प्रलोभन देकर हमारी बिक्री समाप्त कर देने का प्रयास करते हैं। अंग्रेजी प्रकाशकों के प्रतिनिधि कभी ऐसा व्यवहार नहीं करते। क्या आपका संघ इस दिशा में कोई सक्रिय कदम उठाएगा।

हिन्दी विरोधी आन्दोलन बंगलोर में आरम्भ हो चुका है। ऐसी स्थिति में स्थानीय हिन्दी पुस्तक विक्रेताओं के लिए क्या यही विकल्प शेष रह गया है कि वे हिन्दी पुस्तकें न मँगाएँ और हिन्दी के प्रचार-प्रसार से विमुख हो जाएँ।

आपके सुझावों की प्रतीक्षा है।

भवदीय

संचालक

कहीं रोशनी नहीं

विप्लव कार्यालय, लखनऊ

१३-१२-१९६७

मान्यवर,

"...पुस्तक व्यवसाय की स्थिति को देख कर तो मैं बहुत निराश हो गई हूँ। ऐसा आभास होने लगा है कि हम बढ़ नहीं घट रहे हैं। इस व्यवसाय के प्रति आपके उत्साह की मैं सदा ही प्रशंसक रही हूँ। इतने वर्ष काम करने के पश्चात् जो स्थिति चल रही है, मेरी हिम्मत टूट गई है। मुझे कहीं भी रोशनी दिखाई नहीं देती। इस व्यवसाय में अब अन्धकार में हाथ मारने वाला हिसाब-किताब है। मशीन और कागज की चिन्ता करने में कोई लाभ दिखाई नहीं देता, जो छपा है, वही पढ़ने की फुर्सत नहीं किसी को..."

—प्रकाशवतीपाल

राष्ट्रीयकृत पुस्तकें

बिरलानगर, ग्वालियर-१

२८-११-१९६७

प्रिय महोदय,

कुछ समय से भारत वर्ष में कुछ राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के सम्बन्ध में विशेष चर्चा है। राष्ट्रीय अनुसन्धान, शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण समिति दिल्ली का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट हुआ है, इस विषय में कुछ प्रान्तीय शासनों ने भी प्रयास करना प्रारम्भ कर दिये हैं। इन सबका प्रमुख कारण यह है कि शिक्षा के क्षेत्र में अनेकानेक परिवर्तन दिन प्रतिदिन हो रहे हैं। अधिकांश लेखक इन नवीन विचार-धाराओं से अवगत नहीं हैं, इसके साथ-साथ आजकल लेखकों में व्यावसायिक प्रवृत्ति घर कर गई है, लेखक एवं प्रकाशक दोनों का एक मात्र ध्येय अधिक से अधिक पैसा कमाना है, दो रुपये की पुस्तक की कीमत ५ रुपये है। भारत जैसी गरीब जनता के समक्ष यह एक जटिल प्रश्न है, वे अपने बच्चों को उच्च स्तरीय माध्यमिक शिक्षा स्तर तक की शिक्षा भी नहीं पूरी करवा सकते। अतः यह आवश्यक है कि इस प्रश्न को राष्ट्रीय स्तर पर सोचा जाय।

अभी अच्छे शिक्षा-शास्त्री पुस्तकों के लेखन की ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं, अभी तक राष्ट्रीयकृत पुस्तकें बहुत थोड़ी मात्रा में उपलब्ध हुई हैं अथवा हो रही हैं। अभी तक जो कार्य हुआ है उसमें कुछ-कुछ त्रुटियाँ देखने में आयी हैं, इसका प्रमुख कारण यह प्रतीत होता है कि इन पुस्तकों को लिखवाने के पश्चात् शिक्षा-शास्त्रियों द्वारा चर्चा न हो सकी होगी। पाठ्यक्रम के आधार पर लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकों में भी त्रुटियों का समावेश रहता आया है। राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के लेखन की पद्धति में एक अच्छाई यह है कि लिखने के पश्चात् उस पर विशेषज्ञों द्वारा पुनः जाँच होनी चाहिए।

मेरा व्यक्तिगत विचार है कि शासन द्वारा राष्ट्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों के सम्बन्ध में उठाया गया कदम सराहनीय है तथा इस ओर शासन को अधिक ध्यान देकर अच्छे लेखकों की सूची तैयार करनी चाहिए।

—डॉ० शालिग्राम चतुर्वेदी
प्राचार्य, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय,
ग्वालियर

(क्या केवल राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के लेखन की जाँच विशेषज्ञों द्वारा करायी जा सकती है ? क्या प्रकाशकों की पुस्तकों की जाँच करा कर उनमें आवश्यक सुधार नहीं कराये जा सकते ? और यह कहना कि राष्ट्रीयकृत पुस्तकें ही सस्ती होती हैं, सही नहीं है। जनता पर कर पर कर लाद कर राष्ट्रीयकरण के नाम पर सभी उद्योगों में धन की जो बरबादी हो रही है, वही राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के क्षेत्र में भी हो रहा है। उदाहरण और इतिहास समक्ष हैं। त्रुटियाँ सभी जगह हो सकती हैं किन्तु केवल राष्ट्रीयकरण को ही वह भी पाठ्य पुस्तकों के क्षेत्र में एक मात्र विकल्प मान लेना जनतन्त्र के सिद्धान्तों के सर्वथा विपरीत है।)

—सम्पादक

४० प्रतिशत कमीशन

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी
२५-१२-६७

विषयः केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार की अधिक कमीशन माँगने की धाँधली के संबंध में।

मान्यवर,

बड़े ही दुख के साथ सेवा में निवेदन करना पड़ रहा है कि हमारी संस्था द्वारा गत दिनांक ४-३-६६ को 'अशोक के अभिलेख' नामक सन्दर्भ महाग्रन्थ नमूने के तौर पर उक्त निदेशालय के अधिकारी के पास भेजा गया था, जिस-की ५० प्रतियों की खरीद के लिए तारीख २१-३-६७ का आदेशपत्र तो मिला किन्तु ४० प्रतिशत कमीशन काट कर भेजने के लिए। सन्दर्भ-ग्रन्थ पर इतने अधिक कमीशन की माँग देख कर हम आश्चर्य-चकित हो गये। अतः कमीशन कम करने के लिए हमने हिन्दी निदेशालय को तारीख २३-३-६७ को पत्र लिखा जिसके तारीख ५-६-६७ के उत्तर में निदेशालय ने ४० प्रतिशत से घटाकर ३३$\frac{1}{3}$ प्रति-शत कमीशन की माँग की। निदेशालय के इस पत्र के उत्तर में हमने फिर जो पत्र-व्यवहार किये उन सबकी प्रति-लिपियाँ पत्र संलग्न है। इतने अधिक लागत की पुस्तक पर ३३$\frac{1}{3}$ प्रतिशत कमीशन माँगना न्यायोचित नहीं है।

आशा है कि श्रीमान् इसके सम्बन्ध में उचित निर्णय का आदेश देने की शीघ्र कृपा करेंगे। इस ग्रन्थ के छापने में हमें कई वर्ष लगे और इस विषय का इतनी अधिक सामग्री सम्पन्न ग्रन्थ किसी भी भारतीय भाषा में नहीं है। फिर भी हिन्दी निदेशालय में इसका आदर नहीं हुआ। यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है। निदेशालय में उपन्यास, कहानी आदि साधारण पुस्तकों की दस-दस हजार प्रतियाँ तो २५ प्रतिशत में खरीदी गई हैं, सो भी ऐसी पुस्तकें जिनका मूल्य लागत दाम से चार-पाँच गुना अधिक रखा गया है, किन्तु सन्दर्भ ग्रन्थों की साधारण खरीद पर इतना अधिक कमीशन माँगा जा रहा है। ऐसी स्थिति में कोई प्रकाशक सन्दर्भ-ग्रन्थ प्रकाशित करने का कैसे साहस करेगा जबकि इन ग्रन्थों का मूल्य ढाई-तीन गुने से अधिक नहीं रखा जाता।

इस प्रसंग में इतना और निवेदन करना है कि उक्त ग्रन्थ पर एक तो इतनी अधिक लागत बैठी है कि ३३$\frac{1}{3}$ प्रतिशत कमीशन देना सम्भव नहीं है। दूसरे अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने यह नियम बना रखा है कि सरकारी खरीद पर अधिकतम २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाय। संघ ने उदारतापूर्वक स्वयं ही अधिकतम छूट देना तय किया है जबकि इतना कमीशन अच्छे ग्रन्थों पर पुस्तक विक्रेताओं को भी नहीं दिया जाता।

भवदीय
ह० देवनारायण द्विवेदी
प्रकाशन विभाग

माननीय डॉ० त्रिगुण सेन,
शिक्षा मन्त्री, भारत सरकार
नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख रुपये का ज्ञानपीठ पुरस्कार

एक लाख रुपये का भारत का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार—ज्ञानपीठ पुरस्कार बंगाल के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्याय को उनकी उपन्यास कृति 'गणदेवता' पर १५ दिसम्बर १९६७ की सायंकाल दिल्ली के मावलंकर हाल में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डॉ० बेजवाड़ा गोपाल रेड्डी ने अर्पित किया। एक लाख रुपये के चेक के साथ वाग्देवी की प्रतिमा और प्रशस्ति अंकित ताम्रपत्र भी भेंट किया। ताम्रपत्र पर अंकित है—

"गणदेवता भारतीय ग्राम्य-जीवन के उस संक्रमण काल का गद्यात्मक महाकाव्य है जब परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक अर्थतन्त्र को औद्योगिक क्रान्ति से अनुप्राणित नये युग के विचारों और प्रवृत्तियों ने आमूल प्रभावित किया तथा मानव-चरित्र के आवेगों को अभिव्यक्ति के नये सन्दर्भ दिये।"

कालजयी कृतियों के शिल्पी ताराबाबू बांग्ला साहित्य के ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय साहित्य की उपलब्धि के मानक हैं।

गत वर्ष महाकवि शंकर कुरुप की मलयाली 'बाँसुरी' से ध्वनित इस वर्ष बांग्ला के 'गणदेवता' की प्रतिष्ठा ने भारत को एक भावसूत्र में गूँथने वाले भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार को और महिमायित किया है। ज्ञानपीठ की अध्यक्षा श्रीमती रमा जैन ने 'बाँसुरी' का अभिनन्दन करते हुए कहा था—"देश की सांस्कृतिक एकता और विचारों का सामंजस्य जो जीवन के यथार्थ थे, उन्हें संकुचित दृष्टि ने, राजनीति पर आश्रित भाषा और सीमाविवादों ने तथा अन्य दुराग्राहों ने धूमिल कर दिया है। उन सब सीमाओं को तोड़ कर आज हम समाज, साहित्य और संस्कृति के महाकाश के नीचे एक साथ एकत्र हैं।" 'गणदेवता' की प्रतिष्ठा करते हुए रमादेवी जी ने कहा—

"साहित्य देश व काल की सीमाओं से परे है। देश या काल की यदि सीमाएँ होती हैं तो केवल इसी अर्थ में कि साहित्य देश-विशेष की प्रतिभा के अनुरूप, काल-विशेष की भावनाओं-समस्याओं को, परिवेश और मूल्यों को, निरूपित करता है और इस प्रकार सारे मानव-समाज का मुकुर बन जाता है।"

इस अवसर पर भाव-विह्वल लखटकिया ताराबाबू बोल रहे थे—"आधुनिक ज्ञान-विज्ञान जब तक हमारी मानसिक भूमि तथा जलवायु के अनुरूप मूर्तिमान नहीं हो पाते, तब तक ये सब भारतवर्ष के सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन में सार्थक नहीं हो सकेंगे।"

उनकी साहित्य स्थापना है—"पुरातन के प्रति मेरे मन में अनुराग है, किन्तु नूतन का आह्वान भी मैंने सुना। और, दोनों को अपने साहित्य की माला में गूँथ कर महाकाल के चरणों में समर्पित करते अपने को धन्य पाता हूँ। आसमुद्र हिमाचल परिव्याप्त भारतवर्ष के विभिन्न आँचलों की विभिन्न भाषाएँ हैं, विभिन्न आचार, विभिन्न आहार, विभिन्न परिच्छेद, विभिन्न जलवायु-मंडल हैं। यह सत्य होते हुए भी इस सारी विभिन्नता के बीच एक अखिल भारतीय इकाई में सारे भारत का हृदय गुँथा हुआ है। यही है अखंड भारत संस्कृति।"

इस अवसर पर 'दिशान्तर' द्वारा 'गणदेवता' के 'चण्डी मण्डप' खण्ड का नाट्यरूपान्तर प्रस्तुत किया गया।

भारतीय ज्ञानपीठ के मन्त्री श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन के अनुसार—१९३५ से १९६० के बीच प्रकाशित भारतीय भाषाओं का पुरस्कार १९६७ का और १९४५ से १९६१ के बीच प्रकाशित भारतीय भाषाओं के सर्जनात्मक साहित्य का पुरस्कार १९६८ का पुरस्कार होगा। १९७० तक यह सम्भव हो जायेगा कि पिछले पाँच वर्षों में प्रकाशित भारतीय साहित्य में से पुरस्कार का चयन हो सके।

अन्त में निवेदन करूँ—दिल्ली भारतीय राजनीति की राजधानी है, संस्कृति, साहित्य और कला की नहीं। कलाकार का अभिनन्दन यदि उसके घर में किया जाय तो उसकी कृति और उसकी भाषा ही नहीं उस प्रदेश की जनता भी अभिनन्दित होती है जिसकी साँसें, जिसके हास-उल्लास, उसके साहित्य में गुंजित हैं।

—पु० दा० मोदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

बहुत दिन बीते : कवि बच्चन, प्र० सं० नवम्बर १९६७, मूल्य ६.००, पृ० सं० १६४ (डिमाई)।

रससिद्ध कवि बच्चन की १९६५-६७ के बीच लिखी गई ६९ कविताओं के इस संग्रह में कवि की विभिन्न मनः-स्थितियों की अभिव्यक्ति है। इन कविताओं में कवि की अन्य कविताओं की भाँति भावात्मकता एवं गेयता के स्थान पर विचारकता और मुक्तता अधिक है। वर्तमान परि-स्थितियों ने कवि के मन में व्यंग्य और विद्रोह की सृष्टि कर दी है। कविताओं के ये शीर्षक स्वयं मुखर हैं—मानदण्ड बटखरे, भारत के साँप, नेता-अभिनेता, कयामत का दिन, चार चने, कोल्हू के बैल का विद्रोह, मेरा अभि-नन्दन, कठोर सच, दो पाटों के बीच, तख्ता पलटने का खेल आदि।

'नेता-अभिनेता' की अन्तिम पंक्तियाँ हैं—

यवनिका
केवल नेताओं के उत्थान-पतन पर
गिरती उठती है,
अभिनेता केवल आते-जाते हैं।

* * *

सरगम : लेखक—कृष्णचन्दर, प्र० सं० जून १९६७, मूल्य २.५०, पृ० सं० ९६ (क्राउन)।

ऊँचे स्वर, धीमे स्वर, अपने स्वर—इन तीन शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त लेखक के दस व्यंग्यपूर्ण निबन्धों का यह संग्रह व्यक्तियों, वस्तुओं, घटनाओं और परिस्थितियों में छिपे व्यंग्य-विद्रूप पर हास्य की धूप बिखेरता-उभारता है। कृष्णचन्दर की सूझ और पकड़ में जितनी गहराई है, शैली में उतना ही तीखापन। पाठक इन्हें पढ़कर हँसता ही नहीं, चौंक उठता है और सोचता भी है।

* * *

उलझी लड़की काले बाल : लेखक—कृष्णचन्दर, प्र० सं० नवम्बर १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० १२८ (क्राउन)।

नौ कहानियों का यह संग्रह लेखक की व्यंग्यात्मक अन्तर्दृष्टि, जीवन की सजीवता, मोहकता और विविधता की सरस अभिव्यक्ति है। लोकजीवन के स्पर्श से ये कहा-नियाँ मार्मिक हो उठी हैं। 'अजनबी आँखें', 'रबड़ की औरत', 'नई कमीज़', 'सोनोरा', 'चन्दरू की दुनिया' आदि कहानियाँ समाज के एक-एक नमूने प्रस्तुत करती हैं।

* * *

पराया : लेखक—डॉ० रांगेय राघव, प्र० सं० १९६७ ई० मूल्य ३.५०, पृ० सं० १६० (क्राउन)।

रांगेय राघव का यह सामाजिक उपन्यास उनके अन्य उपन्यासों से भिन्न जीवन की विषमता को मिटाने का प्रयास करता है। अर्थलोलुप समाज के खोखलेपन को प्रकट करता हुआ लेखक स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को नये परिवेश में देखता है। प्रत्येक युवा-युवती के लिए पठनीय।

* * *

सरल परिवार नियोजन : लेखक—डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा, प्र० सं० नवम्बर १९६७, मूल्य ८.००, पृ० सं० २५२ (डिमाई)।

परिवार नियोजन आज राष्ट्रीय आवश्यकता बन गया है। प्रस्तुत पुस्तक इस पर प्रामाणिक, नवीनतम और वैज्ञानिक जानकारी देती है। प्रत्येक परिवार के लिए संग्रहणीय।

* * *

पड़ोसी : लेखक—गुरुदत्त, प्र० सं० सितम्बर १९६७, मूल्य ४.५०, पृ० सं० २११ (क्राउन)। पाकेट बुक में हिन्द पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित, मूल्य २.००।

सगे-सम्बन्धी भी सच्चे पड़ोसी नहीं बन पाते, मन के मिलन से अजनबी सच्चे पड़ोसी बन जाते हैं। यही इस उपन्यास का मूल कथ्य है। गुरुदत्तजी की कृतियाँ सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावना से ओतप्रोत रहती हैं। पड़ोसी उसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

* * *

एक औरत का चेहरा : लेखक—हेनरी जेम्स, अनुवादक मोहन राकेश, प्र० सं० १९६७, मूल्य ६.००, पृ० सं० ६९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क्राउन)।

औद्योगिक क्रान्ति की ओर अग्रसर १९वीं शताब्दी का प्रसिद्ध अमेरिकी उपन्यास 'द पोर्ट्रेट आव एलेडी' का यह हिन्दी अनुवाद है। एक लड़की का चरित्र इंगलैंड, फ्रांस तथा इटली की पृष्ठभूमि में विभिन्न चरित्रों के बीच से गुज़रता पूरे विस्तार से इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। अनुवाद सरल एवं सजीव है।

* * *

आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

नारी तेरे रूप अनेक : सम्पादक—क्षेमचन्द्र सुमन, प्र० सं० १९६७, मूल्य १५.००, पृ० सं० ४४८ (डिमाई)।

जैसा कि नाम से विदित है इस विशाल काव्य-संकलन में पौराणिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक सभी रूपों—माता, बहन, पत्नी, प्रेयसी, दुर्गा, भवानी, चण्डी, सीता, सावित्री, यशोधरा, प्रौढ़ा, मुग्धा, रम पोषित पत्रिका—में नारी को अभिव्यक्ति मिली है। हरिऔध से जगदीशचन्द्र 'जीत' तक कवियों की नारी रचनाएँ इस संकलन में संग्रहीत हैं। काव्य-प्रेमियों के लिए अत्यन्त सरस एवं मधुर संग्रह।

* * *

मेरा जंगल : मेरी बस्ती : लेखक—कृश्नचन्दर, प्र०सं० १९६७ मूल्य ५.००, पृ० सं० १९४ (क्राउन)।

ढहती हुई ज़मींदारी प्रथा, किसानों का जागरण और औद्योगिक क्रान्ति के बीच प्रबल रोमांस और ऐशो-आराम इस उपन्यास का मुख्य कथानक है। चुभती हुई शैली के लिए विख्यात कृश्नचन्दर का विस्तृत पर्यवेक्षण इस उपन्यास की अपनी विशेषताएँ हैं।

* * *

मेरी तैंतीस कहानियाँ : लेखक—विष्णु प्रभाकर, प्र० सं० १९६७, मूल्य ८.००, पृ० सं० २८८ (डिमाई)।

विष्णु प्रभाकर जितने सफल एकांकीकार हैं उतने ही सफल कहानीकार। उनके एकांकी में कथानक और चरित्र बोलता है और कहानियों में घटना और चरित्र मुखर होता है। अत्यन्त सहज ढंग से वातावरण तथा परिस्थिति के बीच अपने पात्र को खड़ा कर वे क्रियाशील छोड़ देते हैं।

उमापति कृत

पारिजात-हरण

सम्पादक—डॉ० कृष्णनन्दन 'पीयूष'
प्राध्यापक हिन्दी विभाग
भागलपुर विश्वविद्यालय

•

भूमिका—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रस्तुत पुस्तक की मूल सामग्री (पारिजात-हरण नाटक) पटना, लखनऊ, आगरा, बिहार, राँची, भागलपुर एवं अन्य विश्वविद्यालयों की हिन्दी (एम० ए०) तथा बी० ए० (मैथिली) कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित है।

पाठ्यक्रमानुसार प्रस्तुत परिवर्द्धित एव संशोधित संस्करण में डॉ० जार्ज ग्रियर्सन द्वारा प्रस्तुत मूल पाठ एवं अंग्रेजी अनुव.द भी दिया गया है।

सम्पादक की समीक्षात्मक भूमिका छात्रों के लिए परीक्षा-दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

•

गुरदास कपूर एण्ड सन्स
(प्राइवेट) लिमिटेड
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूमकेतु के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास

वैशाली	५.५०
नगर सुन्दरी	४.२५
मगधपति	५.००
महामात्य चाणक्य	४.५०
चन्द्रगुप्त मौर्य	६.००
सम्राट चन्द्रगुप्त	४.००
चंड अशोक	४.५०
प्रियदर्शी अशोक	४.५०
राज्यक्रान्ति	४.००
महारानी कुमारदेवी	५.००
भारत सम्राट समुद्रगुप्त	६.००
जयमाला	५.५०
गुर्जरेश्वर कुमारपाल	६.५०
राजर्षि कुमारपाल	६.००
चौलादेवी	५.५०
राजसन्यासी	५.५०
कर्णावती	६.००
राजकन्या	५.५०
सोरठ विजेता	६.००
बर्बरक विजेता	६.००

●

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई : इलाहाबाद

अपनी सहजता में चरित्र निखर उठता है। विष्णु प्रभाकर की ये तैंतीस कहानियाँ तैंतीस चरित्र हैं, तैंतीस परिस्थितियाँ हैं जो हृदय को ही नहीं विचारों का भी स्पर्श करती हैं। 'सच! मैं सुन्दर हूँ', 'एक और दुराचारिणी', 'दुराचारिणी', 'अरूप रूप' आदि कहानियाँ कीचड़ में कमल की भाँति खिल रही हैं। प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय।

* * *

कर्मवीर : लेखक—गणेशशंकर विद्यार्थी, प्र० सं० १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० ११२ (क्राउन)।

सुप्रसिद्ध पत्रकार गणेशशंकरजी ने विभिन्न महापुरुषों के जीवन-चरित्र-सम्बन्धी अनेक निबन्ध लिखे हैं। 'कर्मवीर' ३० कर्मवीरों की गाथा है। विद्यार्थीजी के व्यक्तित्व के समान उनके ये निबन्ध भी ओजपूर्ण हैं।

* * *

बच्चे और सेक्स शिक्षा : लेखक—सावित्रीदेवी वर्मा, प्र०सं० १९६७, मूल्य ५.००, पृ० सं० २०० (क्राउन)।

बच्चों के स्वस्थ मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए सेक्स की शिक्षा देना जितना ही आवश्यक है उतना ही कठिन भी। लेखिका ने बड़े सहज ढंग से विभिन्न स्थितियों में इस विषय को समझाने का प्रयास किया है। प्रत्येक परिवार के लिए संग्रहणीय है।

* * *

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६

प्रेमचन्द और उनका युग : लेखक—डॉ० रामविलास शर्मा, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण १९६७, मूल्य ७.५०, पृ० सं० २०० (डिमाई)।

प्रस्तुत पुस्तक डॉ० रामविलास शर्मा की पूर्व प्रकाशित पुस्तक का परिवर्द्धित संस्करण है। इस पुस्तक में प्रबुद्ध आलोचक ने प्रेमचन्द की कृतियों का मूल्यांकन ऐतिहासिक सन्दर्भ में और सामाजिक परिवेश की पृष्ठभूमि में किया है। इस नये संस्करण में लेखक ने अमृतराय की 'कलम का सिपाही : प्रेमचन्द' और श्री मदनगोपाल कृत 'मुंशी प्रेमचन्द' पुस्तकों पर आलोचना तथा समस्याएँ अध्याय के अन्तर्गत प्रेमचन्द, तोलसतोय पंथ और गांधीवाद की चर्चा की है। प्रेमचन्द साहित्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक अनिवार्य है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान और सत् : लेखक—यशदेव शल्य, प्र० सं० १९६७ ई० मूल्य ६.००, पृ० सं० १६० (डिमाई)।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के दर्शन-सम्बन्धी ११ लेखों का संग्रह है। समकालीन दर्शन पर मूल रूप से हिन्दी में लिखी गई 'दार्शनिक' सम्पादक शल्यजी की मौलिक कृति है। दर्शन के विविध पहलुओं पर विचार, तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक के रूप में उन्होंने विचार किया है। प्रत्येक दर्शन-प्रेमी के लिए यह पुस्तक अत्यन्त रोचक सिद्ध होगी।

* * *

वैज्ञानिक परिदृष्टि : लेखक—बर्ट्रेंड रसेल, प्रथम हिन्दी अनुवाद १९६७ ई०, मूल्य १०.००, पृ० सं० २१४ (डिमाई)।

विश्व के चिन्तकों एवं दार्शनिकों में बर्ट्रेंड रसेल का नाम प्रमुख है। स्वतन्त्र विचारक के रूप में वे विश्व-विश्रुत हैं। 'वैज्ञानिक परिदृष्टि' उनकी 'साइंटीफिक आउटलुक' पुस्तक का अनुवाद है। अनुवाद सरल तथा सुबोध है। वैज्ञानिक परिज्ञान, वैज्ञानिक तकनीक, वैज्ञानिक समाज तीन भागों में विज्ञान, जीवन तथा समाज का सापेक्ष अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मानव-जीवन का सन्तुलित दृष्टिकोण प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करने में निश्चित ही यह पुस्तक सहायक होगी। हिन्दी के प्रत्येक प्रबुद्ध पाठक को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

* * *

युद्ध के बाद : संकलनकर्त्री—श्रीमती जी० ग्रिड काले, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ४.००, पृ० सं० २४५ (क्राउन)।

प्रस्तुत कहानी संग्रह में जर्मनी के प्रमुख कथाकारों की १७ कहानियाँ संग्रहीत हैं। भयानकतम लड़ाइयों से घर लौटे, युद्ध के बाद के जर्मन लेखकों ने अपनी अनुभूति इन कहानियों में व्यक्त की है। इन कहानियों में एक चुनौती प्रस्तुत की गई है—क्या आदमी युद्ध को रोक सकता है? क्या वह दुनिया को बदल सकता है? 'मृत लड़कियों की सैर', 'छतों के ऊपर', 'तीर्थ यात्रा', 'रूपोशी की ज़िन्दगी' इस कहानी-संग्रह की मार्मिक, प्रेरक तथा अनूठी कहानियाँ हैं। इन्हें पढ़ें, इनमें नई ज़िन्दगी के दर्शन होंगे।

* * *

झरोखे : लेखक—भीष्म साहनी, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ४.००, पृ० सं० १५४ (क्राउन)।

'झरोखे' भीष्म साहनी का पहला उपन्यास है। अभी तक वह कहानीकार के रूप में ही विख्यात रहे हैं। इस उपन्यास में एक छोटे से मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। लेखक ने एक छोटे से बालक की आँखों से उस परिवार में घटने वाली छोटी-छोटी घटनाओं को देखने और उनका उल्लेख करने का प्रयत्न किया है। किस प्रकार एक-एक घटना एक-एक प्रबल संस्कार बनकर आती है, और परिवार के बच्चों के भावी चरित्र की रूपरेखा गढ़ती चली जाती है, यह इस उपन्यास की मुख्य 'थीम' है। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों विशेषकर बाल मनोविज्ञान के सन्दर्भ में लिखे गये उपन्यासों में यह प्रमुख स्थान प्राप्त करेगा। प्रत्येक परिवार के लिए पठनीय।

* * *

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जवाहरनगर, दिल्ली-७

हिन्दी साहित्य को कूर्मांचल की देन (शोध-प्रबन्ध) : लेखक—डॉ० भगतसिंह, प्र० सं० अक्तूबर १९६७, मूल्य ३०.००, पृ० सं० ४२४ (रायल)।

कूर्मांचल के प्रमुख साहित्यकारों की साहित्य परम्परा का एकत्र अध्ययन इस शोध-ग्रन्थ का अभीष्ट है। पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय।

* * *

मनुष्य की उत्पत्ति और मानव जातियाँ : लेखक—भूपेन्द्रनाथ सान्याल, प्र० सं० अगस्त १९६७, मूल्य ५.००, पृ० सं० १७४ (क्राउन)।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजना के अन्तर्गत मानवशास्त्र विषय पर प्रकाशित इस कृति में ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दृष्टि से मानव विकास का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मानविकी के सभी अध्येताओं के लिए पठनीय।

* * *

स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ जीवन : लेखक—डॉ० आर० एन० व्यास, प्र० सं० अगस्त १९६७, मूल्य ३.५०, पृष्ठ संख्या १२०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक स्वास्थ्य इस पुस्तक का मूल विषय है। लेखक ने मानसिक तनाव एवं व्याधि से मुक्ति पाने के विविध मार्ग बताये हैं।

* * *

अपराजिता : लेखक—कुँवर चन्द्रप्रकाशसिंह, प्र० सं० अगस्त १९६७, मूल्य ६.००, पृ० सं० १२४ (डिमाई)।

प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ कवि की गहन अनुभूति और कल्पना के शृंगार से मण्डित हैं। काल के प्रभाव से प्रभावित संस्कृति तथा इतिहास भी इन कविताओं के विषय हैं। कश्मीर, हिमालय, गांधी, धरती और मेघ, गीत विविध कविताएँ कवि की भावप्रवणता तथा युगबोध को अभिव्यक्त करती हैं।

* * *

सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की मानक ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं—

१. उद्योग का नियन्त्रण : लेखक—राबर्टसन तथा डेनिसन, अनुवादक – लक्ष्मीनारायण, नाथूराम तथा नूरनबी अब्बासी, प्र० सं० नवम्बर १९६७, मूल्य ५.५०, पृ० सं० १४८ (रायल)।

२. कराधान : एक सैद्धान्तिक विवेचन : अनुवादक एवं संकलनकर्ता—लक्ष्मीनारायण, नाथूराम, प्र० सं० दिसम्बर १९६६, मूल्य ५.००, पृ० सं० २३२ (डिमाई)।

उपर्युक्त पुस्तकें अर्थशास्त्र तथा वाणिज्य के प्रमुख मानक ग्रन्थ हैं। कराधान में मसग्रेव, चेल्लैना, केल्डार आदि कर विशेषज्ञों के निबन्ध संगृहीत हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय रचना केन्द्र ने मानविकी विषय के अन्य ग्रन्थ भी प्रकाशित किये हैं, उनका यह प्रयास सर्वथा सराहनीय है।

* * *

अन्य प्रकाशक

राष्ट्रभाषा का शुद्ध रूप : लेखक—निगमानन्द परमहंस, प्रकाशक-शब्दलोक प्रकाशन, वाराणसी-२, प्र० सं० अक्तूबर १९६७, मूल्य ६.०० (डिमाई)।

यह हिन्दी भाषा का व्यावहारिक व्याकरण है। इस पुस्तक में व्याकरण-सम्बन्धी प्रायः सभी विवादास्पद नियमों, मनमाने हिन्दी प्रयोगों तथा शब्दों के स्वरूप तथा गठन पर विस्तृत विचार प्रस्तुत हुआ है। व्याकरण सम्मत भाषा के ज्ञान के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

* * *

झलकियाँ : लेखक—निरंजननाथ आचार्य, प्रकाशक—**हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्रा० लि०**, बम्बई-४, मूल्य ३.००, प्र० प्र० १९६७ ई०।

झलकियाँ लेखक की आपबीती तथा परबीती घटनाओं के १५ संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं। अत्यन्त चुटीली, मार्मिक एवं भावप्रवण।

* * *

सुब्रह्मण्य भारती : लेखक—डॉ० पी० जयरामन और श्रीमती तुलसी जयरामन, प्रकाशक—**क्षितिज प्रकाशन, २१-ए खत्तर गली, बम्बई-४**, मूल्य १.५०, प्रथम प्रकाशन १९६७।

कवि भारती दक्षिण में तमिल और तमिलनाड की जनता में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति का सृजन करने वाले प्रथम कवि थे। तमिल में उनकी 'वन्देमातरम्' कविता उतनी ही विख्यात है जितनी बंकिम की 'वन्देमातरम्' उत्तर भारत में। उस देशभक्त कवि का यह संक्षिप्त जीवन चरित्र बाल-युवा सभी के लिए पठनीय है।

* * *

सहयोगी पत्र-पत्रिकाएँ

संजीवनी : सम्पादिका कु० वीरेन्द्र सिंधु, एम० ए०, सहारनपुर। संघर्ष जीवी चैतन्य पीढ़ी की अग्रदूत वार्षिकी, मूल्य ५.००। क्रान्तिकारी भगतसिंह की बहन द्वारा उसकी स्मृति में प्रकाशित।

* * *

पारपथ : सम्पादक विष्णुदत्त द्विवेदी, प्रकाशक—**प्रतिभा प्रकाशन, २४-ए थियेटर कम्युनिकेशन बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली-१**। मासिक, वार्षिक शुल्क दस रुपये, नवम्बर १९६७ में प्रथम अंक प्रकाशित।

* * *

हिन्दी समाचार जगत् : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली-६ द्वारा प्रकाशित, सम्पादक परशुराम शर्मा।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोध-ग्रन्थ

शुक्ल, डॉ० दयाशंकर, **हिन्दी का समस्यापूर्ति काव्य**, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ — २५.००
सिंह, डॉ० भगत, **हिन्दी साहित्य को कूर्मांचल की देन**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली — ३०.००
सिंह, डॉ० शिवकरण, **स्वच्छन्दतावाद और छायावाद का तुलनात्मक अध्ययन**, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद — १०.००
चुघ, डॉ० सत्यपाल, **प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि**, लोकभारती प्रकाशन ,, — ३०.००
रावत, डॉ० चन्द्रभान, **मथुरा जिले की बोली**, हिन्दुस्तानी एकेडमी ,, — १५.००
सिंह, डॉ० इन्द्रपाल, **शृङ्गाररस का शास्त्रीय विवेचन**, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी — १०.००
दक्षिणामूर्ति, डॉ० एस० एन०, **हिन्दी और तेलुगु के कृष्ण-काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन**, हिन्दी साहित्य संसार, लखनऊ — २०.००
तिवारी, विश्वनाथ, **छायावादोत्तर हिन्दी गद्य-साहित्य**, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी — १५.००

साहित्यशास्त्र, समीक्षा, भाषाशास्त्र

सिंह, उदयभानु (सं०), **भारतीय काव्यशास्त्र**, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली — १०.००
पीयूष, डॉ० कृष्णनन्दन (सं०), **महाकवि विद्यापति : स्थापना और विवेचन** ,, ,, ,, — १४.००
दुबे, डॉ० लक्ष्मीनारायण, **'प्रसाद'-साहित्य : कुछ विचार**, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर (म० प्र०) — १०.००
मिश्र, गंगाधर, **युगाराध्य निराला** श्री राष्ट्रभाषा विद्यालय, काशी — १०.००
मेघ, डॉ० रमेशकुन्तल, **तुलसी : आधुनिक वातायन से**, भारतीय ज्ञानपीठ ,, — १२.००
सिंह, दूधनाथ, **अपनी शताब्दी के नाम** (विविधा), ,, ,, ,, — ४.००
गुप्त, डॉ० माताप्रसाद, **कुतुबशतक और उसकी हिन्दुई**, ,, ,, ,, — ७.००
सिंह, डॉ० शिवकरण, **आलोचना के बदलते मानदण्ड और हिन्दी साहित्य**, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद — १५.००
मिश्र, डॉ० रामप्रसाद, **हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास**, साहित्य निकेतन, कानपुर — ९.००
वर्मा, डॉ० रामकुमार, **साहित्य-शास्त्र**, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद — ७.५०
'मानव', विश्वम्भर, **नई कविता : नये कवि**, ,, ,, ,, — ६.५०
पद्मावती, श्रीमती एस० के०, **दिनकर—व्यक्तित्व एवं कृतित्व**, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा — १५.००
रावत, डॉ० चन्द्रभान, **सूर-साहित्य का नव मूल्यांकन**, ,, ,, ,, — २०.००
दिनेश, डॉ० रामगोपाल शर्मा, **शोध और समीक्षा**, कल्याणमल एण्ड सन्स, जयपुर — ८.००
कुमार, डॉ० देवेन्द्र, **भ्रमरगीत और सूर**, ग्रन्थम्, कानपुर — ८.००
खरे, डॉ० गणेश, **युगकवि प्रसाद**, ,, ,, — १५.००
मेघ, डॉ० रमेशकुन्तल, **कामायनी की सामाजिक भूमिका**, ,, ,, — १०.००
रस्तोगी, डॉ० गिरीश, **हिन्दी नाटक : सिद्धान्त और विवेचन** ,, ,, — १५.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डेय, डॉ० कान्तिचन्द्र, **स्वतन्त्र कलाशास्त्र,** चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी ३५.००
हीरा, डॉ० राजवंश सहाय, **भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त,** ,, ,, ,, १५.००
शर्मा, आचार्य पद्मसिंह, **बिहारी सतसई : तुलनात्मक अध्ययन,** ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली १२.५०
लाल, डॉ० हरगू, **साहित्य : विश्लेषण और परख,** ,, ,, ,, ६.००
वर्मा, श्री सतीश बहादुर, **जयशंकर प्रसाद : नाट्य-शिल्प और कृतियों का मूल्यांकन,** ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली ६.५०
संसारचन्द्र, डॉ०, **अपनी डाली के काँटे** (व्यंग्यात्मक निबन्ध), उमेश प्रकाशन ,, ३.००
सोलंकी, डॉ० कोमलसिंह, **भाषा की उत्पत्ति तथा हिन्दी और उसकी बोलियाँ** ,, ,, ,, २.५०
यादव, राजेन्द्र, **कहानी : स्वरूप और संवेदना,** नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
गुर्टू, शचीरानी, **साहित्य दर्शन,** प्रभात प्रकाशन, दिल्ली २५.००
शैदा एवं गुप्त, श्री विश्वनाथलाल एवं डॉ० किशोरीलाल (सं०) **हरिऔध शती स्मारक ग्रन्थ,** विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी १६.००

उपन्यास

सिंह, शिवप्रसाद, **अलग-अलग वैतरणी,** लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद १५.००
अग्रवाल, भारत भूषण, (अनु०) **निवेदिता रिसर्च लेबोरेटरी** (आदमी और कीड़े), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ६.००
मस्तूर, खुदैजा (लेखक), पाल, सुरेन्द्र (अनु०), **आँगन** ,, ,, ,, ८.००
मिश्र, वीरेन्द्र (अनु०), **पारसमणि,** ,, ,, ,, ४.५०
वसु, मनोज, **रात का मेहमान,** राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १०.००
भट्टाचार्य, भवानी, **लद्दाख की छाया,** ,, ,, ५.००
सेन, चतुर, **खग्रास,** ,, ,, ६.००
जैबलंडन, **जंगल की पुकार,** ,, ,, ५.००
गुप्त, नीहार रंजन, **श्रावणी** (बंगला से अनुवाद), वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई ६.००
अमरकान्त, **आकाश पक्षी,** वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई ७.००
यशपाल, **झूठा सच** (संक्षिप्त संस्करण), लोकभारती, इलाहाबाद ७.००
जरासन्ध, **आश्रम,** साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद ३.००
थापर, कमाण्डर रविन्द्र, **उल्टे कदम,** ,, ,, ,, ३.००
राघव, डॉ० रांगेय, **महायात्रा,** किताब महल प्रा० लि० ,, १८.००
सांकृत्यायन, महापण्डित राहुल, **जय यौधेय** ,, ,, ६.००
प्रियंवदा, उषा, **रुकोगी नहीं··· राधिका,** अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली ५.००
यादव, राजेन्द्र, **मन्त्रविद्ध,** ,, ,, ३.५०
कुद्दूस, गुलाम, **बाँदी,** ,, ,, ६.००
मित्र, विमल, **बेगम मेरी विश्वास,** वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा० लि०, बम्बई २५.००
विशी, प्रमथनाथ, **लाल किला,** ,, ,, ,, २०.००

कहानी

कौसल्यायन, भदन्त आनन्द (सं०) **प्रतिनिधि कहानियाँ : सिंहल कहानियाँ,** भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ५.००

हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसाई, हरिशंकर, **सदाचार का ताबीज** (व्यंग्य शब्द-चित्र), भारती ज्ञानपीठ, वाराणसी ३.००
विद्यालंकार, चन्द्रगुप्त, **श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ**, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २.००
सुदर्शन, पण्डित, **पत्थरों का सौदागर**, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्रा० लि०, बम्बई २.५०
किशोर, गिरिराज, **पेबरबेट**, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ३.५०
कौशिक, विश्वम्भरनाथ शर्मा, **ताई तथा अन्य कहानियाँ**, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ ३.००
निराला, सूर्यकान्त त्रिपाठी, **रामायण की अन्तर्कथाएँ**, ,, ,, २.००
वर्मा, निर्मल, **पिछली गर्मियों में**, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ५.००
मित्तल, श्री जितेन्द्र कुमार, **दूर हटो ए दुनिया वालो ! हिन्दुस्तान हमारा है।**
ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली २.२५

कृशनचन्दर, **उलझी लड़की काले बाल**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०
ठाकुर, रवीन्द्रनाथ, **रवीन्द्र चतुर्दशी**, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा २.५०
,, ,, **अपरिचिता**, ,, ,, ,, २.५०
सिंह, दूधनाथ, **सपाट चेहरेवाला आदमी**, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली ४.००
भारती, डॉ० धर्मवीर, **चाँद और टूटे हुए लोग**, किताब महल प्रा० लि०, दिल्ली ५.००
सिंह, राजबहादुर, **महाभारत की कहानियाँ**, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २.००
,, ,, **रामायण की कहानियाँ**, ,, ,, ,, ३.००
कामिनी, विमल, **हर नागरिक मोर्चे पर**, प्रभात प्रकाशन, २.५०

काव्य

सुमन, शिवमंगलसिंह, **पर आँखें नहीं भरीं**, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४.००
वर्मा, श्रीकान्त, **माया दर्पण**, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ३.५०
मिश्र, वीरेन्द्र, **अविराम चल मधुबन्ती**, ,, ,, ,, ३.००
गोयलीय, अयोध्याप्रसाद, **सुसकायें तो फूल झड़े**, ,, ,, ,, ४.००
पन्त, सुमित्रानन्दन, **स्वर्णिम रथचक्र**, लोकभारती, इलाहाबाद ६.००
शास्त्री, जानकीवल्लभ, **तमसा**, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ४,००
शर्मा, नरेन्द्र, **बहुत रात गए**, ,, ,, ,, ८.००
ज़ाफ़री, सरदार, **प्यास की आग**, ,, ,, ,,
सुलतानपुरी, श्री शंकर, **मुक्तिदूत** (खण्डकाव्य), ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली २.५०
बच्चन, **बहुत दिन बीते**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
अज्ञेय, **उत्तर प्रियदर्शी**, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि०, दिल्ली ३.००
वाजपेयी, कैलाश, **देहान्त से हटकर**, ,, ,, ६.००
पीयूष, डॉ० कृष्णनन्दन, **उमापति पारिजात-हरण**, गुरुदास कपूर एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
राही, देवी प्रसाद, **ज्योति-जवाहर**, ,, ,, ,, ५.००
सुमन, क्षेमचन्द्र, **नारी तेरे रूप अनेक**, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १५.००

जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र और निबन्ध

अज्ञेय तथा सहाय, रघुवीर (अनु०), **विवेकानन्द** (जीवनी), लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली ७.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शलभ, प्रो० घनश्याम, **सृष्टि की दृष्टि** (निबन्ध), अनुराग प्रकाशन, अजमेर — १२.५०
शर्मा, लालताप्रसाद, **वीर विदुषी स्त्रियाँ** (जीवनियाँ), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली — २.५०
कृष्णदास, राय, **जवाहर भाई, उनकी आत्मीयता और सहृदयता**, सेतु प्रकाशन, झाँसी — ११.००
अग्निहोत्री, नारायण, **चरित्र निर्माण की पगडण्डियाँ** (जीवनी), साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद — ६ ००
वर्मा, ईश्वरप्रसाद (सं०), **मालवीयजी के सपनों का भारत**, किताबघर, दिल्ली — १०.००
महेश, श्री प्रेमचन्द्र, **काशी का जुलाहा** (जीवनी), ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली — २.००
शुक्ल, डॉ० ललित, **समरजयी** (जीवनी-खण्डकाव्य) " " " — ५.५०
महेश्वरी, आशाराम, **युगनिर्माता जवाहरलाल नेहरू**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली — १.००
गौड, राजेन्द्रसिंह, **दक्षिण के देशरत्न**, साहित्य भवन प्रा० लि०, इलाहाबाद — ४.५०
बाँठिया, कस्तूरीमल, **हेमचन्द्राचार्य जीवन-चरित्र**, चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी — ७.००

नाटक-एकांकी

दिनकर, ओंकारनाथ, **मुक्तिपत्र**, प्रगतिशील समाचार समिति, भीलवाड़ा — ३.५०
" " **गुर्ज्जरेश्वर**, अनुराग प्रकाशन, अजमेर — ४.५०
" " **पवनंजय**, साहित्य निकेतन — २.५०
" " **मृत्युञ्जय**, " " — ३.००
वर्मा, डॉ० रामकुमार **अशोक का शोक**, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद — ३.००
शास्त्री, बाबूलाल शुक्ल, **चन्द्रकलानाटिका**, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी — ६.५०

साहित्येतर खण्ड

भगवान, विष्णु, **भारत का संविधान**, (राजनीति) आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली — १०.००
" " **भारत का संवैधानिक विकास**, (") " " " — १०.००
नारायण, डॉ० इकबाल, **जापान का संविधान**, (") शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा — २.००
रोबर्टसन, डेनिस एवं डेनिसन, स्टेनले **उद्योग का नियंत्रण**, (अर्थशास्त्र) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर — ५.५०
नाथूरामका, लक्ष्मीनारायण, **कराधान, एक सैद्धान्तिक विवेचन** (") " " " — ५.००
चट्टोपाध्याय, देवीप्रसाद, **जानने की बातें-७**, (इतिहास) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली — ३.००
त्रिपाठी, चन्द्रबली, **भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास**, (समाजशास्त्र) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी — १०.००
श्रीनिवास, एम० एन०, **आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन**, (समाजशास्त्र) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली — १०.००
कौशल, रामकृष्ण, **हिमानियों के देश में**, (यात्रा-साहित्य) नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली — ४.००
श्रीवास्तव, गोपीनाथ, **सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग**, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद — ७.००
प्रकाश, डॉ० बुद्ध, **भारतीय धर्म एवं संस्कृति**, (संस्कृति) मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ — ६.००
मिश्र, बालकृष्ण, **हस्तलिपि-विज्ञान**, (हस्तलिपि) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली — मूल्य (अज्ञात)
व्यथित-हृदय, **जब धरती डोलती है**, (भूगर्भशास्त्र) ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली — ३.००
शर्मा, श्री हरिदत्त, **भारतीय राजनीति : शंकाएँ और समाधान**, (राजनीति) ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली — ३.५०
फाड़लर, **माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षण**, (शिक्षा) आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली — ३.००

हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारनर, **प्राथमिक स्कूल की अध्यापन विधियाँ**, (शिक्षा) आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ३.००
गैरी, **अधिगम का मनोविज्ञान**, (मनोविज्ञान) " " " ३.००
पाठक, डॉ० सर्वदानन्द, **विष्णु पुराण का भारत**, (संस्कृति) चौखम्बा सं० सीरीज, वाराणसी २०.००
जोशी, पं० हरिशंकर **वैदिक योग सूत्र**, (दर्शन) " " " २०.००
पाण्डेय, डॉ० उमाचन्द्र, **याज्ञवल्क्य स्मृति**, (स्मृति) " " " २०.००

बाल तथा किशोर-साहित्य

पाण्डेय, विष्णुकान्त, **चाचा नेहरू**, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली १.००
पावरी, सोली, **ये नन्हें दोस्त-दुश्मन**, (मानवस्य सूक्ष्माकृतयः संस्कृत में भी) सोमैया पब्लिकेशन प्रा० लि०, बम्बई १.८०
शाह, रसिक, **क्या मानव वानर से विकसा ?** " " " " १.८०
पावरी, सोली एवं शाह रसिक, **सचराचर को धरा खींचती**, " " " " १.८०
विज्ञान विहारी, **राकेट यानी अग्निबाण**, वारो एण्ड कम्पनी प्रा० लि० पब्लिशर्स, बम्बई १.२५
व्यथित हृदय, **दीपधर्म का, बत्तियाँ ज्ञान की**, ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली २.५०

कोश तथा सन्दर्भ—ग्रंथ

विश्वविद्यालय स्तरीय मानक ग्रन्थ सूची, (भाग १), वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली
उपाध्याय, बलदेव, **सूक्ति मंजरी**, (सूक्ति कोष) चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी ८.००
त्रिपाठी, डॉ० रामप्रताप (सं०) **हिन्दी विश्वकोष**, (खंड ८), नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ३०.००
अनूदित, **सचित्र विश्वकोश** (दस खंडों में), राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-६ ७०.००

पाकेट पुस्तकें

साधना पाकेट बुक्स, दिल्ली-७

नन्दा, गुलशन, **नीलकंठ**, (उपन्यास) ३.००
वाजपेयी, भगवती प्रसाद, **कसक**, (") २.००
नन्दा, गुलशन, **गेलार्ड**, (") ३.००
थानवी, शौकत, **जोड़तोड़**, (") २.००
शर्मा, ओमप्रकाश, **साँझ हुई घर आये**, (") २.००
कृष्णचन्दर, **बर्फ के फूल**, (") २.००
भारती, दत्त, **आधी रोटी**, (") २.००
मोराविया, अलबर्टो, **वासना का ज्वार** (") २.००
रशीद, आदिल, **दो दिल प्यार भरे**, (") २.००
शर्मा, डॉ० मनीशंकर, **स्त्री और सेक्स**, (सेक्स) २.००

पाकेट पुस्तकों में नया हस्ताक्षर

अनुपम पाकेट बुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली-७

पाकेट पुस्तकों के अनुभवी प्रकाशक श्री ओमप्रकाश शर्मा ने अनुपम पाकेट बुक्स का प्रकाशन आरम्भ किया है। सर्वप्रथम दस पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। नाम के अनुसार ही ये पाकेट पुस्तकें आवरण, साजसज्जा तथा गेटअप में अनुपम हैं। विषय की विविधता है, इनमें यशपाल से लेकर गुरुदत्त तक के उपन्यास हैं तो काका हाथरसी और देवराज दिनेश की हास्य-व्यंग्य कविताएँ और निबन्ध भी हैं। डॉ० श्रीमाली की ज्योतिष विद्या पर अनुपम पुस्तक है। 'हिन्दी प्रकाशक' अनुपम पाकेट पुस्तकों का स्वागत करता है और यशस्वी प्रकाशक को ऐसे अनुपम प्रकाशन के लिए बधाई देता है।

गुरुदत्त, **सम्भवामि युगे-युगे : १** (उपन्यास) २.००
" " " : २ (") २.००
परदेसी, **बड़ी मछली छोटी मछली**, (") २.००
" **कच्ची धूप**, (") २.००
नानकसिंह, **अधखिले फूल**, (") २.००
यशपाल, **देशद्रोही**, (") २.००
वाजपेयी, भगवती प्रसाद, **रात के अँधेरे में**, (उपन्यास) २.००
लारेंस, डी० एच०, **लेडी चैटर्ली का प्रेमी**, (") २.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथरसी, काका, **काका की काकटेल**, (हास्य-कविता) २.००
श्रीमाली, नारायणदत्त, **भारतीय ज्योतिष**, (ज्योतिष) २.००
नन्दा, गुलशन, **जलती चट्टान**, (उपन्यास) २.००
सहराई, हरनामदास, **चुनरिया दाग भरी**, (") २.००
चुगताई, मिर्जा अजीमबेग, **कोलतार**, (") २.००
स्ट्रोकर, ब्रैम, **नरपिशाच ड्रेकुला**, (") २.००
नॉबोकोव, व्लादिमीर, **ललिता**, (") २.००
भारती, दत्त, **एक नीड़ दो पंछी**, (") २.००
दिनेश, देवराज, **फायदे में हूँ तलाक देकर** (लेख) २.००
हाथरसी, निर्भय, **जीजाजी**, (हास्य कविता) २.००
डोंगी, गणपतलाल, **म्यूजिक मास्टर भोलाशंकर इतिश्री**, (रेडियो-रूपक) २.००
जोशी, राधामोहन, **प्यार का स्वरूप** (काम-विज्ञान) २.००

सुबोध पाकेट बुक्स-दिल्ली

... ... **एक लाख नौकरियाँ**, २.००
वंद्योपाध्याय, माणिक, **घर की लाज**, (उपन्यास) २.००
चतुरसेन, आचार्य, **गोली**, (") २.००
आवारा, प्यारेलाल, **मिस चौधरी**, (") २.००
परदेशी, **औरत एक : चेहरे हजार**, (") २.००
जफर, बहादुरशाह, **दीवान-ए-जफर**, (गजल-संग्रह) २.००
व्यास, गोपाल प्रसाद, **मेरी पत्नी भली तो है लेकिन**, (हास्य-व्यंग्य) १.००

हिन्द पाकेट बुक्स प्रा० लिमिटेड, दिल्ली-३२

गुरुदत्त, **सागर और सरोवर**, (उपन्यास) ३.००
कृश्नचन्दर, **पराजय**, उपन्यास २.००
वंद्योपाध्याय, ताराशंकर, **बेगम**, (") २.००
नागर, अमृतलाल, **सेठ बाँकेमल**, (") १.००
चतुरसेन, आचार्य, **चट्टान**, (") २.००
गुप्त, मन्मथनाथ, **नरक**, (") २.००
गुप्त, भैरवप्रसाद, **सत्ती मैया का चौरा**, (") २.००
हमीद, ए०, **सपनों की बाहें**, (") २.००
मित्र, प्रमेन्द्र, **हीरे की चोरी**, (जासूसी उपन्यास) १.००
रंजीत, कर्नल, **प्रसिद्ध जासूस और उनके कारनामें** (जासूसी) २.००
संतराम, बी० ए०, **सफलता के सूत्र**, (जीवनोपयगी) १.००
हंस, मानस, (सं०), **महापुरुषों की सूक्तियाँ**, (") १.००
बच्चन, **निशा निमन्त्रण**, (काव्य-शायरी) १.००
पण्डित, प्रकाश (सं०) **हुस्न-ओ-इश्क**, (" ") २.००
हाथरसी, काका, **प्याऊँ**, (हास्य-काव्य) १.००
अजय (अनु०), **कल क्या होगा ?**, (विज्ञान) १.००

स्टार पाकेट बुक्स

गुलशन नन्दा, **साँवली रात** २.००
गुरुदत्त, **प्रेरणा** ३.००
आदिल रशी, **कुँवारी** २.००
कृश्न चन्दर, **लन्दन के सात रंग** २.००
ओम प्रकाश शर्मा, **माधवपुर हत्याकांड** २.००
धर्मवीर भारती, **सूरज का सातवाँ घोड़ा** २.००
भगवती प्रसाद वाजपेयी, **दूखन लागे नैन** २.००
आरिफ मारहर्वी, **रैन बसेरा** २.००
अनुवाद, **पाँचवीं बेटी** १.००
शायरी, **शकील बदायुनी की शायरी** २.००

हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टार पाकेट सीरीज़ की दस नई स्तकें

SH—108 **साँवली रात :** **गुलशन नंदा** २)

इस युग के सबसे अधिक लोकप्रिय लेखक गुलशन नन्दा का नवीनतम उपन्यास—जो अभी तक सजिल्द संस्करण में भी नहीं छपा।

SH—109 **प्रेरणा :** **गुरुदत्त** ३)

हिन्दी-जगत् के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त का नया उपन्यास।

SH—110 **कुंवारी :** **आदिल रशीद** २)

आदिल रशीद का नया रोमांटिक उपन्यास—नाम की तरह रोचक कहानी।

SH—111 **लन्दन के सात रंग :** **कृश्न चन्दर** २)

कृश्न चन्दर एशिया के महान् लेखक माने जाते हैं। सौन्दर्य-नगरी लन्दन के बारे में उनका यह उपन्यास इस नगर की वास्तविक तस्वीर लिये है।

SH—112 **माधवपुर हत्याकांड :** **ओमप्रकाश शर्मा** २)

जासूसी उपन्यासकारों में ओमप्रकाश शर्मा का नाम सर्वाधिक लोकप्रिय है। प्रस्तुत उपन्यास उनकी रोचक लेखन-शैली का उदाहरण है।

SH—113 **सूरज का सातवाँ घोड़ा :** **धर्मवीर भारती** २)

'गुनाहों का देवता' उपन्यास का नाम किसने नहीं सुना! इसी सुप्रसिद्ध उपन्यास के लेखक का यह एक और उपन्यास।

SH—114 **दूखन लागे नैन :** **भगवतीप्रसाद वाजपेयी** २)

भगवतीप्रसाद वाजपेयी का नाम हिन्दी-पाठकों के लिए सुपरिचित है। उनका यह उपन्यास पॉकेट संस्करण में पहली बार छपा है।

SH—115 **रैन बसेरा :** **आरिफ मारहर्वी** २)

उर्दू के लेखकों में आरिफ मारहर्वी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रस्तुत उपन्यास उनका सामाजिक उपन्यास है।

SH—116 **पाँचवीं बेटी :** **अनुवाद** १)

आक्रान्ता चीन की वास्तविकता एक चीनी लड़की द्वारा उपन्यास के रूप में पढ़ें।

SH—117 **शकील बदायूनी की शाईरी** **संकलन** २)

फ़िल्म जगत् के प्रसिद्ध गीतकार की चुनी हुई गज़लों और शेरों का संकलन।

स्टार पब्लिकेशन्ज़, २७१५ दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

काम की शक्ति अदम्य समझी जाती है

आधुनिक काम-विज्ञान जीव की प्रत्येक सुखद-तीव्र चेष्टा के मूल में काम की अदमनीय शक्ति का दर्शन करता है—

किन्तु वह इस प्रश्न का दो टूक उत्तर नहीं दे पाता कि काम को अदम्य बनाने वाली मूल शक्ति कौन सी है।

इस तथा यौन-सम्बन्धी अन्य अनेक प्रश्नों का उत्तर देने वाली

सर्वथा नवीन मौलिक रचना

यौन-व्यवहार-अनुशीलन

लेखक—**दयानन्द वर्मा**

यह पुस्तक पहले से पढ़ी-सुनी यौन-सम्बन्धी जानकारी को दूसरे शब्दों में पुनः प्रस्तुत करके पाठक का समय नष्ट नहीं करती अपितु थोड़े पृष्ठों में बहुत-कुछ नया, नयी शैली में प्रस्तुत करती है।

यह पुस्तक यौन-सम्बन्धी नयी तथा पुरानी मान्यताओं के बारे में केवल अपना मत प्रस्तुत करके नहीं रह जाती, अपितु नयी मान्यताएँ स्थिर करती है।

अपने विषय की अनेक जज्ञासाओं को शान्त करने वाली तथा नयी जिज्ञासाएँ जगाने वाली एक अनुपम कृति

साइक्लो पद्धति में छपी
चित्र-रहित सजिल्द पुस्तक

मूल्य : १५ रुपये

: वितरक :

हिन्दी बुक सैण्टर, दरियागंज, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त अमरनाथ द्वारा नवीन प्रेस, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६ में मुद्रित एवं ७/१६ दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित। सम्पादक : पुरुषोत्तमदास मोदी।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५ फरवरी, १९६८ अंक ९

हिन्दी प्रकाशक

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

शिक्षा-संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए
श्रेष्ठ पुस्तकें

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद

*जंगल की ओर (सुरेश वैद्य)	६.००
*अज्ञात महाद्वीप की खोज	६.५०
*दक्षिणी ध्रुव की खोज	३.५०
*दक्षिण ध्रुव-विजय	१०.००
*उत्तरी ध्रुव-विजेता	४.००
*उत्तरी ध्रुव की सतह	२.००
*नवीन विज्ञान : १००१ प्रश्न और उत्तर (१९६७)	८.००
*जीवों के शत्रु : विषाणु (१९६७)	५.००
*मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास	१५.००
*मानव की कहानी (कून)	७.५०
*जीवन की कुण्डली (मूर)	७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान (स्किन्नर)	१५.००
*स्कूल पुस्तकालय के विविध रूप (फार्गो)	१०.००
प्राथमिक स्कूल की अध्यापन-विधियाँ (वार्नर) (१९६७)	३.००
माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षण की पद्धतियाँ (फाउलर) (१९६७)	३.००
अधिगम का मनोविज्ञान (राल्फ गैरी) (१९६७)	३.००
अध्यापन-वृत्ति (स्टिनेट) (१९६७)	३.००
*मेरा देश मेरे देशवासी (परमपावन श्री दलाईलामा)	७.५०
*भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन (मोसले)	७.५०

विविध

*मालिनी के वनों में : श्री निधि	६.००
*मचान पर उनंचास दिन : श्री निधि	६.००
*वनराज के राज में : विराज	४.००
*सुनो कान में : सावित्रीदेवी वर्मा	८.५०
*बच्चे और सेक्स शिक्षा : ,, (१९६७)	५.००
*हमारे ये पशु-पक्षी (श्रीचन्द्र जैन) (१९६७)	१२.५०
कर्मवीर : गणेशशंकर विद्यार्थी (१९६७)	३.००
हास्य महाकोश : अरुण (१९६७)	१२.००
*सिंधु सभ्यता का आदि-केन्द्र : हड़प्पा : केदारनाथ शास्त्री	८.००
*अफ्रीका : उसके देश और देशवासी : जगमोहनलाल माथुर (१९६७)	१२.५०
*भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास : मन्मथनाथ गुप्त (छठा संस्करण १९६६)	१५.००
भारत का संवैधानिक विकास : विष्णु भगवान (१९६८)	१०.००
भारत का संविधान : विष्णु भगवान (१९६८)	१०.००
आत्मकथा रामप्रसाद बिस्मिल (१९६६)	३.००
बन्दी जीवन (तीन भाग) शचीन्द्रनाथ सान्याल	१०.००
नारी तेरे रूप अनेक (काव्य) सं० क्षेमचन्द्र सुमन (१९६७)	१५.००

(*चिह्नित पुस्तकें सचित्र हैं।)

आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत् के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त की रचनाएँ

अन्तिम यात्रा	२.००	धर्म, संस्कृति और राज्य	८.००	भूल	३.००
अवतरण	६.००	धर्म तथा समाजवाद	६.००	मनीषा	३.००
इतिहास में भारतीय परम्पराएँ	८.००	नगर परिमोहन	६.५०	ममता	३.५०
उन्मुक्त प्रेम	७.५०	नयी दृष्टि	६.००	मानव	५.००
उमड़ती घटाएँ	६.५०	नये विचार नई बातें	४.५०	मायाजाल	५.००
कला	६.००	निर्मल	३.००	मेरी पसन्द	३.००
कामना	४.००	निष्णात	३.००	मैं न मानूँ	३.००
खेल और खिलौने	५.००	न्यायाधिकरण	७.००	यह क्यों है ?	४.००
गंगा की धारा भाग १	९.००	पंकज	३.००	युग-पुरुष राम	२.००
गंगा की धारा भाग २	९.००	पतन का मार्ग	८.००	युद्ध और शांति भाग १	६.००
गुंठन	७.००	पत्रलता	८.५०	युद्ध और शांति भाग २	६.००
चंचरीक	३.००	पथिक	७.५०	लोक-परलोक	५.००
छलना	७.००	परिवर्तन	२.५०	वाममार्ग	७.००
जगत की रचना	२.००	पाणिग्रहण	६.००	विकार	३.००
जन-प्रवाह	८.००	पुण्यमित्र	४.००	विकृत छाया	५.००
जमाना बदल गया—१	१०.००	पूर्वग्रह	७.००	विक्रमादित्य साहसांक	६.००
जमाना बदल गया—२	९.००	प्रगतिशील	२.७५	विडम्बना	७.५०
जमाना बदल गया—३	१०.००	प्रतिशोध	४.००	विद्यादान	३.००
जमाना बदल गया—४	१०.००	प्रवंचना	५.००	विनाशाय च दुष्कृताम्	७.५०
जवाहरलाल नेहरू	८.००	प्रवृत्ति	५.७५	विलोमगति	६.५०
जात न पूछे कोय	३.००	प्रेरणा	७.००	विश्वास	३.००
जीवन ज्वार	८.००	बनवासी	३.००	सम्भवामि युगे-युगे	८.५०
तब और अब	६.००	बहती रेता	५.००	संस्खलन	६.००
दासता के नए रूप	६.००	बिखरे चित्र (कहानी-संग्रह)	३.५०	सभ्यता की ओर	३.००
दिग्विजय	६.००	बीती बात	३.००	साहित्यकार	४.००
देश की हत्या	६.००	भग्नाश	७.५०	स्नेह का मूल्य	३.००
दो भद्र पुरुष	३.००	भाग्य का सम्बल	४.५०	स्वराज्य दान	७.५०
द्रष्टा	५.००	भाग्य रेखा	३.००	स्वाधीनता के पथ पर	७.५०
		भावुकता का मूल्य	६.००		

प्रकाशक

भारती साहित्य सदन

३०/९०, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक

[हिन्दी साहित्य की प्रगति का परिचायक]

वर्ष ५ : अंक ९
फरवरी, १९६८

सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रकाशन व्यवस्थापक
अमरनाथ

•

मूल्य
यह अंक ०.६० वार्षिक ६.००

सम्पादकीय कार्यालय
के ४०/६, भैरवनाथ, वाराणसी-१

प्रकाशन कार्यालय
हिन्दी प्रकाशक
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

स्वामित्व
अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

३.००
३.००
३.५०
५.००
५.००
३.००
३.००
४.००
२.००
६.००
६.००
५.००
७.००
३.००
५.००
६.००
७.५०
३.००
७.५०
६.५०
३.००
८.५०
६.००
३.००
४.००
३.००
७.५०
७.५०

सम्पादकीय

उपकुलपति सम्मेलन : उपहास, नाटक, अपव्यय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के १ तथा २ फरवरी १९६८ ई० को विश्वविद्यालय स्तरीय हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में विचार करने के लिए हिन्दी-भाषी प्रदेशों के उपकुलपतियों का एक सम्मेलन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री अमरचन्द जोशी की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन में राजस्थान, इलाहाबाद, पटना, रांची, बिहार, अलीगढ़, जोधपुर, आगरा, गोरखपुर, कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, रुड़की, काशी विद्यापीठ, कानपुर, मगध, लखनऊ, कुरुक्षेत्र, भागलपुर, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, जीवाजी, ग्वालियर, इन्दौर, जबलपुर आदि विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों तथा डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० गोपाल त्रिपाठी, प्रो० नगेन्द्र, प्रो० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० सत्यप्रकाश, डॉ० रामचरण मेहरोत्रा, प्रो० ए० चन्द्रहासन, अध्यक्ष केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय आदि विद्वानों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार तथा राज्य सरकारों के विभिन्न अधिकारी भी सम्मिलित हुए।

बातें अच्छी-अच्छी, किस्सा बेताल-पचीसी का

भारतीय भाषाओं में पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन के लिए निर्धारित अठारह करोड़ रुपये को पूर्व परम्परानुसार नाटकीय ढंग से व्यय करने के लिए एक लाख रुपए व्यय कर इस नाटक का अभिनय हुआ। विश्वविद्यालय के विधि विभाग में आयोजित यह सम्मेलन भव्य था, मोटरों की कतारें, होटलों और अतिथिगृहों की व्यवस्था, दावतें यही प्रधान था। सम्मेलन में सम्मिलित हुए अधिकांश व्यक्तियों का यह मत था कि इस सम्मेलन में कोई नई बात कही गई या कोई व्यावहारिक निर्णय लिये गए ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उन्हीं पुरानी बातों को कोई शुरू से, कोई बीच से और कोई अन्त से दुहराता रहा। हर एक अपने-अपने नमूने पेश करता रहा। जिसने साहसपूर्वक नई बात कहनी चाही उसे बोलने का अवसर ही नहीं दिया गया। यद्यपि हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन पर विचार होना था किन्तु अधिकांश वक्ता शिक्षा के माध्यम की रुई ही धुनते रहे और पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में कोई व्यावहारिक निर्णय नहीं हो सका। हर एक इस भय से आशंकित था कि यदि इतनी जल्दी अंग्रेजी त्याग दी गई तो शिक्षा के स्तर का क्या होगा। मानो अभी तक अंग्रेजी माध्यम द्वारा वे स्तर बनाये रखने में सफल रहे हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभा की खोज

प्रो० शेरसिंह ने सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए हिन्दी में पुस्तकें लिखने के लिए प्रतिभा की खोज राष्ट्रीय स्तर पर करने की आवश्यकता पर बल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य के विद्यार्थियों के ये तीन अनिवार्य ग्रन्थ

हिन्दी गद्य : शैली और विधाओं का विकास

डॉ० अमरनाथ सिन्हा

हिन्दी-गद्य की शैली और विधाओं का जो विकास पिछले डेढ़ सौ वर्षों में हुआ है उसका तटस्थ भाव से शोधपरक प्रामाणिक अध्ययन इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। पूरी पुस्तक ११ अध्यायों में बँटी है। प्रथम छः अध्यायों में हिन्दी-गद्य के विकास, परम्परा सूत्र, गद्यशैली के वर्गीकरण और उसके आधार एवं उसकी लोक-धारा, परिनिष्ठित धारा एवं सामन्ती धारा पर प्रकाश डाला गया है। सप्तम अध्याय में उन कारणभूत परि-स्थितियों की मीमांसा की गयी है जो गद्य-विधाओं की प्रेरणा भूमि रही है। परवर्ती चार अध्यायों में उपन्यास, कहानी, नाटक एवं आलोचना का विकासात्मक ऐतिहासिक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। सर्वांगपूर्ण यह पुस्तक संग्रहणीय है।

पृष्ठ संख्या १४२ डबल डिमाई मूल्य २.५०

हिन्दी आलोचना : स्वरूप और विकास

डॉ० रामदरश मिश्र

समालोचना हिन्दी-साहित्य की उन नव्य विधाओं में से एक है जिसका जन्म आधुनिककाल में हुआ है और जिसके विकास में पश्चिम के प्रभाव और पूरब की मंधा का योगदान है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि बीसदीं शती के प्रारम्भ से लेकर अब तक हिन्दी—समालोचना ने स्पृहणीय विकास किया है। पर प्रश्न है कि इसने श्रेष्ठ हिन्दी साहित्य के निर्माण में कहाँ तक योगदान किया है। लेखक ने प्रथम बार इसका प्रामाणिक लेखा-जोखा इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। पूरी पुस्तक आठ अध्यायों में विभक्त है जिससे वैज्ञानिक अध्ययन में सुविधा होती है।

पृष्ठ संख्या १२२ पाकेटबुक मूल्य १.५०

हिन्दी कहानी : प्राक्रया और पाठ

सुरेन्द्र चौधरी

वर्तमान युग में जिन विधाओं के समृद्ध विकास ने हिन्दी साहित्य को गौरव प्रदान किया है उनमें कहानी अन्यतम है जो सर्वाधिक लोकप्रिय भी है। प्रस्तुत पुस्तक प्रथम भाग में हिन्दी कहानी के स्वरूप, वैविध्य, विकास और उद्देश्य का संकेत करते हुए उसकी रचना-प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय पाठ भाग में प्रेमचन्द, अज्ञेय, जैनेन्द्र, यशपाल, उग्र और मोहन राकेश की प्रतिनिधि कहानियों की पाठविधि प्रस्तुत की गयी है। इस पाठविधि के अन्तर्गत एक सावधान कथापाठक की प्रतिक्रिया देखते ही बनती है। प्रस्तुत पुस्तक कथा साहित्य के मर्म और आधारभूमि को समझने की दृष्टि प्रदान करती है।

पृष्ठ संख्या १९२ पाकेटबुक मूल्य २.००

भारती भवन

एक्जिबीशन रोड, पटना-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। आपने बताया कि भारत सरकार ने हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लिए आवश्यक पाठ्य-पुस्तकों और अन्य साहित्य के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता देने का निश्चय किया है। यह सहायता आगामी ६ वर्षों में राज्य सरकारों के माध्यम से दी जाएगी जिसमें राज्य सरकारों को भी २५ प्रतिशत धन लगाना होगा।

हिन्दी पुस्तकों के लिए पाँच करोड़

आपने प्रत्येक विश्वविद्यालय में एक-एक प्रकाशन ब्यूरो और चल निधि की व्यवस्था करने का सुझाव दिया जिसके द्वारा प्रकाशन का कार्य जारी रखा जा सके। प्रो० शेरसिंह ने बताया कि हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार और हरियाना प्रत्येक हिन्दीभाषी प्रदेश को एक-एक करोड़ का अनुदान दिया जाएगा।

टके सेर भाजी टके सेर खाजा

इस सम्मेलन को देखते हुए लगता है कि १८ करोड़ रुपये की यह योजना विगत २० वर्षों में कार्यान्वित असफल योजनाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है। यात्रा भत्तों, सम्मेलनों, दावतों और लाल फीताशाही में यह सारी रकम किसी भी दिन चुक जाएगी। और आज हम जहाँ से काम शुरू करने की बात कर रहे हैं वहीं लौट आएँगे और बड़ी मासूमियत से अपना दिल बहलाते हुए कहेंगे कि १८ करोड़ रुपया ऐसे महान् कार्य के लिए पूरा कैसे पड़ता। शासन की सारी योजनाओं का लक्ष्य प्रभूत मात्रा में धन का व्यय होता है, लक्ष्य की प्राप्ति नहीं। भवनों के निर्माण में लक्ष्य की प्राप्ति धन से भले ही कर ली जाए (हालाँकि इसमें भी असफल ही रहे हैं) ज्ञान तथा चिन्तन के क्षेत्र में धन ही सब-कुछ नहीं है, उसके लिए जिस निष्ठा, लगन और सादगी की आवश्यकता होती है उसका सर्वथा अभाव था: हिन्दी के ग्रंथों के प्रकाशन के लिए पाँच करोड़ रुपये की राशि जिस आधार पर पांच राज्यों में बाँटी जा रही है वह सर्वथा राजनीतिक है। हरियाना एक छोटा-सा राज्य और उत्तरप्रदेश एक विशाल राज्य, दोनों को एक-एक करोड़ रुपये मिलेंगे। कितना पक्षपात-हीन राजनीतिक बटवारा है। जिस प्रदेश में डेढ़ विश्वविद्यालय है उसे और उत्तर-प्रदेश में जहाँ १२ विश्वविद्यालय हैं, दोनों को बराबरी से एक-एक करोड़ रुपया दिया जाएगा। ऐसे ही निर्णयों को दृष्टि में रखकर कहा जाता है—'टके सेर भाजी टके सेर खाजा।' आगे का वाक्य आप स्वयं पूरा कर लें।

दुश्चक्र का भेदन

कुछ उपकुलपतियों ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि विश्वविद्यालय के अध्यापक ग्रंथ-लेखन अथवा अनुवाद का कार्य कर सकने में असफल रहे, पंत विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉक्टर डी० पी० सिंह ने बताया कि उनके विश्वविद्यालय ने अनुवाद के लिए ४ पुस्तकें लीं, फिर ४ की जगह दो हुईं, दो पर ही कार्य आरम्भ हुआ। उनमें से भी एक से अनुवादक महोदय अमेरिका चले गये और दूसरे ने जो थोड़ा बहुत अनुवाद किया भी तो वह उनकी समझ में नहीं आया। उन्होंने स्पष्ट मत व्यक्त किया कि आज अनुवाद से अधिक मध्यम मार्ग अपनाने की आवश्यकता है, अनुकूलन, संशोधन और परिवर्द्धन की।

अनेक उपकुलपतियों ने अंग्रेज़ी की बिदाई में मातम मनाया। रुड़की विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉक्टर एम० आर० चोपड़ा ने इंजीनियरिंग तथा तकनीकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी बनाये जाने के लिए अवधि निर्धारण का विरोध किया। उनके मातानुसार "भाषा लक्ष्य-प्राप्ति का साधन है, लक्ष्य नहीं," जैसे हम अंग्रेज़ी भाषा द्वारा उस लक्ष्य तक पहुँच रहे हों। सारे सम्मेलन में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो० अलीम ने पूरी निष्ठा तथा ईमानदारी से अंग्रेज़ी के दुष्चक्र का भेदन करते हुए कहा, "आजकल विश्वविद्यालयों में जो विद्यार्थी पढ़ने आते हैं, वे दूसरी भाषाओं का जानना तो दूर रहा, स्वयं अपनी मातृभाषा भी अच्छी तरह नहीं जानते। पहले छात्र अपनी भाषा से प्रेम करें, उस भाषा में कुछ करके दिखाएँ तभी दुनिया के दूसरे लोगों से आपकी भाषा भी पढ़ने का आग्रह किया जा सकेगा।"

राजस्थान विश्वविद्यालय के उपकुलपति, जिन्होंने पहले दिन हिन्दी की वकालत की और जो अत्यन्त मधुर हिन्दी बोलते हैं, दूसरे दिन अंग्रेज़ी में ही अंग्रेज़ी के समर्थन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

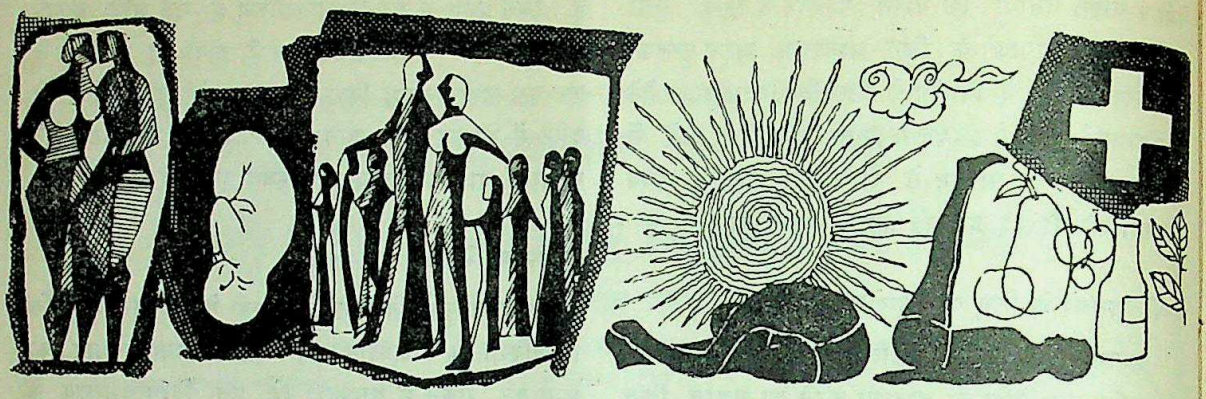

सेक्स-स्वास्थ्य सम्बन्धी उत्कृष्ट साहित्य

डॉ० लक्ष्मीनारायण

पति-पत्नी
बर्थ-कंट्रोल
स्त्री-पुरुष (सेक्स)
सेक्स की समस्याएँ
सेक्स की विचित्रताएँ
विवाह के बाद

सरल प्राकृतिक चिकित्सा
योगासन और स्वास्थ्य
स्वस्थ कैसे रहें ?
डाक्टर के आने से पहले
फस्ट एड तथा नागरिक सुरक्षा

आनन्दकुमार

आपका शरीर

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य एक रुपया

अपने नगर के पुस्तक-विक्रेता, रेलवे बुकस्टाल या रोडवेज़ बुकस्टाल से खरीदिये।
सूचीपत्र के लिए हमें लिखिए।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लि., जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतावनी दी, "अंग्रेज़ी के बिना इस देश के बौद्धिक भविष्य की समाधि बन जाएगी।" बिहार के संसद सदस्य श्री गंगाशरण सिन्हा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान, ने उपकुलपति सम्मेलन के नाटकीय दुष्चक्र का भेदन करते हुए कहा—"लगता है राजनीतिक क्षेत्र की गलतियां यहां भी दुहराई जा रही हैं। यद्यपि सम्मेलन एक सीमित कार्य के लिए बुलाया गया किन्तु बैताल पचीसी की तरह सारी कहानी का माध्यम क्या हो, कब हो, किस विषय में हिन्दी न हो—शुरू से ही दुहराते रहे। बातें अच्छी-अच्छी करते रहे पर यही नहीं तय कर पाए कि पहले बीज हुआ या पहले पेड़। देश की पृष्ठभूमि, देश के वातावरण को देखिए। हिन्दी में पुस्तकें नहीं हैं इसलिए पढ़ाएंगे नहीं, तैरना नहीं आता, इसलिए पानी में प्रवेश ही नहीं करेंगे। हर भाषा का अपना प्रवाह और गति होती है, जब तक हिन्दी में हम पढ़ेंगे नहीं, पढ़ाएँगे नहीं, उसकी क्षमता हमें कैसे ज्ञात होगी और कैसे बढ़ेगी। यह सुनते-सुनते कान पक गये कि सरकार यह करे, वह करे। क्या सरकारों के भरोसे आज तक कोई काम सफल हुआ है, हम व्यावहारिक दृष्टि से विचार करें, विकेन्द्रित रूप से काम होना चाहिए। देश की सभी शक्तियां इस कार्य में लगाई जानी चाहिए, प्रकाशकों का भी पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त करना चाहिए।"

लक्ष्य क्या, पहुँचे कहाँ ?

सम्मेलन का आयोजन हुआ था विश्वविद्यालय स्तरीय हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशनार्थ और अन्त हुआ इस घोषणा के साथ कि सन् १९७३ तक सभी संकायों में सर्वोच्च स्तर तक की पढ़ाई हिन्दी में शुरू कर दी जाएगी। जिस प्रकार हमारे शासन ने हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया था, उसी प्रकार उसी छलबल से यह निर्णय भी लिया गया। शिक्षा आयोग के सारे सुझाव धरे-के-धरे रह गये। लगा, शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन का वार्षिक श्राद्ध अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न हो गया। कोई हवाई जहाज से आया, कोई कार से, कोई एयर कंडीशन में और बेचारी हिन्दी के प्रति बड़ी कोमल सहानुभूति व्यक्त कर अपने भत्ते के बिलों पर दस्तखत कर श्राद्ध भोज का स्वाद लेकर चलते बने। और वार्षिकी श्राद्ध के लिए एक प्रस्ताव भी स्वीकृत कर गये "हिन्दी पुस्तक प्रकाशन कार्यक्रम के नियोजन और उसमें समन्वय स्थापित करने के लिए यह सम्मेलन साल में कम-से-कम एक बार अवश्य होना चाहिए।"

सत्ता और भत्ता

हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य के विख्यात प्रणेता डॉ० सत्यप्रकाश से 'हिन्दी प्रकाशक' के सम्पादक ने जिज्ञासा की "क्या आपको हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर लिखने में कोई कठिनाई नहीं होती ?" उन्होंने तत्काल उत्तर दिया, "बिलकुल नहीं, यदि मनोवृत्ति का अभाव नहीं है तो भाषा कभी भी बाधक नहीं हो सकती। भाषा भाषा है, यदि जीवन में सामर्थ्य और मन में संकल्प है तो भाषा कभी अक्षम नहीं हो सकती।" इसी प्रकार सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर के उपकुलपति डॉ० ईश्वर भाई पटेल ने रुड़की विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० चोपड़ा के इस तर्क के उत्तर में कि तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी की शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बनाने के लिए २५ वर्ष के समय की आवश्यकता पड़ेगी—कहना चाहा कि तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी की शिक्षा तो भारतीय भाषा के माध्यम से आज अभी शुरू की जा सकती है। किन्तु उन्हें बोलने का अवसर ही नहीं दिया गया क्योंकि यह सारा आयोजन उन व्यक्तियों द्वारा आयोजित हुआ था जो अपने जीवन की स्फूर्ति समाप्त कर चुके हैं और जो देश के भविष्य के लिए सर्वथा अनुपयुक्त सिद्ध हो चुके हैं, जिनका इस जनतन्त्र में जनमानस से कोई सम्पर्क नहीं है और जो अपनी अन्तिम साँस तक सत्ता और भत्ता छोड़ना नहीं चाहते। डॉ० पटेल एयर कंडीशन भवनों में बैठकर अमेरिका और योरप के स्वप्न संजोकर तकनीक और प्रौद्योगिकी का अध्ययन-अध्यापन नहीं करते। वे अपने देश की मिट्टी को पहचानते हैं, इसीलिए उन्होंने यह स्वीकार किया कि यदि अपनी भुजाओं को उद्यम-कुशल और देश के प्रति निष्ठावान बनाना है तो उन्हें संचालित करने वाले मस्तिष्क को अपनी ही भाषा में सूझ और प्रेरणा प्रदान करनी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा एवं मनोविज्ञान-विषयक हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

- *हमारी शिक्षा* : भगवान प्रसाद १.००
  [प्राचीन-नवीन शिक्षा-प्रणालियों का ऐतिहासिक परिचय]
- *शिक्षा-दर्शन-मंजूषा* : तारकेश्वर सिन्हा ६.७५
  [समस्त शिक्षा-सिद्धांतों की विशद एवं तुलनात्मक व्याख्या]
- *शिक्षा-सिद्धांत-प्रवेशिका* : शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा ... ५.००
  [भारतीय शिक्षा-सिद्धांतों एवं शिक्षा-प्रणालियों का सरल-सम्यक विवेचन]
- *शिक्षक और उनका प्रशिक्षण* : शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा ... ३.५०
  [प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के लिए एक उपयोगी एवं सरल मार्गदर्शिका]
- *भारतीय स्कूलों में समाज-अध्ययन का शिक्षण* : प्रो० मुनेश्वर प्रसाद ६.२५
  [उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत; शिक्षण-प्रशिक्षण की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप एक बहुचर्चित पुस्तक]
- *शिक्षा-मनोविज्ञान-प्रवेशिका* : रमाकांत मिश्र ... ३ ५०
  [बाल-शिक्षा]
- *मानव-मन* : द्वारका प्रसाद ४.७५
  [अनुभवी लेखक द्वारा मानव-मन की सूक्ष्मतम गहराइयों में झाँकने का प्रयास]
- *व्यक्ति, प्रकार और अन्य विश्लेषण* : डॉ० प्रमोद कुमार ... २.२५
  [व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का सरल-सम्यक अध्ययन]
- *समाज मनोविज्ञान-एक अध्ययन* : डॉ० प्रमोद कुमार ... ४.५०
  [समाज-मनोविज्ञान के विद्यार्थियों एवं पाठकों के लिए परम उपयोगी]

ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समिति

भारत सरकार को खतरा है कि उसके बनाये हुए आयोग, निदेशालय, समितियाँ और उनके अफसरों की नौकरियाँ अस्थायी न रह जायँ इसके लिए अब आयोगों के साथ स्थायी शब्द ज़रूर जोड़ दिया जाता है, उदाहरण के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का स्थायी आयोग। चूंकि यह सारा योजनाकार आयोजन इसी आयोग द्वारा आयोजित हुआ। अत: सम्मेलन के निर्णयों के कार्यान्वयन के लिए एक स्थायी समिति गठित की गई। इससे यह बात तो स्पष्ट हो गई कि शासन पर यह भार स्थायी हो गया और प्रति वर्ष एक-एक विश्वविद्यालय अपने यहाँ बारी-बारी से ऐसे समारोह कर सकेगा जिनमें हिन्दी के उद्धार की क्रान्तिकारी योजनाएँ बनती रहेंगी। कहा गया है कि यह समिति देखेगी कि ऐसा साहित्य तैयार हो जिसमें पाठ्य-पुस्तकें, संदर्भ-ग्रन्थ तथा ऐसी पत्रिकाएँ तैयार हों जिनसे विभिन्न विषयों से सम्बन्धित आधुनिक प्रगति की जानकारी हो सके। स्वशासित संघटन मुख्य रूप से अकादमेशियन लोगों को ही रखेंगे। अकादमेशियन जिनको विषय के साथ-साथ भाषा का ज्ञान हो हिन्दी के प्रति, देश के प्रति निष्ठा हो और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति और विदेश जाने के लिए अवसर और वृत्ति की भूख न हो तभी ये अकादमेशियन कुछ कर सकेंगे।

इस स्थायी समिति में निम्नलिखित सात उपकुलपति सम्मिलित हैं—डॉ० अमरचन्द्र जोशी, अध्यक्ष (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), डॉ० विश्वेश्वरप्रसाद (भागलपुर), डॉ० के० एस० जोशी (इंदौर), प्रो० अलीम (अलीगढ़), श्री डी० सी० वर्मा (कुरुक्षेत्र) और डॉ० डी० पी० सिंह (पन्तनगर)। इनके अतिरिक्त राज्य पुस्तक निर्माण बोर्ड के अध्यक्ष या उनके प्रतिनिधि, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार और हरियाना सरकारों के सचिव, शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिनिधि, वैज्ञानिक और तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली आयोग के अध्यक्ष तथा राजभाषा आयोग के अध्यक्ष। इस समिति में कुछ और सदस्यों को मनोनीत करने का भी निश्चय किया गया है। स्पष्ट है कि इन समितियों में प्रकाशक संघों के प्रतिनिधियों तथा हिन्दी संस्थाओं को कोई स्थान नहीं प्रदान किया गया है।

सम्मेलन की संरचना से ऐसा लगा कि ये उपकुलपति विश्व ज्ञान प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों के अध्यक्ष हैं, अत: यह मान लिया गया है कि इनका ज्ञान सर्वव्यापी है, ये सर्वतोमुखी प्रतिभा से मंडित हैं और इन्हें भावी पीढ़ी के लिए ग्रंथ-निर्माण तथा प्रकाशन का महान ज्ञान है जिसे ये अपनी समितियों और गोष्ठियों में सूत्रबद्ध कर हिन्दी-ग्रंथ-प्रकाशन-संहिता का निर्माण करेंगे, जिसके आधार पर १८ करोड़ रुपयों की होली खेली जाएगी।

शिक्षा आयोग तथा अन्य आयोगों पर करोड़ों रुपया व्यय कर चुकने के बाद भी आज हम यहीं तक पहुँच रहे हैं कि शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ बनें या न बनें और कैसे बनें। ऐसे उच्चस्तरीय तमाशे आयोजित करने के बजाय भिन्न-भिन्न विषयों के विद्वानों की समितियाँ बुलाई गई होतीं, हिन्दी में उस विषय में उपलब्ध ग्रन्थ सामने रखे गए होते। एक ब्लू प्रिंट तैयार किया गया होता और वह ब्लू प्रिंट सर्वत्र प्रचारित किया जाता तो देश के इन स्वयंभू विद्वानों से अधिक शासन के दीपक तले अंधेरा की दृष्टि से ओझल अनेक प्रतिभाएँ स्वतन्त्र रूप से इस कार्य में सक्रिय होतीं। किन्तु जनता द्वारा पेट काटकर दिये गए करों पर मौज करने वाली अफसरशाही कब ऐसा होने देगी।

'हिन्दी प्रकाशक' सम्पादक ने विश्वविद्यालय के जन-सम्पर्क अधिकारी से सम्मेलन का कार्यक्रम जानना चाहा और पत्रकार की हैसियत से उसमें सम्मिलित होने की अनुमति चाही तो उत्तर मिला—"यह सम्मेलन कुलपतियों तथा राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों का है, अत: इसमें सम्मिलित होने के लिए अन्य लोगों को निमन्त्रण नहीं भेजा जा रहा है।"

अंधा बाँटे रेवड़ी

यह सम्मेलन जिस कार्य के लिए आयोजित किया गया और इसमें जिस प्रकार के लोग आमन्त्रित किये गए उनमें कहीं कोई तालमेल नहीं था, जो कमेटियाँ बनीं उनमें भी सम्प्रदाय और स्वार्थ की भावना प्रबल थी। इस सम्मेलन में अधिकांश ऐसे उपकुलपति थे जो शीघ्र ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रकाशन—१९६७

उपन्यास

१. गणदेवता (पुरस्कृत)	ताराशंकर बन्द्योपाध्याय	१६.००

जीवनी-संस्मरण

२. शान्ति निकेतन से शिवालिक	सं० शिवप्रसाद सिंह	२०.००

कविता

३. कितनी नावों में कितनी बार	अज्ञेय	४.००
४. अविराम चल मधुवन्ती	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
५. मेपल	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
६. माया दर्पण	श्रीकान्त वर्मा	३.५०

कहानी

७. काठ का सपना	ग० मा० मुक्तिबोध	३.५०
८. प्रतिनिधि संकलन : सिंहल कहानियां	सं० भदन्त आनन्द कौसल्यायन	५.००
९. एक समर्पित महिला	नरेश मेहता	३.००

हास्य-व्यंग्य

१०. सदाचार का ताबीज	हरिशंकर परसाई	३.००
११. कुत्ते की दुम	डॉ० र० श० केलकर	३.००

ललित निबन्धादि

१२. अवधी व्रत कथाएँ	डॉ० इन्दुप्रकाश पाण्डेय	६.००
१३. पुरातत्त्व का रोमांस	डॉ० भ० श० उपाध्याय	६.००
१४. परिवेश	मोहन राकेश	४.००

शोध ग्रन्थ

१५. कुतुब शतक और उसकी हिन्दुई	डॉ० माताप्रसाद गुप्त	७.००

विधा-विविधा

१६. अपनी शताब्दी के नाम	दूधनाथ सिंह	४.००

भा र ती य ज्ञा न पी ठ

३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

कलकत्ता • वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पद से अवकाश ग्रहण करने वाले हैं, जिन्हें हिन्दी में अध्ययन-अध्यापन अथवा लेखन का कोई अनुभव नहीं है। जिनको यह भी ज्ञात नहीं है कि हिन्दी में अमुक विषय की क्या-क्या पुस्तकें हैं। इस सम्मेलन की सारी रचना में विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों के अतिरिक्त सार्वजनिक तथा अर्द्धसार्वजनिक संस्थाओं—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी समिति (उत्तर प्रदेश), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, मध्यप्रदेश शासन परिषद, अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ आदि को कोई स्थान प्राप्त नहीं था। सम्मेलन के आयोजकों को इस बात का खतरा था कि कहीं ये लोग उनके आयोजन के थोथेपन को प्रकट न कर दें और उनके बंटवारे में हिस्सा न लगाने लग जायं। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष को एक फरवरी के बजाय दो फरवरी को सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनौपचारिक रूप से निमन्त्रित किया गया किन्तु न कोई कार्यक्रम दिया गया और न कोई व्यवस्था। अनाहूत-सा व्यवहार किया गया। पुस्तकों के प्रकाशन से सम्बन्धित एक समिति में मौखिक रूप से संघ के अध्यक्ष को आमन्त्रित किया गया जो समिति सम्प्रदाय विशेष द्वारा निहित स्वार्थ के लिए गठित की गई थी और उसमें कहा गया कि आपकी बातें सुन ली गईं अब आप पधारिए। समिति में विश्वविद्यालयों, हिन्दी संस्थाओं तथा प्रकाशकों द्वारा पुस्तकों के प्रकाशन पर विचार किया जाना था, किन्तु डा० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० विश्वेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० बाबूराम सक्सेना (संयोजक) तीनों प्रयाग विश्वविद्यालय के पुराने सहकर्मियों के अतिरिक्त उस समिति में किसी अन्य को स्थान भी प्राप्त नहीं था।

आज देश की राजनीति जिस अभिशाप से त्रस्त है वही अभिशाप शिक्षा के क्षेत्र को भी ग्रस रहा है। जिनकी शक्ति क्षीण हो चुकी है जिनमें सक्रिय चेतना का अभाव है वे अन्तिम साँस तक अपने पीछे आनेवालों के गले के पत्थर बने हुए हैं, उन्हें उठने नहीं देते, उन्हें उभरने नहीं देते और एक दिन उनका उत्साह, उनकी स्फूर्ति मर जाती है और वे इन्हीं की भाँति सत्ता तथा भत्ता प्राप्त करने के अप्रतिभाशाली तरीके अख्तियार करने लगते हैं। यदि देश की शक्ल बदलनी है तो उनको आगे आने दें जिनकी पलकों में स्वप्न हैं, भुजाओं में स्फूर्ति है और मन में कुछ करने के इरादे। सत्ता से अवकाश प्राप्त कर ये विद्वान यदि त्याग और सेवा की भावना से स्वयं ग्रन्थलेखन और पाण्डुलिपि-संशोधन के कार्य किसी सार्वजनिक संस्था के अन्तर्गत करें तो अधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकेगा और देश की युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श उपस्थित होगा।

मुझे तोड़ लेना वनमाली

जो निरन्तर ८० वर्षों तक गाता रहा 'मुझे तोड़ लेना वनमाली, इस पथ पर तुम देना फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।' और सचमुच जिस पथ पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी २० वर्ष पूर्व ३० जनवरी १९४८ की सन्ध्या को अग्रसर हुए थे 'एक भारतीय आत्मा' मंगलवार ३० जनवरी १९६८ को सायंकाल ५-३० उसी पथ पर चल पड़ी जिस पर जाएँ वीर अनेक। सतपुड़ा की रम्य पहाड़ियों के बीच होशंगाबाद जिले में बाबई ग्राम में ४ अप्रैल १८८९ ई० को आपका जन्म हुआ। 'कृष्णार्जुन युद्ध' (नाटक १९१८ ई०), 'हिमकिरीटिनी' (१९४१ ई०), 'साहित्य देवता' (१९४३ ई०), 'हिमतरंगिनी' (१९४८ ई०), 'माता' (१९५१ ई०) 'कला का अनुवाद' (कहानी संग्रह) आदि आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। सन् १९५५ में 'हिमतरंगिणी' पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। आप मध्य प्रदेश की रागिनी और शिंजनी दोनों ही थे। एक ओर जहाँ बाँसुरी से मादक स्वर निकलते थे अवसर आने पर वही बाँसुरी शंखध्वनि का घोष भी करती थी। 'एक भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी के देहावसान से एक युग का अवसान हो गया। 'हिन्दी प्रकाशक' उनकी मृत्यु पर श्रद्धांजलि अर्पित करता है और उनके परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

पद्मनारायण आचार्य स्वर्गीय

गत वर्ष से हिन्दी के साहित्यकारों एवं विद्वानों की मृत्यु का क्रम जो आरम्भ हुआ है वह निरन्तर चलता जा रहा है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० श्रीकृष्ण लाल की मृत्यु को अभी भूले भी न थे कि बुधवार ३१ जनवरी १९६८ की सायंकाल ७ बजे काशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहाती पुस्तक भंडार द्वारा प्रस्तुत

हिन्दी में प्रथम बार
उच्चतम प्रामाणिक
टैक्निकल पुस्तकें

● इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग	हरिचन्द रत्ता	१५.००
● लोको फिटर एण्ड फोरमैन	हरिचन्द रत्ता	१६.२५
● केमीकल इन्डस्ट्रीज	प्रेमशंकर साथी	२५.५०
● मार्डन सोप एण्ड सोप पाउडर इन्डस्ट्री	सुरेशचन्द्र	२५.५०
● फूड इन्डस्ट्रीज	कालीचरण गुप्ता	१६.५०
● आल्टर नेटिंग करेन्ट	प्रो० नरेन्द्रनाथ	१६.५०
● इलै० लाइनमैन वायरमैन गाईड	प्रो० नरेन्द्रनाथ	१६.५०
● मशीनिष्ट गाईड	प्रो० नरेन्द्रनाथ	१६.५०
● ए० सी० मोटर वाईन्डिग	प्रो० नरेन्द्रनाथ	१२.००
● विजय ट्रांजिस्टर गाईड	आर० सी० विजय	२२.५०
● न्यू फर्नीचर कैटलॉग	जावेद आर्टिस्ट	२५.५०
● रेडियो फिजिक्स	प्रो० नरेन्द्रनाथ	१६.५०
● आटो डीजल मैकेनिक	कृष्णानन्द शर्मा	१५.००
● आधुनिक कृषि विज्ञान	रामेश्वर 'अशान्त'	८.२५
● एयर कन्डिशनिंग गाईड	प्रो० नरेन्द्रनाथ	१५.००
● हैन्ड बुक आफ स्टीम इन्जीनियर	प्रो० एच० सी० कपूर	२०.२५
● केमीकल डिक्शनरी	सुरेशचन्द	१५.००
● टैक्निकल डिक्शनरी	बसन्तकुमार जोशी	१५.००
● स्टील फर्नीचर कैटलाग	ज़ावेद आर्टिस्ट	२५.५०
● कैरिज एण्ड वैगनगाईड	श्रीराम धुपड	८.२५

देहाती पुस्तक भंडार

चावड़ी बाज़ार दिल्ली

हिन्दी में टैक्निकल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली सर्वप्रथम प्रकाशन संस्था

फोन : २६१०३०, २६४१९१, २६५४०३

प्रोडक्शन केन्द्र : टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस, इन्डिस्ट्रियल एसटेट सोनीपत (हरियाणा)

पाँच हजार पुस्तकों की विस्तृत जानकारी के लिए डेढ रुपये का मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर भेजकर ५५० पृष्ठों की ज्ञान की कुंजी मँगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ रीडर श्री पद्मनारायण आचार्य का ६० वर्ष की अवस्था में हृदयगति रुक जाने के कारण देहावसान हो गया।

आचार्यजी स्वर्गीय जयशंकर प्रसाद के प्रिय पात्रों में थे तथा डॉ० श्यामसुन्दरदास और आचार्य केशवप्रसाद मिश्र के प्रमुख शिष्य थे। पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी के हिन्दी विभाग में पुनः अध्यक्ष पद ग्रहण करने के पूर्व आप लगभग दो वर्ष तक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के कार्यकारी अध्यक्ष भी थे। आचार्यजी ने डॉ० श्यामसुन्दरदास तथा आचार्य केशवप्रसाद मिश्र के साथ मिलकर अनेक पुस्तकों का लेखन तथा सम्पादन किया है। 'भाषा रहस्य' डॉ० श्यामसुन्दरदास के साथ संयुक्त रूप से लिखी गई आपकी महत्वपूर्ण कृति है।

'हिन्दी प्रकाशक' आपकी मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

रायसाहब रामजवाया कपूर

अतरचन्द कपूर एण्ड संज कश्मीरी गेट दिल्ली के वर्तमान मुख्य संचालक भी राम जवाया कपूर का निधन दिनांक ७-२-६८ को हृदय गति रुक जाने के कारण हो गया।

कपूरजी की आयु इस समय ७६ वर्ष की थी। आपने अपने जीवन के ५० वर्षों में पंजाब, दिल्ली तथा समीपवर्त्ती राज्यों में शिक्षा-क्षेत्र को प्रभावित किया था। आप पंजाब पब्लिशर्ज एसोशियेशन के गत २० वर्षों से अध्यक्ष थे।

भारत के शिक्षण-पुस्तकों के एक उज्ज्वल रत्न प्रकाशक को 'हिन्दी प्रकाशक' अपनी श्रद्धांजली समर्पित करता है और उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

मुद्रण उद्योग संकट में

आज शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान, कला की कल्पना मुद्रणालयों और पुस्तकों के बिना नहीं की जा सकती। विचारों को सर्वजन सुलभ बनाने के लिए प्रेस, पत्र-पत्रिका और पुस्तकों का आश्रय लेना पड़ता है। आज हमारे देश में मुद्रण-उद्योग पर संकट छाया हुआ है। अवमूल्यन ने मुद्रण उद्योग को एक करारी चोट पहुँचाई थी और अभी वह इससे सँभल भी नहीं पाया था कि न्यूनतम वेतन अधिनियम (उत्तर प्रदेश में) तथा समाचार पत्रों के गैर-पत्रकारों के लिए वेतन बोर्ड द्वारा की गयी सिफारिशों ने इस उद्योग का रहा-सहा दम भी निकाल दिया है। कर्मचारियों को उचित वेतन मिले, इसमें हमें आपत्ति नहीं किन्तु जिस एकांगी दृष्टि से ये अधिनियम और सिफारिश लागू किये गए हैं उससे समाज तथा उद्योग में विरोध उत्पन्न होगा। एक ओर विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त लोगों के वेतन के लिए कोई न्यूनतम वेतन निर्धारित नहीं है। दूसरी ओर अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित लोगों को इतना वेतन दिलाया जा रहा है जो देश के पढ़े-लिखों के लिए उपहासास्पद स्थिति उत्पन्न कर देता है।

यदि उनमें कार्य कुशलता बढ़ाने की दृष्टि से वेतन निर्धारित किया जाता तो अधिक उचित होता। जिसे सत्तर-अस्सी रुपये मासिक प्राप्त होते थे वह एकदम से १०४ रुपये या १२० रुपये या १८० रुपये पाने का अधिकारी हो जाता है। जबकि उसकी शिक्षा केवल इतनी ही है कि वह किसी प्रकार केस में से टाइप निकाल कर कम्पोज कर लेता है, उसमें भी उसकी कुशलता नहीं है। अतः वेतन-निर्धारण के साथ-साथ उनके प्रशिक्षण की भी व्यवस्था हो तो अधिक उत्तम होगा। कम-से-कम कक्षा ८ तक पढे-लिखे लोगों को सर्टिफिकेट-शिक्षा दी जाय और तब उनका न्यूनतम वेतन निर्धारित किया जाय तो इस उद्योग को स्थिरता प्राप्त होगी और कार्य-क्षमता भी बढ़ेगी। इसके लिए दो लाख या इससे अधिक आबादी वाले प्रत्येक नगर में छपाई की शिक्षा देने वाले विद्यालय खोले जाने चाहिए जो आरंभिक शिक्षा अपने यहाँ दें और व्यावहारिक शिक्षा के लिए बड़े प्रेसों में भेज कर उनमें कार्य-कुशलता उत्पन्न करें।

पिछले दिनों दिल्ली मुद्रक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए इंडियन एण्ड ईस्टर्न न्यूज पेपर सोसाइटी के अध्यक्ष श्री जे० एम० डिसूजा ने मुद्रण उद्योग की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव में मुद्रण उद्योग को भारी क्षति उठानी पड़ रही है। सरकार एवं अधिकारियों का रुख इस उद्योग के प्रति उपेक्षापूर्ण रहा है। मुद्रण-सामग्री के आयात के लिए सरकार ने कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साहसिक चरण

हिन्दी के उपन्यास-साहित्य की गौरवमय परम्परा में दो नवीन संयोजन

● बेगम मेरी विश्वास

विमल मित्र

भारत में अंग्रेज़ व्यापार करने आये, लेकिन शासक बन बैठे। कैसे ? इसका उत्तर देने में ऐतिहासिक एक-मत नहीं हैं। मध्ययुग के अवसान और आधुनिक युग के पदार्पण का वह संधिकाल था। सिराजुद्दौला सूबे बंगाल का नहीं, तत्कालीन भारत का सर्वाधिक विवादपूर्ण व्यक्तित्व है। उसने आने वाली पीढ़ियों के सामने एक महान् सत्य को प्रकट किया—जन साधारण के चरित्र-दोष से ही राज्य नष्ट होता है। बंगला के श्रेष्ठ उपन्यासकार विमल मित्र ने अठारहवीं सदी के बंगाल का जो इतिहास **'बेगम मेरी विश्वास'** में उपस्थित किया वह इतिहास से अधिक सत्य है। यह उस काल का सत्य है, उस काल के जन-जीवन का सत्य है जो शाश्वत भी है और ऐतिहासिक भी।

डिमाई साइज, पृष्ठ संख्या १०२२, चौरंगा आफसेट कवर, रेक्सिन की पक्की जिल्द, मूल्य : ३२·००

● लाल किला

प्रमथ नाथ बिशी

इस उपन्यास का नायक है दिल्ली। दिल्ली—इस नाम में कितना रहस्यमय आकर्षण है ! दिल्ली पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक भारत का मर्मस्थल है। लाल किला उसी दिल्ली का प्रतिनिधि और उत्थान-पतन का मूक साक्षी है। दिल्ली और लाल किले के माध्यम से विगत शती को जीता-जागता वर्तमान के रूप में लेखक ने पाया और उसका तथ्य-निष्ठ चित्रण किया है। (इतिहास के उस रंगमंच के प्रमुख पात्र बहादुर शाह, ज़ीनतमहल, जनरल निकलसन या ज़नरल आर्चडैल विलसन ही नहीं अपितु जीवनलाल, पन्ना, तुलसी, गुरवचन सिंह, खुरशीद जाल, सोहराब मियाँ जैसे साधारण लोग भी प्रमुख हैं जिनके कारण सारी स्थितियाँ बदल गयी) बिशीजी बंगला के यशस्वी उपन्यासकार हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के क्षेत्र में उनका विशिष्ट अधिकार है। 'कैरी साहब का मुंशी' के बाद यह उनका उल्लेखनीय सर्जन है।

डिमाई साइज, पृष्ठ संख्या ६७२, चौरंगा आफसेट कवर, रेक्सिन की पक्की जिल्द, मूल्य : २२·००

●

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

३, राउण्ड बिल्डिंग, बम्बई-२

१७ महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीर्घकालीन नीति नहीं अपनायी है जिस कारण देश में मुद्रण सामग्री का अभाव बना हुआ है। इससे मुद्रण के स्तर में सुधार नहीं हो पाता।

स्वतंत्रता के पूर्व अपने कम साधनों में भी हम जैसी छपाई कर लेते थे आज इतने साधन होने के बावजूद भी अच्छी छपाई नहीं कर पाते, क्योंकि हममें काम करने की लगन और निष्ठा का सर्वथा अभाव हो गया है। साथ ही उस समय जैसा कागज और स्याही हमें मिलती थी, आज देश की इतनी औद्योगिक उन्नति होने के बाद भी उनके स्तर में गिरावट आ गई है। शासन इस उद्योग को नियमों की जड़ता में जकड़ने के बजाय इसे उन्नत करने की दिशा में कोई व्यावहारिक कदम उठाये तो अधिक उचित होगा।

आवश्यक सूचना

१५ फरवरी, सन् १९६८ से **नेशनल पब्लिशिंग हाउस** का प्रकाशन तथा व्यवस्था कार्यालय एवं बिक्री-केन्द्र **२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६** में स्थानान्तरित हो रहा है। सहयोगियों तथा बन्धुओं से निवेदन है कि वे सभी पत्र-व्यवहार अब इस नये पते पर करें।

हमारे नये प्रकाशन

बृहद् हिन्दी ग्रंथ सूची : परिशिष्ट १९६६ : संपादक : यशपाल महाजन	१२.००
बिठूर के नाना (ऐतिहासिक उपन्यास) : आनन्द सागर	५.५०
दो धाराएँ (उपन्यास) : श्रीराम शर्मा, राम	५.००
बात एक नाते की (कहानी) : भगवतीप्रसाद वाजपेयी	४.००
दो फूल एक जिन्दगी (उपन्यास) : विमल वेद	४.००
मधुर मिलन (उपन्यास) : हरिचरण वैद्य	४.५०

हमारे अन्य प्रकाशन

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची (**सन्दर्भ ग्रन्थ**) यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन, संपा.	३६.००
बृहद् हिन्दी ग्रंथ-सूची : परिशिष्ट १९६६	१२.००
अधूरा स्वर्ग (उपन्यास) : भगवतीप्रसाद वाजपेयी	६.००
स्वप्नों की गोद ,, ,, ,,	६.००
होटल का कमरा (कहानी-संग्रह) ,, ,,	३.५०
दूखन लागे नैन (उपन्यास) ,, ,,	५.५०
टूटा टी-सेट ,, ,, ,,	४.००
कैंची और कुर्सी ,, बैजनाथ गुप्त	४.५०
रथ से गिरी बाँसुरी ,, हिमांशु श्रीवास्तव	४.५०
शैलाधीश (ऐतिहासिक उपन्यास) : शत्रुघनलाल शुक्ल	५.००
जब सूरज ने आँखें खोलीं (उपन्यास) कमल शुक्ल	५.५०
अनबूझे सपने (उपन्यास) : उमाशंकर	५.५०
भुवन विजयम् (ऐतिहासिक उपन्यास) ,,	६.००
नीर भर आये बदरा (उपन्यास) ,,	४.००
नई कहानी की मूल संवेदना (आलोचना) सुरेश सिनहा	५.००

प्रकाशक

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

१३३, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नेशनल' के नव-वर्ष के गौरवपूर्ण प्रकाशन

फरवरी ...

मेरी दृष्टि में

श्री मोरारजी देसाई

उपप्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई के देश की विभिन्न ज्वलन्त समस्याओं से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण विचार।

मार्च ...

अपने पार....

राजेन्द्र यादव

शीर्षस्थ कथाशिल्पी राजेन्द्र यादव की एकदम नयी तथा ताज़ी कहानियाँ।

तंत्रालोक से यंत्रालोक तक

डॉ० नगेन्द्र

विदेश-यात्रा के चार मार्मिक संस्मरण।

हिन्दी-समस्या-नाटक

डॉ० मान्धाता ओझा

हिन्दी में समस्यापूर्ण नाटकों के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालने वाला महत्त्वपूर्ण शोधप्रबन्ध।

मध्यकालीन हिन्दी-काव्य में भारतीय संस्कृति

डॉ० मदनगोपाल गुप्त

पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शतियों के हिन्दी-काव्य में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति एवं समाज का अध्ययन। ३५.००

कहानी : स्वरूप और संवेदना

राजेन्द्र यादव

अपने समय के स्वर और कहानी को समझने के लिए एक अपरिहार्य और अनिवार्य ग्रन्थ।

कुछ निबन्ध

डॉ० उमाकान्त

बारह साहित्यिक रोचक निबन्ध।

महिमभट्ट

डॉ० ब्रजमोहन चतुर्वेदी

आचार्य महिमभट्ट के व्यक्तिगत जीवन, वैदुष्य एवं कार्यकाल का निरूपण करते हुए उनके काव्य-सिद्धान्तों का अत्यन्त विशद एवं गहन विवेचन।

पुनर्मुद्रण ...

राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक

वर्षों से अप्राप्य इस महत्त्वपूर्ण एवं बहुचर्चित ग्रन्थ का द्वितीय संशोधित संस्करण।

ने श न ल प ब्लि शिं ग हा उ स

२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

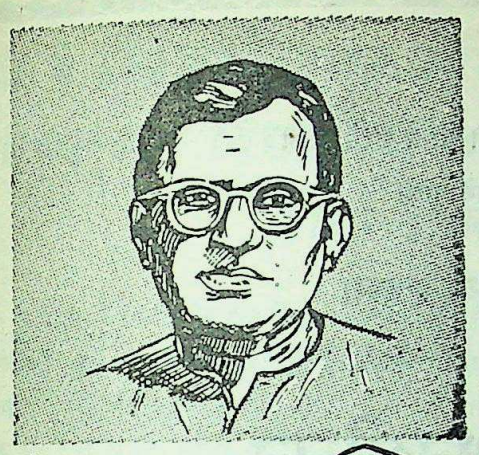

नगेन्द्र-साहित्य

रस-सिद्धान्त	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	१२.५०
देव और उनकी कविता	७.००
आलोचक की आस्था	७.००
रीतिकाव्य की भूमिका	५.५०
विचार और अनुभूति	४.५०
विचार और विवेचन	४.५०
विचार और विश्लेषण	६.००
अनुसन्धान और आलोचना	४.००
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४.५०
सियारामशरण गुप्त	७.५०
कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	३.००
काव्य-बिम्ब	४.००
चेतना के बिम्ब	५.००

शीघ्र प्रकाश्य

मूर्धन्य आलोचक डॉ० नगेन्द्र

का

नवीनतम महत्त्वपूर्ण बृहत् ग्रन्थ

आस्था के चरण

•

३० वर्षों की सर्जनात्मक साधना का नवनीत

•

१०१ समीक्षात्मक निबन्धों का महत्त्वपूर्ण संग्रह

•

बड़े आकार में सात सौ से अधिक पृष्ठ

सुमुद्रित : आकर्षक साजसज्जा

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२/३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौन-विषय की अनेक जिज्ञासाओं को शान्त करने वाली
तथा नयी जिज्ञासाएँ जगाने वाली

सर्वथा नवीन मौलिक रचना

यौन-व्यवहार-अनुशीलन

लेखक—**दयानन्द वर्मा**

यह पुस्तक पहले से पढ़ी-सुनी यौन-सम्बन्धी जानकारी को दूसरे शब्दों में पुनः प्रस्तुत नहीं करती, अपितु थोड़े पृष्ठों में सभी-कुछ नया, नयी शैली में प्रस्तुत करती है।

यह पुस्तक यौन-सम्बन्धी नयी तथा पुरानी मान्यताओं के बारे में केवल अपना मत प्रस्तुत करके नहीं रह जाती, अपितु नयी मान्यताएँ स्थिर करती है।

साइक्लो-पद्धति में छपी
चित्र-रहित पुस्तक

मूल्य : १५ रुपये

: वितरक :

हिन्दी बुक सैण्टर, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के ग्रन्थ और विद्यार्थियों का भाषा-ज्ञान

पुरुषोत्तमदास मोदी

स्वतन्त्रता के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में परिमाणात्मक वृद्धि जितनी तेजी से हुई उतनी ही गति से गुणनात्मक ह्रास भी होता गया। विदेशी शासनकाल में शिक्षा का जो लक्ष्य था—मात्र अर्थकरी अर्थात् रोजी-रोटी के लिए क्लर्क, बाबू तथा अधिकारी तैयार करना—स्वतन्त्रता के पश्चात् भी इस लक्ष्य में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

स्वातन्त्र्य संग्राम के जिन दिनों में हम विदेशी भाषा, वस्तु एवं संस्कृति को पराई और अराष्ट्रीय कहकर उसकी उपेक्षा करते थे वही हमारे गले का हार बन गई। ब्रिटिश शासन से मुक्त होते ही हमने ब्रिटिश संस्कृति को अपने को समर्पित कर दिया।

ब्रिटिश संस्कृति को पराजित करने के लिए अपने अकूत धन से अमेरिका आगे बढ़ा और उसने अपनी संस्कृति और आर्थिक परम्परा का जाल फैलाना आरम्भ किया। उसने हमारे अभावों का लाभ उठाया। परिणाम यह हुआ कि इन विदेशी संस्कृतियों की चमक-दमक में हम अपनी संस्कृति को भूल बैठे। कहने को कांग्रेस शासन ने देश में जनतन्त्र की स्थापना की जिसने राजनीतिक पतन का मार्ग उन्मुक्त कर दिया क्योंकि सफल जनतन्त्र के लिए जनता के जिस प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है उसका सर्वथा अभाव है। हिन्दी जो राष्ट्रीय आवाहन की भाषा थी उसका महत्व समाप्त प्राय हो गया और अंग्रेजी की प्रतिष्ठा बनी रही। जन सामान्य लक्ष्यहीन हो गया, न वह अंग्रेजी में पारंगत हो सका और न हिन्दी का ही ज्ञान प्राप्त कर सका।

ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजी के अध्यापन के लिए प्रशिक्षित अध्यापक नियुक्त किये जाते थे, कितने विश्व-विद्यालयों में ब्रिटिश अथवा ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त अध्यापक रखे जाते थे। वे भाषा की शुद्धता और उच्चारण की ओर अधिक ध्यान देते थे। किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् ऐसे अध्यापकों का अभाव होता गया और यद्यपि अंग्रेजी की प्रतिष्ठा बनी रही किन्तु भाषा की दृष्टि से इसका ह्रास होता गया और पूर्वी उत्तर प्रदेश में तो यह भोजपुरी-अंग्रेजी के नाम से अभिहित होने लगी। हिन्दी को प्रतिष्ठा नहीं मिली। फलस्वरूप अंग्रेजी भाषा का स्तर गिरता रहा जबकि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनी रही, परिणाम यह हुआ कि उसी अनुपात से शिक्षा का स्तर भी गिरता गया और आज हम शिक्षा के दिवालिएपन के शिकार हो गये हैं। न हमें अंग्रेजी का ज्ञान है न हम अपनी भाषा हिन्दी ही जानते हैं।

अंग्रेजी के स्तर के ह्रास के साथ धीरे-धीरे हिन्दी भाषी प्रदेशों में स्नातक स्तर पर कुछ विश्वविद्यालयों में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया और कुछ ने परीक्षा में हिन्दी में लिखने की छूट दे दी। फलस्वरूप हिन्दी में कुछ पुस्तकें निकलीं। किन्तु पारिभाषिक शब्दावली के अभाव और एकरूपता न होने के कारण वे सफल न हो सकीं। असफलता का एक कारण यह भी था कि पढ़ाने वाले अध्यापकों को इस प्रकार की हिन्दी का ज्ञान नहीं था और वे अंग्रेजी-हिन्दी की मिली-जुली खिचड़ी भाषा में पढ़ाते थे। विद्यार्थी शुद्ध हिन्दी में लिखी पुस्तकें समझ नहीं पाते थे। अंग्रेजी-हिन्दी मिली-जुली भाषा में पुस्तकें निकलने लगीं, किन्तु उन पुस्तकों में भी भारतीय परिवेश या सन्दर्भ न होने के कारण वे भी सफल न हो सकीं। परिणामतः और घटिया स्तर की पुस्तकें प्रश्नोत्तर रूप में चल निकलीं और आज वे शिक्षा के प्रत्येक विषय और क्षेत्र पर घोर रूप से छाई हुई हैं।

ऐसी पुस्तकों के प्रचलित होने के विशिष्ट कारण हैं। अब तक हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा न होकर केवल बोलचाल तथा साहित्य की भाषा थी। विद्यार्थी समुदाय का ज्ञान भी सामान्यतः बोलचाल की इस भाषा तक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- यह ग्रन्थ पुस्तक-विक्रेताओं तथा प्रकाशकों के लिए संदर्भ ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ पुस्तकालयों, शिक्षण-संस्थाओं के लिए संदर्भ ग्रन्थ है।

बृहद् हिन्दी ग्रंथ-सूची

(हिन्दी वाङ्मय के ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की विस्तृत नामावली)

Hindi Books in Print; an author-title index

संपादक : यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन

क्या आप जानना चाहते हैं कि :

- अमुक लेखक की कौन-कौन-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं ?
- अमुक पुस्तक का लेखक, अनुवादक तथा संपादक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का प्रकाशक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का विषय क्या है ?
- अमुक पुस्तक का मूल्य क्या है ?

इन सभी जटिल प्रश्नों के उत्तर आप बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची में पाएंगे।

सूची में ६२० हिन्दी प्रकाशकों के २९,००० उपलब्ध प्रकाशन हैं। जिसके दो भाग हैं (१) लेखक निर्देशी में लेखक, ग्रन्थ का नाम, प्रकाशक, मूल्य तथा विषय, एवं (२) ग्रन्थ-निर्देशी में ग्रन्थ का नाम, लेखक प्रकाशक तथा मूल्य आदि क्रम हैं।

साथ में प्रकाशकों के पूरे पते, अनेक तरह के निर्देशी संलेख (Cross references) और यथासम्भव लेखकों की जन्म-तिथियाँ भी हैं।

बृहद् हिन्दी ग्रंथ-सूची मूल्य : ३६-००

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची : परिशिष्ट १९६६ मूल्य : १२-००

३१-३-६८ तक प्राप्त आदेश पर पुस्तकालयों को यह सैट ३६-०० रुपये नैट में मिलेगा। डाक का खर्च हम देंगे। कृपया आदेश भेजें।

कुछ सम्मतियाँ

'एक सराहनीय प्रयास····इस ग्रन्थ के द्वारा हिन्दी पाठकों को हिन्दी के ग्रन्थों तथा उनके लेखकों और प्रकाशकों आदि के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी सुलभ हो जाएगी।'

—श्री भक्त-दर्शन, शिक्षा-उपमन्त्री, भारत सरकार

'हिन्दी में सन्दर्भ-ग्रन्थों के अभाव को दूर करने वाला यह एक महान प्रयास हैं।···पुस्तक प्रेमी पाठकों व पुस्तकालयों के लिए यह ग्रन्थ वरदान है ही, अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के लिए भी इसकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। उनके लिए यह हिन्दी वाङ्मय के सिंहद्वार का काम करेगा।' —विभागीय गजट, शिक्षा-विभाग, राजस्थान सरकार

'प्रस्तुत पुस्तक एक सन्दर्भ ग्रन्थ है और इसके साथ ही इससे हिन्दी प्रकाशन-जगत् की प्रगति की झाँकी भी मिल जाती है।'

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

'हिन्दी-सेवा संसार और भारतीय वाङ्मय के इतिहास में बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची एक अनोखा प्रकाशन है।···इससे एक नये युग का सूत्रपात होता है।'

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

प्रकाशक

भारतीय ग्रंथ निकेतन

१३३, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमित रहा। शिक्षा का माध्यम हिन्दी को जरूर बना दिया गया किन्तु भाषा का अपेक्षित ज्ञान उन्हें नहीं कराया गया। दूसरी ओर ब्रिटिश शासनकाल से चली आ रही शिक्षा-परम्परा में भी कोई परिवर्तन नहीं किया गया। उनके समय में अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम थी और इस भाषा के ज्ञान के लिए जनरल इंगलिश (सामान्य अंग्रेजी) प्रत्येक विश्वविद्यालयों में प्रत्येक विद्यार्थी को अनिवार्य रूप से पढ़नी होती थी। जनरल इंगलिश के लिए स्वीकृत पुस्तकों मानविकी तथा विज्ञान दोनों से सम्बन्धित अंग्रेजी के निबन्ध-संकलन अथवा वैज्ञानिक उपन्यास आदि रखे जाते थे। इससे विद्यार्थी को अंग्रेजी भाषा का इतना ज्ञान हो जाता था कि वह अपने अध्ययन के अन्य विषयों को समझ सके। किन्तु स्वतन्त्रता पश्चात् अंग्रेजी भाषा के ह्रास, हिन्दी के प्रति उपेक्षा और हिन्दी को वैकल्पिक रूप से शिक्षा का माध्यम बना देने के पश्चात् भी सामान्य हिन्दी के रूप में हिन्दी भाषा का अपेक्षित ज्ञान न कराये जाने के कारण शिक्षा का ह्रास होता गया और आज हमारी शिक्षा इस स्थिति को पहुँच गई है कि उसके लिए यदि कहा जाय कि 'धोबी का गधा न घर का न घाट का' तो अनुचित न होगा।

संविधान में जब हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित कर दी गई तो विधान के मात्र कार्यान्वयन की दृष्टि से केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग आदि की स्थापना की गई और वे भविष्य के लिए शब्दों की सौदागिरी मात्र करते रहे किन्तु ग्राहक नहीं तैयार कर सके। लाखों रुपये व्यय कर और यदि स्पष्ट कहा जाय तो प्रति शब्द एक मुहर (बिहारी को एक दोहे पर एक मुहर मिलती थी; पर स्वतन्त्र गणतन्त्र भारत में एक शब्द के लिए एक मुहर व्यय होती है) के अनुपात से पारिभाषिक कोश तैयार हुए, कुछ अनुवाद प्रकाशित हुए, प्रकाशकों का आवाहन किया गया—एक लगाओ तीन पाओ, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की मुहर लगवाकर पुस्तकें छपवाओ।

कितने ही प्रकाशक कुछ व्यवसाय और कुछ भाषा प्रेम के कारण इस दुष्चक्र में फँसे और उन्होंने अनुवाद तथा मौलिक पुस्तकें प्रकाशित कीं, किन्तु उनके लिए ग्राहक नहीं मिले। न विश्वविद्यालयों ने उन्हें स्वीकारा और न विद्यार्थियों के पास इतना भाषा-ज्ञान था कि वे ही उनको ग्रहण कर पाते।

उपरोक्त सर्वेक्षण के पश्चात् आज आवश्यकता इस बात की है कि हम व्यावहारिक दृष्टिकोण से वस्तुओं को देखें। अब तक हमारा शासन यही समझता रहा है कि घोड़े पर जीन कस दो सवार अपने आप चलता जायेगा। पर न घोड़ा रास्ता जानता है और न सवार सवारी करना। आवश्यकता है दोनों एक-दूसरे के लिए अपनी तैयारी करें।

अंग्रेजी भूत हमारे देश के विद्वानों पर इतना अधिक छाया हुआ है कि वे हीनता की भावना से घोर रूप से ग्रसित हैं और वे माने बैठे हैं कि सारा ज्ञान इन अंग्रेजी पुस्तकों में है और हिन्दी में इनका अनुवाद प्रकाशित होने पर ही हिन्दी को माध्यम बनाया जा सकता है। वे यह नहीं समझ पाते कि प्रत्येक भाषा का अपना निजी परिवेश होता है उसे दूसरी भाषा में भाषान्तरित कर वह सजीवता और बोधगम्यता नहीं प्रदान की जा सकती जो मूल भाषा में होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अंग्रेजी भाषा में प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों के अनुवाद मात्र के पीछे न दौड़ें। उनमें से कितनी पुस्तकें तो उन देशों में भी पुरानी पड़ गई हैं। वे पुस्तकें भारतीय सन्दर्भों में अनुकूलित कर लिखी जायँ, उनमें भारतीय इतिहास, जीवन तथा साहित्य के सन्दर्भ दिये जायँ ताकि उन सिद्धान्तों का भारतीय परिवेश में अध्ययन और विचार किया जा सके।

स्वतन्त्रता के पहले हम केवल राष्ट्रीय थे किन्तु स्वतन्त्रता के बाद हमने राष्ट्रीयता तो बिलकुल भुला दी और हम एक रात में अन्तर्राष्ट्रीय बन गये। घर की छत तक उठने का हममें सामर्थ्य ही नहीं था, आकाश तक उड़ने की कल्पना करने लगे।

आज हिन्दी में मानविकी के सभी विषयों पर और विज्ञान के कुछ विषयों पर हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के अच्छे ग्रंथ हैं—मौलिक और अनूदित। किन्तु विद्यार्थियों को भाषा का अपेक्षित ज्ञान न हो सकने के कारण वे उनमें प्रचलित नहीं हो पातीं। और वे उनके स्थान पर अत्यन्त घटिया स्तर की पुस्तकें पढ़ते हैं।

दर्शन, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, विज्ञान आदि ऐसे विषयों पर जब भी हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ग्रंथ लिखें जायेंगे, उनमें संस्कृत की शब्दावली का प्रयोग होगा ही, भाषा में भी कसाव तथा हिन्दी की प्रवृत्ति होगी। ऐसी भाषा के बोध के लिए विद्यार्थियों को जनरल इंगलिश के स्थान पर तत्काल अनिवार्य हिन्दी पढ़ानी चाहिए जिसमें साहित्येतर विषयों के निबन्ध-संकलन तथा भाषा की दृष्टि से सम्पन्न सामान्य विषयों की पुस्तकें हों। साथ ही उन्हें संस्कृत का ज्ञान भी कराना चाहिए। लिखने के अभ्यास के लिए उन्हें निबन्ध, पत्र, टिप्पणी तथा अनुवाद की शिक्षा दी जानी चाहिए। पहले बी० ए० के हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद भी करना होता था किन्तु वह हिन्दी वालों की अदूरदर्शिता के कारण समाप्त कर दिया गया। इतना ही नहीं संस्कृत भाषा के अज्ञानी हिन्दी अध्यापकों ने संस्कृत को भी हिन्दी साहित्य के पाठ्यक्रम से निष्कासित कर दिया।

आज यह कहना कि हिन्दी में पुस्तकें नहीं हैं इसलिए हिन्दी को शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया जा सकता, यह सर्वथा भ्रामक है। कठिनाई यह है कि जो विषय के जानकार विद्वान् अध्यापक हैं वे हिन्दी नहीं जानते और विद्यार्थी अंग्रेजी नहीं समझ पाते। ज्ञानी और जिज्ञासु दोनों एक-दूसरे के समक्ष स्तब्धावस्था में खड़े हैं।

ज्यों-ज्यों विद्यार्थियों में हिन्दी में उच्च स्तर की पुस्तकों की मांग होती जायेगी, पुस्तकें भी प्रकाशित होती जायेंगी। पुस्तक प्रकाशन का कार्य प्रकाशकों का है, इस क्षेत्र में शासन न आये तो उसका और विद्यार्थी दोनों का भला होगा। वह पुस्तकें तैयार कराये क्योंकि आरम्भ में पुस्तकों की खपत इतनी अधिक नहीं होगी कि अध्यापकों को उनके परिश्रम के अनुकूल अपेक्षित धन दिया जा सके। ये पुस्तकें प्रकाशकों को सामान्य रायल्टी पर प्रकाशित करने को दी जायँ। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाय कि केवल पुस्तकें प्रकाशित कर देने से ही समस्या का हल नहीं होगा। उन पुस्तकों के लिए वातावरण तैयार कीजिए। लेखक का निजी अनुभव है कि हिन्दी में मौलिक तथा अंग्रेजी में भारतीय तथा विदेशी लेखकों की प्रचलित पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद उसने प्रकाशित किया किन्तु उनकी खपत नहीं है। शिकायत यह है कि भाषा समझ में नहीं आती। अतः अंग्रेजी से दूर हिन्दी से अबोध विद्यार्थियों के भाषा-ज्ञान का स्तर उन्नत कीजिए। वे स्वयं हिन्दी में प्रकाशित उच्च स्तर के मानक-ग्रंथ पढ़ने-समझने लगेंगे, शिक्षा का स्तर उन्नत होगा, ज्ञान का क्षितिज विस्तृत होगा और वे अध्ययन का आनन्द अनुभव कर सकेंगे।

"आपने सेन्ट्रल हिन्दी डायरेक्ट्रेट जैसी संस्थाओं का नाम नहीं सुना जिन्होंने रुपया पानी की तरह बहा कर दरिद्र हिन्दी को कितने ही कीमती शब्द दिये हैं। भारतीय संस्कृति ? तीन-तीन अकादमियाँ जो हैं। उनके बजट का अधिकांश दफ्तर और दफ्तरी कार्रवाई पर ही खर्च हो रहा है तो भी संस्कृति-प्रेम की खातिर हम उन्हें अनुपयोगी नहीं ठहरा रहे हैं ?

भावात्मक एकता ? इसके बारे में हमने कितने वृत्त चित्र बनाए हैं, कितने ग्रन्थ पुरस्कृत किये हैं, कितने विशेष रूपक रेडियो से प्रसारित कराए हैं—कोई ठिकाना है ! कहाँ तक गिनिए-गिनाइएगा। आप किसी एक कष्ट का नाम लीजिए हम उसके निवारण के लिए स्थापित एक कमेटी का नाम ले लेंगे, आप किसी भी दर्द का जिक्र कीजिए हम उसे दूर करने वाले दफ्तर का जिक्र कर देंगे।

—'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के सम्पादकीय से

[redacted]
हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आजादी का आदि-पुरुष हूँ। आजादी में जन्मा और पला। मुझे शिक्षा मिली, शिक्षा का आधार है भाषा, पर भाषा मुझे नहीं मिली। लोग भाषा सीख कर एक भाषा में वाक्-सिद्ध होते, मैं कम-से-कम दो भाषाओं में गूंगा हूँ। जिस समय मैं अपनी सहज बोली में सोचना सीख रहा होता, उस समय मैं पराये शब्द-समूह को रटना सीख रहा था, जिस समय मुझे गर्व होता कि मैं अपने को पहचानता हूँ, अपना निर्माता बल्कि अपना रचयिता हूँ, उस समय मैं गर्व कर रहा था कि मैं परायी लादी ओढ़ और ढो सकता हूँ, कि मैं अपना अनुवादक हूँ। यों शिक्षा मुझे मिली, लेकिन बे-पेंदी की।

मुझे सभी कुछ मिला, पर सब बे-पेंदी का। शिक्षा मिली, पर उसकी नींव भाषा नहीं मिली, आजादी मिली, लेकिन उसकी नींव आत्मगौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, लेकिन उसकी नींव अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली।

इतना ही क्यों! मुझे व्यक्तित्व मिला पर चेहरा नहीं मिला।

और भी: मुझे अस्तित्व मिला, पर अस्ति नहीं, अवस्था मिली पर आस्था नहीं।

क्यों नहीं मुझे वह भाषा दी जाती जिससे कि मैं अपनी आत्मा को खोज सकूँ? क्यों नहीं मुझे वह शिक्षा दी जाती जिससे कि मैं व्यक्तित्व पा सकूँ? क्यों नहीं मुझे वह इतिहास मिलता जिससे मैं अपनी इयत्ता पहचान सकूँ, निरे पूर्वापर को परम्परा बनाकर अर्थ दे सकूँ?"

स० ही० वात्स्यायन 'अज्ञेय'
'दिनमान' में

हमारे अभिनव प्रकाशन

१. हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा
लेखक—डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे २०.००

२. प्रसाद साहित्य : कुछ विचार
लेखक—डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे ७.००

३. साहित्य की चेतना (आलोचनात्मक निबन्ध)
लेखक—विद्यानिवास मिश्र ४.००

४. THEORY OF RASA in SANSKRIT DRAMA by Dr. H. R. Mishra ४४.००

५. सिकताकण—(ए. जी. गार्डिनर के निबन्ध संग्रह Pebbles on the Shove का हिन्दी रूपान्तर)
अनु०—प्रो० सी० डी० पांडे २.५०

६. कबीर-वाणी—पन्नालाल जैन ४.५०

विन्ध्याचल प्रकाशन
छतरपुर (म० प्र०)

जासूसी पॉकेट बुक्स

हिन्दी में पहली बार घिसे-पिटे जासूसी उपन्यासों से अलग
नई जासूसी सीरीज़ की रहस्य-रोमांच से भरपूर पहली छः पुस्तकें
शीघ्र ही निकल रही हैं

पॉकेट बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स
एकमात्र वितरक :—
४-बी, नाथ मार्केट, नई सड़क दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारक संस्थान

व्यवस्था : कृष्णचन्द्र बेरी एण्ड सन्स

हिन्दी प्रचारक संस्थान की ओर से अपने उन पाठकों के लिए अनुपम भेंट : जो केवल श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण पुस्तकें पढ़ना पसन्द करते हैं !

● शादी

राहुल सांकृत्यायन

राहुलजी का अन्तिम और अत्यन्त भावपूर्ण कथानक वाला उपन्यास : जिसके पात्र 'व्यक्ति' न रहकर प्रतीक बन गये हैं। राहुलजी की परिपक्व जीवन-दृष्टि और कलात्मक शक्ति का परिचायक यह उपन्यास अद्वितीय है। **मू० ८.००**

● हिन्दी निबन्ध

सं० डॉ० शिवप्रसाद सिंह

हिन्दी निबन्ध साहित्य की एक मानक कृति : जो आधुनिक हिन्दी निबन्ध के विकास का साक्ष्य प्रस्तुत करती है। खड़ी बोली के प्रख्यात सभी निबन्धकारों के विशिष्ट निबन्धों का संग्रह। **मू० ४.००**

● एक कोड़ी एक

सं० बेढब बनारसी, विश्वनाथ मुखर्जी और डॉ० भानुशंकर मेहता

नाम से ही स्पष्ट है कि यह कृति सामान्य नहीं, विशेष है ! मौसम हो, न हो 'एक कोड़ी एक' हाथ में पहुँचते ही क़हक़हों में आप डूब जाएँगे !

मू० ५.००

● भारतरत्न

परेशनाथ वन्द्योपाध्याय

स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने जिन मनीषियों, समाजसेवियों और राजनयिकों को राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' से विभूषित किया है, यह कृति उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्रस्तुत करती है। **मू० २.००**

हिन्दी प्रचारक संस्थान

पो० बॉ० सं० १०६

सी० २१/३०, पिशाचमोचन वाराणसी-१

फोन : २११४ तार : प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा-राजभाषा है !! हिन्दी का अधिकाधिक प्रचार और इसकी समृद्धि आपका एक नैतिक दायित्व है । कृपया आप व्रत लें कि अपना सारा काम आप हिन्दी में करेंगे ! और हम आपको सहयोग देने का संकल्प करते हैं—

हिन्दी में सरकारी कामकाज करने की विधि

देश के प्रत्येक कार्यालय तथा कार्यकर्त्ता के लिए सर्वथा अनिवार्य—

•

मूल्य
केवल ३.५० पैसे
अपनी प्रति के
लिए आज ही
लिखें—

राम विनायक सिंह

• •

हिन्दी में सरकारी एवं कार्यालय सम्बन्धी कार्यों के करने का ज्ञान कराने वाली तथा टिप्पणी-आलेखन और सरकारी पत्रों के विविध प्रचलित उदाहरणों से युक्त एक अद्वितीय पुस्तक । इसमें भारतीय शासन प्रणाली और उसके संचालन की विधि का समुचित उल्लेख करते हुए, सार-लेखन, अनुवाद की कला—सिद्धान्त और प्रक्रिया के साथ ही सरकारी कार्यालयों के कार्यों में बहुधा प्रयुक्त होनेवाले विशिष्ट एवं तकनीकी शब्दों और वाक्यांशों के मान्य हिन्दी पर्याय भी दिये गए हैं ।

• •

A Book on Noting, Drafting and Manual of Office-Procedure in Hindi with Principles and Methods of Precis-Writings and Translations.

हिन्दी प्रचारक संस्थान

(व्यवस्था : कृष्णचन्द्र बेरी एण्ड संस)
पो० बॉ० सं० १०६, सी० २१।३०, पिशाचमोचन
वाराणसी-१
फोन : २११४ तार : प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नवीन प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध :

प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास
डॉ० प्रभासचन्द्र शर्मा २०.००

साधारणीकरण : शास्त्रीय अध्ययन
डॉ० रामलखन शुक्ल १७.५०

रसखान और उनका काव्य
डॉ० माजिदा असद १५.००

उदासी संप्रदाय और संत कवि रेणु
डॉ० सच्चिदानन्द शर्मा १२.५०

आलोचना :

प्रतिनिधि कहानीकार रामचरण महेन्द्र ७.५०

नाटक :

सीमा-संरक्षण हरिकृष्ण प्रेमी २.००

कहानी-संग्रह :

घूमते चेहरे डॉ० हरिदत्त भट्ट ३.५०

दीप से दीप जले
(सचित्र, किशोरोपयोगी) ब्रजभूषण ४.००

काव्य :

कवितांजलि होशियारसिंह चौहान ४.००

तृष्णा डॉ० प्रभासचन्द्र शर्मा ५.००

शीघ्र ही प्रकाश्य :

भारतीय नवजागरण : प्रणेता तथा आन्दोलन गौरीशंकर भट्ट १५.००

हिन्दी भक्त बार्ता साहित्य
(शोध प्रबन्ध) डॉ० लालता प्रसाद दुबे

हिन्दी नाटक में त्रासदी
(शोध प्रबन्ध) डॉ० कैलाशपति ओझा

अर्थशास्त्र : विषयवस्तु तथा विश्लेषण प्रविधि डॉ० यशपाल छिब्बर

हमारे अन्य कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध :

हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास
डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र १५.००

हिन्दी भाषा और साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव
डॉ० विश्वनाथ मिश्र १२.५०

रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
डॉ० शिवलाल जोशी १२.५०

हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन
डॉ० शांतिगोपाल पुरोहित १२.५०

आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक-विधान
डॉ० नित्यानन्द शर्मा १५.००

आलोचना :

प्रतिनिधि एकांकीकार डॉ० रामचरण महेन्द्र ६.५०

कबीर और जायसी का रहस्यवाद एवं तुलनात्मक विवेचन डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ६.००

तुलसीदास और उनका साहित्य
डॉ० विमल कुमार जैन ७.००

तुलनात्मक साहित्यशास्त्र : इतिहास तथा समीक्षा डॉ० विष्णुदत्त राकेश १२.५०

उपन्यास :

उखड़े हुए लोग	राजेन्द्र यादव	१०.००
पुतलीघर	मामा वरेरकर	१०.००
मनुष्य और देवता	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	४.००
त्रिवेणी	कंचनलता सब्बरवाल	५.००
खेल और खिलौने	गुरुदत्त	५.००
पतन का मार्ग	,,	८.००
मनीषा	,,	३.००
अवतरण	,,	६.००
संभवामि युगे-युगे	,,	८.००
विनाशाय च दुष्कृताम्	,,	७.५०
प्रेरणा	,,	७.००

अन्य :

भारत में समाजशास्त्र, प्रजाति और संस्कृति गौरीशंकर भट्ट २०.००

भारतीय संस्कृति : समाजशास्त्रीय समीक्षा गौरीशंकर भट्ट १७.५०

नवरंग (अभिनेय व्यंग्य एकांकी-संग्रह) ३.५०

साहित्य सदन, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकें

डॉ० ओमप्रकाश शर्मा

प्रधान प्रकाशन अधिकारी वैज्ञानिक तथा तकनीकी
शब्दावली आयोग भारत सरकार, शिक्षा मन्त्रालय

हमारे देश में निकट भविष्य में ही विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा और परीक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ बनने वाली हैं। भारत के वर्तमान शिक्षामंत्री डॉ० त्रिगुणसेन के सतत प्रयत्नों के कारण अब लगभग सभी विश्वविद्यालयों ने इस बात को मान लिया है। प्रश्न केवल समय और कार्य-क्रमों का है कि इस नीति को सफलतापूर्वक किस प्रकार कम से कम समय में कार्यान्वित किया जा सकता है।

विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को शिक्षक की अपेक्षा पाठ्य-पुस्तकों से अधिक मार्गदर्शन मिलता है। शिक्षकों को भी इस स्तर पर पढ़ाने के लिए बराबर संदर्भ-ग्रंथों की सहायता लेनी पड़ती है। यदि इस प्रयत्न द्वारा हम शिक्षा को उच्चकोटि की बनाना चाहते हैं और उसे अन्य विकासशील देशों के समकक्ष लाना चाहते हैं तो विश्वविद्यालय स्तर पर सभी भारतीय भाषाओं में उच्च प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें और सन्दर्भ ग्रन्थों का सतत निर्माण विशेष रूप से आवश्यक है।

अब तक के काम का सर्वेक्षण

इस सन्दर्भ में आज की परिस्थिति पर विचार करने से पहले यह जरूरी है कि इस क्षेत्र में अब तक जो कार्य हुआ है, उसका सामान्य सर्वेक्षण कर लिया जाय। अभी हाल में शब्दावली आयोग की ओर से विज्ञान भवन में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों की दो प्रदर्शनियाँ भारत सरकार की ओर से आयोजित करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। एक प्रदर्शनी शिक्षा मन्त्रियों के सम्मेलन के समय और दूसरी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के सम्मेलन के समय। इसमें सहयोग प्रदान करने के लिए सभी भाषाओं के प्रकाशकों को परिपत्र भेजे गये थे और उनसे निवेदन किया था कि वे इन प्रदर्शनियों के लिए अपनी अब तक की सभी प्रकाशित पुस्तकें भेजें। कुछ चुने हुए दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में इसके बारे में विज्ञापन भी दिया गया था। फिर भी प्रकाशकों की ओर से जो सहयोग अपेक्षित था वह भरपूर प्राप्त नहीं हुआ। हिन्दी के प्रकाशकों ने लगभग ५०० पुस्तकें इन प्रदर्शनियों के लिए भेजी थीं। उनमें से लगभग २५० पुस्तकें ही ऐसी थीं जो विश्वविद्यालय स्तर की कही जा सकती हैं। अन्य भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों ने भी लगभग ४०० पुस्तकें इन प्रदर्शनियों के लिए भेजी थीं। उनमें से अधिकांश विश्वविद्यालय स्तर की नहीं थीं। इसके अतिरिक्त हमने सभी उपलब्ध साधनों और स्रोतों का पूरा लाभ उठाया था। जिसके कारण हम इन प्रदर्शनियों में विश्वविद्यालय स्तर की लगभग ५००० पुस्तकें प्रदर्शित कर सकें। इनमें हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, मराठी और पंजाबी की पुस्तकें प्रदर्शित की गयी थीं। लगभग साढ़े तीन हजार पुस्तकें हिन्दी की थीं और शेष डेढ़ हजार पुस्तकें अन्य भारतीय भाषाओं की। अन्य भारतीय भाषाओं में विश्व-विद्यालय स्तर की पुस्तकों की संख्या इस प्रकार थी। बंगाली में ६५ पुस्तकें जिसमें ६४ मौलिक थीं, एक अनूदित। तमिल में ११६ पुस्तकें जिनमें ४७ मौलिक थीं और ६९ अनूदित। मलयालम में १८३ पुस्तकें थीं जिनमें १७८ मौलिक थीं और ५ अनूदित; गुजराती में ७८ पुस्तकें थीं जिनमें ७६ मौलिक थीं और २ अनूदित। मराठी की सभी ६५ पुस्तकें मौलिक थीं। पंजाबी की ७१ पुस्तकों में से ६५ मौलिक थीं और ६ अनूदित। इसके अतिरिक्त अन्य भाषाओं की पुस्तकों का अभी इस दृष्टि से विश्लेषण होना बाकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि अन्य भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की बहुत ही कम पुस्तकें उपलब्ध हैं और जो हैं भी उनमें से अधिकांश मानविकी विषयों की पुस्तकें हैं। विज्ञान और टैक्नालॉजी की पुस्तकें लगभग हैं ही नहीं।

इस अभाव का मुख्य कारण यह है कि विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों ने शिक्षा और परीक्षा का माध्यम अब तक भारतीय भाषाओं को घोषित नहीं किया है। माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक इन क्षेत्रों में पढ़ाई भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही होती है। इस स्तर पर सभी विषयों की पुस्तकें इन भाषाओं में उपलब्ध हैं। यदि शिक्षा और परीक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ बना दी जाती हैं तो विश्वविद्यालय स्तर पर भी मानविकी और समाजविज्ञानों में पाठ्य-पुस्तकों का अभाव नहीं रहेगा। समस्या केवल विज्ञान और टैक्नालॉजी सम्बन्धी विषयों के बारे में आयेगी।

हिन्दी पुस्तकों की स्थिति सन्तोषजनक

जहाँ तक हिन्दी का प्रश्न है इन प्रदर्शनियों से पता चलता है कि उसकी स्थिति अपेक्षाकृत कहीं अधिक संतोषजनक है। साढ़े-तीन हजार पुस्तकों में से लगभग १००० पुस्तकें विज्ञान की थीं और शेष मानविकी और समाज-विज्ञानों की। विज्ञान में सबसे अधिक पुस्तकें आयुर्विज्ञान की थीं। उसके बाद कृषि, भूगोल और गणित का स्थान था। मानविकी और समाजविज्ञानों में सबसे अधिक पुस्तकें साहित्यालोचन पर थीं। इसके बाद शिक्षा, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान तथा इतिहास आदि पर पुस्तकें थीं। इससे पता चलता है कि हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों में मानविकी और विज्ञान की पुस्तकों में लगभग ४ और १ का अनुपात है। विश्वविद्यालय स्तर के उन सभी विषयों पर मानविकी और समाजविज्ञानों पर हिन्दी में पुस्तकें आमतौर पर उपलब्ध हैं, जो विषय हिन्दी-भाषा-भाषी क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी के माध्यम से पढ़ाये जाते हैं। इनमें से अधिकांश पुस्तकें विभिन्न शिक्षण-संस्थाओं में पाठ्य-पुस्तकों के रूप में चलती हैं पर अभी तक विश्वविद्यालयों के प्रकाशित पाठ्यक्रमों में इन पुस्तकों में से बहुत कम को स्थान मिला है। आमतौर पर जिन लेखकों ने इन विषयों में अंग्रेजी में पाठ्य-पुस्तकें लिखी हैं उन्होंने ही अपनी पुस्तकों के हिन्दी रूपान्तर भी किये हैं। यदि मानविकी और समाज-विज्ञानों के लिए हिन्दी-भाषी प्रदेशों के विश्वविद्यालय हिन्दी को शिक्षा और परीक्षा का अर्यि नवामाध्यम घोषित कर दें तो मानविकी और समाज-विज्ञानों में विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का अभाव नहीं होगा क्योंकि इन विषयों के लिए हिन्दी में पर्याप्त लेखक और अनुवादक मौजूद हैं और प्रकाशक उनकी सहायता से बहुत जल्दी ऐसी पुस्तकें उपलब्ध करा सकते हैं। बशर्ते कि उनको इस बात का निश्चित पता हो कि उनकी पुस्तकें बिक जायेंगी।

एकरूपता

इन विषयों में तकनीकी शब्दावली का भी अभाव नहीं है। केवल एकरूपता की आवश्यकता है और यदि भारत सरकार द्वारा अनुमोदित शब्दावली सभी लेखकों और अनुवादकों द्वारा प्रयुक्त की जाती है तो यह एकरूपता भी प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक यह है कि विश्वविद्यालय केवल उन्हीं पाठ्य-पुस्तकों को अपने पाठ्यक्रमों में स्थान दें जिनमें यह राष्ट्रीय शब्दावली प्रयुक्त की गयी है। भारत सरकार विज्ञान, इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, कृषि और मानविकी के स्नातक स्तर की लगभग सभी विषयों की शब्दावली प्रकाशित कर चुकी है। मानविकी और समाजविज्ञानों में भी जो पुस्तकें अब तक प्रकाशित हुई हैं उनको देखने से पता चलता है कि लगभग ढाई हजार पुस्तकों में से ५०० पुस्तकें ही ऐसी हैं जो विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों की सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती हैं। यदि प्रकाशक संघ विश्वविद्यालयों, राज्य-सरकारों और केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधियों की एक चयन समिति नियुक्त कर दे जो इन ढाई हजार पुस्तकों में से उपयुक्त प्रकार की पुस्तकों को छाँटे और पाठ्यक्रम की दृष्टि से इनमें विषय, भाषा, शब्दावली सम्बन्धी जो कमियाँ रह गयी हैं उनका अध्ययन करें। चयन समिति की सिफारिशों के अनुरूप यदि प्रकाशक अपनी पुस्तकों को सँवार और सुधारें तो निश्चित ही ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए बड़े पैमाने पर इस्तेमाल की जा सकती हैं। विकासशील देशों में पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशक आमतौर पर अपनी प्रकाशित पुस्तकों का स्तर ऊँचा रखने के लिए न केवल योग्य और अनुभवी लेखकों से पुस्तकें लिखवाते हैं वरन् वे अपने खर्चे पर योग्य सम्पादक भी रखते हैं। अमेरिका और रूस के प्रकाशक इस बारे में बहुत सचेत हैं कि उनके द्वारा निर्मित पाठ्य-पुस्तकों का जिन भाषाओं में भी अनुवाद हो उनसे उनकी ख्याति में कोई बट्टा न लगे और जिस वैज्ञानिक ढंग से वे इस कार्य को करते हैं वह सचमुच में अनुकरणीय है।

यदि पुस्तकों का चुनाव इस सुझाये गये ढंग से किया जाता है और उनको सँवारने-सुधारने सम्पादन कराने या दोबारा से लिखाने में अलग-अलग विश्वविद्यालयों के बोर्ड ऑव स्टडीज के विशेषज्ञों की समन्वित रूप से सहयोग और सहायता ली जाती है जिससे उन सभी के अनुभवों का पूरा उपयोग हो सके तो निश्चित रूप से जो ५००-६०० पुस्तकें चयन समिति द्वारा छाँटी जायेंगी, वे पाठ्य-सामग्री और बिक्री की दृष्टि से बहुत ही सफल सिद्ध हो सकती हैं। ऐसी पुस्तकों को औसत विद्यार्थी आसानी से प्राप्त कर सकें इसके लिए यह जरूरी है कि इनका विक्रय-मूल्य कम हो। यदि प्रकाशक वर्ग संगठित रूप से इस काम को करता है तो सरकार भी इस काम में आवश्यक अनुदान दे सकती है।

इसके लिए जरूरी है कि हिन्दी-भाषा-भाषी सभी प्रकाशक व्यक्तिगत स्तर को छोड़कर सामूहिक रूप से इस राष्ट्रीय कार्य में सहयोग करें। इससे अनेक लाभ होंगे। एक ओर जहाँ सामूहिक पूंजी प्राप्त होगी वहाँ दूसरी ओर इन पुस्तकों की बिक्री व्यापक पैमाने पर हो सकेगी। सरकार को भी इस सम्मिलित प्रयत्न में आर्थिक सहायता देने में कोई हिचक नहीं होगी।

विज्ञान और टैक्नालॉजी

जहाँ तक विज्ञान और टैक्नालॉजी का प्रश्न है इन क्षेत्रों में हिन्दी में अभी भी कुछ किया जाना बाकी है। जैसाकि मैंने बताया था कि आयुर्विज्ञान और कृषि को छोड़कर अन्य वैज्ञानिक विषयों में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का लगभग अभाव ही है।

आयुर्विज्ञान में भी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की बहुत कम पुस्तकें उपलब्ध हैं। कृषि में जो पुस्तकें पाई जाती हैं उनमें से बहुत कम ही उच्चकोटि की हैं। इस सर्वेक्षण से इस बात का पता चलता है कि भौतिकी, रसायन और गणित आदि पर अनूदित कुछ पुस्तकें मौजूद हैं, लेकिन इंजीनियरिंग और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में पुस्तकें लगभग नहीं हैं। विज्ञान में जिन विषयों की भी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है या मौलिक रचनाएँ लिखी गई हैं उनको लिखाते समय यह दृष्टि आमतौर पर नहीं रखी गई है कि एक विषय से सम्बन्धित सभी पुस्तकों का पूरा सैट हिन्दी में उपलब्ध हो सके। उदाहरण के लिए यदि हम स्नातकस्तर पर भौतिकी का माध्यम हिन्दी बनाना चाहते हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि उसकी उन सभी छः शाखाओं पर हिन्दी में पुस्तकें उपलब्ध हों जो विद्यार्थी को इस स्तर पर पढ़नी पड़ती हैं। पर आज स्थिति कुछ और ही है। विज्ञान के किसी भी विषय का हिन्दी में पूरा सैट उपलब्ध नहीं है। इसी लिए यदि कोई विश्वविद्यालय यह निर्णय करता है कि रसायन-विज्ञान की पढ़ाई हिन्दी के माध्यम द्वारा होगी तो आज वह इस स्थिति में नहीं है कि वह विद्यार्थियों के लिए इन सभी विषयों पर विषय-विशेषज्ञों की पुस्तकों का एक सैट भी स्वीकृत कर सके। इस दिशा में पहल केवल भारत सरकार के शब्दावली आयोग ने की है। उसने बनारस विश्वविद्यालय के सहयोग से स्नातक स्तर के लिए भौतिकी की सभी शाखाओं अर्थात् द्रव्यों के सामान्य गुण धर्म, ऊष्मा, प्रकाशिकी, ध्वनि-विज्ञान, विद्युत् और चुम्बकत्व पर बहुत कम कीमत की मौलिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं और इस बात का प्रयत्न किया है कि भौतिकी का यह सैट हिन्दी-भाषा-भाषी क्षेत्रों के सभी विश्वविद्यालयों में स्वीकृत हो जाय। रसायन विज्ञान, गणित, वनस्पति और प्राणिशास्त्र इनमें से किसी विषय के भी लिए पूरा सैट हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। इन विषयों की विश्वविद्यालयों में हिन्दी में पढ़ाई शुरू करने के लिए प्रत्येक विषय का कम-से-कम एक पूरा सैट प्रकाशित करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्रों में जो पुस्तकें आज प्रकाशकों ने प्रकाशित भी की हैं पिछले अनेक वर्षों के प्रयत्नों के बावजूद भी उनमें से अधिकांश उनके गोदामों में पड़ी हुई हैं यद्यपि वे हजार या दो हजार ही उन्होंने छपाई थीं। इसका कारण यह है कि इन विषयों में शिक्षा और परीक्षा का माध्यम हिन्दी को नहीं बनाया गया। यही कारण है कि प्रकाशक इस क्षेत्र में संदिग्ध दृष्टि लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

२०वीं सदी का यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है जो देश जाति-विज्ञान के क्षेत्र में उन्नत हैं वे ही आज सबसे अधिक समृद्ध और समर्थ हैं और उन्हीं देशों में विज्ञान और उद्योग मानव-समाज की सेवा में सबसे अधिक लगे हुए हैं। इस-लिए यदि हमारे देश को इस क्षेत्र में अन्य विकासशील देशों के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना है तो यह जरूरी है कि हम विज्ञान और टैक्नालॉजी सम्बन्धी विषयों पर विश्वविद्यालय स्तर की काफी पुस्तकें यथासम्भव शीघ्र निर्माण करें।

अनूदित ग्रन्थ

आने वाले कुछ वर्षों तक विद्यार्थियों को विज्ञान के क्षेत्र में अनूदित पुस्तकों से ही संतोष करना होगा अर्थात् जब तक विषय-विशेषज्ञ हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखना आरम्भ नहीं कर देते। इसके लिए यह आवश्यक है कि अनूदित पुस्तकें उच्चकोटि की हों। आजकल अलग-अलग विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों में अलग-अलग लेखकों की पुस्तकें निर्धारित करते हैं। सर्वेक्षण से पता चलता है कि एक ही विषय पर २०-३० लेखकों की पुस्तकें अलग-अलग विश्वविद्यालय में लगी हुई हैं। इनमें से आधा दर्जन लेखक ही ऐसे हैं जो अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। यदि हम सभी को विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में भी विश्व-विद्यालय स्तर पर हिन्दी को माध्यम बनाना है तो यह आवश्यक है कि विज्ञान में प्रत्येक विषय पर एक पूर्ण सैट कम-से-कम अवधि में तैयार कर दिया जाय। हिन्दी-भाषा-भाषी क्षेत्रों के जिन विश्वविद्यालयों में विज्ञान की विशिष्ट शाखाएँ सम्पन्न हैं उन्हीं के बोर्ड ऑव स्टडीज के सदस्यों को इस प्रकार के सट के शीर्षकों को चयन कराने में सहायता ली जा सकती है और उन्हीं में इनके अनुवाद, सम्पादन और पुनरीक्षण के काम को बाँटा जा सकता है। यदि ऐसा किया गया तो निश्चित ही ये अनूदित पुस्तकें इन विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित हो जायेंगी और उनकी बिक्री के बारे में असंदिग्धता नहीं रहेगी। एक कार्यक्रम के अनुसार यदि व्यवस्थित ढंग से इस कार्य को किया जाय तो एक विषय पर एक पूर्ण सैट दो वर्ष में प्रकाशित किया जा सकता है। यह कोई नया विचार नहीं है। अमेरिका जैसे देश में अनेक स्तर के अनेक शिक्षकों के सम्मिलित प्रयत्नों से पाठ्य-पुस्तकें आमतौर पर तैयार की गई हैं। हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों को यह सौभाग्य प्राप्त है कि इस क्षेत्र में लगभग २७ विश्वविद्यालय स्थित हैं। विज्ञान के क्षेत्र में जो ७-८ विषय विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाये जाते हैं, यदि उनमें से प्रत्येक विषय को इस प्रकार तीन-तीन चार-चार विश्वविद्यालयों के बीच बाँट दिया जाय तो इन ८ विषयों की पुस्तकों के पूरे सैट एक वर्ष में प्राप्त हो सकते हैं। इसके बाद प्रत्येक विषय की अलग-अलग शाखाओं पर प्रसिद्ध लेखकों की चार-चार, पाँच-पाँच पुस्तकें अनूदित की जा सकती हैं। इस प्रकार ८-१० वर्षों में ही प्रत्येक विषय की प्रत्येक शाखा पर अलग-अलग लेखकों की कम-से-कम आधा दर्जन पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध कराई जा सकती हैं। इस संक्रान्तिकाल में अनु-वाद के कारण विषय-विशेषज्ञों को भाषा का समुचित ज्ञान प्राप्त हो जायेगा, तकनीकी शब्दावली उनके हाथ के नीचे से निकलकर निखर जायेगी तथा और परिष्कृत हो जायेगी और तब हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने की रुचि स्वयमेव जागृत होगी।

एक बार अपनी भाषा में जब मौलिक चिन्तन चल पड़ेगा तो विज्ञान के क्षेत्र में हाथ से काम करने वाले और दिमाग से सोचने वालों का वह सम्मिलन स्थापित होने में देर नहीं लगेगी जो ऊँचे और उप-योगी अनुसंधान के लिए आवश्यक होता है।

इस तरह हमारे देश में भी विज्ञान और औद्योगिक विकास को वही स्थान मिल जायेगा जो जापान ने पिछले २०-२५ वर्षों में प्राप्त किया है। उसने अपनी वार्षिक

[redacted]
हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति व्यक्ति औसत आय १०० डालर से बढ़ाकर इन कुछ वर्षों में ६०० डालर कर ली है। इसका कारण वहाँ पर विज्ञान और उद्योग की उन्नति को बताते हैं। हमें भी यही करना होगा।

अनुवाद अधिकार

इन पुस्तकों के अनुवाद में दो मुख्य कठिनाइयाँ हैं—अनुवाद अधिकार मिलने में आवश्यकता से अधिक विलम्ब और योग्यतम अनुवादकों का अभाव।

शब्दावली आयोग ने लगभग डेढ़ हजार पुस्तकों के अनुवाद अधिकार विदेशी प्रकाशकों से लेने का प्रयत्न किया है। इनमें से अब तक लगभग ६०० पुस्तकों के अनुवाद अधिकार ही प्राप्त हो पाये हैं। इस क्षेत्र में हमारा अनुभव यह रहा है कि यदि १० पुस्तकों के अनुवाद अधिकार लेने के बारे में विदेशी प्रकाशक से पत्र-व्यवहार किया जाता है तो आमतौर पर केवल चार के अनुवाद अधिकार ही प्राप्त होते हैं और उनको भी प्राप्त करने में कम-से-कम एक वर्ष लग जाता है। व्यक्तिगत प्रकाशकों को इस क्षेत्र में विदेशी मुद्रा की कठिनाई का भी सामना करना पड़ता है। कुछ समय पहले हमारे शिक्षा राज्यमंत्री प्रो० शेरसिंह इस कठिनाई को दूर करने के लिए बर्न कनवेंशन देशों के सम्मेलन में गये थे और उसमें कुछ सफलता भी मिली। इसको और अधिक जल्दी से सुलझाने के लिए भारत सरकार बराबर प्रयत्नशील है। यदि प्रकाशक इस काम को अपने संघ के मार्फत सम्मिलित रूप में करते हैं तो अनुवाद अधिकार दिलाने के काम में भारत सरकार बहुत सहायता कर सकती है। इस बात की कोशिश की जा रही है कि अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में स्थित हमारे दूतावास अनुवाद अधिकारों को प्राप्त कराने का काम भी हाथ में लें जिससे अनुवाद अधिकार आमतौर पर तीन-चार महीने के अन्दर ही प्राप्त हो सकें।

योग्य अनुवादक

योग्य अनुवादकों का अभाव सचमुच बहुत बड़ी समस्या है। इसका कारण यह है कि हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्र के किसी भी विश्वविद्यालय ने अनुवाद को स्नातक या स्नातकोत्तर विषय के रूप में मान्यता प्रदान नहीं की है और न कहीं पर इसकी शिक्षा का ही प्रबन्ध है। दिल्ली विश्वविद्यालय में अनुवादकों के लिए एक वर्षीय पाठ्यक्रम चलता है और वह भी अभी तक यू० पी० एस० सी० द्वारा सरकारी नौकरियों के लिए मान्यता प्राप्त नहीं है। जब तक सभी विश्वविद्यालयों में इस प्रकार के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम नहीं चलाये जायेंगे तब तक बहुत बड़ी संख्या में योग्य अनुवादक उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। यूरोप के अनेक देशों में विश्वविद्यालयों में अनुवाद पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर स्तर के अनिवार्य अंग होते हैं। जब तक योग्य अनुवादक तैयार नहीं हो जाते तब तक अच्छे अनुवादकों को तैयार करने के लिए केवल एक ही मार्ग रह जाता है कि विश्वविद्यालयों में प्रसिद्ध विषय-विशेषज्ञों के साथ पुस्तकों का अनुवाद करने के लिए ऐसे व्यक्ति लगाए जायं जो विषय और भाषा दोनों के पारंगत हों। लेकिन आज तो ऐसे व्यक्ति भी बहुत कम मिलते हैं। इसलिए कुछ समय तक विषय और भाषा के एक-एक व्यक्ति को ऐसे लोगों के साथ लगाना होगा।

विषय-विशेषज्ञ तथा भाषा-विशेषज्ञ

विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में जो विषय-विशेषज्ञ भाषा को जानते भी हैं वे आमतौर पर न मौलिक पुस्तकें लिखते हैं और न अनुवाद कार्य करते हैं। इस प्रवृत्ति का कारण यह है कि रूस जैसे देशों के समान हमारे देश में अनुवाद और मौलिक लेखन को वह मान्यता प्राप्त नहीं है जो अनुसंधान को मिली हुई है। एक विज्ञानकर्मी उतने ही समय में चार-छः लघु प्रबन्ध लिख लेता है जितने समय में वह एक छोटी पुस्तक का अनुवाद करता है या मौलिक रूप में उसे लिखता है। शोध-प्रबन्धों के कारण उस विज्ञानकर्मी की न केवल विज्ञान जगत में प्रतिष्ठा हो जाती है वरन् इससे उसे आर्थिक लाभ भी प्राप्त होता है। यह दर्जा अनुवाद और मौलिक लेखन को भी मिलना चाहिए। विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में पाठ्य-पुस्तकें इसलिए भी उपलब्ध नहीं हैं कि इस विषय के लेखक को उतनी आमदनी नहीं होती जितनी अन्य विषय की पाठ्य-पुस्तकों के लेखकों को होती है। यह बात फिर शिक्षा के माध्यम से जुड़ी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस में वैज्ञानिक विषयों की पाठ्य-पुस्तकों के अनुवाद का काम बड़े वैज्ञानिक ढंग से होता है। अनुवाद, संपादन और पुनरीक्षण का काम साथ-साथ चलता है। अनुवादक एक सप्ताह में जितना अनुवाद करता है उसको संपादक साथ-साथ उसी सप्ताह में देखता जाता है जिसका फल यह होता है कि अनुवादक सम्पादक के सुझावों, सुधारों और संशोधनों को आगे अनुवाद कार्य करते समय ध्यान में रखता है। अनुवादक और सम्पादक दोनों ही विषय और भाषा के विशेषज्ञ होते हैं। इस तरह अनुवाद और सम्पादन का काम लगभग साथ-साथ ही पूरा हो जाता है। इसके बाद पुनरीक्षण के लिए यह अनुवाद देश के एक प्रमुख विषय-विशेषज्ञ और एक भाषा-विशेषज्ञ को दिखाया जाता है। स्मरण रहे कि अनुवादक और संपादक दोनों ही आमतौर पर अपने यह काम अपने पेशे से बचे हुए समय में करते हैं।

पाण्डुलिपि निर्माण और प्रकाशन

शिल्प की दृष्टि से पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण का काम दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। अनुवाद अधिकार प्राप्त करने से लेकर पाण्डुलिपि तैयार करने का काम अर्थात् पाण्डुलिपि निर्माण और दूसरा पाण्डुलिपि प्रकाशन।

पाठ्य-पुस्तकें कोई भी प्रकाशित करे पाण्डुलिपि निर्माण करने का काम विश्वविद्यालयों और शिक्षण-संस्थाओं के विषय-विशेषज्ञ ही करते हैं। इसी तरह पाण्डुलिपि प्रकाशन का काम अंततोगत्वा प्रकाशक अथवा मुद्रकों को ही करना पड़ता है। भारत में जितनी अव्यवस्था पाण्डुलिपि निर्माण करने के क्षेत्र में है उतनी अव्यवस्था पाण्डुलिपि प्रकाशन के क्षेत्र में पायी जाती है। विश्वविद्यालय स्तर के विज्ञान की पाठ्य-पुस्तकों को प्रकाशित करना एक विशिष्ट शिल्प है जिसकी ओर प्रकाशकों का कम ध्यान गया है। इसका कारण यह है कि हमारे देश में प्रकाशन की विधिवत शिक्षा का कोई आयोजन नहीं है। यूरोप के अनेक देशों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर प्रकाशन की शिक्षा अनेक विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है। यही कारण है कि वहाँ पर सभी स्तरों की पुस्तकों में प्रकाशन की दृष्टि से वैज्ञानिक दृष्टि मौजूद रहती है। विश्वविद्यालय स्तर की जो साढ़े-तीन हजार पुस्तकें शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में रखी गई थीं, प्रकाशन की दृष्टि से उन सभी में बुनियादी एकरूपता का अभाव था। प्रकाशित पुस्तकों में कुछ बातों में एकरूपता जरूरी होती है और कुछ बातों में विविधता अच्छी लगती है। उदाहरण के लिए जितनी पाठ्य-पुस्तकें हमें प्राप्त हुईं उनके साइज अलग-अलग थे। ३००-४०० पृष्ठ की पुस्तकें डिमाई, रायल और क्राउन तीनों आकारों में छापी हुई थीं जबकि वे सभी आसानी और वैज्ञानिक दृष्टि से डिमाई में छापी जा सकती थीं। इनमें इस्तेमाल हुआ कागज अलग-अलग किस्म का था। अनेक पुस्तकों की जैकेट डिजाइनों से यह पता नहीं चलता था कि यह पाठ्य-पुस्तकें हैं। जब प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इन पुस्तकों को विज्ञान भवन की प्रदर्शनी में देखा तो अनायास ही उनके मुँह से निकल पड़ा कि "हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकों की संख्या तो बहुत है किन्तु इनके मुख-पृष्ठ और जैकटों के डिजाइन आकर्षक नहीं हैं।"

जहाँ तक मुझे मालूम है प्रकाशकों ने पाठ्य-पुस्तकों के बाह्याकार के रूप में एकरूपता लाने के लिए कोई संगठित प्रयत्न नहीं किया है।

लागत और मूल्य

पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन का उद्देश्य यह होना चाहिए कि उसमें लागत कम-से-कम आये, मजबूती अधिक-से-अधिक हो, देखने में वह सुन्दर हो और इस्तेमाल करने में विद्यार्थी को कम-से-कम असुविधा हो। चित्र और कला-कार्य, पाठ्य-सामग्री को पढ़ने में सहायक हो और सभी पुस्तकों में समान शब्दावली इस्तेमाल की गयी हो।

प्रकाशक अपने मुनाफे का अनुपात कम करके कुछ सीमा तक विक्रय मूल्य कम कर ही सकते हैं किन्तु लागत के कुछ मद ऐसे हैं जिन पर बिना किसी के लाभ को हानि पहुँचाए खर्च कम किया जा सकता है। लागत की मदों में कागज एक महत्वपूर्ण मद है। जिन देशों में कागज-उद्योग अत्यधिक विकसित है वहाँ पाठ्य-पुस्तकों के लिए विशेष प्रकार के कागज का निर्माण किया जाता है। यह कागज जहाँ अन्य कागजों की अपेक्षा अधिक मजबूत होता है वहाँ यह सस्ता भी होता है। पाठ्य-पुस्तकों के कागज का रंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा होना चाहिए कि जिसे पढ़ते समय परावर्त्त प्रकाश (रिफलेक्टिड लाइट) कम-से-कम हो, यानी आँखों पर कम-से-कम जोर पड़े। इन बातों को ध्यान में रखते हुए जर्मन और अमेरिका में पाठ्य-पुस्तकों का कागज आम-तौर पर बहुत सफेद नहीं होता। हमारे देश में यदि पाठ्य-पुस्तकों के योग्य इसी प्रकार का कागज तैयार किया जाय और प्रत्येक कागज-मिल के लिए यह अनिवार्य कर दिया जाय कि वह अपनी कुल उत्पादन-क्षमता का १० प्रतिशत कागज पाठ्य-पुस्तकों का कागज तैयार करेगी। इसके साथ ही इस कागज पर केन्द्रीय और प्रदेशीय दो कर लगाए जाते हैं और जो आबकारी कर इस पर लगते हैं उनसे भी इसे मुक्त कर दिया जाय तो पाठ्य-पुस्तकों के लिए कागज आज के बाजार भाव से २५ से ५० प्रतिशत कम मूल्य पर मिल सकेगा। यही बात जिल्द के गत्ते और मुखपृष्ठ के कागज और कपड़ा (बाइंडिंग क्लाथ) के बारे में लागू होती है। पाठ्य-पुस्तकों के ब्लाकों के लिए जिंकशीट भी कंट्रोल दरों पर प्राप्त करवाई जा सकती है। इन पाठ्य-पुस्तकों के प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन की रियायती दरें भी प्राप्त की जा सकती हैं। लागत को कम करने के लिए और पुस्तकों को आकर्षक बनाने के लिए नयी-नयी विधियाँ और तकनीक विकासशील देशों में उपलब्ध हैं उसके लिए प्रकाशकों का संघ अथवा सरकार समय-समय पर विचार-गोष्ठियाँ, वादविवाद, वर्कशाप आदि के द्वारा प्रकाशन के विभिन्न अंगों पर आधुनिकतम सूचनाएँ उपलब्ध करा सकते हैं।

विज्ञान और टैक्नालॉजी की पुस्तकों का मुद्रण भी एक विशिष्ट शिल्प है। विज्ञान के संकेतों, चिह्नों और सूत्रों के लिए विशेष प्रकार के टाइप की आवश्यकता पड़ती है जो आमतौर पर मामूली प्रेसों में उपलब्ध नहीं होते। कुछ ऐसे भी टाइप हैं जो देश में उपलब्ध नहीं हैं। अभी हाल में भौतिकी की एक ३२ पृष्ठ की पुस्तक में इस्तेमाल होने वाले संकेतों के टाइप देश-भर में उपलब्ध नहीं हो सके और उसके लिए टाइप के स्थानों पर ब्लाकों का इस्तेमाल करना पड़ा। इसके लिए अनुसंधान की आवश्यकता है जिससे उन सब टाइपों के मैट्रीसेज की एक सीरीज विकसित की जा सके जो आमतौर पर विज्ञान और टैक्नालॉजी की पुस्तकों में प्रयुक्त होते हैं।

पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण के लिए अनेक देशों से कागज, मुद्रण-सामग्री, मशीन आदि अनुमान और ऋण के आधार पर प्राप्त की जा सकती हैं। विशेष रूप से यूनेस्को की सहायता से इंटरनेशनल बैंक फार रीकंस्ट्रक्शन एण्ड डवलपमेंट से पाठ्य-पुस्तकों की लागत के विभिन्न मदों के लिए ऋण लिया जा सकता है।

महान् और विराट कार्य

अभी हाल में मुझे ईरान जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। जहाँ तक साधनों और प्रगति का सम्बन्ध है, ईरान भारत की अपेक्षा बहुत पिछड़ा हुआ देश कहा जा सकता है। सिलाई की मशीनें, तेल के इंजन और न जाने कितनी ही चीजें वह भारत से ही खरीदता है। फिर भी काफी वर्षों से विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा और परीक्षा का माध्यम वहाँ पर फारसी ही है। हमारे देश में तकनीकी शब्दावली बनाने का जो महान और विराट कार्य हुआ है वह किसी भी विकासमान देश में नहीं हुआ है। लेकिन हम केवल अभी शब्दावली का ही निर्माण कर पाये हैं उसे उपयोग में लाकर विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का लिखा जाना अभी बाकी है। किन्तु ईरान में फारसी पारिभाषिक शब्दावली के बिना ही विश्वविद्यालय स्तर पर पुस्तकें लिखी गयी हैं जिनमें तकनीकी शब्दावली अंग्रेजी और फ्रेंच भाषा की इस्तेमाल की गयी हैं। इसी प्रकार इजरायल ने हजारों वर्षों पुरानी मृत भाषा हिब्रू को इतना सजीव बना दिया है और अब वह इतनी सक्षम है कि आज उसमें विज्ञान, टैक्नालॉजी, दर्शन और अन्य विषयों के आधुनिकतम विचारों को प्रकट करने की क्षमता है।

कोई देश केवल साधनों से ही महान नहीं बनता। वहाँ के निवासियों की दृढ़ इच्छा-शक्ति, कुछ कर गुजरने का साहस और राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना ही उसे महान बनाती है। यह हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है कि आज देश में एक ऐसा वातावरण-निर्माण हो गया है जो हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में अत्यधिक सहायक हो सकता है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पत्रिका

आपको यदा-कदा भेजी जाती रही है किन्तु इसे आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिए कुछ ऐसी व्यवस्था हो रही है कि यह पत्रिका केवल इसके वार्षिक ग्राहकों को ही भेजी जाए।

यदि आप

इस पत्रिका द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली जानकारी को अपने लिए उपयोगी समझते हैं तो इसका वार्षिक मूल्य ६ रुपये निम्नलिखित पते पर भेजकर इसके वार्षिक ग्राहक बनने की कृपा करें।

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्यों से निवेदन है कि वे इसके लिए वार्षिक मूल्य न भेजें। इस संस्था के सदस्यों के लिए इस पत्रिका का निःशुल्क भेजा जाना जारी रहेगा।

व्यवस्थापक 'हिन्दी प्रकाशक'
अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर का हम चाहें तो पूरा लाभ उठा सकते हैं। यदि प्रकाशक बन्धु अपने तुरन्त लाभ की दृष्टि को छोड़कर विश्वविद्यालयों, सरकारों और अन्य सम्बन्धित संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ इस महान् कार्य में सहचिंतन करें तो जिन समस्याओं की ओर संक्षेप में मैंने ध्यान दिलाया है उनको हम सुलझा सकेंगे और बड़े थोड़े समय में ही बहुत अधिक पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध हो सकती हैं।

क्या ऐसा सम्भव नहीं हो सकता कि विश्व-विद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तक के निर्माण और प्रकाशन के लिए सभी प्रकाशक अपने व्यक्तित्व को भूलकर एक ऐसा सम्मिलित और संयुक्त मोर्चा बनाये जिसमें प्रत्येक प्रकाशक अपनी स्थिति के अनुसार पूँजी लगाने और अपने साधनों के अनुसार पुस्तकों का प्रचार करने में हाथ बँटाये। सभी पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण और उनका मुद्रण, उनकी प्रचार सामग्री तथा विज्ञापन उनकी एक केन्द्रीय संस्था के द्वारा हो।

ऐसा करने पर लागत की अलग-अलग मदों पर होने वाला खर्चा कम-से-कम रह जायेगा, पाठ्य-पुस्तकों में सभी दृष्टियों से एकरूपता आयेगी। वे केवल प्रामाणिक ही नहीं होगी, विश्वविद्याद्यय, राज्य सरकारें और केन्द्रीय सरकार भी उनको बिना किसी के आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान कर सकेंगी। इसके साथ ही किसी प्रकाशक को यह भी अनुभूति नहीं होगी कि किसी सरकार अथवा विश्व-विद्यालय ने किसी प्रकाशक के साथ पक्षपात किया है।

यह बात इस संदर्भ में और भी आवश्यक है कि जब कि केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण के लिए करोड़ों रुपये की आर्थिक सहायता देने की बात सोच रही है। यदि प्रकाशक पाठ्य-पुस्तक निर्माण और प्रकाशन की एक ऐसी केन्द्रीय व्यवस्था कायम कर लेते हैं तो वह अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी मार्गदर्शन का काम कर सकती है। यह व्यवस्था अन्य भाषाओं में हिन्दी की प्रकाशित पुस्तकों के अनुवाद और प्रकाशन का काम उन भाषाओं के प्रकाशकों के सहयोग से बहुत ही कम लागत में बहुत ही तेजी के साथ कर सकती है।

गांधी शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में प्रकाशित

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली की

१९६८ की पहली भेंट

गांधी व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव के बाद का दूसरा खण्ड

'गांधी : संस्मरण और विचार'

(गांधीजी द्वारा लिखे संस्मरणों तथा उनके चुने हुए विचारों का ऐतिहासिक संग्रह)

बड़े आकार के ६०० पृष्ठ : कपड़े की जिल्द

मूल्य : तीस रुपये

३० जनवरी को प्रकाशित हो गया। अपनी प्रति शीघ्र मँगा लीजिए

बहुत थोड़ी प्रतियाँ छपी हैं : माँग बहुत है।

सस्ता साहित्य मण्डल

कनॉट सर्कस, नई दिल्ली

शाखा : जीरो रोड, इलाहाबाद

फोन : ४०५०५ फोन : ५०१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रकाशन

१. **दीवार ढह गई**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल ८.००
(सामाजिक उपन्यास)

२. **वचन का मूल्य**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल ४.००
(ऐतिहासिक उपन्यास)

३. **लहर और किनारा**
—श्यामलाल 'मधुप' ६.००
(सामाजिक उपन्यास)

४. **सिन्दूर की लाज**
—शंकर सुल्तानपुरी ६.००

५. **तीन शहर तीन पहर**
—पुरुषोत्तमदास गौड़ 'कोमल' ३.५०

६. **अपना कौन ?**
—देशराजसिंह भाटी ५.००
(पारिवारिक समस्याओं पर आधारित सामाजिक उपन्यास)

७. **कल्प वृक्ष**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल ५.००
(सामाजिक उपन्यास)

८. **भाँग की पकौड़ी**
—कन्हैयालाल 'मयूर' ५.००
(हास्योपन्यास)

९. **कलाकार संगम**
—श्यामलाल 'मधुप' ५.००
(सिने अभिनेताओं की जीवनियाँ)

हिन्दी सेवा सदन
कच्ची सड़क, मथुरा

पॉकेट बुक्स की शृंखला में एक नवीन कड़ी

मधुर पॉकेट बुक्स

प्रथम सैट में निम्न छः रचनाएँ प्रस्तुत करती हैं–

- **लहर और किनारा**
—श्यामलाल 'मधुप'
(हृदयस्पर्शी सामाजिक उपन्यास)
- **प्यार का खून**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल
(अत्यन्त रोचक और मादक उपन्यास)
- **अपना कौन ?**
—देशराजसिंह भाटी
(पारिवारिक समस्याओं पर आधारित उपन्यास)
- **सिन्दूर की लाज**
—शंकर 'सुल्तानपुरी'
(प्रेम और कर्त्तव्य का संघर्ष–उपन्यास रूप में)
- **रंगीन दुनिया**
—श्यामलाल 'मधुप'
(सिनेमा-प्रेमियों के लिए बहुमूल्य उपहार)
- **भांग की पकौड़ी**
—कन्हैयालाल 'मयूर'
(हास्य मदिरा उपन्यास रूपी प्याले में)

देखने में मधुर पढ़ने में मधुर
हर दृष्टि से मधुर
पढ़िये

मधुर पॉकेट बुक्स
कच्ची सड़क, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ समाचार

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने हिन्दी में विश्व-विद्यालय स्तर की पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में आयोजित उपकुलपति सम्मेलन के अवसर पर शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार के समक्ष निम्नलिखित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया—

(१) भारत सरकार की यह घोषित नीति और योजना कि देश की क्षेत्रीय भाषाओं में उच्चतर स्तर की शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकें तैयार करने में तीव्रता लायी जाय तथा इस कार्य में सहायता की जाय, स्वागत योग्य है, विशेष रूप से हिन्दी प्रकाशकों के लिए। इससे न केवल वैज्ञानिक विषयों के सन्दर्भ में हमारी भाषाओं की क्षमता बढ़ेगी बल्कि बहुसंख्यक जनता के लिए संश्लिष्ट आधुनिक शिक्षा के द्वार खुल जाएँगे क्योंकि माध्यम अंग्रेज़ी होने के कारण जनता के लिए यह लक्ष्य सुलभ नहीं रहा है। यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय पत्राचार, राष्ट्रीय शिक्षा और राष्ट्रीय प्रशासन के माध्यम के रूप में देश अनिश्चित काल तक अंग्रेज़ी जारी नहीं रख सकता। अपनी भाषाओं और क्षेत्रीय साहित्य को, खासकर हिन्दी भाषा और साहित्य को इस हद तक विकसित करना होगा कि वे अंग्रेजी का स्थान आसानी से ले सकें। भारत सरकार ने इस दिशा में जो प्रयास शुरू किया है, उससे उन लोगों को अत्यधिक आवश्यकता की भावना महसूस हो रही है जो इस लक्ष्य की पूर्त्ति के लिए सच्चे मन से प्रयास करना चाहते हैं।

(२) वस्तुतः यह राष्ट्रीय उद्यम है। हिन्दी के माध्यम से विज्ञान तथा विज्ञानेतर विषयों में प्रचुर परिमाण में ठोस साहित्य का निर्माण करना वांछनीय है, यद्यपि इस समय इस तरह की बात उठाने का कोई न्यायोचित आधार नहीं है। वास्तव में यह राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति होगी और इससे मांग बढ़ने की सम्भावना होगी। यदि आर्थिक दृष्टि से माँग हुई होती तो आवश्यक साहित्य का निर्माण हो गया होता जैसा कि अन्यान्य क्षेत्रों में होता है।

(३) ज्ञात हुआ है कि बजट में इस कार्य के लिए प्रचुर धनराशि आवंटित की गयी है। पता चला है कि हिन्दी-भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संस्थाओं तथा हिन्दी क्षेत्र के प्रशासकों से अनुरोध किया जा रहा है कि हिन्दी में उच्चतर वैज्ञानिक स्तर की पुस्तकें काफी बड़ी संख्या में प्रकाशित करने के लिए रूपरेखा (ब्लूप्रिंट) तैयार करें। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस उद्देश्य की प्राप्ति में प्रकाशन-उद्योग जो महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है, उसको अच्छी तरह समझा नहीं जा रहा है क्योंकि अभी तक इस कार्य में समुचित सहायता के लिए प्रकाशकों से कुछ कहा तक नहीं गया है।

(४) ऐसा प्रतीत होता है और ऐसा अनुमान भी है कि विद्वानों की संस्थाएं न केवल ऐसी ग्रन्थ-सूची ही तैयार कर सकती हैं जो जल्द से जल्द प्रकाशित की जा सकें बल्कि वे स्वयं प्रकाशक भी बन सकती हैं अथवा निजी प्रकाशन संस्था भी कायम कर सकती हैं। इस तरह का सोचना ग़लत ही नहीं, खतरनाक भी होगा। हम लोग देख चुके हैं कि अकादमियों, ट्रस्टों, कमीशनों और निदेशालयों के प्रकाशन-सम्बन्धी क्रियाकलाप में कितने अधिक राष्ट्रीय धन की बर्बादी होती है। इसका कोई ठोस परिणाम नहीं निकलता। हाँ, फाइलों में सन्तोष प्रकट कर दिया जाता है। हम यहाँ ऐसी सरकारी प्रकाशन परिषदों का जिक्र नहीं कर रहे हैं जो शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकों के बाज़ार पर एकाधिपत्य स्थापित करने की क्षमता रखती हैं और इस प्रकार अपनी सफलता प्रदर्शित करती हैं। जिस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करने की बात हम कह रहे हैं, वास्तव में उस प्रकार के प्रकाशन की खपत के लिए बाज़ार अभी है ही नहीं।

(५) प्रकाशन केवल नियोजन ही नहीं है कि क्या तैयार किया जाय या क्या छापा जाय। प्रकाशन का क्षेत्र नियोजन से कहीं विस्तृत है। यह श्रमसाध्य कार्य है खास कर अपने देश के लिए जहाँ विकास के वर्तमान स्तर पर भी निरक्षरता इतनी ज्यादा है तथा क्रयशक्ति कम है। हम उस पुस्तक को प्रकाशित हो गई नहीं मानते जो छप गई और जिल्द भी बँध गई पर पाठकों तक पहुँच नहीं सकी। इससे उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती। प्रकाशन का उद्देश्य है कि किताब की ज़रूरत जिसे हो और जो खरीदना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे, वह आसानी से खरीद सके। प्रकाशन का संचालन शुरू से अन्त तक बहुत सोच-समझकर किया जाना चाहिए। इसमें खतरा बना रहता है। यदि प्रकाशन सफल नहीं हुआ तो इसका दूसरा विकल्प पूर्ण विफलता है। प्रकाशन का मानक ऊँचा रखना होगा और मूल्य कम, ताकि अन्ततः मूल्य ऐसा हो कि बिक्री में दिक्कत पैदा न हो। फिर भी मूल्य ऐसा निर्धारित हो कि सारा खर्च निकलने के बाद प्रकाशक को लाभ अवश्य हो। प्रकाशकों को इस क्षेत्र की जो जानकारी (know how) है और इस क्षेत्र में उन्होंने जो दक्षता प्राप्त की है, उसकी उपेक्षा न की जाय। विद्वान तो पुस्तक लिखते हैं किन्तु छापने का काम प्रकाशक करते हैं।

(६) हिन्दी के प्रकाशक पूरी निष्ठा से कार्यों में सहयोग करने को तैयार हैं। वे उच्चतर शिक्षा के स्तर की पुस्तकें तैयार कराने का उत्तरदायित्व वहन करने को प्रस्तुत हैं। कर्त्तव्यपरायण प्रकाशक अत्यन्त कठिन अवस्थाओं में बहुत ही उत्तम काम कर रहे हैं। प्रकाशकों के पास प्रकाशन के जो आवश्यक उपकरण हैं, उनका उपयोग राष्ट्रीय कार्य के के लिए वे करना भी चाहते हैं बशर्ते सरकार उसे स्वीकारे। अंग्रेज़ी की जगह धीरे-धीरे हिन्दी-पुस्तकों को प्रतिष्ठित करने के लिए प्रकाशक अत्यन्त तत्पर हैं। सन् १९४७ से प्रकाशन उद्योग आधुनिक हो गया है और इस समय यह एक सुसंघटित व्यापार है।

(७) प्रकाशन का पहला पहलू है लेखकों से मूल या अनुवाद रूप में प्राप्त पाण्डुलिपियों का संशोधनादि। हम महसूस करते हैं कि उच्चतर शैक्षिक स्तर की पुस्तकें तैयार कराने की योजना उन अभिकरणों पर छोड़ देनी चाहिए जिनकी नियुक्ति संघ या राज्य सरकारें करें, पाण्डुलिपियों का संशोधन हो जाने पर तो शेष काम प्रकाशकों पर छोड़ना ही चाहिए।

(८) भारत सरकार या राज्य सरकारों अथवा विश्वविद्यालयों पर पाण्डुलिपियाँ तैयार करने, अनुवाद कराने और उनका संशोधन-परिवर्धन करने का उत्तरदायित्व सौंपने के बाद पाण्डुलिपियाँ प्रकाशित करने के लिए प्रकाशकों को सौंपी जानी चाहिए। इसके लिए प्रकाशकों से दस प्रतिशत रायल्टी लेनी चाहिए। यह प्रथा नेशनल बुक ट्रस्ट और साहित्य अकादमी में प्रचलित है। इन दोनों संस्थाओं की अधिकांश पुस्तकें गैरसरकारी प्रकाशकों के सहयोग से दस प्रतिशत रायल्टी पर छापी गयी हैं। पुस्तकों की पाण्डुलिपियों का अन्तिम संशोधन आदि अकादमी और ट्रस्ट को ही करना पड़ा है।

(९) पाण्डुलिपियाँ तैयार करने वाले अधिकारियों और प्रकाशकों के बीच जिस समझौते पर हस्ताक्षर हों, उसमें कुछ शर्त्तें रखी जायँ। एक शर्त्त यह होनी चाहिए कि प्रकाशित होनेवाली पुस्तक की कम से कम एक-तिहाई प्रतियाँ प्रकाशित मूल्य पर २५ प्रतिशत छूट के साथ अधिकारियों द्वारा खरीद लेनी चाहिए। सरकार द्वारा घोषित योजना में इस प्रकार की शर्त्त की ज़रूरत है। इस प्रकार की पुस्तकें छापने के लिए करोड़ों रुपये आवंटित करने के लिए सरकार आगे नहीं आती यदि ये पुस्तकें हिन्दी में सामान्य रूप में प्रकाशित की जातीं। योजना में यह तथ्य निरूपित है कि ऐसी पुस्तकें हिन्दी में छापी नहीं जातीं क्योंकि ऐसी पुस्तकों की सम्प्रति मांग नहीं है। हम प्रकाशकगण यह खतरा मोल लेने को तैयार हैं कि शेष दो-तिहाई पुस्तकों को बेचें यह जानते हुए कि अभी इस प्रकार की पुस्तकों की ज़ोरदार माँग नहीं है।

(१०) नियोजन स्तर से ही पाण्डुलिपियाँ तैयार करने वाले अधिकरणों और हिन्दी प्रकाशकों के सहयोगी प्रतिनिधियों के बीच तर्क-वितर्क चल रहा है, किन्तु यह तर्क-वितर्क प्रकाशकों के पक्ष में है। हम लोगों ने कार्य के आचरण से देख लिया है कि जब किसी प्रकाशित होनेवाली पुस्तक की प्रतियों के बारे में निर्णय करना होता है तो सरकारी प्रकाशनाधिकारी ग़लत निर्णय कर बैठते हैं। हम लोगों ने देखा है कि पुस्तक की हज़ारों प्रतियाँ छापी गयीं किन्तु एक हज़ार से अधिक प्रतियों की बिक्री सम्भव नहीं हुई।

(११) यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि सरकार एक-तिहाई प्रतियाँ खरीदकर क्या करेगी। यही प्रश्न प्रकाशकों के साथ भी उठता है। इसलिए यह सिफारिश की जा सकती है कि भारत सरकार तथा राज्य सरकारें भविष्य में पुस्तकालयों को धन देने के बजाय इस योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकें ही प्रदान करें। इस प्रकार हिन्दी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें हिन्दी-भाषी क्षेत्र से बाहर अधिक वितरित नहीं की जा सकतीं। दो-तिहाई पुस्तकों का स्टाक बेचना प्रकाशकों के लिए एक समस्या बन जायेगी। यह भी प्रकाशकों के लिए खतरा ही मोल लेना है। बिक्री बाज़ार का भविष्य अच्छा नहीं है, यह जानते हुए भी प्रकाशकगण हिन्दी में विश्वविद्यालयीय स्तर की पुस्तकें छापने को उत्सुक हैं। प्रकाशकों को इस बात की आशा है कि वे अपनी पुस्तकों के लिए बाज़ार खोज निकालेंगे तथा उन क्षेत्रों में बिक्री कर लेंगे जहाँ सरकार द्वारा पुस्तकों की निःशुल्क आपूर्ति नहीं होती। यदि प्रकाशक-समाज के प्रतिनिधियों को ऐसे अभिकरणों के साथ सहयोजित किया जाय तो प्रकाशक अपने अनुभव के आधार पर यह सलाह दे सकता है कि किस पुस्तक की कितनी प्रतियाँ छापनी चाहिए।

(१२) भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने अपने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और पारिभाषिक आयोग में प्रकाशकों की सहायता से हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित करने की योजनाएँ बनायी हैं। किन्तु दोनों ही योजनाएँ ठीक से नहीं चल पा रही हैं। इसका कारण यह है कि अधिकारी-वर्ग प्रकाशकों का सहयोग प्राप्त करने में असफल रहे, क्यों कि सरकार और प्रकाशकों के बीच होने वाले अनुबन्धों में कुछ ऐसी ग़लत शर्तें रख दी जाती हैं जिनसे सरकारी अधिकारी हटना नहीं चाहते। उदाहरणस्वरूप—केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजना है कि एक पुस्तक की कम से कम तीन हज़ार प्रतियाँ छापी जायँ। यद्यपि निदेशालय एक-तिहाई प्रतियाँ ही लागत के ढाई या तीन गुना बिक्री मूल्य पर खरीदता है। इससे प्रकाशकों को भय बना रहता है (जो ठीक ही है) कि शेष दो हज़ार प्रतियाँ निश्चित अवधि तक बेच पाना उनके लिए सम्भव नहीं है। समझौते की एक शर्त यह भी है कि पुस्तक का मूल्य लागत खर्च से ढाई और तीन गुने से अधिक न हो। प्रकाशकों को यह शर्त मंजूर नहीं है। इसके अलावा केन्द्रीय निदेशालय और केन्द्रीय पारिभाषिक शब्दावली आयोग अनुवाद तथा संशोधनादि का खर्च लागत खर्च में शामिल नहीं करते बल्कि उस खर्च को पुस्तक प्रकाशित हो जाने पर बिक्री मूल्य निश्चित करते समय प्रतियों पर जोड़ देते हैं। इससे पुस्तक का बिक्री मूल्य लागत खर्च से लगभग दूना ही हो पाता है। इस प्रकार का हिसाब काल्पनिक और अत्यधिक अयथार्थ ही होता है। और तो और, राज्य सरकारें भी, जो प्रकाशकों से अपनी शिक्षा संस्थाओं में प्रयोग के लिए पाठ्यपुस्तकें मन्जूर करती हैं, लागत खर्च से कम से कम ढाई गुना मूल्य निर्धारित करती हैं। इस प्रकार की पाठ्यपुस्तकें हजारों की संख्या में छपती हैं इसलिए मूल्य का यह फार्मूला प्रकाशकों को स्वीकार्य हो जाता है। किन्तु ऐसी पुस्तकों के मूल्य के बारे में यह फार्मूला स्वीकार करना सम्भव नहीं होगा जिनकी माँग सीमित या नगण्य हो।

(१३) इस योजना के अन्तर्गत जो पुस्तकें प्रकाशकों की मदद से निकाली जायँ, उनका मूल्य लागत खर्च से तिगुना होना चाहिए। सभी उन्नतिशील देशों में ऐसी पुस्तकों का मूल्य, जिनकी प्रसारण-संख्या एक से तीन हजार के बीच होती है, कम से कम चौगुना से पँच-गुना तक रखा जाता है। इससे होता यह है कि उन देशों के प्रकाशक सेवा करने में समर्थ रहते हैं।

(१४) लागत खर्च के बुनियादी तथ्य, जिनके आधार पर पुस्तक का बिक्री मूल्य निर्धारित करना पड़ता है, इस प्रकार हैं :—

(क) मूल पुस्तक और आवरण के लिए कागज़, (ख) मूल पुस्तक और आवरण की कम्पोजिंग और मुद्रण, (ग) प्रूफ-संशोधन, (घ) आवरणपृष्ठ की डिजाइन अथवा पुस्तक के भीतरी चित्रों की व्यवस्था, (ङ) पुस्तक के भीतर या आवरण-पृष्ठ के लिए ब्लाक या प्लेट और (च) जिल्द-बन्दी।

अनुवाद या संशोधन-परिवर्धन में जो खर्च बैठता है, उसे लागत खर्च में शामिल नहीं किया जाता क्योंकि उस खर्च को बिक्री मूल्य पर दस प्रतिशत रायल्टी के द्वारा प्रकाशकों से वसूला जाता है।

(१५) पुस्तकों की मूल्य-समस्या पर विचार करने के लिए यूनेस्को ने कई एक महत्वपूर्ण विचारगोष्ठियाँ कीं। यह एक विचारणीय मुद्दा है क्योंकि मूल्य के फार्मूले पर ही प्रकाशक का अस्तित्व निर्भर है। भारत में हिन्दी और अंग्रेज़ी के प्रकाशक आमतौर पर लागत खर्च से चार से साढ़े चार गुने तक और कभी कभी पाँच गुने तक पुस्तकों का मूल्य निश्चित करते हैं। मूल्य निर्धारित करते समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक की बिक्री की अवधि का ध्यान भी रखना होता है। अतएव योजनान्तर्गत प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के लिए लागत खर्च से तिगुना मूल्य की माँग न्यायोचित है। इस प्रकार मूल्य का अनुमान निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर किया जाता है :

(क) कागज़, छपाई, जिल्दबन्दी, डिजाइन और ब्लाकों का खर्च	३३.३३
(ख) व्यापारिक छूट	२५.००
(ग) रायल्टी	१०.००
(घ) प्रचार	२.००
(ङ) प्रकाशक का प्रशासकीय व्यय	२०.००
(च) प्रकाशक की लाभ सीमा	९.६७
	१००.००

यहाँ प्रकाशक की लाभ-सीमा बहुत ही कम है।

(१६) प्रकाशक के प्रशासकीय व्यय का हिसाब एक ऐसा तथ्य है जिसे अधिकारी न समझ पाते हैं, न इसका ख्याल रखते हैं। प्रशासन व्यय के अन्तर्गत पैकिंग, रेलभाड़ा, गोदाम का भाड़ा, व्यवस्था-व्यय, पूंजी पर ब्याज, थोक विक्रेताओं को दिया जाने वाला अतिरिक्त कमीशन सम्मिलित हैं। अन्य उद्योगों में यह कम से कम ३३ प्रतिशत होता है जहाँ पूंजी का विनियोजन जल्दी-जल्दी होता है। फिर भी प्रशासन के अन्तर्गत जो खर्च है वह स्पष्ट है, और प्रकाशक के खर्चों में उसका अनुपात ज्यादा है, फिर भी प्रकाशक केवल खतरा मोल लेकर ही उसका ख्याल नहीं करता। प्रकाशन की समस्त विधियों को पूरा करने में इतना समय और धन लगाना पड़ता है कि प्रकाशक को 'अपने प्रशासन व्यय का' ख्याल रखना पड़ता है। हमारी जानकारी के अनुसार हिन्दी तथा अन्यान्य भाषाओं के प्रकाशकों का व्यय २६ प्रतिशत से भी अधिक है। फिर भी हम इस मद में २० प्रतिशत की ही माँग करते हैं क्योंकि हमारा अनुमान है कि अधिकारी छपने वाली पुस्तकों की एक-तिहाई पुस्तकें खरीदकर हमारे अधिक खर्चों को कम करने में मदद करेंगे।

(१७) उपर्युक्त फार्मूले में व्यापारिक छूट की दर २५ प्रतिशत बताई गई है। इसी दर पर सरकार के हाथ प्रतियाँ बेची जायँगी। यदि कोई प्रकाशक कभी इस स्थिति में अपने को पाता है कि दो-तिहाई स्टाक लेकर या उसका अंश लेकर फँस गया है तो उसको माल निकालने के लिए अपेक्षाकृत अधिक व्यापारिक छूट देनी होगी। इस प्रकार उसे अपनी लाभ सीमा में कटौती करनी होगी और वह कटौती भी अन्य खर्चों के बावजूद करनी होगी। यदि ३० प्रतिशत की छूट देकर अपनी पुस्तकें बेचने के लिए उसे मजबूर होना पड़ा तो उसकी लाभ—सीमा घटकर लगभग ५ प्रतिशत रह जायेगी। फिर भी प्रकाशक इस योजना में भाग लेना चाहते हैं क्योंकि अधिकारी प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की एक-तिहाई प्रतियाँ खरीदकर प्रकाशकों का खतरा कम कर देंगे।

(१८) अनुभव से हमें पता है कि उत्पादन-व्यय से तिगुना पुस्तक का मूल्य निर्धारित करने के बारे में अधिकारियों के दिमाग में उलझन है। भारत सरकार के एक उच्चाधिकारी ने, जिसके जिम्मे प्रकाशकों के साथ पुस्तक-प्रकाशन के बारे में समझौता करने का भार है, इस प्रकार का तर्क किया। उस उच्चाधिकारी ने कहा कि मान लीजिये कि एक पुस्तक का उत्पादन-व्यय तीन रुपये पड़ता है। तीन हजार प्रतियाँ छापी गयीं जिनका मूल्य बिक्रीदर से नौ हजार रुपया होता है। उसने आगे कहा—जब सरकार ने तीन रुपये प्रति के हिसाब में २५ प्रतिशत छूट के साथ एक हजार प्रतियाँ खरीद लीं तो प्रकाशक को एक हजार प्रतियों का मूल्य २२५०) मिला। शेष दो हजार प्रतियाँ प्रकाशक को केवल ७५०) में ही मिल गयीं। इस पर उस अधिकारी को आश्चर्य हुआ कि प्रकाशक को इतना भारी मुनाफा हुआ।

अन्यान्य अफसरों की तरह उस अधिकारी ने २२५०) प्राप्त करने के पीछे केवल एक ही तथ्य को अर्थात् पुस्तक के बिक्री-मूल्य को पकड़ा और अन्य तथ्यों को विस्मृत कर दिया। अर्थात् उसने व्यापारिक छूट को ही ध्यान में रखा। किन्तु एक हजार प्रतियों की इस बिक्री के पीछे जो अन्य तीन तथ्य हैं, उनका पता उसको नहीं चला। वे तथ्य हैं—१० प्रतिशत रायल्टी, प्रशासन व्यय २० प्रतिशत और प्रकाशक की मुनाफा-सीमा १० प्रतिशत—कुल ४० प्रतिशत। इसका फर्क हुआ १२००)। इस प्रकार प्रकाशक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास १९५०) मूल्य की दो हजार प्रतियाँ शेष रह जाती हैं।

(१९) यह पूछा जा सकता है कि उत्पादन-व्यय के लिए समान-दर क्यों नहीं निश्चित कर दी जाती ताकि पुस्तकों का मूल्य समान रूप से सौ पृष्ठों के अनुसार निर्धारित कर दिया जाता। इसका उत्तर होगा कि पुस्तकों के उत्पादन-व्यय में एक राज्य से दूसरे राज्य की तुलना में अन्तर पड़ता है। पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, मद्रास और दिल्ली में उत्पादन-व्यय अधिक बैठता है। इतना ही नहीं, एक शहर से दूसरे शहर में उत्पादन-व्यय में अन्तर आ जाता है। उदाहरण के लिए उत्तर-प्रदेश के वाराणसी, आगरा और इलाहाबाद तथा महाराष्ट्र के बम्बई और पूना शहरों के नाम लिये जा सकते हैं। इतना ही नहीं, एक प्रकाशक से दूसरे प्रकाशक की तुलना में भी उत्पादन व्यय में अन्तर आता है। कहीं कागज पर चुंगी है और किसी राज्य में कागज पर बिक्री कर है जो कि एक अतिरिक्त भार है। इससे मूल्य बढ़ जाता है। इसी प्रकार मुद्रण व्यय में भी प्रेस-प्रेस में अन्तर है। मुद्रण की गुणवत्ता और सावधानी पर भी व्यय निर्भर करता है। वही बात जिल्दबन्दी पर लागू होती है। इसीलिए प्रकाशक द्वारा पहले से दिये गये प्रतिफार्म पर ही उत्पादन-व्यय मंजूर करना होता है। जिस प्रकाशक का उत्पादन-व्यय अधिकारियों की दृष्टि में ऊँचा होगा, उसे अधिकारी अमान्य भी कर सकते हैं। प्रकाशन के लिए पुस्तक सौंपने के वक्त अधिकारी के सामने यह बात रहती है। यदि प्रकाशक उत्पादन-व्यय का कोटेशन ऊँचे दर पर देता है तो अन्ततः वह अपने गले में फन्दा डालता है क्योंकि उसे अन्त में पुस्तकों का दो-तिहाई स्टाक भारी मूल्य में बेचना होगा जिसे खरीदार कभी मंजूर नहीं कर सकता। इसलिए प्रकाशक हिसाब लगाकर ऐसा कोटेशन देता है जो स्वाभाविक जँचता है। स्टेशनरी और प्रिंटिंग के नियंत्रक अथवा किसी अन्य व्यक्ति का हस्तक्षेप इस कार्य में मान्य नहीं होगा। हम अनुभव के आधार पर कह सकते हैं कि इस प्रकार के अभिकरणों के पास वस्तुओं के परखने की वास्तविक दृष्टि नहीं होती बल्कि उन्हें निर्णय करने में काफी समय लग जाता है। जो प्रकाशक प्रकाशन में अपनी पूँजी लगाता है, वह शायद ही पुस्तक का मूल्य निर्धारित करने में महीनों का इंतजार करे। उसे अपनी पूँजी निकालने की फिक्र रहती है। इसके अलावा उत्पादन-व्यय को प्रमाणित करने में सहायता प्रदान करने के लिए प्रकाशकों के प्रतिनिधि को सम्मिलित किया जा सकता है। दूसरी बात, सामान्यतः उत्पादन-व्यय उसके आय-व्यय परीक्षक द्वारा प्रमाणित रहता है।

(२०) अब दूसरा प्रश्न प्रकाशकों के चुनाव का उठता है जिन्हें योजनान्तर्गत पुस्तक के प्रकाशन का भार सौंपना है। हम लोगों ने इस मुद्दे पर विचार-विमर्श किया है और इसके लिए निम्नलिखित मार्ग दर्शन दे सकते हैं—प्रकाशकों का चुनाव, उनकी पुस्तक-सूची, उनके द्वारा प्रकाशित या घोषित पुस्तकों की गुणवत्ता, उनके बैंक-खाते और उनके व्यावसायिक संघ की सिफारिश के आधार पर किया जा सकता है। उनसे आयकर का प्रमाणित प्रमाणपत्र भी माँगा जा सकता है।

उपर्युक्त चार मुद्दों को ध्यान में रखकर सही ढंग के प्रकाशकों का चुनाव किया जा सकता है जिनसे अच्छा काम हो सके। उनकी पुस्तक-सूची से पता चलेगा कि वे किस श्रेणी की पुस्तक छाप सकते हैं। उनके बैंक खाते से उनकी वित्तीय स्थिरता का पता चलेगा। व्यावसायिक संघ की सदस्यता से इस बात की जानकारी होगी कि वे प्रकाशन समाज के विश्वस्त सदस्य हैं और उनके आयकर प्रमाणपत्र से पता चलेगा कि वे व्यापार करते आये हैं और टैक्स देते हैं।

(२१) प्रकाशकों को प्रकाशन के लिए पुस्तक चुनने के लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण बात है यद्यपि अभी ऐसा होता नहीं है। सभी प्रकाशक सभी विषयों की पुस्तकें न छाप सकते हैं, न अच्छी तरह बेच सकते हैं। जो प्रकाशक विज्ञानेत्तर या साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें प्रकाशित कर बेच सकते हैं, वे विज्ञान की पुस्तकों का प्रकाशन कर बेचने की समस्या का सामना मुश्किल से ही कर पायें। सम्प्रति प्रकाशन के निर्णय का भार अधिकारियों के हाथ में रहता है। इस प्रकार की अनिवार्यता स्वीकार्य नहीं हो सकती। चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तक प्रकाशित करनेवाले प्रकाशक से यदि समाजवाद पर पुस्तक छापने के लिए कहा जाय तो उसके लिए कठिनाई ही होगी। समस्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल उत्पादन तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि बिक्री को भी प्रभावित करेगी। आखिर पुस्तक के प्रकाशन का उद्देश्य है विश्वविद्यालयों में प्राध्यापकों और छात्रों के बीच उनका व्यापक प्रचार और बिक्री।

(२२) अन्त में हम कहना चाहेंगे कि अपने देश में हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित करने के उद्योग में कोई पूंजी लगाना नहीं चाहता। अर्थाभाव से यह उद्योग पिछड़ रहा है। उद्योग के रूप में प्रकाशन-व्यवसाय को मान्यता भी नहीं मिली है कि वह बैंक अथवा कर्जा देनेवाली सरकारी संस्थाओं से कर्ज प्राप्त कर सके। अब बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण की योजना के अन्तर्गत बैंकों से कहा जा रहा है कि किसानों तथा अन्यान्य व्यवसायियों की तरह प्रकाशकों को भी ऋण देने के प्रश्न पर विचार करें। सरकार इस योजना पर अधिक बल दे रही है। भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की अपनी-अपनी योजनाएँ होनी चाहिए कि सत्साहित्य के प्रकाशन की ठोस योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए वे आसान तरीके पर प्रकाशकों को लम्बी मियाद का कर्ज दिला सकें।

(२३) ज्ञात हुआ है कि हिन्दी क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों का सम्मेलन वाराणसी में होने जा रहा है जहाँ उच्चतर स्तर की शैक्षिक पुस्तकों के उत्पादन से सम्बद्ध समस्याओं पर विचारों का आदान-प्रदान होगा। यह उचित ही होगा कि इस प्रकार के विचार-विमर्श में भाग लेने के लिए हिन्दी-प्रकाशकों के प्रतिनिधि भी आमंत्रित किये जायँ।

(२४) एक और मुद्दा है जिस पर हम बल देना चाहेंगे। संघ सरकार इस बात पर जोर दे कि राज्य की सरकारें अथवा विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालय छापने के लिए पुस्तकें देते समय प्रकाशकों के चयन के समय एक-तरफा दृष्टिकोण न अपनायें। हमारे अनुभव में वह बात आयी है कि कतिपय राज्यों ने केवल अपने-अपने राज्यों के प्रकाशकों और लेखकों की ही पुस्तकें खरीदना शुरू किया है। इससे अन्यान्य क्षेत्रों के अच्छे प्रकाशकों के दरवाजे बन्द हो गये हैं। यदि ऐसा हुआ तो राष्ट्रीय धनराशि से उत्पादित होनेवाली पुस्तकों का मानक निम्नस्तरीय हो जायेगा। प्रकाशकों के चयन का मुख्य आधार प्रकाशकों की क्षमता होनी चाहिए कि वे अच्छी पुस्तकें निकाल सकें चाहे प्रकाशक किसी खास राज्य उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार के ही क्यों न हों। फिर भी हिन्दी के ४० प्रतिशत प्रकाशक केन्द्र प्रशासित क्षेत्र दिल्ली में रहते हैं। इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रकाशकों का चयन संकीर्ण और क्षेत्रीय आधार पर न किया जाय। उनका चयन मुख्य रूप से केवल उनके उत्तम कार्य के आधार पर ही किया जाना चाहिए।

नये अध्यक्ष

आगामी वर्ष के लिए अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष पद पर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली के यशस्वी संचालक श्री कन्हैयालाल मलिक निर्विरोध चुने गए। श्री मलिक गत अनेक वर्षों तक संघ के प्रधान मंत्री, कोषाध्यक्ष तथा विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं। संघ के कार्यों में आपकी सहज निष्ठा तथा लगन है। आशा है श्री मलिक की अध्यक्षता में संघ को नया बल तथा नूतन निर्देश प्राप्त होगा।

बिहार राज्य शिक्षा मन्त्री को पत्र

संघ के अध्यक्ष श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने बिहार राज्य के शिक्षामन्त्री को संघ कार्यसमिति के सदस्य श्री रामतीर्थ भाटिया द्वारा पत्र भेज कर उनका ध्यान निम्नलिखित की ओर आकर्षित किया है—

१. बिहार में पुस्तकों की खरीद सम्बन्धी अनुदान लगभग समाप्त कर दिये गए हैं और जो थोड़ा-बहुत स्वीकृत है उसका भी कार्यान्वयन नहीं हो पा रहा है।
२. गत वर्ष सूखे के कारण स्थिति बिगड़ गई थी अतः संघ ने परिस्थिति देखते हुए शासन से अनुदान जारी रखने का अनुरोध नहीं किया। किन्तु इस वर्ष जबकि अन्य प्रदेशों ने ये अनुदान पुनः जारी कर दिये हैं बिहार सरकार ने इस सम्बन्ध में कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया है।
३. बिहार में कूपन द्वारा अनुदान दिया जाता है जिसके लिए एक अलग विभाग है। वह भी इस सम्बन्ध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है।

४. शासन तत्काल इस दिशा में सक्रिय कदम उठाने की कृपा करे।

निरन्तर अभावों का रोना-रोने तथा दया की याचना करने वाला बिहार आज निम्नकोटि की राजनीति का गढ़ बन गया है। लगता है वहाँ के नेता केवल राजनीति खाते हैं, राजनीति पीते हैं, राजनीति पहनते हैं, राजनीति ओढ़ते हैं, राजनीति बिछाते हैं। वे अपने प्रदेश की जनता को राजनीतिक जबान से पुकार-पुकार कर कह रहे हैं तुम भूखे हो, तुम दरिद्र हो, तुम मूर्ख हो; तुमको अन्न चाहिए तो राजनीति करो, तुमको धन चाहिए तो राजनीति करो, तुमको ज्ञान प्राप्त करना है तो राजनीति करो (यानी परीक्षाएँ टलवाते जाओ) जितना काम उतनी मजदूरी की तरह, जितनी पढ़ाई उतनी फीस का नारा लगाओ। संकीर्ण राजनीति, जातीयता, प्रान्तीयता में साँसें लेने वाला बिहार जो आज औद्योगिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भारत का सिरमौर बनता वह सारे देश के लिए तमाशा बना हुआ है। आज वहाँ की जनता अन्न की भूख और अभाव से अधिक नैतिक तथा सांस्कृतिक दारिद्र्य से पीड़ित है। बिहार के नेता यदि सचमुच देशभक्त—प्रदेशभक्त हैं तो अपनी राजनीति की चादर थोड़ी देर के लिए उतार कर मासूम जनता के चेहरों को देखें। उगती पीढ़ी के मस्तक पर संस्कृति का यशस्तिलक करें।

पोस्ट बाक्स नं० ४९ फोन नं० २३४५

नव वर्ष की मंगल शुभकामनाओं सहित

पुष्पी पॉकेट बुक्स

और हमारी मासिक पत्रिकायें

पुष्पी (सामाजिक) १.२५ • गुरू जासूस (जासूसी) ०.७५ • मुस्कान (जासूसी) १.००

और एक उर्दू मासिक १) रुपये में

सनमकदा

स्थाई लेखक—

"प्रेम" बाजपेयी • ओमप्रकाश शर्मा • सोम नाथ "अकेला" • 'अकरम' इलाहाबादी

आज ही आप रेलवे बुक स्टाल या अपने समाचार पत्र विक्रेता से माँगिये या हमें लिखिये।

भारतीय एवं मानवीय साहित्य के मात्र प्रकाशक

'पुष्पी कार्यालय' ११९—बी, बाई का बाग़, इलाहाबाद-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना भार

दिल्ली के लिए नया शिक्षा बोर्ड

अगली जुलाई से केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली में उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के लिए नया बोर्ड स्थापित करने का प्रस्ताव है। दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत यह एक अर्ध-शासकीय बोर्ड होगा। बोर्ड द्वारा संचालित प्रथम परीक्षा १९७० ई० में होगी। इस समय यह परीक्षा सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेण्ड्री एजूकेशन द्वारा आयोजित की जाती है।

इस बोर्ड की स्थापना शिक्षा आयोग के सुझाव के अनुसार की जा रही है। आयोग का सुझाव था कि प्रत्येक प्रदेश तथा केन्द्र शासित प्रदेश में अपना निजी बोर्ड होना चाहिए।

मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा के अनुसार बोर्ड की स्थापना के लिए प्रारम्भिक कार्य शुरू हो गया है। पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था भी शीघ्र की जायेगी। इस बोर्ड का अपना पाठ्यक्रम तथा परीक्षा के नियम होंगे। आशा है यह बोर्ड उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नये परिवर्तन करेगा। केन्द्रीय सरकार ने बोर्ड-स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।

काली स्याही से सेंसर

सीमा-शुल्क अधिकारियों ने इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के ताजे संस्करण के एक पृष्ठ को काले रंग से रंग दिया है। इस पृष्ठ पर भारत का एक मानचित्र छपा था जिसमें कश्मीर को पाकिस्तान के भाग के रूप में दिखाया गया था।

केन्द्रीय सरकार ने सीमा शुल्क अधिकारियों से कहा है कि वे अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा भेजे गए विश्व-कोषों व एटलसों की जाँच करें क्योंकि इनमें कश्मीर को पाकिस्तान के अंग के रूप में दिखाया गया है। टाइम्स एटलस में भी ऐसा ही किया गया है। पायर्स इन्साइक्लोपीडिया ने भी कश्मीर को पाकिस्तान के अंग के रूप में दिखाया है। स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं को अभी तक कोई कापी नहीं मिली है।

केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मन्त्रालय के लिए हिन्दी सलाहकार समिति

केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मन्त्रालय के लिए एक हिन्दी सलाहकार समिति का गठन किया गया है।

ज्ञात हुआ है कि इस समिति में २८ सदस्य होंगे जिनमें सर्वश्री गंगाशरणसिंह, प्रकाशवीर शास्त्री, हेम बरुआ, रामधारीसिंह दिनकर (सभी संसद सदस्य), तथा श्री रतनलाल जोशी (सम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली), कामाक्षी (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा), जी० पी० नेने, अनन्तगोपाल शेवड़े (सम्पादक, नागपुर टाइम्स), धर्मवीर भारती (सम्पादक, 'धर्मयुग', बम्बई) आदि होंगे।

पाकिस्तान में साहित्यिक चोरी

पाकिस्तान के एक प्रमुख समाचारपत्र ने ग्रन्थों की चोरी की निन्दा की है। पश्चिम पाकिस्तान में आजकल बहुत-सी भारतीय पुस्तकों का प्रकाशन लेखकों की स्वीकृति के बिना ही हो रहा है।

लाहौर सरकार द्वारा प्रकाशित 'पाकिस्तान टाइम्स' नामक समाचारपत्र के सम्पादकीय में कहा गया है कि स्वतन्त्रता के पूर्व या बाद में भारतीय लेखकों द्वारा लिखी गई कई पुस्तकों का लेखकों की पूर्व स्वीकृति के बिना ही आजकल पाकिस्तान में काफी प्रकाशन हो रहा है।

पत्र में कहा गया है कि उक्त भारतीय लेखकों ने इसका विरोध किया है तथा पाकिस्तानी साहित्यकारों ने भी इसमें भारतीय साहित्यकारों का साथ दिया है।

समाचारपत्र में पश्चिम पाकिस्तान सरकार के इस निर्णय का स्वागत किया है जिसके अन्तर्गत सरकार ऐसे कार्यों को रोकने के लिए एक अध्यादेश जारी करने जा रही है।

एक सरकारी प्रवक्ता ने लाहौर में बताया कि प्रस्तावित कानून के अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था है कि यदि कोई व्यक्ति विदेशी लेखक की कृति को प्रकाशित करना चाहता है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके लिए उसे उस लेखक से या सरकार से पहले स्वीकृति लेनी होगी ।

संस्कृत के विकास के लिए २८ लाख रु०

केन्द्रीय राज्य शिक्षामन्त्री श्री शेरसिंह के अनुसार भारत सरकार ने इस वर्ष संस्कृत साहित्य के विकास के लिए २८ लाख रु० की राशि निर्धारित की है ।

उन्होंने यह भी बताया कि सरकार ने पचास हजार या उससे अधिक जनसंख्या वाले स्थानों में सार्वजनिक पुस्तकालयों को सहायता देने की योजना बनाई है ।

सरकार ने श्री अरविन्द घोष की पुस्तक 'लाइट एण्ड डिवाइन' का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए पचास प्रतिशत खर्च देना स्वीकार किया है ।

श्री सिंह ने अनुमानित दो लाख रुपये से तैयार होने वाले सार्वजनिक पुस्तकालय के भवन की नींव रखी । करनाल निवासी श्री प्रतापसिंह भाटिया ने पुस्तकालय के लिए एक लाख रुपये दान में दिये हैं ।

चारवर्षीय हायर सेकेण्डरी पाठ्यक्रम

दिल्ली शिक्षा निदेशालय चार वर्षीय उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम १९६८-६९ के शैक्षणिक वर्ष से शुरू कर रहा है । प्रथम पत्राचार में प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों को १९७२-७३ में फाइनल परीक्षा देनी होगी ।

इस पाठ्यक्रम में दिल्ली, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के आठवीं कक्षा पास अथवा ३० सितम्बर को १५ वर्ष की आयु पूरी करने वाले छात्र प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे ।

बम्बई विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना

बम्बई विश्वविद्यालय में यद्यपि स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी का अध्यापन होता था किन्तु विश्वविद्यालय में इसका अलग विभाग नहीं था । विश्वविद्यालय के सिनेट ने विश्वविद्यालय में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य नये विभाग—मराठी, गुजराती, इतिहास, पत्रकारिता शिक्षा तथा जीवशास्त्र—भी खोलने का निर्णय किया है ।

पंजाब में प्रेस के लिए ऋण

प्रकाशक संघ के प्रतिवेदन के उत्तर में स्पष्टीकरण करते हुए पंजाब के मुख्य मन्त्री डॉ० गुरचरणसिंह ने १७ जनवरी, १९६८ को जारी किये गये अपने एक वक्तव्य में कहा कि पंजाब राज्य सहायता (उद्योग के लिए) अधिनियम के अन्तर्गत प्रेसों को ऋण प्रदान किये जाएँगे । छपाई की मशीनें खरीदने तथा कार्यरत पूंजी के लिए उन प्रकाशकों को ऋण दिये जाते हैं जो स्वयं प्रेस उद्योग चला रहे हैं अथवा प्रेस उद्योग स्वयं प्रारम्भ करना चाहते हैं । अन्य को केवल मशीनरी खरीदने के लिए ऋण उपलब्ध होगा ।

सुलभ साहित्य सदन, पटना

सुलभ साहित्य सदन, पटना-१ के प्रकाशन कार्यालय का नया पता—राममनोहर लोहिया नगर, पटना-१६ ।

जिसका कोई मित्र नहीं

ग्रामीणों में साक्षरता के विकास के लिए गाँवों में पुस्तकालय खोले जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए उपराष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने लुधियाना में कहा कि जिसका कोई मित्र नहीं है, पुस्तकें उसकी मित्र हैं । श्री गिरि ने सात लाख रुपये की लागत से निर्मित पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का उद्घाटन कर रहे थे ।

लेनिनग्राद में पुस्तक प्रदर्शनी

सोवियत संघ के प्रमुख नगर लेनिनग्राद में गोर्की और तुर्गनेव की रचनाओं की भारतीय भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की प्रदर्शनी हो रही है । इस प्रदर्शनी के लिए पुस्तकें इस पते पर भेजी जा सकती हैं:—

—श्री प. अ. वारान्निकोव
मैत्री भवन, लेनिनग्राद (सोवियत संघ)

कृषि-ग्रंथावली

हिन्दी में आदर्श तकनीकी पुस्तकों की कमी के कारण तकनीकी ज्ञान हिन्दी में प्रदान करने में जो कठिनाई सामने आती है उसके हल के लिए पंतनगर स्थित उत्तरप्रदेश कृषि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय ने एक विशाल कार्यक्रम तैयार किया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत आदर्श पाठ्य-पुस्तकों तथा दूसरे तकनीकी प्रकाशनों का हिन्दी में अनुवाद किया जाएगा। विश्वविद्यालय ने तत्सम्बन्धी कार्य के लिए एक समिति का गठन किया है। इस समिति ने हिन्दी में अनुवाद के लिए कुछ विशिष्ट उपविषयों का चुनाव किया है। इन उप-विषयों में कृषि, पशुपालन, अभियंत्रण तथा आधारिक विज्ञान विषय भी सम्मिलित हैं। विश्वविद्यालय ने अनुवाद कार्य हेतु हर सम्भव सहायता की व्यवस्था की है। अनुवादकों को अच्छा पारिश्रमिक दिया जाएगा। विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ध्यानपालसिंह ने विश्वविद्यालय के विज्ञान-वेत्ताओं से अनुरोध किया है कि वह न केवल अतिरिक्त धनोपार्जन वरन् राष्ट्रीय सेवा की भावना से उत्प्रेरित हो कर अनुवाद कार्य को अपने हाथ में लें।

'हिन्दी प्रकाशक' के लिए

विज्ञापन की दरें

प्रथम पृष्ठ (आवरण) अनुबद्ध	
चतुर्थ पृष्ठ (आवरण)	९०.००
द्वितीय-तृतीय पृष्ठ (आवरण)	८०.००
साधारण पृष्ठ	६०.००
आधा पृष्ठ	४०.००
चौथाई पृष्ठ	२५.००

विशेष सुविधाएँ

वर्ष में ६ अंकों के अनुबन्ध पर १५ प्रतिशत और १२ अंकों के अनुबन्ध पर २० प्रतिशत छूट।

केवल 'संघ' के सदस्यों के लिए

(क) उपर्युक्त साधारण दरों पर १५ प्रतिशत छूट।

—'हिन्दी प्रकाशक'
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

आवश्यक सूचना

१५ फरवरी, सन् १९६८ से **इंडियन पब्लिशिंग हाउस** का थोक-बिक्री-केन्द्र **२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६** में स्थानान्तरित हो रहा है। सहयोगियों तथा बन्धुओं से निवेदन है कि वे सभी पत्र-व्यवहार एवं ऑर्डर आदि अब इस नये पते पर भेजें। फुटकर बिक्री-केन्द्र पहले की तरह नई सड़क पर ही रहेगा।

आवश्यक सूचना

'अ० भा० हि० प्रकाशक संघ' की ओर से प्रकाशित किये जाने वाले हिन्दी-पुस्तक विक्रेताओं तथा प्रकाशकों के पतों के सैट छप चुके हैं।

विवरण टाइटिल के तृतीय पृष्ठ पर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत

हिन्दी तथा संस्कृत के शोध-प्रबन्ध

हिन्दी

१. हिन्दी कवयित्रियों के काव्य में सौन्दर्य भावना : कु० शीला अग्निहोत्री

२. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की भाषा शैली का काव्य-शास्त्रीय अध्ययन : श्री रामकुमार मिश्र

३. करुणरस : विवेचन (भारतीय, संस्कृत व हिन्दी काव्य-शास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं मनोविज्ञान के आधार पर) : श्री कैलाशचन्द्र जैन

४. जैनाचार्य रविसेन कृत पद्मपुराण (संस्कृत) एवं तुलसीकृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन : श्री रमाकान्त शुक्ल

५. आधुनिक हिन्दी के छायावादी काव्य पर वैदिक दर्शन का प्रभाव : श्री प्रेमप्रकाश रस्तोगी

६. कुरुप्रदेश की स्वांग (सांग) कला : श्री इन्द्रसेन शर्मा

७. महाराज सवाई प्रतापसिंह 'ब्रजनिधि'—जीवन और साहित्य (सन् १७६४-१८०४ ई०)—श्री रामसिंह चौहान

८. तुलसी साहित्य में नारी : श्रीमती शारदाकुमारी त्यागी

९. हिन्दी छायावादोत्तर काव्य में ध्वनि : श्री कुन्दनलाल उप्रेती

१०. भक्तिरस का काव्यशास्त्रीय अध्ययन : श्री जगतनारायण

११. राहुलजी का कथा-साहित्य : श्री मुकटलाल गुप्त

१२. राधावल्लभ सम्प्रदाय के हिन्दी साहित्य में रस की स्थिति और उसकी भाषा : कुमारी सरला गोस्वामी

१३. तेलुगु और हिन्दी लोकोक्तियों का तुलनात्मक एवं भाषा वैज्ञानिक अध्ययन। कनूमूरी वीरा वेंकट लक्ष्मीनरसिंहराव

संस्कृत

१. गर्गसंहिता का समालोचनात्मक अध्ययन : श्रीकृष्णदत्त अवस्थी

२. श्रीमद्भगवद्गीता के वैष्णव टीकाकार एवं उनकी टीकाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन : श्री वासुदेव-कृष्ण चतुर्वेदी

३. ऋग्वेद में काव्य तत्व (संस्कृत अलंकारशास्त्र की दृष्टि से ऋग्वेद का आलोचनात्मक मूल्यांकन) : श्री निगम शर्मा

नव लेखन के एक सुर्ख हस्ताक्षर

डा० रणजीत की पाँच महत्वपूर्ण पुस्तकें

१. ये सपने : ये प्रेत (कविता संग्रह) मूल्य ४ रुपये
२. जमती बर्फ : खौलता खून (,,) मूल्य ३ रुपये
३. इतिहास का दर्द (,,) मूल्य ५ रुपये
४. प्रतिश्रुत पीढ़ी (प्रतिश्रुत कविता का तार सप्तक, आठ प्रतिश्रुत कवियों की सौ चुनी हुई कविताएँ) मूल्य ७-५० रुपये
५. गर्म लोहा : ठण्डे हाथ (कहानी संग्रह) मूल्य २-५० पैसे

शीघ्र प्रकाश्य

१. हिन्दी की प्रगतिशील कविता (शोध प्रबन्ध)
२. हिन्दी के प्रगतिशील कवि (समीक्षा पुस्तक)
३. प्रगतिशील कविता के मील-पत्थर (हिन्दी की सौ श्रेष्ठ प्रगतिशील कविताएँ)
४. एक काव्यशती (पिछले सौ वर्षों के हिन्दी काव्य सृजन की समस्त उपलब्धियों का समग्र संकलन, हिन्दी के लगभग दो सौ कवियों की चुनी हुई पांच सौ कविताएँ)
५. परिप्रेक्ष्य (समीक्षात्मक निबंध-संग्रह)

प्राप्ति स्थान

नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

किताब महल
चौड़ा रास्ता, जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका पत्र

मानक-ग्रंथ-सूची

भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का स्थायी
आयोग (शिक्षा मन्त्रालय)
वि० वि० अ० आयोग भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-१, १८ जनवरी, १९६८

प्रिय सम्पादक जी,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर की मानक ग्रंथ सूची प्रकाशित करने की योजना बनाई है और उसका प्रथम भाग प्रकाशित किया जा चुका है। उसकी एक-एक प्रति प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों को भेजी जा चुकी है।

आप इस बात से तो सहमत ही होंगे कि अब तक हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के लिए प्रकाशकों द्वारा तैयार और प्रकाशित पुस्तकों का लेखा-जोखा प्रामाणिक रूप में उपलब्ध नहीं होगा तब तक हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न विषयों में आवश्यक पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना सर्वांगीण दृष्टि से नहीं बनाई जा सकेगी। इस बारे में आयोग पिछले वर्ष से प्रयत्नशील है कि हिन्दी के प्रकाशकों ने जो पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए प्रकाशित की हैं उनकी एक प्रामाणिक सूची बनाई जाय। खेद के साथ कहना पड़ता है कि समाचार पत्रों में विज्ञापन देने के बावजूद और व्यक्तिगत रूप से प्रकाशकों को परिपत्र भेजने के बावजूद अभी तक हमारे पास ऐसी सूचना उपलब्ध नहीं हो पायी है।

मैं आशा करता हूँ कि इस काम में आप हमें सहयोग देंगे। यदि आपके सदस्य तुरन्त ही निम्नलिखित फार्म (प्रपत्र) के अनुसार सूचना भेज सकें तो इसको प्रकाशित करने में आयोग को आसानी रहेगी।

आपका
ओमप्रकाश शर्मा

—प्रकाशक बन्धुओं से अनुरोध है कि विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें प्रकाशित करने से अधिक आज उन पुस्तकों के लिए वातावरण बनाने की आवश्यकता है। लोगों को यह जानकारी हो कि हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के साहित्य का अभाव नहीं है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने विश्वविद्यालय-स्तरीय-मानक ग्रंथ-सूची प्रकाशित की है जो उनसे पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। यद्यपि यह सूची अपूर्ण और त्रुटिपूर्ण है किन्तु इसका दोष आयोग का उतना नहीं जितना प्रकाशकों का है जिन्होंने उनकी इस पहल में हाथ नहीं बटाया। अब उन्हें चाहिए कि तत्काल निम्नांकित प्रपत्र के अनुसार सूचनाएँ भेजें और सूची को दोषरहित बनाये जाने की दृष्टि से पुस्तकों की एक-एक प्रति भी भेजें। आयोग को भेजे जाने वाले प्रपत्र तथा पुस्तकों की एक-एक प्रति 'हिन्दी प्रकाशक' को भी के-४०।६ भैरवनाथ, वाराणसी-१ के पते से भेजें। 'हिन्दी प्रकाशक' भी इस प्रकार की ग्रंथ-सूची प्रकाशित करेगा।

—सम्पादक

निम्नांकित प्रपत्र के अनुसार सूचना भेजनी चाहिए।

१. लेखक नाम
२. पुस्तक नाम
३. प्रकाशक का पता
४. अनुवादक का नाम (जहाँ उपलब्ध है)
५. संस्करण
६. पृष्ठ संख्या
७. मूल्य
८. परिचयात्मक टिप्पण
९. पुस्तक की उपयोगिता

लन्दन में हिन्दी प्रचार

"आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हिन्दी-प्रचार-परिषद्, लन्दन में भारत की राष्ट्रभाषा के प्रचार में कार्यरत है। परिषद् की ओर से नियमित रूप से हिन्दी कक्षाएं चलती हैं और समय-समय पर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। एक त्रैमासिक पत्रिका 'प्रवासिनी' का प्रकाशन भी जारी है और अब इसे शीघ्र ही मासिक बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

हिन्दी नाटकों का चाव भी प्रवासी भारतीयों में दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है और अब तक अकेले लन्दन में ही बीस हिन्दी नाटक खेले जा चुके हैं। ब्रिटेन के अन्य नगरों में भी हिन्दी-प्रचार का कार्य जोरों पर है। लन्दन में परिषद ने एक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की है और पाठ्यक्रम की पुस्तकें, नाटक, उपन्यास, कहानी, भाषा-विज्ञान आदि सभी तरह की पुस्तकों की माँग है। आपसे निवेदन है कि आप हिन्दी भक्तों के समक्ष हमारा यह यह प्रस्ताव रखें कि वे समुद्री डाक से कम से कम हिन्दी की एक पुस्तक (किसी भी स्तर की) परिषद् के निम्न पते पर भेजने की कृपा करें—हिन्दी-प्रचार-परिषद, १४१ व्हिट-फील्ड स्ट्रीट, लन्दन, डब्ल्यू-१

राष्ट्रभाषा हिन्दी

में

● एलोपैथिक

● होमियोपैथिक

एवं

● आयुर्वेदिक

पुस्तकों का प्रकाशन प्रतिष्ठान

विशेष विवरण के लिए सूचीपत्र माँगें

मेडिकल पुस्तक भवन

गोलादीनानाथ, वाराणसी

एक नई घोषणा

एक नयी प्रकाशन संस्था :

दो श्रेष्ठ नये ग्रंथ

तुलसी-पूर्व राम-साहित्य

लेखक : **डॉ० अमरपालसिंह**

तुलसीदास के पूर्व सहस्रों वर्षों से राम-साहित्य का प्रचार रहा है, परन्तु उसके संबंध में सम्पूर्ण जानकारी देने वाला यह सर्वप्रथम शोध-ग्रंथ है।

सजिल्द : आकर्षक आवरण

मूल्य : बीस रुपये

प्रसाद के नाटकों में नियतिवाद

लेखक : **डॉ० पद्माकर शर्मा**

भूमिका : डॉ० नगेन्द्र

'नियतिवाद' प्रसादजी के नाटकों में सतत धारा की तरह प्रवाहित हुआ है। इसकी पूर्ण विवेचना प्रस्तुत करने वाला एक मात्र ग्रंथ।

सजिल्द : मनोहर आवरण

मूल्य : आठ रुपये

रचना प्रकाशन

५ खुसरूबाग रोड,

इलाहाबाद-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली-६, वाराणसी-५

गणदेवता (उपन्यास), लेखक ताराशंकर वन्द्योपाध्याय, अनुवादक—हंसकुमार तिवारी, प्र० सं० १९६७, मूल्य १६.००, पृष्ठ संख्या ६४० (डिमाई)।

भारतीय ज्ञानपीठ के एक लाख रुपये के सर्वोच्च पुरस्कार से पुरस्कृत 'गणदेवता' भारतीय नवजागरण काल की महागाथा है। श्रद्धा और संस्कृति के केन्द्र 'चण्डीमण्डप' (धर्म क्षेत्र) विनाश और सृष्टि की देवी माँ काली की पूजा स्थली और सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक उथल-पुथल का केन्द्र 'पंचग्राम' (कर्म क्षेत्र) इन दो केन्द्र प्रतीकों के माध्यम से एक ओर स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत भारतीय जनता और दूसरी ओर औद्योगीकरण के प्रसार के कारण बदलती और ढहती हुई पुरानी ग्रामीण परम्पराएँ तथा सामाजिक व्यवस्था। सचमुच शाश्वत चेतना से अभिभूत यह हमारे देश की जनता का महाकाव्य है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में वर्णित गाँवों के महाजनों, सूदखोरों और ताराबाबू के खेतिहर महाजन श्री हरिशेष में स्थान भेद का अन्तर भले ही हो, दोनों की मूल प्रवृत्ति एक ही है।

ग्रामीण तथा औद्योगिक संघर्ष की कहानी 'गणदेवता' देश का सजीव चित्र उपस्थित करता है जो न इतिहास में मिलेगा न भूगोल में। भारतीय जनता के मन पर भिन्न-भिन्न प्रभावों की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म प्रक्रिया-गाथा देखनी हो तो इस उपन्यास के संघर्षरत आदर्शवादी युवक देबू घोष, भूमिहीन तथा औद्योगीकरण से प्रभावित जीविकाहीन अनिरुद्ध लुहार को देखा जा सकता है। निश्चय ही यह उपन्यास देश की प्रत्येक साक्षर जनता को प्रेरणा प्रदान करेगा।

× × ×

एक समर्पित महिला : श्री नरेश मेहता, प्र० सं० १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० १२८ (क्राउन)।

'तथापि' के बाद 'एक समर्पित महिला' नरेश मेहता का दूसरा कहानी संग्रह है। नई कहानी पुरानी कहानी से कहाँ किस प्रकार भिन्न है इसका बोध इन कहानियों को पढ़कर सरलता से हो जाता है। कहानीकार की भाषा इतनी सजीव और घटना-विधान तथा चरित्र इतना संश्लिष्ट और सूक्ष्म है कि पाठक उसे अपनी अनुभूति मान लेने की भूल कर सकता है। आरम्भ में 'कहानी, एक चेष्टा' भूमिका में नरेश मेहता का यह कथन है, "रचना, प्रतिश्रुति है अपने भोगे हुए उस अनुभव की जिसे हमने अपने से पृथक् के लिए वाणी दी है।" संकलन की सभी छः कहानियाँ विशेषकर 'एक समर्पित महिला', 'श्रीमती मास्टन', 'अनबीता व्यतीत' लेखक के कथन को सर्वथा सार्थक करती हैं।

× × ×

अविराम चल मधुवन्ती : कवि-वीरेन्द्र मिश्र, प्र० सं० १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० ११२ (डिमाई)।

नवगीत तथा नई कविता के मध्य 'अविराम चल मधुवन्ती' कवि की १९५८ ई० से अब तक लिखी गई ६१ गेय कविताओं का संकलन है। संगीत लय, सहज अनुभूति तथा संवेदना से युक्त ये कविताएँ अनेक भावात्मक दृश्य बिम्ब तथा स्मृतिचित्र प्रस्तुत करती हैं। 'उपचेतन', 'बम्बई' और 'समुद्राकांक्षा', 'अविराम चल मधुवन्ती' ऐसे गीत हैं जिन्हें कंठ गुनगुनाते हैं, मन में कल्पना जगाते हैं।

× × ×

अपनी शताब्दी के नाम (१९५८ से १९६४ तक की रचनाएँ) : लेखक—दूधनाथ सिंह, प्र० सं० १९६७, मूल्य ४.००, पृ० सं० २०८ (क्राउन)।

'अपनी शताब्दी के नाम' लेखक की ४३ कविताएँ, दो कहानियाँ और ६ आत्मपरक निबन्धों का संकलन है। इनमें अनुभूति की तीव्रता उतनी नहीं है जितनी चिन्तन की प्रखरता। भारतीय मानस आज जो भोग रहा है उसकी झाँकी इन रचनाओं में सुलभ है।

× × ×

कुतुबशतक और उसकी हिन्दुई : लेखक—डॉ० माताप्रसाद गुप्त, प्र० सं० १९६७, मूल्य ७.००, पृ० सं० २१६ (डिमाई)।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त प्राचीन हिन्दी हस्तलेखों के पाठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धारण, संशोधन तथा सम्पादन के लिए विख्यात हैं। 'हिन्दुई' कुतुबशतक की प्रसिद्ध सूफी रचना है। जीवन में त्याग और बलिदान इस रसमय काव्य की मूल प्रेरणा है। डॉ० गुप्त ने पाठ-सम्पादन, रचना, कथा, भाषा सभी दृष्टियों से दक्खिनी भाषा में रचित 'हिन्दुई' का अध्ययन करते हुए मूल पाठ तथा अर्थ भी दिया है। यह एक शोध-कृति तो है ही, भावी शोध के लिए भूमिका भी प्रस्तुत करती है।

× × ×

मायादर्पण (कविता) : पंक्तिकार—श्रीकान्त वर्मा, केन्द्र से निकलने वाली १२५ काव्य रेखाओं का विकिरण, प्रथम संस्करण १९६७, मूल्य ३.५०, पृ० सं० १३६ (डिमाई)।

आकाश में, अन्तरिक्ष में, पृथ्वी पर कौंधती हुई भावनाएँ, उनसे पड़ी हुई दरारों-सी अनुभूतियाँ, अनूठेपन के लिए कहीं गुलाब के फूल-सा कहीं सेंहुड़ के रमणीय स्वरूप-सा आग्रह, पगडंडी-सी अकेली पूर्ण कविताएँ, पूरे आराम-सी खिली विवृत्तियाँ, आन्तरिक विस्फोट, बाह्य कंपन, आत्मसात किये जीवनचर्या, शैल-वन-पठार से संकुल बहुविध भावभूमि—कुछ ऐसा ही है 'मायादर्पण' संग्रह का काव्य-व्यक्तित्व। सूक्ति, सूत्रात्मकता एवं सुषमा का भी पर्याप्त संकलन विविध आकलनों से आसिंजित है। दर्शन के संदोहन और मनीषा की गहराई के लिए भी कवि सन्तोषजनक रूप से सचेष्ट है। असंयोजित वास्तुविधान के हामी नवीनता के सोपान पर आरूढ़ आज के संसार के उदग्र पर्यवेक्षण के लिए सुधी सहृदय इसका स्वागत करेंगे। मुद्रण तथा साजसज्जा भी अनवद्य है।

× × ×

सदाचार की ताबीज (व्यंग्य कथाएँ) : व्यंगकार—हरिशंकर परसाई, प्र० सं० १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० १४४ (क्राउन)।

आज जीवन एक व्यंगमात्र रह गया है, जिसे हम सब झेलते हैं और अनुभव करते हैं किन्तु अभिव्यक्त नहीं कर पाते। परसाईजी इस कला में सिद्धहस्त हैं : उनका व्यंग्य केवल हास्य के लिए नहीं है, वह चोट करता है, चेलेंज देता है। 'सदाचार का ताबीज', 'हनुमान की रेलयात्रा', 'एअर कंडीशण्ड आत्मा', 'देवभक्ति', 'लिफ्ट' सभी अपने में एक व्यंग हैं, इन्हें अवश्य पढ़ें।

× × ×

प्रतिनिधि संकलन : सिंहल कहानियाँ : सम्पादक—भदन्त आनन्द कौसल्यायन, अनुवादक—भिक्षु सावंगी मेधकर, प्र० सं० १९६७, मूल्य ५.००, पृ० सं० २५२ (क्राउन)।

सिंहल देश और भारत के बीच में यद्यपि समुद्र है पर राम ने उस पर सेतु बनाया, बुद्ध ने धर्मकेतु फहराया और वह अलग होते हुए भी भिन्न नहीं रहा। २१ सिंहल कहानियाँ आधुनिक हिन्दी कहानियों के समान जीवन और चिन्तन के नये आयाम ढूंढ़ रही है। दोनों यद्यपि एक-दूसरे से अप्रभावित अपने परिवेश में विदेशी प्रभाव से प्रभावित हैं। इन कहानियों में पाठक को नया बोध प्राप्त होगा।

× × ×

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-७

कविताएँ १९६५ : रसउद्धार-संचय : सम्पादन—अजितकुमार तथा विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रकाशक—करोड़ीमल कॉलेज के निमित्त नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। प्रथम संस्करण १९६८ ई०, मूल्य ६.०० रु०, पृ० सं० २५६ (क्राउन)।

'अंचल' के वनमोगरे की आँखों-साँसों में रमते निजत्व गीत से कढ़ाई हुई १११ कविताएँ अपनी-अपनी विशेषताओं के लिए लालायित हैं। संग्रह सौंध में नवगीत की भी तीन-चार किरणें मिलेंगी—मृदंग मन्द्र वर्षामंगल (नागार्जुन), पं० माखनलाल चतुर्वेदी का नवस्वर-गुंजित पूंजीभूत प्रसाद (चाँदनी : एक अनुभव), अभिनव पुरातन के सतत सेतु निर्माता श्री मैथिलीशरण गुप्त की अंतिम कविताएँ। मुक्ति-बोध (बारह बजे रात के), शिवकुटीलाल वर्मा की (व्यक्तित्व) आदि कई रसकारों की लम्बी-चौड़ी रमणीय शक्तिमती शाद्वलता भी सन्निविष्ट है। सभी कविताएँ स्थायित्व तत्त्वों के जागरूक एवं प्रयत्नशील हैं—उनमें सफलता का दीप शनैः-शनैः अच्छी विभा अर्जित करता गया है। सरल वेशभूषा में चमत्कारिक फूलकारी किये बिम्ब वक्रता और भंगिमा लिये अभिव्यक्तियाँ, तथा दृश्यमानता के सभी पक्षों का संस्पर्श करती संवेदनाएँ पांखुरियों को स्पष्ट सुन्दर विकच प्रदान कर सकी हैं। उनके काव्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र में सभी वस्तुओं, भावनाओं तथा परिदृश्यों के परमाणुओं तक की मधुर खोज एवं मसृण मीमांसा समाई हुई है। देश और काल की भागती हुई ये फिल्में अमिट प्रभावों के निर्माण और संप्रेषण के लिए बड़ी ही आह्लादकर आवाहन करती दिखाई पड़ती हैं।

इस रस-जिजीविषा-संभरण से वैयक्तिक रूप से मुझे तो ऐसा लगता है कि नई कविता निखार और प्रौढ़ता के लिए गति और आयाम दोनों को समेटने के लिए अग्रसर है। लगता है मूर्तिभंजक सफल नये कवि काव्य-ब्रह्म की कोई बड़ी विराट् और भविष्यवाणियों से अपरिसीमित लव-सूक्ष्म प्रतिमा गढ़ने के अनुभव-समृद्ध, अनुभूति उच्छ्वसित भावोपासना में निरत हैं।

लम्बी पुष्पिता के चार लेख साधारण पाठक को अच्छा करावलंब दे सकेंगे।

पंत, दिनकर तथा भारती को छोड़ देने का कारण 'विशेष खेद' की सफाई देने पर भी एकदम समझ में नहीं आता और जागरूक सर्वेक्षक पाठक के मन में एक असन्तुष्टि की पगध्वनि छोड़ जाता है।

पर इसमें सन्देह नहीं कि शिंजन और सुषमा का स्तवक सुन्दर बन पड़ा है।

× × ×

लालढाँग (उपन्यास)—लेखक—कृष्णचन्द्र शर्मा भिक्खु, प्र० सं० १९६८ ई०, मूल्य ७.००, ५० सं०, २८८ (क्राउन)।

भिक्खुजी हिन्दी के सुपरिचित उपन्यासकार हैं। 'भंवर जाल', 'सोने का मृग', 'नागफनी', 'सोम देवता की घाटी', 'महाश्रमण सुनें', और 'अस्तंगता' के बाद 'लाल ढाँग' एक नई कहानी प्रस्तुत करता है। बाँकेबिहारी के मंदिर के इर्दगिर्द घूमता कथानक जहाँ जीवन के रस से सराबोर है वहीं संसार की कुरूपताओं से संघर्षरत भी है। नारी रूप और पुरुष के अहंकार के द्वन्द्व में आधुनिक युग की सेक्स समस्या प्रमुख है। चरित्र वैचित्र्य के मध्य इसका सफल चित्रण भिक्खुजी की कृति में हुआ है। निश्चय ही इस उपन्यास की गणना इस वर्ष के विशिष्ट उपन्यासों में की जायेगी।

× × ×

सामयिक प्रकाशन, दिल्ली-६

हिन्दी प्रकाशन जगत में यह नया हस्ताक्षर श्री जगदीश भारद्वाज का है। अनेक वर्षों तक आप राजकमल प्रकाशन से सम्बद्ध थे। अब स्वतंत्र प्रकाशन आरम्भ किया है। सबसे प्रथम तीन पुस्तकें प्रकाशित की हैं। 'छायावाद' की समीक्षा नवम्बर अंक में प्रकाशित हो चुकी है, अन्य दो कृतियाँ हैं—

कोयले का टुकड़ा (उपन्यास), लेखक—मु० वरदराजन, अनुवादक—एन० सुन्दरम्, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ५.५०, पृष्ठ संख्या १८४ (क्राउन)

तमिल लेखक वरदराजन की यह उपन्यास कृति दक्षिण वासियों का जीवन—ऊँच-नीच तथा गरीब-अमीर का संघर्ष प्रेम और स्नेह की छाया में प्रस्तुत करती है।

× × ×

नंददास (शोध-कृति), लेखक रमेशकुमार खट्टर, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य १५.००, पृष्ठ संख्या ४०२ (डिमाई)।

नंददास ब्रजभाषा के रससिद्ध कवि थे। इनकी कृतियों का फुटकर अध्ययन तो बहुत हुआ है किन्तु जीवन, शृंगार-वर्णन, भक्ति-दर्शन तथा काव्य-शिल्प की दृष्टि से सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत करने वाला यह प्रथम ग्रन्थ है। अपने अध्ययन को नंददास पर केन्द्रित रखते हुए लेखक ने नंददास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला है। विद्यार्थियों के लिए पठनीय, पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय।

× × ×

वोरा एण्ड कंपनी पब्लिशर्स प्रा० लि०
बम्बई-२ : इलाहाबाद-१

आकाशपक्षी (उपन्यास), लेखक—अमरकान्त, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ७.००, पृष्ठ सं० २९६ (क्राउन)।

सामन्ती मान्यताओं में उलझी एक निर्दोष लड़की जो यह भूल जाना चाहती है कि वह एक राजकन्या है। सामन्तवाद जो अतीत हो चुका है, फिर भी अहंकार, श्रेष्ठता की भावना, भोगलिप्सा की प्रवृत्ति पुरातन के प्रति मोह कीचड़ के समान उसे घेरे रहते हैं। संघर्षरत जीवन की इस कथा का ही प्रतीक 'आकाशपक्षी' है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी का मन (उपन्यास), लेखक—विश्वम्भर 'मानव', प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ५.५०, पृ० सं० २१६ (क्राउन)।

सांकेतिक उपन्यासों के रचयिता 'मानव' का 'नारी का मन' करुण वेदना के आलोक में ऐसे मूल्य की ओर संकेत है जिस आलोक में जीवन के सभी मूल्य लीन हो जाते हैं। बलवंतसिंह यद्यपि पराया था किन्तु पालनेवाली माता के मन में उसके प्रति कितनी ममता थी जो उसकी अस्थियों का प्रवाह करते समय अपने प्राण भी प्रवाहित कर उठी। यह मर्मकथा अवश्य पढ़िए।

× × ×

श्रावणी (उपन्यास), लेखक—नीहाररंजन गुप्त, अनुवादक-वीरेन्द्रनाथ मिश्र, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ६.००, पृ० सं० २४४ (क्राउन)।

भारतीय नारी की सजीव प्रतिमूर्ति श्रावणी पाश्चात्य प्रभाव से आक्रान्त परिवेश में पतीत्व और मातृत्व की संघर्ष-गाथा है। पश्चिमी जीवन का थोथापन प्रकट करती श्रावणी स्वयं न बदलकर पति के जीवन में ही परिवर्तन ला देती है। नीहाररंजन बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार हैं, इनकी शैली शरत् का स्पर्श-स्मरण करा देती है।

× × ×

अन्य प्रकाशक

मालवीयजी के सपनों का भारत, सम्पादक—ईश्वरप्रसाद वर्मा, प्रकाशक किताबघर, गांधी नगर, दिल्ली-३१। प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य १०.००, पृ० सं० (डिमाई)।

महामना का स्वप्न कितना अद्‌भुत और विशाल था इसका प्रमाण आज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय है। प्रस्तुत कृति सात खण्डों—कामना, श्रद्धांजलि, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, लेख एवं उपदेश, जीवन-गाथा, कर्णधार तथा भारतीय संस्कृति—में विभाजित है। ये मालवीयजी के प्रति श्रद्धा ही अर्पित नहीं करते हैं, उनके व्यक्तित्व के बहिरंग तथा अन्तरंग पर भी प्रकाश डालते हैं। प्रत्येक युवक के लिए पठनीय।

× × ×

भारतीय संगीत का इतिहास : लेखक—भगवतशरण शर्मा, प्रकाशक—संगीत कार्यालय, हाथरस, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ५.००, पृष्ठ सं० १७६ (क्राउन)।

इस ग्रन्थ में भारतीय संगीत का ऐतिहासिक सिंहावलोकन करते हुए क्रमिक विकास दिखाया गया है। प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक युग की समस्त संगीत विधाओं का संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक का लक्ष्य है। संगीत प्रेमियों तथा विद्यार्थियों के लिए पठनीय।

× × ×

भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास : ले० चन्द्रबली त्रिपाठी, वितरक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, भैरवनाथ, वाराणसी, मूल्य १०.००, पृष्ठ संख्या ३३४ (डिमाई)।

सत्रह अध्यायों में बंटे हुए इस ग्रन्थ में भारतीय नारी आदर्शों के विकास को उसके समूचे परिप्रेक्ष्य में यथाशक्ति बड़े ऊहापोह के साथ निहारने की चेष्टा की गयी है। पुरुष-स्त्री सम्बन्ध, शिक्षा-दीक्षा, विवाह, विधवा-विवाह, नियोग, सती प्रथा, पर्दा, दहेज आदि के सर्वेक्षण में लेखक ने समीक्षात्मक पैठ का भी समावेश किया है।

परन्तु विवेचनों में सुष्ठु कालानुक्रम पद्धति का औत्सर्गिक रूप से अभाव है। समाजविज्ञान एवं नृतत्व के अनुसन्धान की स्वीकृत शैली के समर्थक ग्रन्थ की मानकता में कदाचित अपना विवेचनादर्श पूर्णोत्कर्ष पर न पा सकें, वैसे अनेक स्थानों पर सन्दर्भों एवं परिनिर्देशों की शास्त्रीय विधि भी अपनाई गई है।

भारतीय महिलाओं की बौद्धिक एवं भौतिक उपलब्धियों के कुछ अधिक विशद विश्लेषण से ग्रन्थ की वैयक्तिक विशेषता बढ़ गई होती। उसी प्रकार दिये हुए चित्रों के स्थान पर प्रत्न तथा मध्ययुगीन नारी विभूतियों के चित्र-विशेष श्लाघनीय रहे होते—यथा घोषा, ऊपाला, मैत्रेयी, गार्गी, लीलावती (काल्पनिक ही सही), रानी लक्ष्मीबाई, पद्मावती, रज़िया प्रभृति। जैन, सिक्ख, मुसलिम, ईसाई धर्मगत किंचित पर्यवेक्षण ग्रन्थ को और पूर्ण बना देता। विवाह-विच्छेद के सम्बन्ध में भी विशिष्ट और मूर्त समीक्षात्मक सूचनाओं के संकलन की भी अपेक्षा बनी रह गई है।

परिशिष्ट में संसार के तुलनात्मक अध्ययन से पाठक अच्छा आलोक अर्जित करता है और उसके कौतूहल, जिज्ञासा दोनों का पर्याप्त समाधान एवं परितर्पण होता है। उपयुक्त अनुक्रमणिका भी दी हुई है। परन्तु सन्दर्भ-ग्रन्थों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सूची को और तर्कप्रतिष्ठ अनुक्रम से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि ग्रन्थ का सौंदर्य, रोचकता और उपयोगिता तो अपने स्थान पर है ही। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की विचारक सी भूमिका से अलंकृत इस प्रबन्ध को स्वागतार्ह कहने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। भाषा भी साफ-सुथरी और अच्छी है।

मुद्रण तथा साज-सज्जा अंग्रेजी के उत्तम ग्रन्थों से टक्कर लेती है।

—मायाप्रसाद त्रिपाठी

× × ×

सहयोगी पत्र-पत्रिकाएँ

नवनीत (मासिक) ३४१ तारदेव, बम्बई-३४, वार्षिक १२-००, साधारण अंक का एक रुपया, दीपावली कला विशेषांक २-००

गत १६ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित 'नवनीत' (हिन्दी डाइजेस्ट) निश्चय ही अपने ढंग का एक मात्र मासिक है। प्रतिमास विविध रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक सामग्री कलात्मक रूप में प्रस्तुत करने में इसे अनुपम सफलता प्राप्त है। नवम्बर का दीपावली-कला विशेषांक भारत की विविध कला का इतिहास, प्रतिबिम्ब और बोध प्रस्तुत करता है। सर्वथा संग्रहणीय।

× × ×

संभावना (द्वैमासिक) : सम्पादक—माधव मधुकर, आनन्द-स्वरूप वर्मा, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी। प्रकाशक—१० पंजाब होटल, गोलघर, गोरखपुर। प्रथम अंक-प्रवेशांक, जनवरी-फरवरी १९६८, इस अंक का मूल्य सौ पैसे।

अकथ (मासिक) : सम्पादक—हरिदत्त, रमाशंकर जैतली, मणि मधुकर, आदिल मन्सूरी, रचना मणि। प्रकाशक—मनोहर बिल्डिंग, मिर्जा इस्माइल रोड, जयपुर। प्रथम वर्ष, द्वितीय अंक, फरवरी १९६८। वार्षिक १०) एक अंक का एक रुपया।

दोनों पत्रिकाएँ समकालीन नवलेखन की दृष्टि से शुद्ध साहित्यिक बौद्धिक मंच की स्थापना के लिए प्रयत्नशील श्रमजीवी प्रयास है। पत्रिकाएँ चिरायु हों, यही हमारी कामना है।

× × ×

साहित्य परिचय (भाषा समस्या विशेषांक)—जनवरी-फरवरी १९६८ संयुक्तांक, सम्पादक-राजनाथ शर्मा, विनोद कुमार अग्रवाल। प्रकाशक-विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा। वार्षिक शुल्क ५-००।

लोकसभा में भाषा विधेयक प्रस्तुत किये जाने के कारण भाषा-समस्या पर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता अनुभव हुई। आन्दोलनों, प्रस्तावों और उपद्रवों के बीच 'साहित्य परिचय' का यह 'भाषा समस्या विशेषांक' ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत करता है। राष्ट्रभाषा, शिक्षा का माध्यम भाषा, सम्पर्क भाषा, सभी दृष्टियों से विद्वानों ने इस पर विचार किया है। अन्त में राजभाषा (संशोधन) विधेयक, १९६७ मूल रूप में तथा लोकसभा द्वारा पारित रूप की प्रतिलिपि देकर इस अंक की उपयोगिता और बढ़ा दी है। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी के लिए पठनीय तथा संग्रहणीय। प्रकाशक अनेक बधाई के पात्र हैं।

× × ×

संगीत (मासिक)—तराना अंक, जनवरी १९६८, सम्पादक बालकृष्ण गर्ग, प्रकाशक संगीत कार्यालय, हाथरस, वार्षिक १०-००, इस अंक का ५-००

हिन्दी में संगीत साहित्य के प्रकाशन के लिए विख्यात 'संगीत' का तराना अंक संगीत-प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

पत्र-पत्रिकाएँ

दार्शनिक (त्रैमासिक) संपादक—यशदेव शल्य, प्रकाशक—अखिल भारतीय दर्शन परिषद्, डी १८ (ए) बापूनगर, जयपुर। वार्षिक १०-००, एक अंक २-७५।

गत १३ वर्षों से प्रकाशित, प्रस्तुत अंक ४, अक्तूबर १९६७।

विश्वभारती पत्रिका (त्रैमासिक), सम्पादक—डा० रामसिंह तोमर, प्रकाशक हिन्दी भवन, शान्तिनिकेतन। वार्षिक ८-००, एक अंक का २-५०।

ब्रह्मवाणी (मासिक)—सम्पादक कृष्ण मुनि प्रभाकर, प्रकाशक ११२७७ डोरी वाला, नई दिल्ली-५। वार्षिक

(शेष पृ० ५६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोध-ग्रंथ

तिवारी, डॉ० विश्वनाथ, छायावादोत्तर हिन्दी-गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी १५.००
दुबे, डॉ० लक्ष्मीनारायण, हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर (म० प्र०) १५.००
गुप्त, डॉ० मदनगोपाल, मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ३५.००
ओझा, डॉ० मान्धाता, हिन्दी-समस्या-नाटक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ३५.००
स्नातक, डॉ० विजयेन्द्र, राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ३५.००
शर्मा, डॉ० प्रभातचन्द्र, प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास, साहित्य सदन, देहरादून २०.००
शर्मा, डॉ० सच्चिदानन्द, उदासी सम्प्रदाय और सन्त रेणु, साहित्य सदन, देहरादून १२.५०

आलोचना, साहित्य, निबन्ध एवं भाषाविज्ञान

त्रिपाठी, मायाप्रसाद, अतीत का अभिनवालोक (निबन्ध-संग्रह), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ३.५०
वाजपेयी, किशोरीदास, हिन्दी की वर्तनी (भाषाविज्ञान), राजधानी ग्रन्थागार, दिल्ली
विद्यार्थी, गणेशशंकर, कर्मवीर (निबन्ध-संग्रह), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००
उमाकान्त, डॉ०, शकुन्तला नाटक तथा अन्य निबन्ध (निबन्ध-संग्रह), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
यादव, राजेन्द्र, कहानी : स्वरूप और संवेदना (आलोचना), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
पांडेय, गंगाप्रसाद, आज के लोकप्रिय कवि : महादेवी वर्मा (आलोचना), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००
देवी, रत्नकुमारी, मधु संचय (डॉ० सेठ गोविन्ददास के साहित्य के संग्रहणीय अंश), किताब महल, इलाहाबाद ६.००
भट्ट, श्री कमलेश्वरप्रसाद, हिन्दी के प्रतिनिधि लेखकों की गद्य शैलियाँ (आलोचना), सूर्य प्रकाशन, दिल्ली ८.००
कौशिक, दिनकर, काल और कला (समीक्षा), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ८.००
मौर्य, डॉ० राजनारायण, भाषा-विज्ञान के तत्त्व (भाषा विज्ञान), साहित्य भवन, इलाहाबाद २.७५
तिवारी, बद्रीनाथ, साहित्यिक निबन्ध (निबन्ध-संग्रह), साहित्य भवन, इलाहाबाद ३.७५
हरि, वियोगी (सं०), हमारी परम्परा (निबन्ध-संग्रह), सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली २०.००
संसारचन्द्र, डॉ०, अपनी डाली के काँटे (निबन्ध-संग्रह), उमेश प्रकाशन, दिल्ली ३.००

उपन्यास

वाजपेयी, भगवतीप्रसाद, मोहत्याग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ६.००
वन्द्योपाध्याय, ताराशंकर, गणदेवता, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली १६.००
कृश्नचन्दर, मेरा जंगल मेरी बस्ती, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००
वसु, मनोज, रात का मेहमान, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १२.००
लंडन, जैक, जंगल की पुकार, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
भट्टाचार्य, भवानी, लद्दाख की छाया, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
वाजपेयी, निर्मला, काँटों के फूल, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाकर, विष्णु, दर्पण का व्यक्ति, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०
ट्वेन, मार्क, इकलगेरी फिन के कारनामे, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
ट्वेन, मार्क, बहती धारा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
वन्द्योपाध्याय, ताराशंकर, बेगम, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
लिविस, सिक्लेवर, ऐरास्मिथ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
वर्मा, भगवतीचरण, सीधी सच्ची बातें, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १५.००
मयूर, कन्हैयालाल, भाँग की पकौड़ी (हाय स्उपन्यास), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००
भाटी, देशराजसिंह, अपना कौन (सामाजिक उपन्यास), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००
शुक्ल, शत्रुघ्नलाल, कल्पवृक्ष (सामाजिक उपन्यास), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००

कहानी-संग्रह

शुक्ल, शत्रुघ्नलाल (रूपान्तरकार), शेक्सपीयर के नाटकों की कथाएँ—भाग ४, उमेश प्रकाशन, दिल्ली ६.००
मेहता, नरेश, एक समर्पित महिला, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ३.००
यादव, राजेन्द्र, अपने पार···, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
प्रभाकर, विष्णु, मेरी तैंतीस कहानियाँ, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ८.००
एलनपो, एडगर, रहस्यपूर्ण कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
सिन्हा, सुरेश, कई आवाज़ों के बीच, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ४.००
अरोड़ा, सुधा, बगैर तराशे हुए, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ४.००
जरासन्ध, तस्वीर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ४.५०

काव्य

शरण, अंजनीनन्दन, हनुमान बाहुक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी १.४०
मिश्र, वीरेन्द्र, अविराम चल मधुवंती (गीत-संग्रह), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ३.००
सुमन, क्षेमचन्द्र, नारी तेरे रूप अनेक (कविता-संग्रह), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १५.००
पाण्डेय, गंगाप्रसाद, महादेवी वर्मा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००

जीवन-चरित्र एवं संस्मरण

मोरेस, फेंक, जवाहरलाल नेहरू : एक जीवनी, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद १५.००
रोमांरोलां (लेखक), अज्ञेय, रघुवीर सहाय (अनु०), विवेकानन्द, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ७.५०
मधुप, श्यामलाल, कलाकार-संगम (फ़िल्मी कलाकारों की जीवनियाँ), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००

साहित्येतर खण्ड

हक्सले, जूलियन, विकास की प्रक्रिया (मानवशास्त्र), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००
सिंह, सोरन, सामाजिक परिवर्तन और नियन्त्रण (समाजशास्त्र), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ४.५०
प्रभाकर, देवीशंकर, हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन (इतिहास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली ५.००
वुडबरी, डेविड ओ०, नवीन विज्ञान : १००१ प्रश्नोत्तर (विज्ञान), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ८.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मिथ, केनेश एम०, जीवों के शत्रु : विषाणु (विज्ञान), आत्माराम एण्ड सन्स ५.००
माथुर, जगमोहनलाल, अफ्रीका : उसके देश और देशवासी (भूगोल), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १२.५०
वर्मा, मनोहरलाल, क्यों और कैसे (विज्ञान), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००
देसाई, श्री मोरारजी, मेरी दृष्टि में (भाषण-संग्रह), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ८.००
मजूमदार, श्री प्रभातकुमार, योरोप का आधुनिक इतिहास (इतिहास), किताब महल, इलाहाबाद ६.००
प्रो० यजुर्वेदी, राजनीति का सरल अध्ययन (राजनीति), किताब महल, इलाहाबाद २.५०
सिंह, वेचनप्रसाद, धातु-शिल्प (धातु विज्ञान), किताब महल, इलाहाबाद ४.५०
श्रीवास्तव, श्री रमेशचन्द्र, उद्यान-कला (बाग़वानी), किताब महल, इलाहाबाद ७.५०
दुबे, सुरेशचन्द, १००१ मनीमेकिंग फारमूले (इण्डस्ट्रियल), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ १५.००
गुप्ता, कालीचरण, स्माल मैन्युफैक्चरिंग गा० (इण्डस्ट्रियल), ,, ,, ८.२५
विजय, आर० सी०, लोकल ट्रांज़िस्टर रिसीवर (टैक्नीकल), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ४.५०
नाथ, प्रो० नरेन्द्र, रेडियो सर्विसिंग (टैक्नीकल), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ८.२५
रामअवतार व महावीर प्रसाद, सुन्दर हारमोनियम पुष्प० (संगीत), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ४.५०
अग्रवाल, ऊषा, सुन्दर व आकर्षक कैसे बनें, स्त्री उपयोगी, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ४.५०
सत्यकाम, श्री दुर्गा सप्तशति, धार्मिक, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ३.५०
स्वामी सेवानन्द, योग आसन बड़ा, स्वास्थ्य उपयोगी, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ४.००
शर्मा, रतीराम, भृगु गुप्त प्रश्नोत्तरी, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ६.००
शर्मा, राजेन्द्र, हस्त रेखा विज्ञान, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ २.५०
शर्मा, पं० रतीराम, चमत्कार ज्योतिष, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ २.००
दुबे, सुरेशचन्द्र, माडर्न सोप एण्ड सोप पाउडर, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ १६.५०
दुबे, सुरेशचन्द्र, होम मनी मेकर्स, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ १२.००
म, रती, अंक ज्योतिष, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ६.००
म, गोविन्द, रमल ज्योतिष, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ८.२५
ता, हरीचन्द, सचित्र इलैक्ट्रोनिक्स, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ३०.००
गुप्ता, कालीचरण, पेपरमेशी, मिट्टी का काम, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ६.००
बोहरा, आशारानी, बुनाई के ५० नमूने, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६ ४.५०

साहित्येतर खण्ड

कुशवाहा, डी० एस०, आधुनिक अर्थशास्त्र के सिद्धान्त (दो भाग), (अर्थशास्त्र), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, (प्रत्येक भाग) ७.००
मित्रा, रवीन्द्रनाथ, राजनीतिशास्त्र के सिद्धान्त (राजनीतिशास्त्र), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद १५.००
श्रीवास्तव, श्री रमेशचन्द्र, उद्यानकला, किताब महल, इलाहाबाद ७.५०
सक्सेना, डॉ० उमेशकिशोर, मानचित्र-चित्रण एवं प्रयोगात्मक भूगोल (भूगोल), लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ७.५०

बाल एवं किशोर-साहित्य

कुमार, सुशील, विश्वामित्र (किशोर उपन्यास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली २.५०
मंजुला, उड़नेवाला घोड़ा (किशोर उपन्यास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेक, स्वामी दयानन्द (किशोर उपन्यास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली २.००
नारखेड़े, जलवन्ती (बाल-उपन्यास), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली २.५०
विष्णुकान्त, चाचा नेहरू (पद्यात्मक जीवनी), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
रेड्डी, श्री बालशौरि, प्रकाश और परछाईं, साहित्य भवन, इलाहाबाद २.००

कोश तथा सन्दर्भ-ग्रंथ

सचित्र विश्वकोश (दस खण्डों में), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली (प्रत्येक खण्ड) ७.००
अरुण, हास्य महाकोश, (चुटकुला-संग्रह), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १२.००

एकांकी-नाटक

वर्मा, रामकुमार, जौहर की ज्योति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ३.५०

पॉकेट-पुस्तकें

पुष्पी कार्यालय, इलाहाबाद

वाजपेयी, प्रेम, वासना की आँच २.००
शर्मा, ओमप्रकाश, छुपे चेहरे २.००
अकेला, सोमनाथ, बदलते हमसफ़र २.००
इलाहाबादी, अकरम, स्वीट सैवनटीनर १.५०
वाजपेयी, प्रेम, दो रेखाएँ २.००

मधुर पॉकेट बुक्स, मथुरा

मधुप, श्यामलाल, लहर और किनारा २.००
सुलतानपुरी, शंकर, सिन्दूर की लाज २.००
शुक्ल, शत्रुघ्नलाल, प्यार का खून २.००
भाटी, देशराजसिंह, अपना कौन
(सामाजिक उपन्यास) २.००

मधुप, श्यामलाल, रंगीन दुनिया २.००
मयूर, कन्हैयालाल, भाँग की पकौड़ी
(हास्य उपन्यास) २.००

(पृ० ५२ का शेषांश)

३-००, एक अंक का २५ पैसे। ०
जयकृष्ण पंथ की एक मात्र पत्रिका। सगुण भक्ति साधना से लीन कहानी तथा लेख।

× × ×

विज्ञान प्रगति (मासिक) सम्पादक—कृष्ण मुरारी अग्रवाल तथा श्यामसुन्दर शर्मा, वार्षिक ५-००, प्रति अंक ५० पैसे, प्रस्तुत अंक दिसम्बर-जनवरी १९६८ का संयुक्तांक। विज्ञान कांग्रेस के अवसर पर प्रकाशित। भारत की समस्त राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं का सचित्र परिचय इस अंक की विशेषता है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष सूचना

हिन्दी के पुस्तक-विक्रेताओं एवं प्रकाशकों को परिपत्र आदि भेजने के लिए पते टाइप कराने की अब आवश्यकता नहीं रही

'अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ' की ओर से हिन्दी की सामान्य-पुस्तकों के प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं के पतों की सूची छपकर तैयार है।

पूरी सूची में, ढाई सौ से अधिक नगरों में स्थित पुस्तक-व्यवसायियों के कुल ११५२ पते छपे हैं। ८″ × १३″ आकार के कागज़ के एक ओर पर छपे लगभग ७५ पृष्ठ।

छपे-छपाए पते काट कर वाँछित प्रचार सामग्री पर चिपकाइए और पोस्ट कीजिए।

मूल्य प्रति सूची—दस रुपये। अ० भा० हि० प्रकाशक संघ के सदस्यों के लिए रियायती मूल्य—सात रुपये। डाक-व्ययादि प्रति सूची—सवा रुपया अतिरिक्त।

यह सूची वी० पी० द्वारा न भेजी जा सकेगी, इसलिए कृपया इसका मूल्य डाक-व्यय सहित ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा भेजिए।

पत्र-व्यवहार का पता :—

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० डी० 13

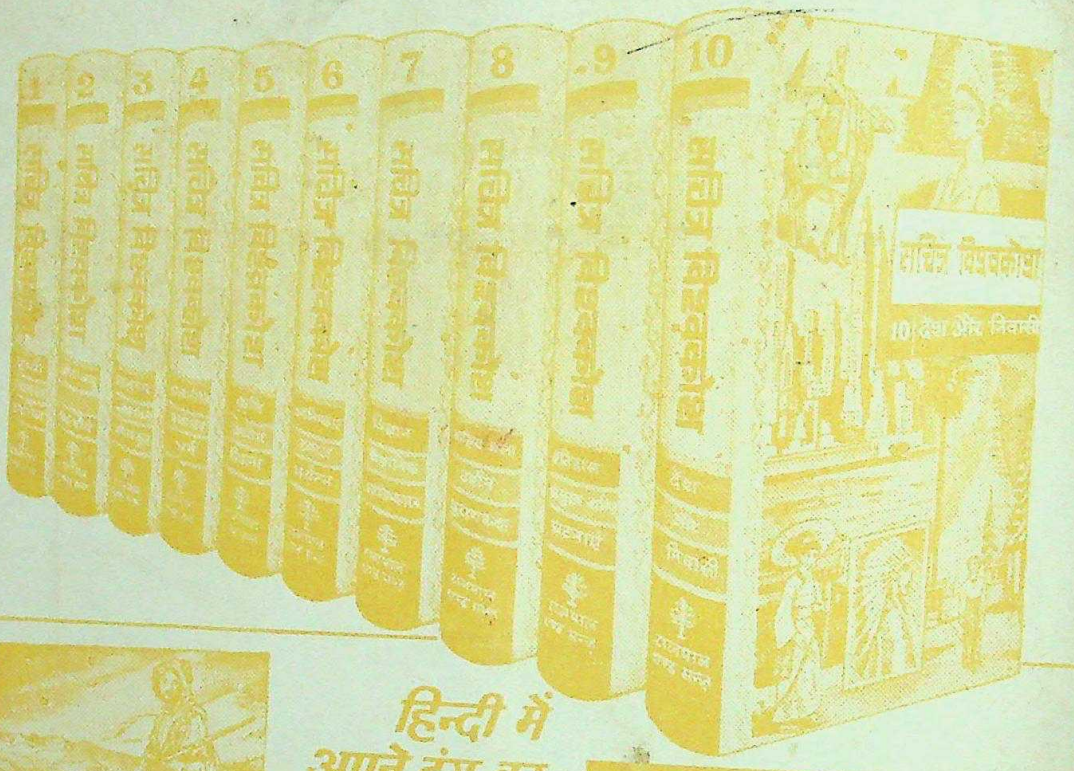

देश और निवासी

इतिहास • व्यक्ति • घटनायें

राजनीति • प्रशासन • धर्म

वैज्ञानिक • आविष्कारक

हिन्दी में
अपने ढंग का
नया
विश्वकोश

प्रामाणिक
और नवीनतम
जानकारी तथा
2000 से अधिक
चार रंगे
और दुर्लभ चित्रों से
भरपूर
अपने ढंग का
अनूठा विश्वकोश

सचित्र विश्वकोश

विषयानुसार 10 पृथक् खण्डों में

1. पृथ्वी • आकाश • खनिज
2. जीव-जन्तु • पेड़-पौधे
3. मनुष्य : विकास • स्वास्थ्य • खेलकूद
4. राजनीति • प्रशासन • धर्म
5. कृषि • उद्योग • व्यापार • शिल्प
6. आविष्कार • खोज • हॉबी • पर्यटन
7. विज्ञान • वैज्ञानिक • आविष्कारक
8. साहित्य • कला • दर्शन • पुराणकथा
9. इतिहास : प्रमुख व्यक्ति • घटनाएं
10. देश और निवासी • प्रमुख नगर

सभी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य
प्रत्येक खण्ड का मूल्य सात रुपये मात्र
दस खंडों का पूरा सेट मंगाने पर डाक-खर्च माफ़

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त रामलाल पुरी द्वारा नवीन प्रेस, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६ में मुद्रित एवं ७/१६ दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित। सम्पादक : पुरुषोत्तमदास मोदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक

आखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

27-2-68

शिक्षा संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए
श्रेष्ठ पुस्तकें

अनुकूल कांगड़ी

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद

*जंगल की ओर (सुरेश वैद्य)	६.००
*अज्ञात महाद्वीप की खोज	६.५०
*दक्षिणी ध्रुव की खोज	३.५०
*दक्षिण ध्रुव-विजय	१०.००
*उत्तरी ध्रुव-विजेता	४.००
*उत्तरी ध्रुव की सतह	२.००
*नवीन विज्ञान : १००१ प्रश्न और उत्तर (१९६७)	८.००
*जीवों के शत्रु : विषाणु (१९६७)	५.००
*मानव की उत्पत्ति और क्रमिक विकास	१५.००
*मानव की कहानी (कून)	७.५०
*जीवन की कुण्डली (मूर)	७.५०
शिक्षा मनोविज्ञान (स्किन्नर)	१५.००
*स्कूल पुस्तकालय के विविध रूप (फार्गो)	१०.००
प्राथमिक स्कूल की अध्यापन-विधियाँ (वार्नर) (१९६७)	३.००
माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान-शिक्षण की पद्धतियाँ (फाउलर) (१९६७)	३.००
अधिगम का मनोविज्ञान (राल्फ गैरी) (१९६७)	३.००
अध्यापन-वृत्ति (स्टिनेट) (१९६७)	३.००
*मेरा देश मेरे देशवासी (परमपावन श्री दलाईलामा)	७.५०
*भारत में ब्रिटिश राज्य के अन्तिम दिन (मोसले)	७.५०

विविध

*मालिनी के वनों में : श्री निधि	६.००
*मचान पर उनंचास दिन : श्री निधि	६.००
*वनराज के राज में : विराज	४.००
*सुनो कान में : सावित्रीदेवी वर्मा	८.५०
*बच्चे और सेक्स शिक्षा : ,, (१९६७)	५.००
*हमारे ये पशु-पक्षी (श्रीचन्द्र जैन) (१९६७)	१२.५०
कर्मवीर : गणेशशंकर विद्यार्थी (१९६७)	३.००
हास्य महाकोश : अरुण (१९६७)	१२.००
*सिंधु सभ्यता का आदि-केन्द्र : हड़प्पा : केदारनाथ शास्त्री	८.००
*अफ्रीका : उसके देश और देशवासी : जगमोहनलाल माथुर (१९६७)	१२.५०
*भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास : मन्मथनाथ गुप्त (छठा संस्करण १९६६)	१५.००
भारत का संवैधानिक विकास : विष्णु भगवान (१९६८)	१०.००
भारत का संविधान : विष्णु भगवान (१९६८)	१०.००
आत्मकथा रामप्रसाद बिस्मिल (१९६६)	३.००
बन्दी जीवन (तीन भाग) शचीन्द्रनाथ सान्याल	१०.००
नारी तेरे रूप अनेक (काव्य) सं० क्षेमचन्द्र सुमन (१९६७)	१५.००

(*चिह्नित पुस्तकें सचित्र हैं।)

आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत् के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त की रचनाएँ

अन्तिम यात्रा	२.००	धर्म, संस्कृति और राज्य	८.००	भूल	३.००
अवतरण	६.००	धर्म तथा समाजवाद	६.००	मनीषा	३.००
इतिहास में भारतीय परम्पराएँ	८.००	नगर परिमोहन	६.५०	ममता	३.५०
		नयी दृष्टि	६.००	मानव	५.००
उन्मुक्त प्रेम	७.५०	नये विचार नई बातें	४.५०	मायाजाल	५.००
उमड़ती घटाएँ	६.५०	निर्मल	३.००	मेरी पसन्द	३.००
कला	६.००	निष्णात	३.००	मैं न मानूँ	३.००
कामना	४.००	न्यायाधिकरण	७.००	यह क्यों है ?	४.००
खेल और खिलौने	५.००	पंकज	३.००	युग-पुरुष राम	२.००
गंगा की धारा भाग १	९.००	पतन का मार्ग	८.००	युद्ध और शांति भाग १	६.००
गंगा की धारा भाग २	९.००	पत्रलता	८.५०	युद्ध और शांति भाग २	६.००
गुंठन	७.००	पथिक	७.५०	लोक-परलोक	५.००
चंचरीक	३.००	परिवर्तन	२.५०	वाममार्ग	७.००
छलना	७.००	पाणिग्रहण	६.००	विकार	३.००
जगत की रचना	२.००	पुष्यमित्र	४.००	विकृत छाया	५.००
जन-प्रवाह	८.००	पूर्वग्रह	७.००	विक्रमादित्य साहसांक	६.००
जमाना बदल गया—१	१०.००	प्रगतिशील	२.७५	विडम्बना	७.५०
जमाना बदल गया—२	९.००	प्रतिशोध	४.००	विद्यादान	३.००
जमाना बदल गया—३	१०.००	प्रवंचना	५.००	विनाशाय च दुष्कृताम्	७.५०
जमाना बदल गया—४	१०.००	प्रवृत्ति	५.७५	विलोमगति	६.५०
जवाहरलाल नेहरू	८.००	प्रेरणा	७.००	विश्वास	३.००
जात न पूछे कोय	३.००	बनवासी	३.००	सम्भवामि युगे-युगे	८.५०
जीवन ज्वार	८.००	बहती रेता	५.००	संस्खलन	६.००
तब और अब	६.००	बिखरे चित्र (कहानी-संग्रह)	३.५०	सभ्यता की ओर	३.००
दासता के नए रूप	६.००	बीती बात	३.००	साहित्यकार	४.००
दिग्विजय	६.००	भग्नाश	७.५०	स्नेह का मूल्य	३.००
देश की हत्या	६.००	भाग्य का सम्बल	४.५०	स्वराज्य दान	७.५०
दो भद्र पुरुष	३.००	भाग्य रेखा	३.००	स्वाधीनता के पथ पर	७.५०
द्रष्टा	५.००	भावुकता का मूल्य	६.००		

प्रकाशक

भारती साहित्य सदन

३०/९०, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक
[हिन्दी साहित्य की प्रगति का परिचायक]

वर्ष ५ : अंक ९
फरवरी, १९६८

सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

प्रकाशन व्यवस्थापक
अमरनाथ

●

मूल्य
यह अंक ०.६० वार्षिक ६.००

सम्पादकीय कार्यालय
के ४०/६, भैरवनाथ, वाराणसी-१

प्रकाशन कार्यालय
हिन्दी प्रकाशक
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

स्वामित्व
अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

३.००
३.००
३.५०
५.००
५.००
३.००
३.००
४.००
२.००
६.००
६.००
५.००
७.००
३.००
५.००
६.००
७.५०
३.००
७.५०
६.५०
३.००
८.५०
६.००
३.००
४.००
३.००
७.५०
७.५०

सम्पादकीय

उपकुलपति सम्मेलन : उपहास, नाटक, अपव्यय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के १ तथा २ फरवरी १९६८ ई० को विश्वविद्यालय स्तरीय हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में विचार करने के लिए हिन्दी-भाषी प्रदेशों के उपकुलपतियों का एक सम्मेलन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री अमरचन्द जोशी की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन में राजस्थान, इलाहाबाद, पटना, रांची, बिहार, अलीगढ़, जोधपुर, आगरा, गोरखपुर, कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, रुड़की, काशी विद्यापीठ, कानपुर, मगध, लखनऊ, कुरुक्षेत्र, भागलपुर, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, जीवाजी, ग्वालियर, इन्दौर, जबलपुर आदि विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों तथा डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० गोपाल त्रिपाठी, प्रो० नगेन्द्र, प्रो० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० सत्यप्रकाश, डॉ० रामचरण मेहरोत्रा, प्रो० ए० चन्द्रहासन, अध्यक्ष केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय आदि विद्वानों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार तथा राज्य सरकारों के विभिन्न अधिकारी भी सम्मिलित हुए।

बातें अच्छी-अच्छी, किस्सा बैताल-पचीसी का

भारतीय भाषाओं में पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन के लिए निर्धारित अठारह करोड़ रुपये को पूर्व परम्परानुसार नाटकीय ढंग से व्यय करने के लिए एक लाख रुपए व्यय कर इस नाटक का अभिनय हुआ। विश्वविद्यालय के विधि विभाग में आयोजित यह सम्मेलन भव्य था, मोटरों की कतारें, होटलों और अतिथिगृहों की व्यवस्था, दावतें यही प्रधान था। सम्मेलन में सम्मिलित हुए अधिकांश व्यक्तियों का यह मत था कि इस सम्मेलन में कोई नई बात कही गई या कोई व्यावहारिक निर्णय लिये गए ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उन्हीं पुरानी बातों को कोई शुरू से, कोई बीच से और कोई अन्त से दुहराता रहा। हर एक अपने-अपने नमूने पेश करता रहा। जिसने साहसपूर्वक नई बात कहनी चाही उसे बोलने का अवसर ही नहीं दिया गया। यद्यपि हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन पर विचार होना था किन्तु अधिकांश वक्ता शिक्षा के माध्यम की रुई ही धुनते रहे और पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में कोई व्यावहारिक निर्णय नहीं हो सका। हर एक इस भय से आशंकित था कि यदि इतनी जल्दी अंग्रेज़ी त्याग दी गई तो शिक्षा के स्तर का क्या होगा। मानो अभी तक अंग्रेज़ी माध्यम द्वारा वे स्तर बनाये रखने में सफल रहे हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभा की खोज

प्रो० शेरसिंह ने सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुए हिन्दी में पुस्तकें लिखने के लिए प्रतिभा की खोज राष्ट्रीय स्तर पर करने की आवश्यकता पर बल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य के विद्यार्थियों के ये तीन अनिवार्य ग्रन्थ

हिन्दी गद्य : शैली और विधाओं का विकास

डॉ० अमरनाथ सिन्हा

हिन्दी-गद्य की शैली और विधाओं का जो विकास पिछले डेढ़ सौ वर्षों में हुआ है उसका तटस्थ भाव से शोधपरक प्रामाणिक अध्ययन इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। पूरी पुस्तक ११ अध्यायों में बँटी है। प्रथम छः अध्यायों में हिन्दी-गद्य के विकास, परम्परा सूत्र, गद्यशैली के वर्गीकरण और उसके आधार एवं उसकी लोक-धारा, परिनिष्ठित धारा एवं सामन्ती धारा पर प्रकाश डाला गया है। सप्तम अध्याय में उन कारणभूत परि-स्थितियों की मीमांसा की गयी है जो गद्य-विधाओं की प्रेरणा भूमि रही है। परवर्ती चार अध्यायों में उपन्यास, कहानी, नाटक एवं आलोचना का विकासात्मक ऐतिहासिक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। सर्वांगपूर्ण यह पुस्तक संग्रहणीय है।

पृष्ठ संख्या १४२ | डबल डिमाई | मूल्य २.५०

हिन्दी आलोचना : स्वरूप और विकास

डॉ० रामदरश मिश्र

समालोचना हिन्दी-साहित्य की उन नव्य विधाओं में से एक है जिसका जन्म आधुनिककाल में हुआ है और जिसके विकास में पश्चिम के प्रभाव और पूरब की मंधा का योगदान है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि बीसदीं शती के प्रारम्भ से लेकर अब तक हिन्दी—समालोचना ने स्पृहणीय विकास किया है। पर प्रश्न है कि इसने श्रेष्ठ हिन्दी साहित्य के निर्माण में कहाँ तक योगदान किया है। लेखक ने प्रथम बार इसका प्रामाणिक लेखा-जोखा इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। पूरी पुस्तक आठ अध्यायों में विभक्त है जिससे वैज्ञानिक अध्ययन में सुविधा होती है।

पृष्ठ संख्या १२२ | पाकेटबुक | मूल्य १.५०

हिन्दी कहानी : प्राक्रया और पाठ

सुरेन्द्र चौधरी

वर्तमान युग में जिन विधाओं के समृद्ध विकास ने हिन्दी साहित्य को गौरव प्रदान किया है उनमें कहानी अन्यतम है जो सर्वाधिक लोकप्रिय भी है। प्रस्तुत पुस्तक प्रथम भाग में हिन्दी कहानी के स्वरूप, वैविध्य, विकास और उद्देश्य का संकेत करते हुए उसकी रचना-प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय पाठ भाग में प्रेमचन्द, अज्ञेय, जैनेन्द्र, यशपाल, उग्र और मोहन राकेश की प्रतिनिधि कहानियों की पाठविधि प्रस्तुत की गयी है। इस पाठविधि के अन्तर्गत एक सावधान कथापाठक की प्रतिक्रिया देखते ही बनती है। प्रस्तुत पुस्तक कथा साहित्य के मर्म और आधारभूमि को समझने की दृष्टि प्रदान करती है।

पृष्ठ संख्या १९२ | पाकेटबुक | मूल्य २.००

भारती भवन

एक्जिबीशन रोड, पटना-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। आपने बताया कि भारत सरकार ने हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लिए आवश्यक पाठ्य-पुस्तकों और अन्य साहित्य के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता देने का निश्चय किया है। यह सहायता आगामी ६ वर्षों में राज्य सरकारों के माध्यम से दी जाएगी जिसमें राज्य सरकारों को भी २५ प्रतिशत धन लगाना होगा।

हिन्दी पुस्तकों के लिए पाँच करोड़

आपने प्रत्येक विश्वविद्यालय में एक-एक प्रकाशन ब्यूरो और चल निधि की व्यवस्था करने का सुझाव दिया जिसके द्वारा प्रकाशन का कार्य जारी रखा जा सके। प्रो० शेरसिंह ने बताया कि हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार और हरियाना प्रत्येक हिन्दीभाषी प्रदेश को एक-एक करोड़ का अनुदान दिया जाएगा।

टके सेर भाजी टके सेर खाजा

इस सम्मेलन को देखते हुए लगता है कि १८ करोड़ रुपये की यह योजना विगत २० वर्षों में कार्यान्वित असफल योजनाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है। यात्रा भत्तों, सम्मेलनों, दावतों और लाल फीताशाही में यह सारी रकम किसी भी दिन चुक जाएगी। और आज हम जहाँ से काम शुरू करने की बात कर रहे हैं वहीं लौट आएँगे और बड़ी मासूमियत से अपना दिल बहलाते हुए कहेंगे कि १८ करोड़ रुपया ऐसे महान् कार्य के लिए पूरा कैसे पड़ता। शासन की सारी योजनाओं का लक्ष्य प्रभूत मात्रा में धन का व्यय होता है, लक्ष्य की प्राप्ति नहीं। भवनों के निर्माण में लक्ष्य की प्राप्ति धन से भले ही कर ली जाए (हालाँकि इसमें भी असफल ही रहे हैं) ज्ञान तथा चिन्तन के क्षेत्र में धन ही सब-कुछ नहीं है, उसके लिए जिस निष्ठा, लगन और सादगी की आवश्यकता होती है उसका सर्वथा अभाव था: हिन्दी के ग्रंथों के प्रकाशन के लिए पाँच करोड़ रुपये की राशि जिस आधार पर पांच राज्यों में बाँटी जा रही है वह सर्वथा राजनीतिक है। हरियाना एक छोटा-सा राज्य और उत्तरप्रदेश एक विशाल राज्य, दोनों को एक-एक करोड़ रुपये मिलेंगे। कितना पक्षपात-हीन राजनीतिक बटवारा है। जिस प्रदेश में डेढ़ विश्वविद्यालय है उसे और उत्तर-प्रदेश में जहाँ १२ विश्वविद्यालय हैं, दोनों को बराबरी से एक-एक करोड़ रुपया दिया जाएगा। ऐसे ही निर्णयों को दृष्टि में रखकर कहा जाता है—'टके सेर भाजी टके सेर खाजा।' आगे का वाक्य आप स्वयं पूरा कर लें।

दुश्चक्र का भेदन

कुछ उपकुलपतियों ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि विश्वविद्यालय के अध्यापक ग्रंथ-लेखन अथवा अनुवाद का कार्य कर सकने में असफल रहे, पंत विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉक्टर डी० पी० सिंह ने बताया कि उनके विश्वविद्यालय ने अनुवाद के लिए ४ पुस्तकें लीं, फिर ४ की जगह दो हुईं, दो पर ही कार्य आरम्भ हुआ। उनमें से भी एक से अनुवादक महोदय अमेरिका चले गये और दूसरे ने जो थोड़ा बहुत अनुवाद किया भी तो वह उनकी समझ में नहीं आया। उन्होंने स्पष्ट मत व्यक्त किया कि आज अनुवाद से अधिक मध्यम मार्ग अपनाने की आवश्यकता है, अनुकूलन, संशोधन और परिवर्द्धन की।

अनेक उपकुलपतियों ने अंग्रेज़ी की बिदाई में मातम मनाया। रुड़की विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉक्टर एम० आर० चोपड़ा ने इंजीनियरिंग तथा तकनीकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी बनाये जाने के लिए अवधि निर्धारण का विरोध किया। उनके मातानुसार "भाषा लक्ष्य-प्राप्ति का साधन है, लक्ष्य नहीं," जैसे हम अंग्रेज़ी भाषा द्वारा उस लक्ष्य तक पहुँच रहे हों। सारे सम्मेलन में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो० अलीम ने पूरी निष्ठा तथा ईमानदारी से अंग्रेज़ी के दुष्चक्र का भेदन करते हुए कहा, "आजकल विश्वविद्यालयों में जो विद्यार्थी पढ़ने आते हैं, वे दूसरी भाषाओं का जानना तो दूर रहा, स्वयं अपनी मातृभाषा भी अच्छी तरह नहीं जानते। पहले छात्र अपनी भाषा से प्रेम करें, उस भाषा में कुछ करके दिखाएँ तभी दुनिया के दूसरे लोगों से आपकी भाषा भी पढ़ने का आग्रह किया जा सकेगा।"

राजस्थान विश्वविद्यालय के उपकुलपति, जिन्होंने पहले दिन हिन्दी की वकालत की और जो अत्यन्त मधुर हिन्दी बोलते हैं, दूसरे दिन अंग्रेज़ी में ही अंग्रेज़ी के समर्थन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

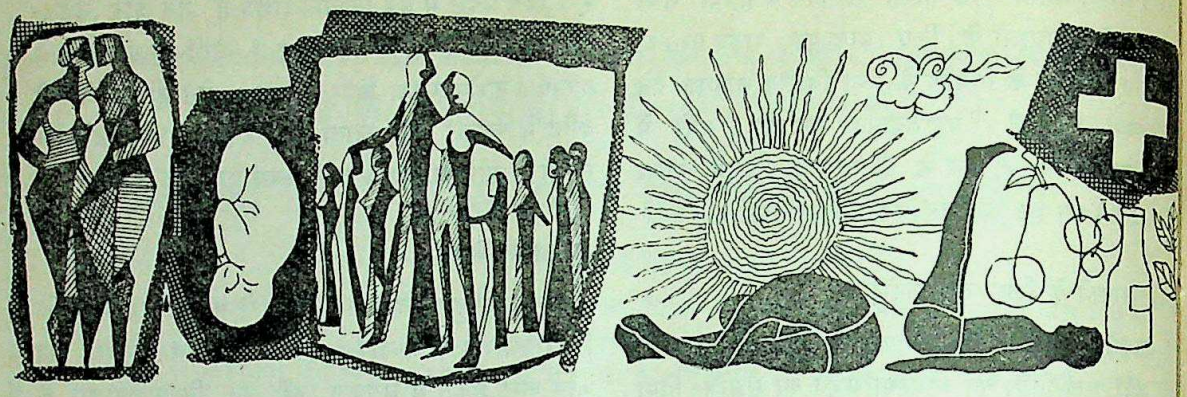

सेक्स-स्वास्थ्य सम्बन्धी उत्कृष्ट साहित्य

डॉ० लक्ष्मीनारायण

पति-पत्नी

बर्थ-कंट्रोल

स्त्री-पुरुष (सेक्स)

सेक्स की समस्याएँ

सेक्स की विचित्रताएँ

विवाह के बाद

सरल प्राकृतिक चिकित्सा

योगासन और स्वास्थ्य

स्वस्थ कैसे रहें ?

डाक्टर के आने से पहले

फ़र्स्ट एड तथा नागरिक सुरक्षा

आनन्दकुमार

आपका शरीर

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य एक रुपया

अपने नगर के पुस्तक-विक्रेता, रेलवे बुकस्टाल या रोडवेज़ बुकस्टाल से खरीदिये।
सूचीपत्र के लिए हमें लिखिए।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लि., जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतावनी दी, "अंग्रेज़ी के बिना इस देश के बौद्धिक भविष्य की समाधि बन जाएगी।" बिहार के संसद सदस्य श्री गंगाशरण सिन्हा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान, ने उपकुलपति सम्मेलन के नाटकीय दुष्चक्र का भेदन करते हुए कहा—"लगता है राजनीतिक क्षेत्र की गलतियां यहां भी दुहराई जा रही हैं। यद्यपि सम्मेलन एक सीमित कार्य के लिए बुलाया गया किन्तु बैताल पचीसी की तरह सारी कहानी का माध्यम क्या हो, कब हो, किस विषय में हिन्दी न हो—शुरू से ही दुहराते रहे। बातें अच्छी-अच्छी करते रहे पर यही नहीं तय कर पाए कि पहले बीज हुआ या पहले पेड़। देश की पृष्ठभूमि, देश के वातावरण को देखिए। हिन्दी में पुस्तकें नहीं हैं इसलिए पढ़ाएंगे नहीं, तैरना नहीं आता, इसलिए पानी में प्रवेश ही नहीं करेंगे। हर भाषा का अपना प्रवाह और गति होती है, जब तक हिन्दी में हम पढ़ेंगे नहीं, पढ़ाएँगे नहीं, उसकी क्षमता हमें कैसे ज्ञात होगी और कैसे बढ़ेगी। यह सुनते-सुनते कान पक गये कि सरकार यह करे, वह करे। क्या सरकारों के भरोसे आज तक कोई काम सफल हुआ है, हम व्यावहारिक दृष्टि से विचार करें, विकेन्द्रित रूप से काम होना चाहिए। देश की सभी शक्तियां इस कार्य में लगाई जानी चाहिए, प्रकाशकों का भी पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त करना चाहिए।"

लक्ष्य क्या, पहुँचे कहाँ ?

सम्मेलन का आयोजन हुआ था विश्वविद्यालय स्तरीय हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशनार्थ और अन्त हुआ इस घोषणा के साथ कि सन् १९७३ तक सभी संकायों में सर्वोच्च स्तर तक की पढ़ाई हिन्दी में शुरू कर दी जाएगी। जिस प्रकार हमारे शासन ने हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया था, उसी प्रकार उसी छलबल से यह निर्णय भी लिया गया। शिक्षा आयोग के सारे सुझाव धरे-के-धरे रह गये। लगा, शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन का वार्षिक श्राद्ध अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न हो गया। कोई हवाई जहाज से आया, कोई कार से, कोई एयर कंडीशन में और बेचारी हिन्दी के प्रति बड़ी कोमल सहानुभूति व्यक्त कर अपने भत्ते के बिलों पर दस्तखत कर श्राद्ध भोज का स्वाद लेकर चलते बने। और वार्षिकी श्राद्ध के लिए एक प्रस्ताव भी स्वीकृत कर गये "हिन्दी पुस्तक प्रकाशन कार्यक्रम के नियोजन और उसमें समन्वय स्थापित करने के लिए यह सम्मेलन साल में कम-से-कम एक बार अवश्य होना चाहिए।"

सत्ता और भत्ता

हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य के विख्यात प्रणेता डॉ० सत्यप्रकाश से 'हिन्दी प्रकाशक' के सम्पादक ने जिज्ञासा की "क्या आपको हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर लिखने में कोई कठिनाई नहीं होती ?" उन्होंने तत्काल उत्तर दिया, "बिलकुल नहीं, यदि मनोवृत्ति का अभाव नहीं है तो भाषा कभी भी बाधक नहीं हो सकती। भाषा भाषा है, यदि जीवन में सामर्थ्य और मन में संकल्प है तो भाषा कभी अक्षम नहीं हो सकती।" इसी प्रकार सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर के उपकुलपति डॉ० ईश्वर भाई पटेल ने रुड़की विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० चोपड़ा के इस तर्क के उत्तर में कि तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी की शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बनाने के लिए २५ वर्ष के समय की आवश्यकता पड़ेगी—कहना चाहा कि तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी की शिक्षा तो भारतीय भाषा के माध्यम से आज अभी शुरू की जा सकती है। किन्तु उन्हें बोलने का अवसर ही नहीं दिया गया क्योंकि यह सारा आयोजन उन व्यक्तियों द्वारा आयोजित हुआ था जो अपने जीवन की स्फूर्ति समाप्त कर चुके हैं और जो देश के भविष्य के लिए सर्वथा अनुपयुक्त सिद्ध हो चुके हैं, जिनका इस जनतन्त्र में जनमानस से कोई सम्पर्क नहीं है और जो अपनी अन्तिम साँस तक सत्ता और भत्ता छोड़ना नहीं चाहते। डॉ० पटेल एयर कंडीशन भवनों में बैठकर अमेरिका और योरप के स्वप्न संजोकर तकनीक और प्रौद्योगिकी का अध्ययन-अध्यापन नहीं करते। वे अपने देश की मिट्टी को पहचानते हैं, इसीलिए उन्होंने यह स्वीकार किया कि यदि अपनी भुजाओं को उद्यम-कुशल और देश के प्रति निष्ठावान बनाना है तो उन्हें संचालित करने वाले मस्तिष्क को अपनी ही भाषा में सूझ और प्रेरणा प्रदान करनी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा एवं मनोविज्ञान-विषयक हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

- *हमारी शिक्षा* : भगवान प्रसाद १.००
  [प्राचीन-नवीन शिक्षा-प्रणालियों का ऐतिहासिक परिचय]
- *शिक्षा-दर्शन-मंजूषा* : तारकेश्वर सिन्हा ६.७५
  [समस्त शिक्षा-सिद्धांतों की विशद एवं तुलनात्मक व्याख्या]
- *शिक्षा-सिद्धांत-प्रवेशिका* : शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा ... ५.००
  [भारतीय शिक्षा-सिद्धांतों एवं शिक्षा-प्रणालियों का सरल-सम्यक विवेचन]
- *शिक्षक और उनका प्रशिक्षण* : शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा ... ३.५०
  [प्रशिक्षणार्थी शिक्षकों के लिए एक उपयोगी एवं सरल मार्गदर्शिका]
- *भारतीय स्कूलों में समाज-अध्ययन का शिक्षण* : प्रो० मुनेश्वर प्रसाद ६.२५
  [उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत; शिक्षण-प्रशिक्षण की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप एक बहुचर्चित पुस्तक]
- *शिक्षा-मनोविज्ञान-प्रवेशिका* : रमाकांत मिश्र ... ३.५०
  [बाल-शिक्षा]
- *मानव-मन* : द्वारका प्रसाद ४.७५
  [अनुभवी लेखक द्वारा मानव-मन की सूक्ष्मतम गहराइयों में झाँकने का प्रयास]
- *व्यक्ति, प्रकार और अन्य विश्लेषण* : डॉ० प्रमोद कुमार ... २.२५
  [व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का सरल-सम्यक अध्ययन]
- *समाज मनोविज्ञान-एक अध्ययन* : डॉ० प्रमोद कुमार ... ४.५०
  [समाज-मनोविज्ञान के विद्यार्थियों एवं पाठकों के लिए परम उपयोगी]

ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समिति

भारत सरकार को खतरा है कि उसके बनाये हुए आयोग, निदेशालय, समितियाँ और उनके अफसरों की नौकरियाँ अस्थायी न रह जायँ इसके लिए अब आयोगों के साथ स्थायी शब्द ज़रूर जोड़ दिया जाता है, उदाहरण के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का स्थायी आयोग। चूंकि यह सारा योजनाकार आयोजन इसी आयोग द्वारा आयोजित हुआ। अत: सम्मेलन के निर्णयों के कार्यान्वयन के लिए एक स्थायी समिति गठित की गई। इससे यह बात तो स्पष्ट हो गई कि शासन पर यह भार स्थायी हो गया और प्रति वर्ष एक-एक विश्वविद्यालय अपने यहाँ बारी-बारी से ऐसे समारोह कर सकेगा जिनमें हिन्दी के उद्धार की क्रान्तिकारी योजनाएँ बनती रहेंगी। कहा गया है कि यह समिति देखेगी कि ऐसा साहित्य तैयार हो जिसमें पाठ्य-पुस्तकें, संदर्भ-ग्रन्थ तथा ऐसी पत्रिकाएँ तैयार हों जिनसे विभिन्न विषयों से सम्बन्धित आधुनिक प्रगति की जानकारी हो सके। स्वशासित संघटन मुख्य रूप से अकादमेशियन लोगों को ही रखेंगे। अकादमेशियन जिनको विषय के साथ-साथ भाषा का ज्ञान हो हिन्दी के प्रति, देश के प्रति निष्ठा हो और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति और विदेश जाने के लिए अवसर और वृत्ति की भूख न हो तभी ये अकादमेशियन कुछ कर सकेंगे।

इस स्थायी समिति में निम्नलिखित सात उपकुलपति सम्मिलित हैं—डॉ० अमरचन्द्र जोशी, अध्यक्ष (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), डॉ० विश्वेश्वरप्रसाद (भागलपुर), डॉ० के० एस० जोशी (इंदौर), प्रो० अलीम (अलीगढ़), श्री डी० सी० वर्मा (कुरुक्षेत्र) और डॉ० डी० पी० सिंह (पन्तनगर)। इनके अतिरिक्त राज्य पुस्तक निर्माण बोर्ड के अध्यक्ष या उनके प्रतिनिधि, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार और हरियाना सरकारों के सचिव, शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिनिधि, वैज्ञानिक और तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली आयोग के अध्यक्ष तथा राजभाषा आयोग के अध्यक्ष। इस समिति में कुछ और सदस्यों को मनोनीत करने का भी निश्चय किया गया है। स्पष्ट है कि इन समितियों में प्रकाशक संघों के प्रतिनिधियों तथा हिन्दी संस्थाओं को कोई स्थान नहीं प्रदान किया गया है।

सम्मेलन की संरचना से ऐसा लगा कि ये उपकुलपति विश्व ज्ञान प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों के अध्यक्ष हैं, अत: यह मान लिया गया है कि इनका ज्ञान सर्वव्यापी है, ये सर्वतोमुखी प्रतिभा से मंडित हैं और इन्हें भावी पीढ़ी के लिए ग्रंथ-निर्माण तथा प्रकाशन का महान ज्ञान है जिसे ये अपनी समितियों और गोष्ठियों में सूत्रबद्ध कर हिन्दी-ग्रंथ-प्रकाशन-संहिता का निर्माण करेंगे, जिसके आधार पर १८ करोड़ रुपयों की होली खेली जाएगी।

शिक्षा आयोग तथा अन्य आयोगों पर करोड़ों रुपया व्यय कर चुकने के बाद भी आज हम यहीं तक पहुँच रहे हैं कि शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ बनें या न बनें और कैसे बनें। ऐसे उच्चस्तरीय तमाशे आयोजित करने के बजाय भिन्न-भिन्न विषयों के विद्वानों की समितियाँ बुलाई गई होतीं, हिन्दी में उस विषय में उपलब्ध ग्रन्थ सामने रखे गए होते। एक ब्लू प्रिंट तैयार किया गया होता और वह ब्लू प्रिंट सर्वत्र प्रचारित किया जाता तो देश के इन स्वयंभू विद्वानों से अधिक शासन के दीपक तले अंधेरा की दृष्टि से ओझल अनेक प्रतिभाएँ स्वतन्त्र रूप से इस कार्य में सक्रिय होतीं। किन्तु जनता द्वारा पेट काटकर दिये गए करों पर मौज करने वाली अफसरशाही कब ऐसा होने देगी।

'हिन्दी प्रकाशक' सम्पादक ने विश्वविद्यालय के जन-सम्पर्क अधिकारी से सम्मेलन का कार्यक्रम जानना चाहा और पत्रकार की हैसियत से उसमें सम्मिलित होने की अनुमति चाही तो उत्तर मिला—"यह सम्मेलन कुलपतियों तथा राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों का है, अत: इसमें सम्मिलित होने के लिए अन्य लोगों को निमन्त्रण नहीं भेंजा जा रहा है।"

अंधा बाँटे रेवड़ी

यह सम्मेलन जिस कार्य के लिए आयोजित किया गया और इसमें जिस प्रकार के लोग आमन्त्रित किये गए उनमें कहीं कोई तालमेल नहीं था, जो कमेटियाँ बनीं उनमें भी सम्प्रदाय और स्वार्थ की भावना प्रबल थी। इस सम्मेलन में अधिकांश ऐसे उपकुलपति थे जो शीघ्र ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रकाशन—१९६७

उपन्यास

१. गणदेवता (पुरस्कृत)	ताराशंकर बन्द्योपाध्याय	१६.००

जीवनी-संस्मरण

२. शान्ति निकेतन से शिवालिक	सं० शिवप्रसाद सिंह	२०.००

कविता

३. कितनी नावों में कितनी बार	अज्ञेय	४.००
४. अविराम चल मधुवन्ती	वीरेन्द्र मिश्र	३.००
५. मेपल	डॉ० प्रभाकर माचवे	३.००
६. माया दर्पण	श्रीकान्त वर्मा	३.५०

कहानी

७. काठ का सपना	ग० मा० मुक्तिबोध	३.५०
८. प्रतिनिधि संकलन : सिंहल कहानियाँ	सं० भदन्त आनन्द कौसल्यायन	५.००
९. एक समर्पित महिला	नरेश मेहता	३.००

हास्य-व्यंग्य

१०. सदाचार का ताबीज	हरिशंकर परसाई	३.००
११. कुत्ते की दुम	डॉ० र० श० केलकर	३.००

ललित निबन्धादि

१२. अवधी व्रत कथाएँ	डॉ० इन्दुप्रकाश पाण्डेय	६.००
१३. पुरातत्त्व का रोमांस	डॉ० भ० श० उपाध्याय	६.००
१४. परिवेश	मोहन राकेश	४.००

शोध ग्रन्थ

१५. कुतुब शतक और उसकी हिन्दुई	डॉ० माताप्रसाद गुप्त	७.००

विधा-विविधा

१६. अपनी शताब्दी के नाम	दूधनाथ सिंह	४.००

भा र ती य ज्ञा न पी ठ

३६२०/२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

कलकत्ता • वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पद से अवकाश ग्रहण करने वाले हैं, जिन्हें हिन्दी में अध्ययन-अध्यापन अथवा लेखन का कोई अनुभव नहीं है। जिनको यह भी ज्ञात नहीं है कि हिन्दी में अमुक विषय की क्या-क्या पुस्तकें हैं। इस सम्मेलन की सारी रचना में विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों के अतिरिक्त सार्वजनिक तथा अर्द्धसार्वजनिक संस्थाओं—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी समिति (उत्तर प्रदेश), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, मध्यप्रदेश शासन परिषद, अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ आदि को कोई स्थान प्राप्त नहीं था। सम्मेलन के आयोजकों को इस बात का खतरा था कि कहीं ये लोग उनके आयोजन के थोथेपन को प्रकट न कर दें और उनके बंटवारे में हिस्सा न लगाने लग जायं। अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष को एक फरवरी के बजाय दो फरवरी को सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनौपचारिक रूप से निमन्त्रित किया गया किन्तु न कोई कार्यक्रम दिया गया और न कोई व्यवस्था। अनाहूत-सा व्यवहार किया गया। पुस्तकों के प्रकाशन से सम्बन्धित एक समिति में मौखिक रूप से संघ के अध्यक्ष को आमन्त्रित किया गया जो समिति सम्प्रदाय विशेष द्वारा निहित स्वार्थ के लिए गठित की गई थी और उसमें कहा गया कि आपकी बातें सुन ली गईं अब आप पधारिए। समिति में विश्वविद्यालयों, हिन्दी संस्थाओं तथा प्रकाशकों द्वारा पुस्तकों के प्रकाशन पर विचार किया जाना था, किन्तु डा० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० विश्वेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० बाबूराम सक्सेना (संयोजक) तीनों प्रयाग विश्वविद्यालय के पुराने सहकर्मियों के अतिरिक्त उस समिति में किसी अन्य को स्थान भी प्राप्त नहीं था।

आज देश की राजनीति जिस अभिशाप से त्रस्त है वही अभिशाप शिक्षा के क्षेत्र को भी ग्रस रहा है। जिनकी शक्ति क्षीण हो चुकी है जिनमें सक्रिय चेतना का अभाव है वे अन्तिम साँस तक अपने पीछे आनेवालों के गले के पत्थर बने हुए हैं, उन्हें उठने नहीं देते, उन्हें उभरने नहीं देते और एक दिन उनका उत्साह, उनकी स्फूर्ति मर जाती है और वे इन्हीं की भाँति सत्ता तथा भत्ता प्राप्त करने के अप्रतिभाशाली तरीके अख्तियार करने लगते हैं। यदि देश की शक्ल बदलनी है तो उनको आगे आने दें जिनकी पलकों में स्वप्न हैं, भुजाओं में स्फूर्ति है और मन में कुछ करने के इरादे। सत्ता से अवकाश प्राप्त कर ये विद्वान यदि त्याग और सेवा की भावना से स्वयं ग्रन्थलेखन और पाण्डुलिपि-संशोधन के कार्य किसी सार्वजनिक संस्था के अन्तर्गत करें तो अधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकेगा और देश की युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श उपस्थित होगा।

मुझे तोड़ लेना वनमाली

जो निरन्तर ८० वर्षों तक गाता रहा 'मुझे तोड़ लेना वनमाली, इस पथ पर तुम देना फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।' और सचमुच जिस पथ पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी २० वर्ष पूर्व ३० जनवरी १९४८ की सन्ध्या को अग्रसर हुए थे 'एक भारतीय आत्मा' मंगलवार ३० जनवरी १९६८ को सायंकाल ५-३० उसी पथ पर चल पड़ी जिस पर जाएँ वीर अनेक। सतपुड़ा की रम्य पहाड़ियों के बीच होशंगाबाद जिले में बाबई ग्राम में ४ अप्रैल १८८९ ई० को आपका जन्म हुआ। 'कृष्णार्जुन युद्ध' (नाटक १९१८ ई०), 'हिमकिरीटिनी' (१९४१ ई०), 'साहित्य देवता' (१९४३ ई०), 'हिमतरंगिनी' (१९४८ ई०), 'माता' (१९५१ ई०) 'कला का अनुवाद' (कहानी संग्रह) आदि आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। सन् १९५५ में 'हिमतरंगिणी' पर आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। आप मध्य प्रदेश की रागिनी और शिंजनी दोनों ही थे। एक ओर जहाँ बाँसुरी से मादक स्वर निकलते थे अवसर आने पर वही बाँसुरी शंखध्वनि का घोष भी करती थी। 'एक भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी के देहावसान से एक युग का अवसान हो गया। 'हिन्दी प्रकाशक' उनकी मृत्यु पर श्रद्धांजलि अर्पित करता है और उनके परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

पद्मनारायण आचार्य स्वर्गीय

गत वर्ष से हिन्दी के साहित्यकारों एवं विद्वानों की मृत्यु का क्रम जो आरम्भ हुआ है वह निरन्तर चलता जा रहा है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० श्रीकृष्ण लाल की मृत्यु को अभी भूले भी न थे कि बुधवार ३१ जनवरी १९६८ की सायंकाल ७ बजे काशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहाती पुस्तक भंडार द्वारा प्रस्तुत

हिन्दी में प्रथम बार
उच्चतम प्रामाणिक
टैक्निकल पुस्तकें

• इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग	हरिचन्द रत्ता १५.००
• लोको फिटर एण्ड फोरमैन	हरिचन्द रत्ता १६.२५
• केमीकल इन्डस्ट्रीज	प्रेमशंकर साथी २५.५०
• मार्डन सोप एण्ड सोप पाउडर इन्डस्ट्री	सुरेशचन्द्र २५.५०
• फूड इन्डस्ट्रीज	कालीचरण गुप्ता १६.५०
• आल्टर नेटिंग करेन्ट	प्रो० नरेन्द्रनाथ १६.५०
• इलै० लाइनमैन वायरमैन गाईड	प्रो० नरेन्द्रनाथ १६.५०
• मशीनिष्ट गाईड	प्रो० नरेन्द्रनाथ १६.५०
• ए० सी० मोटर वाईन्डिग	प्रो० नरेन्द्रनाथ १२.००
• विजय ट्रांजिस्टर गाईड	आर० सी० विजय २२.५०
• न्यू फर्नीचर कैटलॉग	जावेद आर्टिस्ट २५.५०
• रेडियो फिजिक्स	प्रो० नरेन्द्रनाथ १६.५०
• आटो डीजल मैकेनिक	कृष्णानन्द शर्मा १५.००
• आधुनिक कृषि विज्ञान	रामेश्वर 'अशान्त' ८.२५
• एयर कन्डिशनिंग गाईड	प्रो० नरेन्द्रनाथ १५.००
• हैन्ड बुक आफ स्टीम इन्जीनियर	प्रो० एच० सी० कपूर २०.२५
• केमीकल डिक्शनरी	सुरेशचन्द १५.००
• टैक्निकल डिक्शनरी	बसन्तकुमार जोशी १५.००
• स्टील फर्नीचर कैटलाग	ज़ावेद आर्टिस्ट २५.५०
• कैरिज एण्ड वैगनगाईड	श्रीराम धुपड ८.२५

देहाती पुस्तक भंडार

चावड़ी बाजार दिल्ली

हिन्दी में टैक्निकल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली सर्वप्रथम प्रकाशन संस्था

फोन : २६१०३०, २६४१९१, २६५४०३

प्रोडक्शन केन्द्र : टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस, इन्डिस्ट्रियल एसटेट सोनीपत (हरियाणा)

पाँच हजार पुस्तकों की विस्तृत जानकारी के लिए डेढ रुपये का मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर भेजकर ५५० पृष्ठों की ज्ञान की कुंजी मँगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के वरिष्ठ रीडर श्री पद्मनारायण आचार्य का ६० वर्ष की अवस्था में हृदयगति रुक जाने के कारण देहावसान हो गया।

आचार्यजी स्वर्गीय जयशंकर प्रसाद के प्रिय पात्रों में थे तथा डॉ० श्यामसुन्दरदास और आचार्य केशवप्रसाद मिश्र के प्रमुख शिष्य थे। पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी के हिन्दी विभाग में पुन: अध्यक्ष पद ग्रहण करने के पूर्व आप लगभग दो वर्ष तक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के कार्यकारी अध्यक्ष भी थे। आचार्यजी ने डॉ० श्यामसुन्दरदास तथा आचार्य केशवप्रसाद मिश्र के साथ मिलकर अनेक पुस्तकों का लेखन तथा सम्पादन किया है। 'भाषा रहस्य' डॉ० श्यामसुन्दरदास के साथ संयुक्त रूप से लिखी गई आपकी महत्वपूर्ण कृति है।

'हिन्दी प्रकाशक' आपकी मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

रायसाहब रामजवाया कपूर

अतरचन्द कपूर एण्ड संज कश्मीरी गेट दिल्ली के वर्तमान मुख्य संचालक भी राम जवाया कपूर का निधन दिनांक ७-२-६८ को हृदय गति रुक जाने के कारण हो गया।

कपूरजी की आयु इस समय ७६ वर्ष की थी। आपने अपने जीवन के ५० वर्षों में पंजाब, दिल्ली तथा समीपवर्त्ती राज्यों में शिक्षा-क्षेत्र को प्रभावित किया था। आप पंजाब पब्लिशर्ज़ एसोशियेशन के गत २० वर्षों से अध्यक्ष थे।

भारत के शिक्षण-पुस्तकों के एक उज्ज्वल रत्न प्रकाशक को 'हिन्दी प्रकाशक' अपनी श्रद्धांजली समर्पित करता है और उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

मुद्रण उद्योग संकट में

आज शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान, कला की कल्पना मुद्रणालयों और पुस्तकों के बिना नहीं की जा सकती। विचारों को सर्वजन सुलभ बनाने के लिए प्रेस, पत्र-पत्रिका और पुस्तकों का आश्रय लेना पड़ता है। आज हमारे देश में मुद्रण-उद्योग पर संकट छाया हुआ है। अवमूल्यन ने मुद्रण उद्योग को एक करारी चोट पहुँचाई थी और अभी वह इससे सँभल भी नहीं पाया था कि न्यूनतम वेतन अधिनियम (उत्तर प्रदेश में) तथा समाचार पत्रों के गैर-पत्रकारों के लिए वेतन बोर्ड द्वारा की गयी सिफारिशों ने इस उद्योग का रहा-सहा दम भी निकाल दिया है। कर्मचारियों को उचित वेतन मिले, इसमें हमें आपत्ति नहीं किन्तु जिस एकांगी दृष्टि से ये अधिनियम और सिफारिश लागू किये गए हैं उससे समाज तथा उद्योग में विरोध उत्पन्न होगा। एक ओर विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त लोगों के वेतन के लिए कोई न्यूनतम वेतन निर्धारित नहीं है। दूसरी ओर अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित लोगों को इतना वेतन दिलाया जा रहा है जो देश के पढ़े-लिखों के लिए उपहासास्पद स्थिति उत्पन्न कर देता है।

यदि उनमें कार्य कुशलता बढ़ाने की दृष्टि से वेतन निर्धारित किया जाता तो अधिक उचित होता। जिसे सत्तर-अस्सी रुपये मासिक प्राप्त होते थे वह एकदम से १०४ रुपये या १२० रुपये या १८० रुपये पाने का अधिकारी हो जाता है। जबकि उसकी शिक्षा केवल इतनी ही है कि वह किसी प्रकार केस में से टाइप निकाल कर कम्पोज कर लेता है, उसमें भी उसकी कुशलता नहीं है। अत: वेतन-निर्धारण के साथ-साथ उनके प्रशिक्षण की भी व्यवस्था हो तो अधिक उत्तम होगा। कम-से-कम कक्षा ८ तक पढे-लिखे लोगों को सर्टिफिकेट-शिक्षा दी जाय और तब उनका न्यूनतम वेतन निर्धारित किया जाय तो इस उद्योग को स्थिरता प्राप्त होगी और कार्य-क्षमता भी बढ़ेगी। इसके लिए दो लाख या इससे अधिक आबादी वाले प्रत्येक नगर में छपाई की शिक्षा देने वाले विद्यालय खोले जाने चाहिए जो आरंभिक शिक्षा अपने यहाँ दें और व्यावहारिक शिक्षा के लिए बड़े प्रेसों में भेज कर उनमें कार्य-कुशलता उत्पन्न करें।

पिछले दिनों दिल्ली मुद्रक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए इंडियन एण्ड ईस्टर्न न्यूज पेपर सोसाइटी के अध्यक्ष श्री जे० एम० डिसूजा ने मुद्रण उद्योग की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव में मुद्रण उद्योग को भारी क्षति उठानी पड़ रही है। सरकार एवं अधिकारियों का रुख इस उद्योग के प्रति उपेक्षापूर्ण रहा है। मुद्रण-सामग्री के आयात के लिए सरकार ने कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक साहसिक चरण

हिन्दी के उपन्यास-साहित्य की गौरवमय परम्परा में दो नवीन संयोजन

● बेगम मेरी विश्वास

विमल मित्र

भारत में अंग्रेज़ व्यापार करने आये, लेकिन शासक बन बैठे। कैसे ? इसका उत्तर देने में ऐतिहासिक एक-मत नहीं हैं। मध्ययुग के अवसान और आधुनिक युग के पदार्पण का वह संधिकाल था। सिराजुद्दौला सूबे बंगाल का नहीं, तत्कालीन भारत का सर्वाधिक विवादपूर्ण व्यक्तित्व है। उसने आने वाली पीढ़ियों के सामने एक महान् सत्य को प्रकट किया—जन साधारण के चरित्र-दोष से ही राज्य नष्ट होता है। बंगला के श्रेष्ठ उपन्यासकार विमल मित्र ने अठारहवीं सदी के बंगाल का जो इतिहास **'बेगम मेरी विश्वास'** में उपस्थित किया वह इतिहास से अधिक सत्य है। यह उस काल का सत्य है, उस काल के जन-जीवन का सत्य है जो शाश्वत भी है और ऐतिहासिक भी।

डिमाई साइज, पृष्ठ संख्या १०२२, चौरंगा आफसेट कवर, रेक्सिन की पक्की जिल्द, मूल्य : ३२·००

● लाल किला

प्रमथ नाथ बिशी

इस उपन्यास का नायक है दिल्ली। दिल्ली—इस नाम में कितना रहस्यमय आकर्षण है ! दिल्ली पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक भारत का मर्मस्थल है। लाल किला उसी दिल्ली का प्रतिनिधि और उत्थान-पतन का मूक साक्षी है। दिल्ली और लाल किले के माध्यम से विगत शती को जीता-जागता वर्तमान के रूप में लेखक ने पाया और उसका तथ्य-निष्ठ चित्रण किया है। (इतिहास के उस रंगमंच के प्रमुख पात्र बहादुर शाह, ज़ीनतमहल, जनरल निकलसन या जनरल आर्चडैल विलसन ही नहीं अपितु जीवनलाल, पन्ना, तुलसी, गुरवचन सिंह, खुरशीद जाल, सोहराब मियाँ जैसे साधारण लोग भी प्रमुख हैं जिनके कारण सारी स्थितियाँ बदल गयी) बिशीजी बंगला के यशस्वी उपन्यासकार हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के क्षेत्र में उनका विशिष्ट अधिकार है। 'कैरी साहब का मुंशी' के बाद यह उनका उल्लेखनीय सर्जन है।

डिमाई साइज, पृष्ठ संख्या ६७२, चौरंगा आफसेट कवर, रेक्सिन की पक्की जिल्द, मूल्य : २२·००

●

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

३, राउण्ड बिल्डिंग, बम्बई-२

१७ महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीर्घकालीन नीति नहीं अपनायी है जिस कारण देश में मुद्रण सामग्री का अभाव बना हुआ है। इससे मुद्रण के स्तर में सुधार नहीं हो पाता।

स्वतंत्रता के पूर्व अपने कम साधनों में भी हम जैसी छपाई कर लेते थे आज इतने साधन होने के बावजूद भी अच्छी छपाई नहीं कर पाते, क्योंकि हममें काम करने की लगन और निष्ठा का सर्वथा अभाव हो गया है। साथ ही उस समय जैसा कागज और स्याही हमें मिलती थी, आज देश की इतनी औद्योगिक उन्नति होने के बाद भी उनके स्तर में गिरावट आ गई है। शासन इस उद्योग को नियमों की जड़ता में जकड़ने के बजाय इसे उन्नत करने की दिशा में कोई व्यावहारिक कदम उठाये तो अधिक उचित होगा।

आवश्यक सूचना

१५ फरवरी, सन् १९६८ से **नेशनल पब्लिशिंग हाउस** का प्रकाशन तथा व्यवस्था कार्यालय एवं बिक्री-केन्द्र **२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज,** दिल्ली-६ में स्थानान्तरित हो रहा है। सहयोगियों तथा बन्धुओं से निवेदन है कि वे सभी पत्र-व्यवहार अब इस नये पते पर करें।

हमारे नये प्रकाशन

बृहद् हिन्दी ग्रंथ सूची : परिशिष्ट १९६६ : संपादक : यशपाल महाजन १२.००
बिठूर के नाना (ऐतिहासिक उपन्यास) : आनन्द सागर ५.५०
दो धाराएँ (उपन्यास) : श्रीराम शर्मा, राम ५.००
बात एक नाते की (कहानी) : भगवतीप्रसाद वाजपेयी ४.००
दो फूल एक जिन्दगी (उपन्यास) : विमल वेद ४.००
मधुर मिलन (उपन्यास) : हरिचरण वैद्य ४.५०

•

हमारे अन्य प्रकाशन

बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची (सन्दर्भ ग्रन्थ) यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन, संपा. ३६.००
बृहद् हिन्दी ग्रंथ-सूची : परिशिष्ट १९६६ १२.००
अधूरा स्वर्ग (उपन्यास) : भगवतीप्रसाद वाजपेयी ६.००
स्वप्नों की गोद ,, ,, ,, ६.००
होटल का कमरा (कहानी-संग्रह) ,, ,, ३.५०
दूखन लागे नैन (उपन्यास) ,, ,, ५.५०
टूटा टी-सेट ,, ,, ,, ४.००
कँची और कुर्सी ,, बैजनाथ गुप्त ४.५०
रथ से गिरी बाँसुरी ,, हिमांशु श्रीवास्तव ४.५०
शैलाधीश (ऐतिहासिक उपन्यास) : शत्रुघनलाल शुक्ल ५.००
जब सूरज ने आँखें खोलीं (उपन्यास) कमल शुक्ल ५.५०
अनबूझे सपने (उपन्यास) : उमाशंकर ५.५०
भुवन विजयम् (ऐतिहासिक उपन्यास) ,, ६.००
नीर भर आये बदरा (उपन्यास) ,, ४.००
नई कहानी की मूल संवेदना (आलोचना) सुरेश सिनहा ५.००

•

प्रकाशक

भारतीय ग्रन्थ निकेतन

१३३, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नेशनल' के नव-वर्ष के गौरवपूर्ण प्रकाशन

फरवरी ...

मेरी दृष्टि में

श्री मोरारजी देसाई

उपप्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई के देश की विभिन्न ज्वलन्त समस्याओं से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण विचार।

मार्च ...

अपने पार....

राजेन्द्र यादव

शीर्षस्थ कथाशिल्पी राजेन्द्र यादव की एकदम नयी तथा ताज़ी कहानियाँ।

तंत्रालोक से यंत्रालोक तक

डॉ० नगेन्द्र

विदेश-यात्रा के चार मार्मिक संस्मरण।

हिन्दी-समस्या-नाटक

डॉ० मान्धाता ओझा

हिन्दी में समस्यापूर्ण नाटकों के उद्भव तथा विकास पर प्रकाश डालने वाला महत्त्वपूर्ण शोधप्रबन्ध।

मध्यकालीन हिन्दी-काव्य में भारतीय संस्कृति

डॉ० मदनगोपाल गुप्त

पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं शतियों के हिन्दी-काव्य में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति एवं समाज का अध्ययन। ३५.००

कहानी : स्वरूप और संवेदना

राजेन्द्र यादव

अपने समय के स्वर और कहानी को समझने के लिए एक अपरिहार्य और अनिवार्य ग्रन्थ।

कुछ निबन्ध

डॉ० उमाकान्त

बारह साहित्यिक रोचक निबन्ध।

महिमभट्ट

डॉ० ब्रजमोहन चतुर्वेदी

आचार्य महिमभट्ट के व्यक्तिगत जीवन, वैदुष्य एवं कार्यकाल का निरूपण करते हुए उनके काव्य-सिद्धान्तों का अत्यन्त विशद एवं गहन विवेचन।

पुनर्मुद्रण ...

राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक

वर्षों से अप्राप्य इस महत्त्वपूर्ण एवं बहुचर्चित ग्रन्थ का द्वितीय संशोधित संस्करण।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगेन्द्र-साहित्य

रस-सिद्धान्त	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	१२.५०
देव और उनकी कविता	७.००
आलोचक की आस्था	७.००
रीतिकाव्य की भूमिका	५.५०
विचार और अनुभूति	४.५०
विचार और विवेचन	४.५०
विचार और विश्लेषण	६.००
अनुसन्धान और आलोचना	४.००
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४.५०
सियारामशरण गुप्त	७.५०
कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	३.००
काव्य-बिम्ब	४.००
चेतना के बिम्ब	५.००

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२/३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

शीघ्र प्रकाश्य

मूर्धन्य आलोचक डॉ० नगेन्द्र

का

नवीनतम महत्त्वपूर्ण बृहत् ग्रन्थ

आस्था के चरण

•

३० वर्षों की सर्जनात्मक साधना का नवनीत

•

१०१ समीक्षात्मक निबन्धों का महत्त्वपूर्ण संग्रह

•

बड़े आकार में सात सौ से अधिक पृष्ठ

सुमुद्रित : आकर्षक साजसज्जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौन-विषय की अनेक जिज्ञासाओं को शान्त करने वाली
तथा नयी जिज्ञासाएँ जगाने वाली

सर्वथा नवीन मौलिक रचना

यौन-व्यवहार-अनुशीलन

लेखक—**दयानन्द वर्मा**

यह पुस्तक पहले से पढ़ी-सुनी यौन-सम्बन्धी जानकारी को दूसरे शब्दों में पुनः प्रस्तुत नहीं करती, अपितु थोड़े पृष्ठों में सभी-कुछ नया, नयी शैली में प्रस्तुत करती है।

यह पुस्तक यौन-सम्बन्धी नयी तथा पुरानी मान्यताओं के बारे में केवल अपना मत प्रस्तुत करके नहीं रह जाती, अपितु नयी मान्यताएँ स्थिर करती है।

साइक्लो-पद्धति में छपी
चित्र-रहित पुस्तक

मूल्य : १५ रुपये

: वितरक :

हिन्दी बुक सैण्टर, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के ग्रन्थ और विद्यार्थियों का भाषा-ज्ञान

पुरुषोत्तमदास मोदी

स्वतन्त्रता के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में परिमाणात्मक वृद्धि जितनी तेजी से हुई उतनी ही गति से गुणनात्मक ह्रास भी होता गया। विदेशी शासनकाल में शिक्षा का जो लक्ष्य था—मात्र अर्थकरी अर्थात् रोजी-रोटी के लिए क्लर्क, बाबू तथा अधिकारी तैयार करना—स्वतन्त्रता के पश्चात् भी इस लक्ष्य में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

स्वातन्त्र्य संग्राम के जिन दिनों में हम विदेशी भाषा, वस्तु एवं संस्कृति को पराई और अराष्ट्रीय कहकर उसकी उपेक्षा करते थे वही हमारे गले का हार बन गई। ब्रिटिश शासन से मुक्त होते ही हमने ब्रिटिश संस्कृति को अपने को समर्पित कर दिया।

ब्रिटिश संस्कृति को पराजित करने के लिए अपने अकूत धन से अमेरिका आगे बढ़ा और उसने अपनी संस्कृति और आर्थिक परम्परा का जाल फैलाना आरम्भ किया। उसने हमारे अभावों का लाभ उठाया। परिणाम यह हुआ कि इन विदेशी संस्कृतियों की चमक-दमक में हम अपनी संस्कृति को भूल बैठे। कहने को कांग्रेस शासन ने देश में जनतन्त्र की स्थापना की जिसने राजनीतिक पतन का मार्ग उन्मुक्त कर दिया क्योंकि सफल जनतन्त्र के लिए जनता के जिस प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है उसका सर्वथा अभाव है। हिन्दी जो राष्ट्रीय आवाहन की भाषा थी उसका महत्व समाप्त प्राय हो गया और अंग्रेजी की प्रतिष्ठा बनी रही। जन सामान्य लक्ष्यहीन हो गया, न वह अंग्रेजी में पारंगत हो सका और न हिन्दी का ही ज्ञान प्राप्त कर सका।

ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजी के अध्यापन के लिए प्रशिक्षित अध्यापक नियुक्त किये जाते थे, कितने विश्व-विद्यालयों में ब्रिटिश अथवा ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त अध्यापक रखे जाते थे। वे भाषा की शुद्धता और उच्चारण की ओर अधिक ध्यान देते थे। किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् ऐसे अध्यापकों का अभाव होता गया और यद्यपि अंग्रेजी की प्रतिष्ठा बनी रही किन्तु भाषा की दृष्टि से इसका ह्रास होता गया और पूर्वी उत्तर प्रदेश में तो यह भोजपुरी-अंग्रेजी के नाम से अभिहित होने लगी। हिन्दी को प्रतिष्ठा नहीं मिली। फलस्वरूप अंग्रेजी भाषा का स्तर गिरता रहा जबकि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनी रही, परिणाम यह हुआ कि उसी अनुपात से शिक्षा का स्तर भी गिरता गया और आज हम शिक्षा के दिवालिएपन के शिकार हो गये हैं। न हमें अंग्रेजी का ज्ञान है न हम अपनी भाषा हिन्दी ही जानते हैं।

अंग्रेजी के स्तर के ह्रास के साथ धीरे-धीरे हिन्दी भाषी प्रदेशों में स्नातक स्तर पर कुछ विश्वविद्यालयों में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया और कुछ ने परीक्षा में हिन्दी में लिखने की छूट दे दी। फलस्वरूप हिन्दी में कुछ पुस्तकें निकलीं। किन्तु पारिभाषिक शब्दावली के अभाव और एकरूपता न होने के कारण वे सफल न हो सकीं। असफलता का एक कारण यह भी था कि पढ़ाने वाले अध्यापकों को इस प्रकार की हिन्दी का ज्ञान नहीं था और वे अंग्रेजी-हिन्दी की मिली-जुली खिचड़ी भाषा में पढ़ाते थे। विद्यार्थी शुद्ध हिन्दी में लिखी पुस्तकें समझ नहीं पाते थे। अंग्रेजी-हिन्दी मिली-जुली भाषा में पुस्तकें निकलने लगीं, किन्तु उन पुस्तकों में भी भारतीय परिवेश या सन्दर्भ न होने के कारण वे भी सफल न हो सकीं। परिणामतः और घटिया स्तर की पुस्तकें प्रश्नोत्तर रूप में चल निकलीं और आज वे शिक्षा के प्रत्येक विषय और क्षेत्र पर घोर रूप से छाई हुई हैं।

ऐसी पुस्तकों के प्रचलित होने के विशिष्ट कारण हैं। अब तक हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा न होकर केवल बोलचाल तथा साहित्य की भाषा थी। विद्यार्थी समुदाय का ज्ञान भी सामान्यतः बोलचाल की इस भाषा तक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- यह ग्रन्थ पुस्तक-विक्रेताओं तथा प्रकाशकों के लिए संदर्भ ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ पुस्तकालयों, शिक्षण-संस्थाओं के लिए संदर्भ ग्रन्थ है।

बृहद् हिन्दी ग्रंथ-सूची

(हिन्दी वाङ्मय के ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की विस्तृत नामावली)

Hindi Books in Print; an author-title index

संपादक : यशपाल महाजन तथा कृष्णा महाजन

क्या आप जानना चाहते हैं कि :

- अमुक लेखक की कौन-कौन-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं ?
- अमुक पुस्तक का लेखक, अनुवादक तथा संपादक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का प्रकाशक कौन है ?
- अमुक पुस्तक का विषय क्या है ?
- अमुक पुस्तक का मूल्य क्या है ?

इन सभी जटिल प्रश्नों के उत्तर आप बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची में पाएंगे।

सूची में ६२० हिन्दी प्रकाशकों के २६,००० उपलब्ध प्रकाशन हैं। जिसके दो भाग हैं (१) लेखक निर्देशी में लेखक, ग्रन्थ का नाम, प्रकाशक, मूल्य तथा विषय, एवं (२) ग्रन्थ-निर्देशी में ग्रन्थ का नाम, लेखक प्रकाशक तथा मूल्य आदि क्रम हैं।

साथ में प्रकाशकों के पूरे पते, अनेक तरह के निर्देशी संलेख (Cross references) और यथासम्भव लेखकों की जन्म-तिथियां भी हैं।

बृहद् हिन्दी ग्रंथ-सूची मूल्य : ३६-००
बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची : परिशिष्ट १९६६ मूल्य : १२-००

३१-३-६८ तक प्राप्त आदेश पर पुस्तकालयों को यह सैट ३६-०० रुपये नैट में मिलेगा। डाक का खर्च हम देंगे। कृपया आदेश भेजें।

कुछ सम्मतियाँ

'एक सराहनीय प्रयास''''इस ग्रन्थ के द्वारा हिन्दी पाठकों को हिन्दी के ग्रन्थों तथा उनके लेखकों और प्रकाशकों आदि के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी सुलभ हो जाएगी।'

—श्री भक्त-दर्शन, शिक्षा-उपमन्त्री, भारत सरकार

'हिन्दी में सन्दर्भ-ग्रन्थों के अभाव को दूर करने वाला यह एक महान प्रयास हैं।'''पुस्तक प्रेमी पाठकों व पुस्तकालयों के लिए यह ग्रन्थ वरदान है ही, अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के लिए भी इसकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। उनके लिए यह हिन्दी वाङ्मय के सिंहद्वार का काम करेगा।' —विभागीय गजट, शिक्षा-विभाग, राजस्थान सरकार

'प्रस्तुत पुस्तक एक सन्दर्भ ग्रन्थ है और इसके साथ ही इससे हिन्दी प्रकाशन-जगत् की प्रगति की झांकी भी मिल जाती है।'

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली

'हिन्दी-सेवा संसार और भारतीय वाङ्मय के इतिहास में बृहद् हिन्दी ग्रन्थ-सूची एक अनोखा प्रकाशन है।'''इससे एक नये युग का सूत्रपात होता है।'

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

प्रकाशक

भारतीय ग्रंथ निकेतन

१३३, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमित रहा। शिक्षा का माध्यम हिन्दी को जरूर बना दिया गया किन्तु भाषा का अपेक्षित ज्ञान उन्हें नहीं कराया गया। दूसरी ओर ब्रिटिश शासनकाल से चली आ रही शिक्षा-परम्परा में भी कोई परिवर्तन नहीं किया गया। उनके समय में अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम थी और इस भाषा के ज्ञान के लिए जनरल इंगलिश (सामान्य अंग्रेजी) प्रत्येक विश्वविद्यालयों में प्रत्येक विद्यार्थी को अनिवार्य रूप से पढ़नी होती थी। जनरल इंगलिश के लिए स्वीकृत पुस्तकों मानविकी तथा विज्ञान दोनों से सम्बन्धित अंग्रेजी के निबन्ध-संकलन अथवा वैज्ञानिक उपन्यास आदि रखे जाते थे। इससे विद्यार्थी को अंग्रेजी भाषा का इतना ज्ञान हो जाता था कि वह अपने अध्ययन के अन्य विषयों को समझ सके। किन्तु स्वतन्त्रता पश्चात् अंग्रेजी भाषा के ह्रास, हिन्दी के प्रति उपेक्षा और हिन्दी को वैकल्पिक रूप से शिक्षा का माध्यम बना देने के पश्चात् भी सामान्य हिन्दी के रूप में हिन्दी भाषा का अपेक्षित ज्ञान न कराये जाने के कारण शिक्षा का ह्रास होता गया और आज हमारी शिक्षा इस स्थिति को पहुँच गई है कि उसके लिए यदि कहा जाय कि 'धोबी का गधा न घर का न घाट का' तो अनुचित न होगा।

संविधान में जब हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित कर दी गई तो विधान के मात्र कार्यान्वयन की दृष्टि से केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग आदि की स्थापना की गई और वे भविष्य के लिए शब्दों की सौदागिरी मात्र करते रहे किन्तु ग्राहक नहीं तैयार कर सके। लाखों रुपये व्यय कर और यदि स्पष्ट कहा जाय तो प्रति शब्द एक मुहर (बिहारी को एक दोहे पर एक मुहर मिलती थी; पर स्वतन्त्र गणतन्त्र भारत में एक शब्द के लिए एक मुहर व्यय होती है) के अनुपात से पारिभाषिक कोश तैयार हुए, कुछ अनुवाद प्रकाशित हुए, प्रकाशकों का आवाहन किया गया—एक लगाओ तीन पाओ, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की मुहर लगवाकर पुस्तकें छपवाओ।

कितने ही प्रकाशक कुछ व्यवसाय और कुछ भाषा प्रेम के कारण इस दुष्चक्र में फँसे और उन्होंने अनुवाद तथा मौलिक पुस्तकें प्रकाशित कीं, किन्तु उनके लिए ग्राहक नहीं मिले। न विश्वविद्यालयों ने उन्हें स्वीकारा और न विद्यार्थियों के पास इतना भाषा-ज्ञान था कि वे ही उनको ग्रहण कर पाते।

उपरोक्त सर्वेक्षण के पश्चात् आज आवश्यकता इस बात की है कि हम व्यावहारिक दृष्टिकोण से वस्तुओं को देखें। अब तक हमारा शासन यही समझता रहा है कि घोड़े पर जीन कस दो सवार अपने आप चलता जायेगा। पर न घोड़ा रास्ता जानता है और न सवार सवारी करना। आवश्यकता है दोनों एक-दूसरे के लिए अपनी तैयारी करें।

अंग्रेजी भूत हमारे देश के विद्वानों पर इतना अधिक छाया हुआ है कि वे हीनता की भावना से घोर रूप से ग्रसित हैं और वे माने बैठे हैं कि सारा ज्ञान इन अंग्रेजी पुस्तकों में है और हिन्दी में इनका अनुवाद प्रकाशित होने पर ही हिन्दी को माध्यम बनाया जा सकता है। वे यह नहीं समझ पाते कि प्रत्येक भाषा का अपना निजी परिवेश होता है उसे दूसरी भाषा में भाषान्तरित कर वह सजीवता और बोधगम्यता नहीं प्रदान की जा सकती जो मूल भाषा में होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अंग्रेजी भाषा में प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों के अनुवाद मात्र के पीछे न दौड़े। उनमें से कितनी पुस्तकें तो उन देशों में भी पुरानी पड़ गई हैं। वे पुस्तकें भारतीय सन्दर्भों में अनुकूलित कर लिखी जायँ, उनमें भारतीय इतिहास, जीवन तथा साहित्य के सन्दर्भ दिये जायँ ताकि उन सिद्धान्तों का भारतीय परिवेश में अध्ययन और विचार किया जा सके।

स्वतन्त्रता के पहले हम केवल राष्ट्रीय थे किन्तु स्वतन्त्रता के बाद हमने राष्ट्रीयता तो बिलकुल भुला दी और हम एक रात में अन्तर्राष्ट्रीय बन गये। घर की छत तक उठने का हममें सामर्थ्य ही नहीं था, आकाश तक उड़ने की कल्पना करने लगे।

आज हिन्दी में मानविकी के सभी विषयों पर और विज्ञान के कुछ विषयों पर हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के अच्छे ग्रंथ हैं—मौलिक और अनूदित। किन्तु विद्यार्थियों को भाषा का अपेक्षित ज्ञान न हो सकने के कारण वे उनमें प्रचलित नहीं हो पातीं। और वे उनके स्थान पर अत्यन्त घटिया स्तर की पुस्तकें पढ़ते हैं।

दर्शन, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, विज्ञान आदि ऐसे विषयों पर जब भी हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ग्रंथ लिखें जायेंगे, उनमें संस्कृत की शब्दावली का प्रयोग होगा ही, भाषा में भी कसाव तथा हिन्दी की प्रवृत्ति होगी। ऐसी भाषा के बोध के लिए विद्यार्थियों को जनरल इंगलिश के स्थान पर तत्काल अनिवार्य हिन्दी पढ़ानी चाहिए जिसमें साहित्येतर विषयों के निबन्ध-संकलन तथा भाषा की दृष्टि से सम्पन्न सामान्य विषयों की पुस्तकें हों। साथ ही उन्हें संस्कृत का ज्ञान भी कराना चाहिए। लिखने के अभ्यास के लिए उन्हें निबन्ध, पत्र, टिप्पणी तथा अनुवाद की शिक्षा दी जानी चाहिए। पहले बी० ए० के हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद भी करना होता था किन्तु वह हिन्दी वालों की अदूरदर्शिता के कारण समाप्त कर दिया गया। इतना ही नहीं संस्कृत भाषा के अज्ञानी हिन्दी अध्यापकों ने संस्कृत को भी हिन्दी साहित्य के पाठ्यक्रम से निष्कासित कर दिया।

आज यह कहना कि हिन्दी में पुस्तकें नहीं हैं इसलिए हिन्दी को शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया जा सकता, यह सर्वथा भ्रामक है। कठिनाई यह है कि जो विषय के जानकार विद्वान् अध्यापक हैं वे हिन्दी नहीं जानते और विद्यार्थी अंग्रेजी नहीं समझ पाते। ज्ञानी और जिज्ञासु दोनों एक-दूसरे के समक्ष स्तब्धावस्था में खड़े हैं।

ज्यों-ज्यों विद्यार्थियों में हिन्दी में उच्च स्तर की पुस्तकों की मांग होती जायेगी, पुस्तकें भी प्रकाशित होती जायेंगी। पुस्तक प्रकाशन का कार्य प्रकाशकों का है, इस क्षेत्र में शासन न आये तो उसका और विद्यार्थी दोनों का भला होगा। वह पुस्तकें तैयार कराये क्योंकि आरम्भ में पुस्तकों की खपत इतनी अधिक नहीं होगी कि अध्यापकों को उनके परिश्रम के अनुकूल अपेक्षित धन दिया जा सके। ये पुस्तकें प्रकाशकों को सामान्य रायल्टी पर प्रकाशित करने को दी जायँ। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाय कि केवल पुस्तकें प्रकाशित कर देने से ही समस्या का हल नहीं होगा। उन पुस्तकों के लिए वातावरण तैयार कीजिए। लेखक का निजी अनुभव है कि हिन्दी में मौलिक तथा अंग्रेजी में भारतीय तथा विदेशी लेखकों की प्रचलित पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद उसने प्रकाशित किया किन्तु उनकी खपत नहीं है। शिकायत यह है कि भाषा समझ में नहीं आती। अतः अंग्रेजी से दूर हिन्दी से अबोध विद्यार्थियों के भाषा-ज्ञान का स्तर उन्नत कीजिए। वे स्वयं हिन्दी में प्रकाशित उच्च स्तर के मानक-ग्रंथ पढ़ने-समझने लगेंगे, शिक्षा का स्तर उन्नत होगा, ज्ञान का क्षितिज विस्तृत होगा और वे अध्ययन का आनन्द अनुभव कर सकेंगे।

"आपने सेन्ट्रल हिन्दी डायरेक्ट्रेट जैसी संस्थाओं का नाम नहीं सुना जिन्होंने रुपया पानी की तरह बहा कर दरिद्र हिन्दी को कितने ही कीमती शब्द दिये हैं। भारतीय संस्कृति ? तीन-तीन अकादमियाँ जो हैं। उनके बजट का अधिकांश दफ्तर और दफ्तरी कार्रवाई पर ही खर्च हो रहा है तो भी संस्कृति-प्रेम की खातिर हम उन्हें अनुपयोगी नहीं ठहरा रहे हैं ?

भावात्मक एकता ? इसके बारे में हमने कितने वृत्त चित्र बनाए हैं, कितने ग्रन्थ पुरस्कृत किये हैं, कितने विशेष रूपक रेडियो से प्रसारित कराए हैं—कोई ठिकाना है ! कहाँ तक गिनिए-गिनाइएगा। आप किसी एक कष्ट का नाम लीजिए हम उसके निवारण के लिए स्थापित एक कमेटी का नाम ले लेंगे, आप किसी भी दर्द का जिक्र कीजिए हम उसे दूर करने वाले दफ्तर का जिक्र कर देंगे।

—'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के सम्पादकीय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आजादी का आदि-पुरुष हूँ। आजादी में जन्मा और पला। मुझे शिक्षा मिली, शिक्षा का आधार है भाषा, पर भाषा मुझे नहीं मिली। लोग भाषा सीख कर एक भाषा में वाक्-सिद्ध होते, मैं कम-से-कम दो भाषाओं में गूंगा हूँ। जिस समय मैं अपनी सहज बोली में सोचना सीख रहा होता, उस समय मैं पराये शब्द-समूह को रटना सीख रहा था, जिस समय मुझे गर्व होता कि मैं अपने को पहचानता हूँ, अपना निर्माता बल्कि अपना रचयिता हूँ, उस समय मैं गर्व कर रहा था कि मैं परायी लादी ओढ़ और ढो सकता हूँ, कि मैं अपना अनुवादक हूँ। यों शिक्षा मुझे मिली, लेकिन बे-पेंदी की।

मुझे सभी कुछ मिला, पर सब बे-पेंदी का। शिक्षा मिली, पर उसकी नींव भाषा नहीं मिली, आजादी मिली, लेकिन उसकी नींव आत्मगौरव नहीं मिला, राष्ट्रीयता मिली, लेकिन उसकी नींव अपनी ऐतिहासिक पहचान नहीं मिली।

इतना ही क्यों! मुझे व्यक्तित्व मिला पर चेहरा नहीं मिला।

और भी: मुझे अस्तित्व मिला, पर अस्ति नहीं, अवस्था मिली पर आस्था नहीं।

क्यों नहीं मुझे वह भाषा दी जाती जिससे कि मैं अपनी आत्मा को खोज सकूं? क्यों नहीं मुझे वह शिक्षा दी जाती जिससे कि मैं व्यक्तित्व पा सकूं? क्यों नहीं मुझे वह इतिहास मिलता जिससे मैं अपनी इयत्ता पहचान सकूं, निरे पूर्वापर को परम्परा बनाकर अर्थ दे सकूं?"

स० ही० वात्स्यायन 'अज्ञेय'
'दिनमान' में

हमारे अभिनव प्रकाशन

१. हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा
लेखक—डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे २०.००

२. प्रसाद साहित्य : कुछ विचार
लेखक—डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे ७.००

३. साहित्य की चेतना (आलोचनात्मक निबन्ध)
लेखक—विद्यानिवास मिश्र ४.००

४. THEORY OF RASA in SANSKRIT DRAMA by Dr. H. R. Mishra ४४.००

५. सिकताकण—(ए. जी. गार्डिनर के निबन्ध संग्रह Pebbles on the Shove का हिन्दी रूपान्तर)
अनु०—प्रो० सी० डी० पांडे २.५०

६. कबीर-वाणी—पन्नालाल जैन ४.५०

विन्ध्याचल प्रकाशन
छतरपुर (म० प्र०)

जासूसी पॉकेट बुक्स

हिन्दी में पहली बार घिसे-पिटे जासूसी उपन्यासों से अलग
नई जासूसी सीरीज़ की रहस्य-रोमांच से भरपूर पहली छः पुस्तकें
शीघ्र ही निकल रही हैं

पॉकेट बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स
एकमात्र वितरक :— ४-बी, नाथ मार्केट, नई सड़क दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचारक संस्थान

व्यवस्था : कृष्णचन्द्र बेरी एण्ड सन्स

हिन्दी प्रचारक संस्थान की ओर से अपने उन पाठकों के लिए अनुपम भेंट : जो केवल श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण पुस्तकें पढ़ना पसन्द करते हैं !

● शादी

राहुल सांकृत्यायन

राहुलजी का अन्तिम और अत्यन्त भावपूर्ण कथानक वाला उपन्यास : जिसके पात्र 'व्यक्ति' न रहकर प्रतीक बन गये हैं। राहुलजी की परिपक्व जीवन-दृष्टि और कलात्मक शक्ति का परिचायक यह उपन्यास अद्वितीय है।

मू० ८.००

● हिन्दी निबन्ध

सं० डॉ० शिवप्रसाद सिंह

हिन्दी निबन्ध साहित्य की एक मानक कृति : जो आधुनिक हिन्दी निबन्ध के विकास का साक्ष्य प्रस्तुत करती है। खड़ी बोली के प्रख्यात सभी निबन्धकारों के विशिष्ट निबन्धों का संग्रह।

मू० ४.००

● एक कोड़ी एक

सं० बेढब बनारसी, विश्वनाथ मुखर्जी और डॉ० भानुशंकर मेहता

नाम से ही स्पष्ट है कि यह कृति सामान्य नहीं, विशेष है ! मौसम हो, न हो 'एक कोड़ी एक' हाथ में पहुँचते ही क़हक़हों में आप डूब जाएँगे !

मू० ५.००

● भारतरत्न

परेशनाथ वन्द्योपाध्याय

स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने जिन मनीषियों, समाज-सेवियों और राजनयिकों को राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' से विभूषित किया है, यह कृति उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्रस्तुत करती है।

मू० २.००

हिन्दी प्रचारक संस्थान

पो० बॉ० सं० १०६

सी० २१/३०, पिशाचमोचन

वाराणसी-१

फोन : २११४ तार : प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

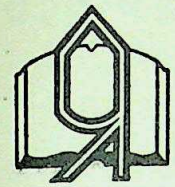

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा-राजभाषा है !! हिन्दी का अधिकाधिक प्रचार और इसकी समृद्धि आपका एक नैतिक दायित्व है । कृपया आप व्रत लें कि अपना सारा काम आप हिन्दी में करेंगे ! और हम आपको सहयोग देने का संकल्प करते हैं—

हिन्दी में सरकारी कामकाज करने की विधि

देश के प्रत्येक कार्यालय तथा कार्यकर्त्ता के लिए सर्वथा अनिवार्य—

•

मूल्य
केवल ३.५० पैसे
अपनी प्रति के
लिए आज ही
लिखें—

राम विनायक सिंह

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

• •

हिन्दी में सरकारी एवं कार्यालय सम्बन्धी कार्यों के करने का ज्ञान कराने वाली तथा टिप्पणी-आलेखन और सरकारी पत्रों के विविध प्रचलित उदाहरणों से युक्त एक अद्वितीय पुस्तक । इसमें भारतीय शासन प्रणाली और उसके संचालन की विधि का समुचित उल्लेख करते हुए, सार-लेखन, अनुवाद की कला—सिद्धान्त और प्रक्रिया के साथ ही सरकारी कार्यालयों के कार्यों में बहुधा प्रयुक्त होनेवाले विशिष्ट एवं तकनीकी शब्दों और वाक्यांशों के मान्य हिन्दी पर्याय भी दिये गए हैं ।

• •

A Book on Noting, Drafting and Manual of Office-Procedure in Hindi with Principles and Methods of Precis-Writings and Translations.

हिन्दी प्रचारक संस्थान

(व्यवस्था : कृष्णचन्द्र बेरी एण्ड संस)
पो० बॉ० सं० १०६, सी० २१।३०, पिशाचमोचन
वाराणसी-१
फोन : २११४ तार : प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नवीन प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध :

प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास
डॉ० प्रभासचन्द्र शर्मा २०.००

साधारणीकरण : शास्त्रीय अध्ययन
डॉ० रामलखन शुक्ल १७.५०

रसखान और उनका काव्य
डॉ० माजिदा असद १५.००

उदासी संप्रदाय और संत कवि रेणु
डॉ० सच्चिदानन्द शर्मा १२.५०

आलोचना :

प्रतिनिधि कहानीकार रामचरण महेन्द्र ७.५०

नाटक :

सीमा-संरक्षण हरिकृष्ण प्रेमी २.००

कहानी-संग्रह :

घूमते चेहरे डॉ० हरिदत्त भट्ट ३.५०

दीप से दीप जले
(सचित्र, किशोरोपयोगी) ब्रजभूषण ४.००

काव्य :

कवितांजलि होशियारसिंह चौहान ४.००

तृष्णा डॉ० प्रभासचन्द्र शर्मा ५.००

शीघ्र ही प्रकाश्य :

भारतीय नवजागरण : प्रणेता तथा आन्दोलन गौरीशंकर भट्ट १५.००

हिन्दी भक्त वार्ता साहित्य
(शोध प्रबन्ध) डॉ० लालता प्रसाद दुबे

हिन्दी नाटक में त्रासदी
(शोध प्रबन्ध) डॉ० कैलाशपति ओझा

अर्थशास्त्र : विषयवस्तु तथा विश्लेषण प्रविधि डॉ० यशपाल छिब्बर

हमारे अन्य कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध :

हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास
डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र १५.००

हिन्दी भाषा और साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव
डॉ० विश्वनाथ मिश्र १२.५०

रीतिकालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
डॉ० शिवलाल जोशी १२.५०

हिन्दी नाटकों का विकासात्मक अध्ययन
डॉ० शांतिगोपाल पुरोहित १२.५०

आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीक-विधान
डॉ० नित्यानन्द शर्मा १५.००

आलोचना :

प्रतिनिधि एकांकीकार डॉ० रामचरण महेन्द्र ६.५०

कबीर और जायसी का रहस्यवाद एवं तुलनात्मक विवेचन डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ६.००

तुलसीदास और उनका साहित्य
डॉ० विमल कुमार जैन ७.००

तुलनात्मक साहित्यशास्त्र : इतिहास तथा समीक्षा डॉ० विष्णुदत्त राकेश १२.५०

उपन्यास :

उखड़े हुए लोग	राजेन्द्र यादव	१०.००
पुतलीघर	मामा वरेरकर	१०.००
मनुष्य और देवता	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	४.००
त्रिवेणी	कंचनलता सब्बरवाल	५.००
खेल और खिलौने	गुरुदत्त	५.००
पतन का मार्ग	,,	८.००
मनीषा	,,	३.००
अवतरण	,,	६.००
संभवामि युगे-युगे	,,	८.००
विनाशाय च दुष्कृताम्	,,	७.५०
प्रेरणा	,,	७.००

अन्य :

भारत में समाजशास्त्र, प्रजाति और संस्कृति
गौरीशंकर भट्ट २०.००

भारतीय संस्कृति : समाजशास्त्रीय समीक्षा
गौरीशंकर भट्ट १७.५०

नवरंग (अभिनेय व्यंग्य एकांकी-संग्रह) ३.५०

साहित्य सदन, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकें

डॉ० ओमप्रकाश शर्मा

प्रधान प्रकाशन अधिकारी वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग भारत सरकार, शिक्षा मन्त्रालय

हमारे देश में निकट भविष्य में ही विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा और परीक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ बनने वाली हैं। भारत के वर्तमान शिक्षामंत्री डॉ० त्रिगुणसेन के सतत प्रयत्नों के कारण अब लगभग सभी विश्वविद्यालयों ने इस बात को मान लिया है। प्रश्न केवल समय और कार्य-क्रमों का है कि इस नीति को सफलतापूर्वक किस प्रकार कम से कम समय में कार्यान्वित किया जा सकता है।

विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को शिक्षक की अपेक्षा पाठ्य-पुस्तकों से अधिक मार्गदर्शन मिलता है। शिक्षकों को भी इस स्तर पर पढ़ाने के लिए बराबर संदर्भ-ग्रंथों की सहायता लेनी पड़ती है। यदि इस प्रयत्न द्वारा हम शिक्षा को उच्चकोटि की बनाना चाहते हैं और उसे अन्य विकासशील देशों के समकक्ष लाना चाहते हैं तो विश्वविद्यालय स्तर पर सभी भारतीय भाषाओं में उच्च प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें और सन्दर्भ ग्रन्थों का सतत निर्माण विशेष रूप से आवश्यक है।

अब तक के काम का सर्वेक्षण

इस सन्दर्भ में आज की परिस्थिति पर विचार करने से पहले यह जरूरी है कि इस क्षेत्र में अब तक जो कार्य हुआ है, उसका सामान्य सर्वेक्षण कर लिया जाय। अभी हाल में शब्दावली आयोग की ओर से विज्ञान भवन में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों की दो प्रदर्शनियाँ भारत सरकार की ओर से आयोजित करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। एक प्रदर्शनी शिक्षा मन्त्रियों के सम्मेलन के समय और दूसरी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के सम्मेलन के समय। इसमें सहयोग प्रदान करने के लिए सभी भाषाओं के प्रकाशकों को परिपत्र भेजे गये थे और उनसे निवेदन किया था कि वे इन प्रदर्शनियों के लिए अपनी अब तक की सभी प्रकाशित पुस्तकें भेजें। कुछ चुने हुए दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में इसके बारे में विज्ञापन भी दिया गया था। फिर भी प्रकाशकों की ओर से जो सहयोग अपेक्षित था वह भरपूर प्राप्त नहीं हुआ। हिन्दी के प्रकाशकों ने लगभग ५०० पुस्तकें इन प्रदर्शनियों के लिए भेजी थीं। उनमें से लगभग २५० पुस्तकें ही ऐसी थीं जो विश्वविद्यालय स्तर की कही जा सकती हैं। अन्य भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों ने भी लगभग ४०० पुस्तकें इन प्रदर्शनियों के लिए भेजी थीं। उनमें से अधिकांश विश्वविद्यालय स्तर की नहीं थीं। इसके अतिरिक्त हमने सभी उपलब्ध साधनों और स्रोतों का पूरा लाभ उठाया था। जिसके कारण हम इन प्रदर्शनियों में विश्वविद्यालय स्तर की लगभग ५००० पुस्तकें प्रदर्शित कर सकें। इनमें हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, मराठी और पंजाबी की पुस्तकें प्रदर्शित की गयी थीं। लगभग साढ़े तीन हजार पुस्तकें हिन्दी की थीं और शेष डेढ़ हजार पुस्तकें अन्य भारतीय भाषाओं की। अन्य भारतीय भाषाओं में विश्व-विद्यालय स्तर की पुस्तकों की संख्या इस प्रकार थी। बंगाली में ६५ पुस्तकें जिसमें ६४ मौलिक थीं, एक अनूदित। तमिल में ११६ पुस्तकें जिनमें ४७ मौलिक थीं और ६९ अनूदित। मलयालम में १८३ पुस्तकें थीं जिनमें १७८ मौलिक थीं और ५ अनूदित; गुजराती में ७८ पुस्तकें थीं जिनमें ७६ मौलिक थीं और २ अनूदित। मराठी की सभी ६५ पुस्तकें मौलिक थीं। पंजाबी की ७१ पुस्तकों में से ६५ मौलिक थीं और ६ अनूदित। इसके अतिरिक्त अन्य भाषाओं की पुस्तकों का अभी इस दृष्टि से विश्लेषण होना बाकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सर्वेक्षण से पता चलता है कि अन्य भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर की बहुत ही कम पुस्तकें उपलब्ध हैं और जो हैं भी उनमें से अधिकांश मानविकी विषयों की पुस्तकें हैं। विज्ञान और टैक्नालॉजी की पुस्तकें लगभग हैं ही नहीं।

इस अभाव का मुख्य कारण यह है कि विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों ने शिक्षा और परीक्षा का माध्यम अब तक भारतीय भाषाओं को घोषित नहीं किया है। माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक इन क्षेत्रों में पढ़ाई भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही होती है। इस स्तर पर सभी विषयों की पुस्तकें इन भाषाओं में उपलब्ध हैं। यदि शिक्षा और परीक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ बना दी जाती हैं तो विश्वविद्यालय स्तर पर भी मानविकी और समाजविज्ञानों में पाठ्य-पुस्तकों का अभाव नहीं रहेगा। समस्या केवल विज्ञान और टैक्नालॉजी सम्बन्धी विषयों के बारे में आयेगी।

हिन्दी पुस्तकों की स्थिति सन्तोषजनक

जहाँ तक हिन्दी का प्रश्न है इन प्रदर्शनियों से पता चलता है कि उसकी स्थिति अपेक्षाकृत कहीं अधिक संतोषजनक है। साढ़े-तीन हजार पुस्तकों में से लगभग १००० पुस्तकें विज्ञान की थीं और शेष मानविकी और समाजविज्ञानों की। विज्ञान में सबसे अधिक पुस्तकें आयुर्विज्ञान की थीं। उसके बाद कृषि, भूगोल और गणित का स्थान था। मानविकी और समाजविज्ञानों में सबसे अधिक पुस्तकें साहित्यालोचन पर थीं। इसके बाद शिक्षा, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान तथा इतिहास आदि पर पुस्तकें थीं। इससे पता चलता है कि हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों में मानविकी और विज्ञान की पुस्तकों में लगभग ४ और १ का अनुपात है। विश्वविद्यालय स्तर के उन सभी विषयों पर मानविकी और समाजविज्ञानों पर हिन्दी में पुस्तकें आमतौर पर उपलब्ध हैं, जो विषय हिन्दी-भाषा-भाषी क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी के माध्यम से पढ़ाये जाते हैं। इनमें से अधिकांश पुस्तकें विभिन्न शिक्षण-संस्थाओं में पाठ्य-पुस्तकों के रूप में चलती हैं पर अभी तक विश्वविद्यालयों के प्रकाशित पाठ्यक्रमों में इन पुस्तकों में से बहुत कम को स्थान मिला है। आमतौर पर जिन लेखकों ने इन विषयों में अंग्रेजी में पाठ्य-पुस्तकें लिखी हैं उन्होंने ही अपनी पुस्तकों के हिन्दी रूपान्तर भी किये हैं। यदि मानविकी और समाज-विज्ञानों के लिए हिन्दी-भाषी प्रदेशों के विश्वविद्यालय हिन्दी को शिक्षा और परीक्षा का अर्यि नवामाध्यम घोषित कर दें तो मानविकी और समाज-विज्ञानों में विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों का अभाव नहीं होगा क्योंकि इन विषयों के लिए हिन्दी में पर्याप्त लेखक और अनुवादक मौजूद हैं और प्रकाशक उनकी सहायता से बहुत जल्दी ऐसी पुस्तकें उपलब्ध करा सकते हैं। बशर्ते कि उनको इस बात का निश्चित पता हो कि उनकी पुस्तकें बिक जायेंगी।

एकरूपता

इन विषयों में तकनीकी शब्दावली का भी अभाव नहीं है। केवल एकरूपता की आवश्यकता है और यदि भारत सरकार द्वारा अनमोदित शब्दावली सभी लेखकों और अनुवादकों द्वारा प्रयुक्त की जाती है तो यह एकरूपता भी प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक यह है कि विश्वविद्यालय केवल उन्हीं पाठ्य-पुस्तकों को अपने पाठ्यक्रमों में स्थान दें जिनमें यह राष्ट्रीय शब्दावली प्रयुक्त की गयी है। भारत सरकार विज्ञान, इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, कृषि और मानविकी के स्नातक स्तर की लगभग सभी विषयों की शब्दावली प्रकाशित कर चुकी है। मानविकी और समाजविज्ञानों में भी जो पुस्तकें अब तक प्रकाशित हुई हैं उनको देखने से पता चलता है कि लगभग ढाई हजार पुस्तकों में से ५०० पुस्तकें ही ऐसी हैं जो विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों की सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती हैं। यदि प्रकाशक संघ विश्वविद्यालयों, राज्य-सरकारों और केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधियों की एक चयन समिति नियुक्त कर दे जो इन ढाई हजार पुस्तकों में से उपयुक्त प्रकार की पुस्तकों को छाँटे और पाठ्यक्रम की दृष्टि से इनमें विषय, भाषा, शब्दावली सम्बन्धी जो कमियाँ रह गयी हैं उनका अध्ययन करें। चयन समिति की सिफारिशों के अनुरूप यदि प्रकाशक अपनी पुस्तकों को सँवार और सुधारें तो निश्चित ही ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए बड़े पैमाने पर इस्तेमाल की जा सकती हैं। विकासशील देशों में पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशक आमतौर पर अपनी प्रकाशित पुस्तकों का स्तर ऊँचा रखने के लिए न केवल योग्य और अनुभवी लेखकों से पुस्तकें लिखवाते हैं वरन् वे अपने खर्चे पर योग्य सम्पादक भी रखते हैं। अमेरिका और रूस के प्रकाशक इस बारे में बहुत सचेत हैं कि उनके द्वारा निर्मित पाठ्य-पुस्तकों का जिन भाषाओं में भी अनुवाद हो उनसे उनकी ख्याति में कोई बट्टा न लगे और जिस वैज्ञानिक ढंग से वे इस कार्य को करते हैं वह सचमुच में अनुकरणीय है।

यदि पुस्तकों का चुनाव इस सुझाये गये ढंग से किया जाता है और उनको सँवारने-सुधारने सम्पादन कराने या दोबारा से लिखाने में अलग-अलग विश्वविद्यालयों के बोर्ड ऑव स्टडीज के विशेषज्ञों की समन्वित रूप से सहयोग और सहायता ली जाती है जिससे उन सभी के अनुभवों का पूरा उपयोग हो सके तो निश्चित रूप से जो ५००-६०० पुस्तकें चयन समिति द्वारा छाँटी जायेंगी, वे पाठ्य-सामग्री और बिक्री की दृष्टि से बहुत ही सफल सिद्ध हो सकती हैं। ऐसी पुस्तकों को औसत विद्यार्थी आसानी से प्राप्त कर सकें इसके लिए यह जरूरी है कि इनका विक्रय-मूल्य कम हो। यदि प्रकाशक वर्ग संगठित रूप से इस काम को करता है तो सरकार भी इस काम में आवश्यक अनुदान दे सकती है।

इसके लिए जरूरी है कि हिन्दी-भाषा-भाषी सभी प्रकाशक व्यक्तिगत स्तर को छोड़कर सामूहिक रूप से इस राष्ट्रीय कार्य में सहयोग करें। इससे अनेक लाभ होंगे। एक ओर जहाँ सामूहिक पूंजी प्राप्त होगी वहाँ दूसरी ओर इन पुस्तकों की बिक्री व्यापक पैमाने पर हो सकेगी। सरकार को भी इस सम्मिलित प्रयत्न में आर्थिक सहायता देने में कोई हिचक नहीं होगी।

विज्ञान और टैक्नालॉजी

जहाँ तक विज्ञान और टैक्नालॉजी का प्रश्न है इन क्षेत्रों में हिन्दी में अभी भी कुछ किया जाना बाकी है। जैसाकि मैंने बताया था कि आयुर्विज्ञान और कृषि को छोड़कर अन्य वैज्ञानिक विषयों में विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का लगभग अभाव ही है।

आयुर्विज्ञान में भी आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की बहुत कम पुस्तकें उपलब्ध हैं। कृषि में जो पुस्तकें पाई जाती हैं उनमें से बहुत कम ही उच्चकोटि की हैं। इस सर्वेक्षण से इस बात का पता चलता है कि भौतिकी, रसायन और गणित आदि पर अनूदित कुछ पुस्तकें मौजूद हैं, लेकिन इंजीनियरिंग और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में पुस्तकें लगभग नहीं हैं। विज्ञान में जिन विषयों की भी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है या मौलिक रचनाएँ लिखी गई हैं उनको लिखाते समय यह दृष्टि आमतौर पर नहीं रखी गई है कि एक विषय से सम्बन्धित सभी पुस्तकों का पूरा सैट हिन्दी में उपलब्ध हो सके। उदाहरण के लिए यदि हम स्नातकस्तर पर भौतिकी का माध्यम हिन्दी बनाना चाहते हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि उसकी उन सभी छः शाखाओं पर हिन्दी में पुस्तकें उपलब्ध हों जो विद्यार्थी को इस स्तर पर पढ़नी पड़ती हैं। पर आज स्थिति कुछ और ही है। विज्ञान के किसी भी विषय का हिन्दी में पूरा सैट उपलब्ध नहीं है। इसी लिए यदि कोई विश्वविद्यालय यह निर्णय करता है कि रसायन-विज्ञान की पढ़ाई हिन्दी के माध्यम द्वारा होगी तो आज वह इस स्थिति में नहीं है कि वह विद्यार्थियों के लिए इन सभी विषयों पर विषय-विशेषज्ञों की पुस्तकों का एक सैट भी स्वीकृत कर सके। इस दिशा में पहल केवल भारत सरकार के शब्दावली आयोग ने की है। उसने बनारस विश्वविद्यालय के सहयोग से स्नातक स्तर के लिए भौतिकी की सभी शाखाओं अर्थात् द्रव्यों के सामान्य गुण धर्म, ऊष्मा, प्रकाशिकी, ध्वनि-विज्ञान, विद्युत् और चुम्बकत्व पर बहुत कम कीमत की मौलिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं और इस बात का प्रयत्न किया है कि भौतिकी का यह सैट हिन्दी-भाषा-भाषी क्षेत्रों के सभी विश्वविद्यालयों में स्वीकृत हो जाय। रसायन विज्ञान, गणित, वनस्पति और प्राणिशास्त्र इनमें से किसी विषय के भी लिए पूरा सैट हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। इन विषयों की विश्वविद्यालयों में हिन्दी में पढ़ाई शुरू करने के लिए प्रत्येक विषय का कम-से-कम एक पूरा सैट प्रकाशित करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्रों में जो पुस्तकें आज प्रकाशकों ने प्रकाशित भी की हैं पिछले अनेक वर्षों के प्रयत्नों के बावजूद भी उनमें से अधिकांश उनके गोदामों में पड़ी हुई हैं यद्यपि वे हजार या दो हजार ही उन्होंने छपाई थीं। इसका कारण यह है कि इन विषयों में शिक्षा और परीक्षा का माध्यम हिन्दी को नहीं बनाया गया। यही कारण है कि प्रकाशक इस क्षेत्र में संदिग्ध दृष्टि लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

२०वीं सदी का यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है जो देश जाति-विज्ञान के क्षेत्र में उन्नत हैं वे ही आज सबसे अधिक समृद्ध और समर्थ हैं और उन्हीं देशों में विज्ञान और उद्योग मानव-समाज की सेवा में सबसे अधिक लगे हुए हैं। इस-लिए यदि हमारे देश को इस क्षेत्र में अन्य विकासशील देशों के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना है तो यह जरूरी है कि हम विज्ञान और टैक्नालॉजी सम्बन्धी विषयों पर विश्वविद्यालय स्तर की काफी पुस्तकें यथासम्भव शीघ्र निर्माण करें।

अनूदित ग्रन्थ

आने वाले कुछ वर्षों तक विद्यार्थियों को विज्ञान के क्षेत्र में अनूदित पुस्तकों से ही संतोष करना होगा अर्थात् जब तक विषय-विशेषज्ञ हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखना आरम्भ नहीं कर देते। इसके लिए यह आवश्यक है कि अनूदित पुस्तकें उच्चकोटि की हों। आजकल अलग-अलग विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों में अलग-अलग लेखकों की पुस्तकें निर्धारित करते हैं। सर्वेक्षण से पता चलता है कि एक ही विषय पर २०-३० लेखकों की पुस्तकें अलग-अलग विश्वविद्यालय में लगी हुई हैं। इनमें से आधा दर्जन लेखक ही ऐसे हैं जो अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। यदि हम सभी को विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में भी विश्व-विद्यालय स्तर पर हिन्दी को माध्यम बनाना है तो यह आवश्यक है कि विज्ञान में प्रत्येक विषय पर एक पूर्ण सैट कम-से-कम अवधि में तैयार कर दिया जाय। हिन्दी-भाषा-भाषी क्षेत्रों के जिन विश्वविद्यालयों में विज्ञान की विशिष्ट शाखाएँ सम्पन्न हैं उन्हीं के बोर्ड ऑव स्टडीज के सदस्यों को इस प्रकार के सैट के शीर्षकों को चयन कराने में सहायता ली जा सकती है और उन्हीं में इनके अनुवाद, सम्पादन और पुनरीक्षण के काम को बाँटा जा सकता है। यदि ऐसा किया गया तो निश्चित ही ये अनूदित पुस्तकें इन विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित हो जायेंगी और उनकी बिक्री के बारे में असंदिग्धता नहीं रहेगी। एक कार्यक्रम के अनुसार यदि व्यवस्थित ढंग से इस कार्य को किया जाय तो एक विषय पर एक पूर्ण सैट दो वर्ष में प्रकाशित किया जा सकता है। यह कोई नया विचार नहीं है। अमेरिका जैसे देश में अनेक स्तर के अनेक शिक्षकों के सम्मिलित प्रयत्नों से पाठ्य-पुस्तकें आमतौर पर तैयार की गई हैं। हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्रों को यह सौभाग्य प्राप्त है कि इस क्षेत्र में लगभग २७ विश्वविद्यालय स्थित हैं। विज्ञान के क्षेत्र में जो ७-८ विषय विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाये जाते हैं, यदि उनमें से प्रत्येक विषय को इस प्रकार तीन-तीन चार-चार विश्वविद्यालयों के बीच बाँट दिया जाय तो इन ८ विषयों की पुस्तकों के पूरे सैट एक वर्ष में प्राप्त हो सकते हैं। इसके बाद प्रत्येक विषय की अलग-अलग शाखाओं पर प्रसिद्ध लेखकों की चार-चार, पाँच-पाँच पुस्तकें अनूदित की जा सकती हैं। इस प्रकार ८-१० वर्षों में ही प्रत्येक विषय की प्रत्येक शाखा पर अलग-अलग लेखकों की कम-से-कम आधा दर्जन पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध कराई जा सकती हैं। इस संक्रान्तिकाल में अनु-वाद के कारण विषय-विशेषज्ञों को भाषा का समुचित ज्ञान प्राप्त हो जायेगा, तकनीकी शब्दावली उनके हाथ के नीचे से निकलकर निखर जायेगी तथा और परिष्कृत हो जायेगी और तब हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने की रुचि स्वयमेव जागृत होगी।

एक बार अपनी भाषा में जब मौलिक चिन्तन चल पड़ेगा तो विज्ञान के क्षेत्र में हाथ से काम करने वाले और दिमाग से सोचने वालों का वह सम्मिलन स्थापित होने में देर नहीं लगेगी जो ऊँचे और उप-योगी अनुसंधान के लिए आवश्यक होता है।

इस तरह हमारे देश में भी विज्ञान और औद्योगिक विकास को वही स्थान मिल जायेगा जो जापान ने पिछले २०-२५ वर्षों में प्राप्त किया है। उसने अपनी वार्षिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति व्यक्ति औसत आय १०० डालर से बढ़ाकर इन कुछ वर्षों में ६०० डालर कर ली है। इसका कारण वहाँ पर विज्ञान और उद्योग की उन्नति को बताते हैं। हमें भी यही करना होगा।

अनुवाद अधिकार

इन पुस्तकों के अनुवाद में दो मुख्य कठिनाइयाँ हैं—अनुवाद अधिकार मिलने में आवश्यकता से अधिक विलम्ब और योग्यतम अनुवादकों का अभाव।

शब्दावली आयोग ने लगभग डेढ़ हजार पुस्तकों के अनुवाद अधिकार विदेशी प्रकाशकों से लेने का प्रयत्न किया है। इनमें से अब तक लगभग ६०० पुस्तकों के अनुवाद अधिकार ही प्राप्त हो पाये हैं। इस क्षेत्र में हमारा अनुभव यह रहा है कि यदि १० पुस्तकों के अनुवाद अधिकार लेने के बारे में विदेशी प्रकाशक से पत्र-व्यवहार किया जाता है तो आमतौर पर केवल चार के अनुवाद अधिकार ही प्राप्त होते हैं और उनको भी प्राप्त करने में कम-से-कम एक वर्ष लग जाता है। व्यक्तिगत प्रकाशकों को इस क्षेत्र में विदेशी मुद्रा की कठिनाई का भी सामना करना पड़ता है। कुछ समय पहले हमारे शिक्षा राज्यमंत्री प्रो० शेरसिंह इस कठिनाई को दूर करने के लिए बर्न कनवेंशन देशों के सम्मेलन में गये थे और उसमें कुछ सफलता भी मिली। इसको और अधिक जल्दी से सुलझाने के लिए भारत सरकार बराबर प्रयत्नशील है। यदि प्रकाशक इस काम को अपने संघ के मार्फत सम्मिलित रूप में करते हैं तो अनुवाद अधिकार दिलाने के काम में भारत सरकार बहुत सहायता कर सकती है। इस बात की कोशिश की जा रही है कि अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में स्थित हमारे दूतावास अनुवाद अधिकारों को प्राप्त कराने का काम भी हाथ में लें जिससे अनुवाद अधिकार आमतौर पर तीन-चार महीने के अन्दर ही प्राप्त हो सकें।

योग्य अनुवादक

योग्य अनुवादकों का अभाव सचमुच बहुत बड़ी समस्या है। इसका कारण यह है कि हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्र के किसी भी विश्वविद्यालय ने अनुवाद को स्नातक या स्नातकोत्तर विषय के रूप में मान्यता प्रदान नहीं की है और न कहीं पर इसकी शिक्षा का ही प्रबन्ध है। दिल्ली विश्वविद्यालय में अनुवादकों के लिए एक वर्षीय पाठ्यक्रम चलता है और वह भी अभी तक यू० पी० एस० सी० द्वारा सरकारी नौकरियों के लिए मान्यता प्राप्त नहीं है। जब तक सभी विश्वविद्यालयों में इस प्रकार के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम नहीं चलाये जायेंगे तब तक बहुत बड़ी संख्या में योग्य अनुवादक उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। यूरोप के अनेक देशों में विश्वविद्यालयों में अनुवाद पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर स्तर के अनिवार्य अंग होते हैं। जब तक योग्य अनुवादक तैयार नहीं हो जाते तब तक अच्छे अनुवादकों को तैयार करने के लिए केवल एक ही मार्ग रह जाता है कि विश्वविद्यालयों में प्रसिद्ध विषय-विशेषज्ञों के साथ पुस्तकों का अनुवाद करने के लिए ऐसे व्यक्ति लगाए जायं जो विषय और भाषा दोनों के पारंगत हों। लेकिन आज तो ऐसे व्यक्ति भी बहुत कम मिलते हैं। इसलिए कुछ समय तक विषय और भाषा के एक-एक व्यक्ति को ऐसे लोगों के साथ लगाना होगा।

विषय-विशेषज्ञ तथा भाषा-विशेषज्ञ

विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में जो विषय-विशेषज्ञ भाषा को जानते भी हैं वे आमतौर पर न मौलिक पुस्तकें लिखते हैं और न अनुवाद कार्य करते हैं। इस प्रवृत्ति का कारण यह है कि रूस जैसे देशों के समान हमारे देश में अनुवाद और मौलिक लेखन को वह मान्यता प्राप्त नहीं है जो अनुसंधान को मिली हुई है। एक विज्ञानकर्मी उतने ही समय में चार-छः लघु प्रबन्ध लिख लेता है जितने समय में वह एक छोटी पुस्तक का अनुवाद करता है या मौलिक रूप में उसे लिखता है। शोध-प्रबन्धों के कारण उस विज्ञानकर्मी की न केवल विज्ञान जगत में प्रतिष्ठा हो जाती है वरन् इससे उसे आर्थिक लाभ भी प्राप्त होता है। यह दर्जा अनुवाद और मौलिक लेखन को भी मिलना चाहिए। विज्ञान और टैक्नालॉजी के क्षेत्र में पाठ्य-पुस्तकें इसलिए भी उपलब्ध नहीं हैं कि इस विषय के लेखक को उतनी आमदनी नहीं होती जितनी अन्य विषय की पाठ्य-पुस्तकों के लेखकों को होती है। यह बात फिर शिक्षा के माध्यम से जुड़ी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस में वैज्ञानिक विषयों की पाठ्य-पुस्तकों के अनुवाद का काम बड़े वैज्ञानिक ढंग से होता है। अनुवाद, संपादन और पुनरीक्षण का काम साथ-साथ चलता है। अनुवादक एक सप्ताह में जितना अनुवाद करता है उसको संपादक साथ-साथ उसी सप्ताह में देखता जाता है जिसका फल यह होता है कि अनुवादक सम्पादक के सुझावों, सुधारों और संशोधनों को आगे अनुवाद कार्य करते समय ध्यान में रखता है। अनुवादक और सम्पादक दोनों ही विषय और भाषा के विशेषज्ञ होते हैं। इस तरह अनुवाद और सम्पादन का काम लगभग साथ-साथ ही पूरा हो जाता है। इसके बाद पुनरीक्षण के लिए यह अनुवाद देश के एक प्रमुख विषय-विशेषज्ञ और एक भाषा-विशेषज्ञ को दिखाया जाता है। स्मरण रहे कि अनुवादक और संपादक दोनों ही आमतौर पर अपने यह काम अपने पेशे से बचे हुए समय में करते हैं।

पाण्डुलिपि निर्माण और प्रकाशन

शिल्प की दृष्टि से पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण का काम दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। अनुवाद अधिकार प्राप्त करने से लेकर पाण्डुलिपि तैयार करने का काम अर्थात् पाण्डुलिपि निर्माण और दूसरा पाण्डुलिपि प्रकाशन।

पाठ्य-पुस्तकें कोई भी प्रकाशित करे पाण्डुलिपि निर्माण करने का काम विश्वविद्यालयों और शिक्षण-संस्थाओं के विषय-विशेषज्ञ ही करते हैं। इसी तरह पाण्डुलिपि प्रकाशन का काम अंततोगत्वा प्रकाशक अथवा मुद्रकों को ही करना पड़ता है। भारत में जितनी अव्यवस्था पाण्डुलिपि निर्माण करने के क्षेत्र में है उतनी अव्यवस्था पाण्डुलिपि प्रकाशन के क्षेत्र में पायी जाती है। विश्वविद्यालय स्तर के विज्ञान की पाठ्य-पुस्तकों को प्रकाशित करना एक विशिष्ट शिल्प है जिसकी ओर प्रकाशकों का कम ध्यान गया है। इसका कारण यह है कि हमारे देश में प्रकाशन की विधिवत शिक्षा का कोई आयोजन नहीं है। यूरोप के अनेक देशों में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर प्रकाशन की शिक्षा अनेक विश्वविद्यालयों में उपलब्ध है। यही कारण है कि वहाँ पर सभी स्तरों की पुस्तकों में प्रकाशन की दृष्टि से वैज्ञानिक दृष्टि मौजूद रहती है। विश्वविद्यालय स्तर की जो साढ़े-तीन हजार पुस्तकें शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में रखी गई थीं, प्रकाशन की दृष्टि से उन सभी में बुनियादी एकरूपता का अभाव था। प्रकाशित पुस्तकों में कुछ बातों में एकरूपता जरूरी होती है और कुछ बातों में विविधता अच्छी लगती है। उदाहरण के लिए जितनी पाठ्य-पुस्तकें हमें प्राप्त हुईं उनके साइज अलग-अलग थे। ३००-४०० पृष्ठ की पुस्तकें डिमाई, रायल और क्राउन तीनों आकारों में छापी हुई थीं जबकि वे सभी आसानी और वैज्ञानिक दृष्टि से डिमाई में छापी जा सकती थीं। इनमें इस्तेमाल हुआ कागज अलग-अलग किस्म का था। अनेक पुस्तकों की जैकेट डिजाइनों से यह पता नहीं चलता था कि यह पाठ्य-पुस्तकें हैं। जब प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इन पुस्तकों को विज्ञान भवन की प्रदर्शनी में देखा तो अनायास ही उनके मुँह से निकल पड़ा कि "हिन्दी में पाठ्य-पुस्तकों की संख्या तो बहुत है किन्तु इनके मुख-पृष्ठ और जैकटों के डिजाइन आकर्षक नहीं हैं।"

जहाँ तक मुझे मालूम है प्रकाशकों ने पाठ्य-पुस्तकों के बाह्याकार के रूप में एकरूपता लाने के लिए कोई संगठित प्रयत्न नहीं किया है।

लागत और मूल्य

पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन का उद्देश्य यह होना चाहिए कि उसमें लागत कम-से-कम आये, मजबूती अधिक-से-अधिक हो, देखने में वह सुन्दर हो और इस्तेमाल करने में विद्यार्थी को कम-से-कम असुविधा हो। चित्र और कला-कार्य, पाठ्य-सामग्री को पढ़ने में सहायक हो और सभी पुस्तकों में समान शब्दावली इस्तेमाल की गयी हो।

प्रकाशक अपने मुनाफे का अनुपात कम करके कुछ सीमा तक विक्रय मूल्य कम कर ही सकते हैं किन्तु लागत के कुछ मद ऐसे हैं जिन पर बिना किसी के लाभ को हानि पहुँचाए खर्च कम किया जा सकता है। लागत की मदों में कागज एक महत्वपूर्ण मद है। जिन देशों में कागज-उद्योग अत्यधिक विकसित है वहाँ पाठ्य-पुस्तकों के लिए विशेष प्रकार के कागज का निर्माण किया जाता है। यह कागज जहाँ अन्य कागजों की अपेक्षा अधिक मजबूत होता है वहाँ यह सस्ता भी होता है। पाठ्य-पुस्तकों के कागज का रंग

[redacted]
हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा होना चाहिए कि जिसे पढ़ते समय परावर्त्त प्रकाश (रिफलेक्टिड लाइट) कम-से-कम हो, यानी आँखों पर कम-से-कम जोर पड़े। इन बातों को ध्यान में रखते हुए जर्मन और अमेरिका में पाठ्य-पुस्तकों का कागज आम-तौर पर बहुत सफेद नहीं होता। हमारे देश में यदि पाठ्य-पुस्तकों के योग्य इसी प्रकार का कागज तैयार किया जाय और प्रत्येक कागज-मिल के लिए यह अनिवार्य कर दिया जाय कि वह अपनी कुल उत्पादन-क्षमता का १० प्रतिशत कागज पाठ्य-पुस्तकों का कागज तैयार करेगी। इसके साथ ही इस कागज पर केन्द्रीय और प्रदेशीय दो कर लगाए जाते हैं और जो आबकारी कर इस पर लगते हैं उनसे भी इसे मुक्त कर दिया जाय तो पाठ्य-पुस्तकों के लिए कागज आज के बाजार भाव से २५ से ५० प्रतिशत कम मूल्य पर मिल सकेगा। यही बात जिल्द के गत्ते और मुखपृष्ठ के कागज और कपड़ा (बाइंडिंग क्लाथ) के बारे में लागू होती है। पाठ्य-पुस्तकों के ब्लाकों के लिए जिंकशीट भी कंट्रोल दरों पर प्राप्त करवाई जा सकती है। इन पाठ्य-पुस्तकों के प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन की रियायती दरें भी प्राप्त की जा सकती हैं। लागत को कम करने के लिए और पुस्तकों को आकर्षक बनाने के लिए नयी-नयी विधियाँ और तकनीक विकासशील देशों में उपलब्ध हैं उसके लिए प्रकाशकों का संघ अथवा सरकार समय-समय पर विचार-गोष्ठियाँ, वादविवाद, वर्कशाप आदि के द्वारा प्रकाशन के विभिन्न अंगों पर आधुनिकतम सूचनाएँ उपलब्ध करा सकते हैं।

विज्ञान और टैक्नालॉजी की पुस्तकों का मुद्रण भी एक विशिष्ट शिल्प है। विज्ञान के संकेतों, चिह्नों और सूत्रों के लिए विशेष प्रकार के टाइप की आवश्यकता पड़ती है जो आमतौर पर मामूली प्रेसों में उपलब्ध नहीं होते। कुछ ऐसे भी टाइप हैं जो देश में उपलब्ध नहीं हैं। अभी हाल में भौतिकी की एक ३२ पृष्ठ की पुस्तक में इस्तेमाल होने वाले संकेतों के टाइप देश-भर में उपलब्ध नहीं हो सके और उसके लिए टाइप के स्थानों पर ब्लाकों का इस्तेमाल करना पड़ा। इसके लिए अनुसंधान की आवश्यकता है जिससे उन सब टाइपों के मैट्रीसेज की एक सीरीज विकसित की जा सके जो आमतौर पर विज्ञान और टैक्नालॉजी की पुस्तकों में प्रयुक्त होते हैं।

पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण के लिए अनेक देशों से कागज, मुद्रण-सामग्री, मशीन आदि अनुमान और ऋण के आधार पर प्राप्त की जा सकती हैं। विशेष रूप से यूनेस्को की सहायता से इंटरनेशनल बैंक फार रीकंस्ट्रक्शन एण्ड डवलपमेंट से पाठ्य-पुस्तकों की लागत के विभिन्न मदों के लिए ऋण लिया जा सकता है।

महान् और विराट कार्य

अभी हाल में मुझे ईरान जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। जहाँ तक साधनों और प्रगति का सम्बन्ध है, ईरान भारत की अपेक्षा बहुत पिछड़ा हुआ देश कहा जा सकता है। सिलाई की मशीनें, तेल के इंजन और न जाने कितनी ही चीजें वह भारत से ही खरीदता है। फिर भी काफी वर्षों से विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा और परीक्षा का माध्यम वहाँ पर फारसी ही है। हमारे देश में तकनीकी शब्दावली बनाने का जो महान और विराट कार्य हुआ है वह किसी भी विकासमान देश में नहीं हुआ है। लेकिन हम केवल अभी शब्दावली का ही निर्माण कर पाये हैं. उसे उपयोग में लाकर विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकों का लिखा जाना अभी बाकी है। किन्तु ईरान में फारसी पारिभाषिक शब्दावली के बिना ही विश्वविद्यालय स्तर पर पुस्तकें लिखी गयी हैं जिनमें तकनीकी शब्दावली अंग्रेजी और फ्रेंच भाषा की इस्तेमाल की गयी हैं। इसी प्रकार इजरायल ने हजारों वर्षों पुरानी मृत भाषा हिब्रू को इतना सजीव बना दिया है और अब वह इतनी सक्षम है कि आज उसमें विज्ञान, टैक्नालॉजी, दर्शन और अन्य विषयों के आधुनिकतम विचारों को प्रकट करने की क्षमता है।

कोई देश केवल साधनों से ही महान नहीं बनता। वहाँ के निवासियों की दृढ़ इच्छा-शक्ति, कुछ कर गुजरने का साहस और राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना ही उसे महान बनाती है। यह हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है कि आज देश में एक ऐसा वातावरण-निर्माण हो गया है जो हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में अत्यधिक सहायक हो सकता है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पत्रिका

आपको यदा-कदा भेजी जाती रही है किन्तु इसे आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिए कुछ ऐसी व्यवस्था हो रही है कि यह पत्रिका केवल इसके वार्षिक ग्राहकों को ही भेजी जाए।

यदि आप

इस पत्रिका द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली जानकारी को अपने लिए उपयोगी समझते हैं तो इसका वार्षिक मूल्य ६ रुपये निम्नलिखित पते पर भेजकर इसके वार्षिक ग्राहक बनने की कृपा करें।

अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के सदस्यों से निवेदन है कि वे इसके लिए वार्षिक मूल्य न भेजें। इस संस्था के सदस्यों के लिए इस पत्रिका का निःशुल्क भेजा जाना जारी रहेगा।

व्यवस्थापक 'हिन्दी प्रकाशक'
अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर का हम चाहें तो पूरा लाभ उठा सकते हैं। यदि प्रकाशक बन्धु अपने तुरन्त लाभ की दृष्टि को छोड़कर विश्वविद्यालयों, सरकारों और अन्य सम्बन्धित संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ इस महान् कार्य में सहचिंतन करें तो जिन समस्याओं की ओर संक्षेप में मैंने ध्यान दिलाया है उनको हम सुलझा सकेंगे और बड़े थोड़े समय में ही बहुत अधिक पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध हो सकती हैं।

क्या ऐसा सम्भव नहीं हो सकता कि विश्व-विद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तक के निर्माण और प्रकाशन के लिए सभी प्रकाशक अपने व्यक्तित्व को भूलकर एक ऐसा सम्मिलित और संयुक्त मोर्चा बनाये जिसमें प्रत्येक प्रकाशक अपनी स्थिति के अनुसार पूंजी लगाने और अपने साधनों के अनुसार पुस्तकों का प्रचार करने में हाथ बँटाये। सभी पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण और उनका मुद्रण, उनकी प्रचार सामग्री तथा विज्ञापन उनकी एक केन्द्रीय संस्था के द्वारा हो।

ऐसा करने पर लागत की अलग-अलग मदों पर होने वाला खर्चा कम-से-कम रह जायेगा, पाठ्य-पुस्तकों में सभी दृष्टियों से एकरूपता आयेगी। वे केवल प्रामाणिक ही नहीं होगी, विश्वविद्याय, राज्य सरकारें और केन्द्रीय सरकार भी उनको बिना किसी के आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान कर सकेंगी। इसके साथ ही किसी प्रकाशक को यह भी अनुभूति नहीं होगी कि किसी सरकार अथवा विश्व-विद्यालय ने किसी प्रकाशक के साथ पक्षपात किया है।

यह बात इस संदर्भ में और भी आवश्यक है कि जब कि केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण के लिए करोड़ों रुपये की आर्थिक सहायता देने की बात सोच रही है। यदि प्रकाशक पाठ्य-पुस्तक निर्माण और प्रकाशन की एक ऐसी केन्द्रीय व्यवस्था कायम कर लेते हैं तो वह अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी मार्गदर्शन का काम कर सकती है। यह व्यवस्था अन्य भाषाओं में हिन्दी की प्रकाशित पुस्तकों के अनुवाद और प्रकाशन का काम उन भाषाओं के प्रकाशकों के सहयोग से बहुत ही कम लागत में बहुत ही तेजी के साथ कर सकती है।

गांधी-शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में प्रकाशित

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली की

१९६८ की पहली भेंट

गांधी व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव के बाद का दूसरा खण्ड

'गांधी : संस्मरण और विचार'

(गांधीजी द्वारा लिखे संस्मरणों तथा उनके चुने हुए विचारों का ऐतिहासिक संग्रह)

बड़े आकार के ६०० पृष्ठ : कपड़े की जिल्द

मूल्य : तीस रुपये

३० जनवरी को प्रकाशित हो गया। अपनी प्रति शीघ्र मँगा लीजिए

बहुत थोड़ी प्रतियाँ छपी हैं : माँग बहुत है।

सस्ता साहित्य मण्डल

कनॉट सर्कस, नई दिल्ली

शाखा : जीरो रोड, इलाहाबाद

फोन : ४०५०५ फोन : ५०१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रकाशन

१. **दीवार ढह गई**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल ८.००
(सामाजिक उपन्यास)

२. **वचन का मूल्य**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल ४.००
(ऐतिहासिक उपन्यास)

३. **लहर और किनारा**
—श्यामलाल 'मधुप' ६.००
(सामाजिक उपन्यास)

४. **सिन्दूर की लाज**
—शंकर सुल्तानपुरी ६.००

५. **तीन शहर तीन पहर**
—पुरुषोत्तमदास गौड़ 'कोमल' ३.५०

६. **अपना कौन ?**
—देशराजसिंह भाटी ५.००
(पारिवारिक समस्याओं पर आधारित सामाजिक उपन्यास)

७. **कल्प वृक्ष**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल ५.००
(सामाजिक उपन्यास)

८. **भाँग की पकौड़ी**
—कन्हैयालाल 'मयूर' ५.००
(हास्योपन्यास)

९. **कलाकार संगम**
—श्यामलाल 'मधुप' ५.००
(सिने अभिनेताओं की जीवनियाँ)

हिन्दी सेवा सदन
कच्ची सड़क, मथुरा

पॉकेट बुक्स की शृंखला में एक नवीन कड़ी

मधुर पॉकेट बुक्स

प्रथम सैट में निम्न छः रचनाएँ प्रस्तुत करती हैं–

- **लहर और किनारा**
—श्यामलाल 'मधुप'
(हृदयस्पर्शी सामाजिक उपन्यास)
- **प्यार का खून**
—शत्रुघ्नलाल शुक्ल
(अत्यन्त रोचक और मादक उपन्यास)
- **अपना कौन ?**
—देशराजसिंह भाटी
(पारिवारिक समस्याओं पर आधारित उपन्यास)
- **सिन्दूर की लाज**
—शंकर 'सुल्तानपुरी'
(प्रेम और कर्त्तव्य का संघर्ष–उपन्यास रूप में)
- **रंगीन दुनिया**
—श्यामलाल 'मधुप'
(सिनेमा-प्रेमियों के लिए बहुमूल्य उपहार)
- **भांग की पकौड़ी**
—कन्हैयालाल 'मयूर'
(हास्य मदिरा उपन्यास रूपी प्याले में)

देखने में मधुर पढ़ने में मधुर
हर दृष्टि से मधुर
पढ़िये

मधुर पॉकेट बुक्स
कच्ची सड़क, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ ने हिन्दी में विश्व-विद्यालय स्तर की पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में आयोजित उपकुलपति सम्मेलन के अवसर पर शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार के समक्ष निम्नलिखित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया—

(१) भारत सरकार की यह घोषित नीति और योजना कि देश की क्षेत्रीय भाषाओं में उच्चतर स्तर की शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकें तैयार करने में तीव्रता लायी जाय तथा इस कार्य में सहायता की जाय, स्वागत योग्य है, विशेष रूप से हिन्दी प्रकाशकों के लिए। इससे न केवल वैज्ञानिक विषयों के सन्दर्भ में हमारी भाषाओं की क्षमता बढ़ेगी बल्कि बहुसंख्यक जनता के लिए संश्लिष्ट आधुनिक शिक्षा के द्वार खुल जाएँगे क्योंकि माध्यम अंग्रेज़ी होने के कारण जनता के लिए यह लक्ष्य सुलभ नहीं रहा है। यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय पत्राचार, राष्ट्रीय शिक्षा और राष्ट्रीय प्रशासन के माध्यम के रूप में देश अनिश्चित काल तक अंग्रेज़ी जारी नहीं रख सकता। अपनी भाषाओं और क्षेत्रीय साहित्य को, खासकर हिन्दी भाषा और साहित्य को इस हद तक विकसित करना होगा कि वे अंग्रेजी का स्थान आसानी से ले सकें। भारत सरकार ने इस दिशा में जो प्रयास शुरू किया है, उससे उन लोगों को अत्यधिक आवश्यकता की भावना महसूस हो रही है जो इस लक्ष्य की पूर्त्ति के लिए सच्चे मन से प्रयास करना चाहते हैं।

(२) वस्तुतः यह राष्ट्रीय उद्यम है। हिन्दी के माध्यम से विज्ञान तथा विज्ञानेतर विषयों में प्रचुर परिमाण में ठोस साहित्य का निर्माण करना वांछनीय है, यद्यपि इस समय इस तरह की बात उठाने का कोई न्यायोचित आधार नहीं है। वास्तव में यह राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति होगी और इससे मांग बढ़ने की सम्भावना होगी। यदि आर्थिक दृष्टि से मांग हुई होती तो आवश्यक साहित्य का निर्माण हो गया होता जैसा कि अन्यान्य क्षेत्रों में होता है।

(३) ज्ञात हुआ है कि बजट में इस कार्य के लिए प्रचुर धनराशि आवंटित की गयी है। पता चला है कि हिन्दी-भाषी राज्यों के विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संस्थाओं तथा हिन्दी क्षेत्र के प्रशासकों से अनुरोध किया जा रहा है कि हिन्दी में उच्चतर वैज्ञानिक स्तर की पुस्तकें काफी बड़ी संख्या में प्रकाशित करने के लिए रूपरेखा (ब्लूप्रिंट) तैयार करें। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस उद्देश्य की प्राप्ति में प्रकाशन-उद्योग जो महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है, उसको अच्छी तरह समझा नहीं जा रहा है क्योंकि अभी तक इस कार्य में समुचित सहायता के लिए प्रकाशकों से कुछ कहा तक नहीं गया है।

(४) ऐसा प्रतीत होता है और ऐसा अनुमान भी है कि विद्वानों की संस्थाएं न केवल ऐसी ग्रन्थ-सूची ही तैयार कर सकती हैं जो जल्द से जल्द प्रकाशित की जा सकें बल्कि वे स्वयं प्रकाशक भी बन सकती हैं अथवा निजी प्रकाशन संस्था भी कायम कर सकती हैं। इस तरह का सोचना ग़लत ही नहीं, खतरनाक भी होगा। हम लोग देख चुके हैं कि अकादमियों, ट्रस्टों, कमीशनों और निदेशालयों के प्रकाशन-सम्बन्धी क्रियाकलाप में कितने अधिक राष्ट्रीय धन की बर्बादी होती है। इसका कोई ठोस परिणाम नहीं निकलता। हाँ, फाइलों में सन्तोष प्रकट कर दिया जाता है। हम यहाँ ऐसी सरकारी प्रकाशन परिषदों का जिक्र नहीं कर रहे हैं जो शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकों के बाज़ार पर एकाधिपत्य स्थापित करने की क्षमता रखती हैं और इस प्रकार अपनी सफलता प्रदर्शित करती हैं। जिस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करने की बात हम कह रहे हैं, वास्तव में उस प्रकार के प्रकाशन की खपत के लिए बाज़ार अभी है ही नहीं।

(५) प्रकाशन केवल नियोजन ही नहीं है कि क्या तैयार किया जाय या क्या छापा जाय। प्रकाशन का क्षेत्र नियोजन से कहीं विस्तृत है। यह श्रमसाध्य कार्य है खास कर अपने देश के लिए जहाँ विकास के वर्तमान स्तर पर भी निरक्षरता इतनी ज्यादा है तथा क्रयशक्ति कम है। हम उस पुस्तक को प्रकाशित हो गई नहीं मानते जो छप गई और जिल्द भी बँध गई पर पाठकों तक पहुँच नहीं सकी। इससे उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती। प्रकाशन का उद्देश्य है कि किताब की ज़रूरत जिसे हो और जो खरीदना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे, वह आसानी से खरीद सके। प्रकाशन का संचालन शुरू से अन्त तक बहुत सोच-समझकर किया जाना चाहिए। इसमें खतरा बना रहता है। यदि प्रकाशन सफल नहीं हुआ तो इसका दूसरा विकल्प पूर्ण विफलता है। प्रकाशन का मानक ऊँचा रखना होगा और मूल्य कम, ताकि अन्ततः मूल्य ऐसा हो कि बिक्री में दिक्कत पैदा न हो। फिर भी मूल्य ऐसा निर्धारित हो कि सारा खर्च निकलने के बाद प्रकाशक को लाभ अवश्य हो। प्रकाशकों को इस क्षेत्र की जो जानकारी (know how) है और इस क्षेत्र में उन्होंने जो दक्षता प्राप्त की है, उसकी उपेक्षा न की जाय। विद्वान तो पुस्तक लिखते हैं किन्तु छापने का काम प्रकाशक करते हैं।

(६) हिन्दी के प्रकाशक पूरी निष्ठा से कार्यों में सहयोग करने को तैयार हैं। वे उच्चतर शिक्षा के स्तर की पुस्तकें तैयार कराने का उत्तरदायित्व वहन करने को प्रस्तुत हैं। कर्त्तव्यपरायण प्रकाशक अत्यन्त कठिन अवस्थाओं में बहुत ही उत्तम काम कर रहे हैं। प्रकाशकों के पास प्रकाशन के जो आवश्यक उपकरण हैं, उनका उपयोग राष्ट्रीय कार्य के के लिए वे करना भी चाहते हैं बशर्त्ते सरकार उसे स्वीकारे। अंग्रेज़ी की जगह धीरे-धीरे हिन्दी-पुस्तकों को प्रतिष्ठित करने के लिए प्रकाशक अत्यन्त तत्पर हैं। सन् १९४७ से प्रकाशन उद्योग आधुनिक हो गया है और इस समय यह एक सुसंघटित व्यापार है।

(७) प्रकाशन का पहला पहलू है लेखकों से मूल या अनुवाद रूप में प्राप्त पाण्डुलिपियों का संशोधनादि। हम महसूस करते हैं कि उच्चतर शैक्षिक स्तर की पुस्तकें तैयार कराने की योजना उन अभिकरणों पर छोड़ देनी चाहिए जिनकी नियुक्ति संघ या राज्य सरकारें करें, पाण्डुलिपियों का संशोधन हो जाने पर तो शेष काम प्रकाशकों पर छोड़ना ही चाहिए।

(८) भारत सरकार या राज्य सरकारों अथवा विश्वविद्यालयों पर पाण्डुलिपियाँ तैयार करने, अनुवाद कराने और उनका संशोधन-परिवर्धन करने का उत्तरदायित्व सौंपने के बाद पाण्डुलिपियाँ प्रकाशित करने के लिए प्रकाशकों को सौंपी जानी चाहिए। इसके लिए प्रकाशकों से दस प्रतिशत रायल्टी लेनी चाहिए। यह प्रथा नेशनल बुक ट्रस्ट और साहित्य अकादमी में प्रचलित है। इन दोनों संस्थाओं की अधिकांश पुस्तकें गैरसरकारी प्रकाशकों के सहयोग से दस प्रतिशत रायल्टी पर छापी गयी हैं। पुस्तकों की पाण्डुलिपियों का अन्तिम संशोधन आदि अकादमी और ट्रस्ट को ही करना पड़ा है।

(९) पाण्डुलिपियाँ तैयार करने वाले अधिकारियों और प्रकाशकों के बीच जिस समझौते पर हस्ताक्षर हों, उसमें कुछ शर्त्तें रखी जायँ। एक शर्त्त यह होनी चाहिए कि प्रकाशित होनेवाली पुस्तक की कम से कम एक-तिहाई प्रतियाँ प्रकाशित मूल्य पर २५ प्रतिशत छूट के साथ अधिकारियों द्वारा खरीद लेनी चाहिए। सरकार द्वारा घोषित योजना में इस प्रकार की शर्त्त की ज़रूरत है। इस प्रकार की पुस्तकें छापने के लिए करोड़ों रुपये आवंटित करने के लिए सरकार आगे नहीं आती यदि ये पुस्तकें हिन्दी में सामान्य रूप में प्रकाशित की जातीं। योजना में यह तथ्य निरूपित है कि ऐसी पुस्तकें हिन्दी में छापी नहीं जातीं क्योंकि ऐसी पुस्तकों की सम्प्रति मांग नहीं है। हम प्रकाशकगण यह खतरा मोल लेने को तैयार हैं कि शेष दो-तिहाई पुस्तकों को बेचें यह जानते हुए कि अभी इस प्रकार की पुस्तकों की ज़ोरदार माँग नहीं है।

(१०) नियोजन स्तर से ही पाण्डुलिपियाँ तैयार करने वाले अधिकरणों और हिन्दी प्रकाशकों के सहयोगी प्रतिनिधियों के बीच तर्क-वितर्क चल रहा है, किन्तु यह तर्क-वितर्क प्रकाशकों के पक्ष में है। हम लोगों ने कार्य के आचरण से देख लिया है कि जब किसी प्रकाशित होनेवाली पुस्तक की प्रतियों के बारे में निर्णय करना होता है तो सरकारी प्रकाशनाधिकारी ग़लत निर्णय कर बैठते हैं। हम लोगों ने देखा है कि पुस्तक की हज़ारों प्रतियाँ छापी गयीं किन्तु एक हज़ार से अधिक प्रतियों की बिक्री सम्भव नहीं हुई।

(११) यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि सरकार एक-तिहाई प्रतियाँ खरीदकर क्या करेगी। यही प्रश्न प्रकाशकों के साथ भी उठता है। इसलिए यह सिफ़ारिश की जा सकती है कि भारत सरकार तथा राज्य सरकारें भविष्य में पुस्तकालयों को धन देने के बजाय इस योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकें ही प्रदान करें। इस प्रकार हिन्दी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें हिन्दी-भाषी क्षेत्र से बाहर अधिक वितरित नहीं की जा सकतीं। दो-तिहाई पुस्तकों का स्टाक बेचना प्रकाशकों के लिए एक समस्या बन जायेगी। यह भी प्रकाशकों के लिए खतरा ही मोल लेना है। बिक्री बाज़ार का भविष्य अच्छा नहीं है, यह जानते हुए भी प्रकाशकगण हिन्दी में विश्वविद्यालयीय स्तर की पुस्तकें छापने को उत्सुक हैं। प्रकाशकों को इस बात की आशा है कि वे अपनी पुस्तकों के लिए बाज़ार खोज निकालेंगे तथा उन क्षेत्रों में बिक्री कर लेंगे जहाँ सरकार द्वारा पुस्तकों की निःशुल्क आपूर्ति नहीं होती। यदि प्रकाशक-समाज के प्रतिनिधियों को ऐसे अभिकरणों के साथ सहयोजित किया जाय तो प्रकाशक अपने अनुभव के आधार पर यह सलाह दे सकता है कि किस पुस्तक की कितनी प्रतियाँ छापनी चाहिए।

(१२) भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने अपने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और पारिभाषिक आयोग में प्रकाशकों की सहायता से हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित करने की योजनाएँ बनायी हैं। किन्तु दोनों ही योजनाएँ ठीक से नहीं चल पा रही हैं। इसका कारण यह है कि अधिकारी-वर्ग प्रकाशकों का सहयोग प्राप्त करने में असफल रहे, क्यों कि सरकार और प्रकाशकों के बीच होने वाले अनुबन्धों में कुछ ऐसी ग़लत शर्तें रख दी जाती हैं जिनसे सरकारी अधिकारी हटना नहीं चाहते। उदाहरणस्वरूप—केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की योजना है कि एक पुस्तक की कम से कम तीन हज़ार प्रतियाँ छापी जायँ। यद्यपि निदेशालय एक-तिहाई प्रतियाँ ही लागत के ढाई या तीन गुना बिक्री मूल्य पर खरीदता है। इससे प्रकाशकों को भय बना रहता है (जो ठीक ही है) कि शेष दो हज़ार प्रतियाँ निश्चित अवधि तक बेच पाना उनके लिए सम्भव नहीं है। समझौते की एक शर्त यह भी है कि पुस्तक का मूल्य लागत खर्च से ढाई और तीन गुने से अधिक न हो। प्रकाशकों को यह शर्त मंजूर नहीं है। इसके अलावा केन्द्रीय निदेशालय और केन्द्रीय पारिभाषिक शब्दावली आयोग अनुवाद तथा संशोधनादि का खर्च लागत खर्च में शामिल नहीं करते बल्कि उस खर्च को पुस्तक प्रकाशित हो जाने पर बिक्री मूल्य निश्चित करते समय प्रतियों पर जोड़ देते हैं। इससे पुस्तक का बिक्री मूल्य लागत खर्च से लगभग दूना ही हो पाता है। इस प्रकार का हिसाब काल्पनिक और अत्यधिक अयथार्थ ही होता है। और तो और, राज्य सरकारें भी, जो प्रकाशकों से अपनी शिक्षा संस्थाओं में प्रयोग के लिए पाठ्यपुस्तकें मन्जूर करती हैं, लागत खर्च से कम से कम ढाई गुना मूल्य निर्धारित करती हैं। इस प्रकार की पाठ्यपुस्तकें हजारों की संख्या में छपती हैं इसलिए मूल्य का यह फार्मूला प्रकाशकों को स्वीकार्य हो जाता है। किन्तु ऐसी पुस्तकों के मूल्य के बारे में यह फार्मूला स्वीकार करना सम्भव नहीं होगा जिनकी माँग सीमित या नगण्य हो।

(१३) इस योजना के अन्तर्गत जो पुस्तकें प्रकाशकों की मदद से निकाली जायँ, उनका मूल्य लागत खर्च से तिगुना होना चाहिए। सभी उन्नतिशील देशों में ऐसी पुस्तकों का मूल्य, जिनकी प्रसारण-संख्या एक से तीन हजार के बीच होती है, कम से कम चौगुना से पँच-गुना तक रखा जाता है। इससे होता यह है कि उन देशों के प्रकाशक सेवा करने में समर्थ रहते हैं।

(१४) लागत खर्च के बुनियादी तथ्य, जिनके आधार पर पुस्तक का बिक्री मूल्य निर्धारित करना पड़ता है, इस प्रकार हैं :—

(क) मूल पुस्तक और आवरण के लिए कागज़, (ख) मूल पुस्तक और आवरण की कम्पोजिंग और मुद्रण, (ग) प्रूफ-संशोधन, (घ) आवरणपृष्ठ की डिजाइन अथवा पुस्तक के भीतरी चित्रों की व्यवस्था, (ङ) पुस्तक के भीतर या आवरण-पृष्ठ के लिए ब्लाक या प्लेट और (च) जिल्द-बन्दी।

अनुवाद या संशोधन-परिवर्धन में जो खर्च बैठता है, उसे लागत खर्च में शामिल नहीं किया जाता क्योंकि उस खर्च को बिक्री मूल्य पर दस प्रतिशत रायल्टी के द्वारा प्रकाशकों से वसूला जाता है।

(१५) पुस्तकों की मूल्य-समस्या पर विचार करने के लिए यूनेस्को ने कई एक महत्वपूर्ण विचारगोष्ठियाँ कीं। यह एक विचारणीय मुद्दा है क्योंकि मूल्य के फार्मूले पर ही प्रकाशक का अस्तित्व निर्भर है। भारत में हिन्दी और अंग्रेजी के प्रकाशक आमतौर पर लागत खर्च से चार से साढ़े चार गुने तक और कभी कभी पाँच गुने तक पुस्तकों का मूल्य निश्चित करते हैं। मूल्य निर्धारित करते समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक की बिक्री की अवधि का ध्यान भी रखना होता है। अतएव योजनान्तर्गत प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के लिए लागत खर्च से तिगुना मूल्य की माँग न्यायोचित है। इस प्रकार मूल्य का अनुमान निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर किया जाता है :

(क) कागज़, छपाई, जिल्दबन्दी, डिजाइन और ब्लाकों का खर्च	३३.३३
(ख) व्यापारिक छूट	२५.००
(ग) रायल्टी	१०.००
(घ) प्रचार	२.००
(ङ) प्रकाशक का प्रशासकीय व्यय	२०.००
(च) प्रकाशक की लाभ सीमा	९.६७
	१००.००

यहाँ प्रकाशक की लाभ-सीमा बहुत ही कम है।

(१६) प्रकाशक के प्रशासकीय व्यय का हिसाब एक ऐसा तथ्य है जिसे अधिकारी न समझ पाते हैं, न इसका ख्याल रखते हैं। प्रशासन व्यय के अन्तर्गत पैकिंग, रेलभाड़ा, गोदाम का भाड़ा, व्यवस्था-व्यय, पूंजी पर ब्याज, थोक विक्रेताओं को दिया जाने वाला अतिरिक्त कमीशन सम्मिलित हैं। अन्य उद्योगों में यह कम से कम ३३ प्रतिशत होता है जहाँ पूंजी का विनियोजन जल्दी-जल्दी होता है। फिर भी प्रशासन के अन्तर्गत जो खर्च है वह स्पष्ट है, और प्रकाशक के खर्चों में उसका अनुपात ज्यादा है, फिर भी प्रकाशक केवल खतरा मोल लेकर ही उसका ख्याल नहीं करता। प्रकाशन की समस्त विधियों को पूरा करने में इतना समय और धन लगाना पड़ता है कि प्रकाशक को 'अपने प्रशासन व्यय का' ख्याल रखना पड़ता है। हमारी जानकारी के अनुसार हिन्दी तथा अन्यान्य भाषाओं के प्रकाशकों का व्यय २६ प्रतिशत से भी अधिक है। फिर भी हम इस मद में २० प्रतिशत की ही माँग करते हैं क्योंकि हमारा अनुमान है कि अधिकारी छपने वाली पुस्तकों की एक-तिहाई पुस्तकें खरीदकर हमारे अधिक खर्चों को कम करने में मदद करेंगे।

(१७) उपर्युक्त फार्मूले में व्यापारिक छूट की दर २५ प्रतिशत बताई गई है। इसी दर पर सरकार के हाथ प्रतियाँ बेची जायँगी। यदि कोई प्रकाशक कभी इस स्थिति में अपने को पाता है कि दो-तिहाई स्टाक लेकर या उसका अंश लेकर फँस गया है तो उसको माल निकालने के लिए अपेक्षाकृत अधिक व्यापारिक छूट देनी होगी। इस प्रकार उसे अपनी लाभ सीमा में कटौती करनी होगी और वह कटौती भी अन्य खर्चों के बावजूद करनी होगी। यदि ३० प्रतिशत की छूट देकर अपनी पुस्तकें बेचने के लिए उसे मजबूर होना पड़ा तो उसकी लाभ—सीमा घटकर लगभग ५ प्रतिशत रह जायेगी। फिर भी प्रकाशक इस योजना में भाग लेना चाहते हैं क्योंकि अधिकारी प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की एक-तिहाई प्रतियाँ खरीदकर प्रकाशकों का खतरा कम कर देंगे।

(१८) अनुभव से हमें पता है कि उत्पादन-व्यय से तिगुना पुस्तक का मूल्य निर्धारित करने के बारे में अधिकारियों के दिमाग में उलझन है। भारत सरकार के एक उच्चाधिकारी ने, जिसके जिम्मे प्रकाशकों के साथ पुस्तक-प्रकाशन के बारे में समझौता करने का भार है, इस प्रकार का तर्क किया। उस उच्चाधिकारी ने कहा कि मान लीजिये कि एक पुस्तक का उत्पादन-व्यय तीन रुपये पड़ता है। तीन हजार प्रतियाँ छापी गयीं जिनका मूल्य बिक्रीदर से नौ हजार रुपया होता है। उसने आगे कहा—जब सरकार ने तीन रुपये प्रति के हिसाब में २५ प्रतिशत छूट के साथ एक हजार प्रतियाँ खरीद लीं तो प्रकाशक को एक हजार प्रतियों का मूल्य २२५०) मिला। शेष दो हजार प्रतियाँ प्रकाशक को केवल ७५०) में ही मिल गयीं। इस पर उस अधिकारी को आश्चर्य हुआ कि प्रकाशक को इतना भारी मुनाफा हुआ।

अन्यान्य अफसरों की तरह उस अधिकारी ने २२५०) प्राप्त करने के पीछे केवल एक ही तथ्य को अर्थात् पुस्तक के बिक्री-मूल्य को पकड़ा और अन्य तथ्यों को विस्मृत कर दिया। अर्थात् उसने व्यापारिक छूट को ही ध्यान में रखा। किन्तु एक हजार प्रतियों की इस बिक्री के पीछे जो अन्य तीन तथ्य हैं, उनका पता उसको नहीं चला। वे तथ्य हैं—१० प्रतिशत रायल्टी, प्रशासन व्यय २० प्रतिशत और प्रकाशक की मुनाफा-सीमा १० प्रतिशत—कुल ४० प्रतिशत। इसका फर्क हुआ १२००)। इस प्रकार प्रकाशक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास १९५०) मूल्य की दो हजार प्रतियाँ शेष रह जाती हैं।

(१९) यह पूछा जा सकता है कि उत्पादन-व्यय के लिए समान-दर क्यों नहीं निश्चित कर दी जाती ताकि पुस्तकों का मूल्य समान रूप से सौ पृष्ठों के अनुसार निर्धारित कर दिया जाता। इसका उत्तर होगा कि पुस्तकों के उत्पादन-व्यय में एक राज्य से दूसरे राज्य की तुलना में अन्तर पड़ता है। पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, मद्रास और दिल्ली में उत्पादन-व्यय अधिक बैठता है। इतना ही नहीं, एक शहर से दूसरे शहर में उत्पादन-व्यय में अन्तर आ जाता है। उदाहरण के लिए उत्तर-प्रदेश के वाराणसी, आगरा और इलाहाबाद तथा महाराष्ट्र के बम्बई और पूना शहरों के नाम लिये जा सकते हैं। इतना ही नहीं, एक प्रकाशक से दूसरे प्रकाशक की तुलना में भी उत्पादन व्यय में अन्तर आता है। कहीं कागज पर चुंगी है और किसी राज्य में कागज पर बिक्री कर है जो कि एक अतिरिक्त भार है। इससे मूल्य बढ़ जाता है। इसी प्रकार मुद्रण व्यय में भी प्रेस-प्रेस में अन्तर है। मुद्रण की गुणवत्ता और सावधानी पर भी व्यय निर्भर करता है। वही बात जिल्दबन्दी पर लागू होती है। इसीलिए प्रकाशक द्वारा पहले से दिये गये प्रतिफार्म पर ही उत्पादन-व्यय मंजूर करना होता है। जिस प्रकाशक का उत्पादन-व्यय अधिकारियों की दृष्टि में ऊँचा होगा, उसे अधिकारी अमान्य भी कर सकते हैं। प्रकाशन के लिए पुस्तक सौंपने के वक्त अधिकारी के सामने यह बात रहती है। यदि प्रकाशक उत्पादन-व्यय का कोटेशन ऊँचे दर पर देता है तो अन्ततः वह अपने गले में फन्दा डालता है क्योंकि उसे अन्त में पुस्तकों का दो-तिहाई स्टाक भारी मूल्य में बेचना होगा जिसे खरीदार कभी मंजूर नहीं कर सकता। इसलिए प्रकाशक हिसाब लगाकर ऐसा कोटेशन देता है जो स्वाभाविक जँचता है। स्टेशनरी और प्रिंटिंग के नियंत्रक अथवा किसी अन्य व्यक्ति का हस्तक्षेप इस कार्य में मान्य नहीं होगा। हम अनुभव के आधार पर कह सकते हैं कि इस प्रकार के अभिकरणों के पास वस्तुओं के परखने की वास्तविक दृष्टि नहीं होती बल्कि उन्हें निर्णय करने में काफी समय लग जाता है। जो प्रकाशक प्रकाशन में अपनी पूंजी लगाता है, वह शायद ही पुस्तक का मूल्य निर्धारित करने में महीनों का इंतजार करे। उसे अपनी पूंजी निकालने की फिक्र रहती है। इसके अलावा उत्पादन-व्यय को प्रमाणित करने में सहायता प्रदान करने के लिए प्रकाशकों के प्रतिनिधि को सम्मिलित किया जा सकता है। दूसरी बात, सामान्यतः उत्पादन-व्यय उसके आय-व्यय परीक्षक द्वारा प्रमाणित रहता है।

(२०) अब दूसरा प्रश्न प्रकाशकों के चुनाव का उठता है जिन्हें योजनान्तर्गत पुस्तक के प्रकाशन का भार सौंपना है। हम लोगों ने इस मुद्दे पर विचार-विमर्श किया है और इसके लिए निम्नलिखित मार्ग दर्शन दे सकते हैं—प्रकाशकों का चुनाव, उनकी पुस्तक-सूची, उनके द्वारा प्रकाशित या घोषित पुस्तकों की गुणवत्ता, उनके बैंक-खाते और उनके व्यावसायिक संघ की सिफारिश के आधार पर किया जा सकता है। उनसे आयकर का प्रमाणित प्रमाणपत्र भी माँगा जा सकता है।

उपर्युक्त चार मुद्दों को ध्यान में रखकर सही ढंग के प्रकाशकों का चुनाव किया जा सकता है जिनसे अच्छा काम हो सके। उनकी पुस्तक-सूची से पता चलेगा कि वे किस श्रेणी की पुस्तक छाप सकते हैं। उनके बैंक खाते से उनकी वित्तीय स्थिरता का पता चलेगा। व्यावसायिक संघ की सदस्यता से इस बात की जानकारी होगी कि वे प्रकाशन समाज के विश्वस्त सदस्य हैं और उनके आयकर प्रमाणपत्र से पता चलेगा कि वे व्यापार करते आये हैं और टैक्स देते हैं।

(२१) प्रकाशकों को प्रकाशन के लिए पुस्तक चुनने के लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण बात है यद्यपि अभी ऐसा होता नहीं है। सभी प्रकाशक सभी विषयों की पुस्तकें न छाप सकते हैं, न अच्छी तरह बेच सकते हैं। जो प्रकाशक विज्ञानेत्तर या साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें प्रकाशित कर बेच सकते हैं, वे विज्ञान की पुस्तकों का प्रकाशन कर बेचने की समस्या का सामना मुश्किल से ही कर पायें। सम्प्रति प्रकाशन के निर्णय का भार अधिकारियों के हाथ में रहता है। इस प्रकार की अनिवार्यता स्वीकार्य नहीं हो सकती। चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तक प्रकाशित करनेवाले प्रकाशक से यदि समाजवाद पर पुस्तक छापने के लिए कहा जाय तो उसके लिए कठिनाई ही होगी। समस्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल उत्पादन तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि बिक्री को भी प्रभावित करेगी। आखिर पुस्तक के प्रकाशन का उद्देश्य है विश्वविद्यालयों में प्राध्यापकों और छात्रों के बीच उनका व्यापक प्रचार और बिक्री।

(२२) अन्त में हम कहना चाहेंगे कि अपने देश में हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित करने के उद्योग में कोई पूंजी लगाना नहीं चाहता। अर्थाभाव से यह उद्योग पिछड़ रहा है। उद्योग के रूप में प्रकाशन-व्यवसाय को मान्यता भी नहीं मिली है कि वह बैंक अथवा कर्जा देनेवाली सरकारी संस्थाओं से कर्ज प्राप्त कर सके। अब बैंकों पर सामाजिक नियंत्रण की योजना के अन्तर्गत बैंकों से कहा जा रहा है कि किसानों तथा अन्यान्य व्यवसायियों की तरह प्रकाशकों को भी ऋण देने के प्रश्न पर विचार करें। सरकार इस योजना पर अधिक बल दे रही है। भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की अपनी-अपनी योजनाएँ होनी चाहिए कि सत्साहित्य के प्रकाशन की ठोस योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए वे आसान तरीके पर प्रकाशकों को लम्बी मियाद का कर्ज दिला सकें।

(२३) ज्ञात हुआ है कि हिन्दी क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों का सम्मेलन वाराणसी में होने जा रहा है जहाँ उच्चतर स्तर की शैक्षिक पुस्तकों के उत्पादन से सम्बद्ध समस्याओं पर विचारों का आदान-प्रदान होगा। यह उचित ही होगा कि इस प्रकार के विचार-विमर्श में भाग लेने के लिए हिन्दी-प्रकाशकों के प्रतिनिधि भी आमंत्रित किये जायँ।

(२४) एक और मुद्दा है जिस पर हम बल देना चाहेंगे। संघ सरकार इस बात पर जोर दे कि राज्य की सरकारें अथवा विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालय छापने के लिए पुस्तकें देते समय प्रकाशकों के चयन के समय एक-तरफा दृष्टिकोण न अपनायें। हमारे अनुभव में वह बात आयी है कि कतिपय राज्यों ने केवल अपने-अपने राज्यों के प्रकाशकों और लेखकों की ही पुस्तकें खरीदना शुरू किया है। इससे अन्यान्य क्षेत्रों के अच्छे प्रकाशकों के दरवाजे बन्द हो गये हैं। यदि ऐसा हुआ तो राष्ट्रीय धनराशि से उत्पादित होनेवाली पुस्तकों का मानक निम्नस्तरीय हो जायेगा। प्रकाशकों के चयन का मुख्य आधार प्रकाशकों की क्षमता होनी चाहिए कि वे अच्छी पुस्तकें निकाल सकें चाहे प्रकाशक किसी खास राज्य उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान और बिहार के ही क्यों न हों। फिर भी हिन्दी के ४० प्रतिशत प्रकाशक केन्द्र प्रशासित क्षेत्र दिल्ली में रहते हैं। इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रकाशकों का चयन संकीर्ण और क्षेत्रीय आधार पर न किया जाय। उनका चयन मुख्य रूप से केवल उनके उत्तम कार्य के आधार पर ही किया जाना चाहिए।

नये अध्यक्ष

आगामी वर्ष के लिए अ० भा० हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष पद पर नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली के यशस्वी संचालक श्री कन्हैयालाल मलिक निर्विरोध चुने गए। श्री मलिक गत अनेक वर्षों तक संघ के प्रधान मंत्री, कोषाध्यक्ष तथा विभिन्न पदों पर कार्य कर चुके हैं। संघ के कार्यों में आपकी सहज निष्ठा तथा लगन है। आशा है श्री मलिक की अध्यक्षता में संघ को नया बल तथा नूतन निर्देश प्राप्त होगा।

बिहार राज्य शिक्षा मन्त्री को पत्र

संघ के अध्यक्ष श्री कृष्णचन्द्र बेरी ने बिहार राज्य के शिक्षामन्त्री को संघ कार्यसमिति के सदस्य श्री रामतीर्थ भाटिया द्वारा पत्र भेज कर उनका ध्यान निम्नलिखित की ओर आकर्षित किया है—

१. बिहार में पुस्तकों की खरीद सम्बन्धी अनुदान लगभग समाप्त कर दिये गए हैं और जो थोड़ा-बहुत स्वीकृत है उसका भी कार्यान्वयन नहीं हो पा रहा है।

२. गत वर्ष सूखे के कारण स्थिति बिगड़ गई थी अतः संघ ने परिस्थिति देखते हुए शासन से अनुदान जारी रखने का अनुरोध नहीं किया। किन्तु इस वर्ष जबकि अन्य प्रदेशों ने ये अनुदान पुनः जारी कर दिये हैं बिहार सरकार ने इस सम्बन्ध में कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया है।

३. बिहार में कूपन द्वारा अनुदान दिया जाता है जिसके लिए एक अलग विभाग है। वह भी इस सम्बन्ध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है।

४. शासन तत्काल इस दिशा में सक्रिय कदम उठाने की कृपा करे।

निरन्तर अभावों का रोना-रोने तथा दया की याचना करने वाला बिहार आज निम्नकोटि की राजनीति का गढ़ बन गया है। लगता है वहाँ के नेता केवल राजनीति खाते हैं, राजनीति पीते हैं, राजनीति पहनते हैं, राजनीति ओढ़ते हैं, राजनीति बिछाते हैं। वे अपने प्रदेश की जनता को राजनीतिक जबान से पुकार-पुकार कर कह रहे हैं तुम भूखे हो, तुम दरिद्र हो, तुम मूर्ख हो; तुमको अन्न चाहिए तो राजनीति करो, तुमको धन चाहिए तो राजनीति करो, तुमको ज्ञान प्राप्त करना है तो राजनीति करो (यानी परीक्षाएँ टलवाते जाओ) जितना काम उतनी मजदूरी की तरह, जितनी पढ़ाई उतनी फीस का नारा लगाओ। संकीर्ण राजनीति, जातीयता, प्रान्तीयता में साँसें लेने वाला बिहार जो आज औद्योगिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भारत का सिरमौर बनता वह सारे देश के लिए तमाशा बना हुआ है। आज वहाँ की जनता अन्न की भूख और अभाव से अधिक नैतिक तथा सांस्कृतिक दारिद्र्य से पीड़ित है। बिहार के नेता यदि सचमुच देशभक्त—प्रदेशभक्त हैं तो अपनी राजनीति की चादर थोड़ी देर के लिए उतार कर मासूम जनता के चेहरों को देखें। उगती पीढ़ी के मस्तक पर संस्कृति का यशस्तिलक करें।

पोस्ट बाक्स नं० ४६ फोन नं० २३४५

नव वर्ष की मंगल शुभकामनाओं सहित

पुष्पी पॉकेट बुक्स

और हमारी मासिक पत्रिकायें

पुष्पी (सामाजिक) १.२५ • गुरू जासूस (जासूसी) ०.७५ • मुस्कान (जासूसी) १.००

और एक उर्दू मासिक १) रुपये में

सनमकदा

स्थाई लेखक—

"प्रेम" बाजपेयी • ओमप्रकाश शर्मा • सोम नाथ "अकेला" • 'अकरम' इलाहाबादी

आज ही आप रेलवे बुक स्टाल या अपने समाचार पत्र विक्रेता से माँगिये या हमें लिखिये।

भारतीय एवं मानवीय साहित्य के मात्र प्रकाशक

'पुष्पी कार्यालय' ११६—बी, बाई का बाग़, इलाहाबाद-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना सार

दिल्ली के लिए नया शिक्षा बोर्ड

अगली जुलाई से केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली में उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के लिए नया बोर्ड स्थापित करने का प्रस्ताव है। दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत यह एक अर्ध-शासकीय बोर्ड होगा। बोर्ड द्वारा संचालित प्रथम परीक्षा १९७० ई० में होगी। इस समय यह परीक्षा सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेण्ड्री एजूकेशन द्वारा आयोजित की जाती है।

इस बोर्ड की स्थापना शिक्षा आयोग के सुझाव के अनुसार की जा रही है। आयोग का सुझाव था कि प्रत्येक प्रदेश तथा केन्द्र शासित प्रदेश में अपना निजी बोर्ड होना चाहिए।

मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा के अनुसार बोर्ड की स्थापना के लिए प्रारम्भिक कार्य शुरू हो गया है। पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था भी शीघ्र की जायेगी। इस बोर्ड का अपना पाठ्यक्रम तथा परीक्षा के नियम होंगे। आशा है यह बोर्ड उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नये परिवर्तन करेगा। केन्द्रीय सरकार ने बोर्ड-स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।

काली स्याही से सेंसर

सीमा-शुल्क अधिकारियों ने इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के ताजे संस्करण के एक पृष्ठ को काले रंग से रंग दिया है। इस पृष्ठ पर भारत का एक मानचित्र छपा था जिसमें कश्मीर को पाकिस्तान के भाग के रूप में दिखाया गया था।

केन्द्रीय सरकार ने सीमा शुल्क अधिकारियों से कहा है कि वे अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा भेजे गए विश्व-कोषों व एटलसों की जाँच करें क्योंकि इनमें कश्मीर को पाकिस्तान के अंग के रूप में दिखाया गया है। टाइम्स एटलस में भी ऐसा ही किया गया है। पायर्स इन्साइक्लोपीडिया ने भी कश्मीर को पाकिस्तान के अंग के रूप में दिखाया है। स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं को अभी तक कोई कापी नहीं मिली है।

केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मन्त्रालय के लिए हिन्दी सलाहकार समिति

केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मन्त्रालय के लिए एक हिन्दी सलाहकार समिति का गठन किया गया है।

ज्ञात हुआ है कि इस समिति में २८ सदस्य होंगे, जिनमें सर्वश्री गंगाशरणसिंह, प्रकाशवीर शास्त्री, हेम बरुआ, रामधारीसिंह दिनकर (सभी संसद सदस्य), तथा श्री रतनलाल जोशी (सम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली), कामाक्षी (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा), जी० पी नेने, अनन्तगोपाल शेवड़े (सम्पादक, नागपुर टाइम्स), धर्मवीर भारती (सम्पादक, 'धर्मयुग', बम्बई) आदि होंगे।

पाकिस्तान में साहित्यिक चोरी

पाकिस्तान के एक प्रमुख समाचारपत्र ने ग्रन्थों की चोरी की निन्दा की है। पश्चिम पाकिस्तान में आजकल बहुत-सी भारतीय पुस्तकों का प्रकाशन लेखकों की स्वीकृति के बिना ही हो रहा है।

लाहौर सरकार द्वारा प्रकाशित 'पाकिस्तान टाइम्स' नामक समाचारपत्र के सम्पादकीय में कहा गया है कि स्वतन्त्रता के पूर्व या बाद में भारतीय लेखकों द्वारा लिखी गई कई पुस्तकों का लेखकों की पूर्व स्वीकृति के बिना ही आजकल पाकिस्तान में काफी प्रकाशन हो रहा है।

पत्र में कहा गया है कि उक्त भारतीय लेखकों ने इसका विरोध किया है तथा पाकिस्तानी साहित्यकारों ने भी इसमें भारतीय साहित्यकारों का साथ दिया है।

समाचारपत्र में पश्चिम पाकिस्तान सरकार के इस निर्णय का स्वागत किया है जिसके अन्तर्गत सरकार ऐसे कार्यों को रोकने के लिए एक अध्यादेश जारी करने जा रही है।

एक सरकारी प्रवक्ता ने लाहौर में बताया कि प्रस्तावित कानून के अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था है कि यदि कोई व्यक्ति विदेशी लेखक की कृति को प्रकाशित करना चाहता है तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके लिए उसे उस लेखक से या सरकार से पहले स्वीकृति लेनी होगी ।

संस्कृत के विकास के लिए २८ लाख रु०

केन्द्रीय राज्य शिक्षामन्त्री श्री शेरसिंह के अनुसार भारत सरकार ने इस वर्ष संस्कृत साहित्य के विकास के लिए २८ लाख रु० की राशि निर्धारित की है ।

उन्होंने यह भी बताया कि सरकार ने पचास हजार या उससे अधिक जनसंख्या वाले स्थानों में सार्वजनिक पुस्तकालयों को सहायता देने की योजना बनाई है ।

सरकार ने श्री अरविन्द घोष की पुस्तक 'लाइट एण्ड डिवाइन' का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए पचास प्रतिशत खर्च देना स्वीकार किया है ।

श्री सिंह ने अनुमानित दो लाख रुपये से तैयार होने वाले सार्वजनिक पुस्तकालय के भवन की नींव रखी । करनाल निवासी श्री प्रतापसिंह भाटिया ने पुस्तकालय के लिए एक लाख रुपये दान में दिये हैं ।

चारवर्षीय हायर सेकेण्डरी पाठ्यक्रम

दिल्ली शिक्षा निदेशालय चार वर्षीय उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम १९६८-६९ के शैक्षणिक वर्ष से शुरू कर रहा है । प्रथम पत्राचार में प्रवेश प्राप्त करने वाले छात्रों को १९७२-७३ में फाइनल परीक्षा देनी होगी ।

इस पाठ्यक्रम में दिल्ली, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के आठवीं कक्षा पास अथवा ३० सितम्बर को १५ वर्ष की आयु पूरी करने वाले छात्र प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे ।

बम्बई विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना

बम्बई विश्वविद्यालय में यद्यपि स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी का अध्यापन होता था किन्तु विश्वविद्यालय में इसका अलग विभाग नहीं था । विश्वविद्यालय के सिनेट ने विश्वविद्यालय में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य नये विभाग—मराठी, गुजराती, इतिहास, पत्रकारिता शिक्षा तथा जीवशास्त्र—भी खोलने का निर्णय किया है ।

पंजाब में प्रेस के लिए ऋण

प्रकाशक संघ के प्रतिवेदन के उत्तर में स्पष्टीकरण करते हुए पंजाब के मुख्य मन्त्री डॉ० गुरचरणसिंह ने १७ जनवरी, १९६८ को जारी किये गये अपने एक वक्तव्य में कहा कि पंजाब राज्य सहायता (उद्योग के लिए) अधिनियम के अन्तर्गत प्रेसों को ऋण प्रदान किये जाएँगे । छपाई की मशीनें खरीदने तथा कार्यरत पूंजी के लिए उन प्रकाशकों को ऋण दिये जाते हैं जो स्वयं प्रेस उद्योग चला रहे हैं अथवा प्रेस उद्योग स्वयं प्रारम्भ करना चाहते हैं । अन्य को केवल मशीनरी खरीदने के लिए ऋण उपलब्ध होगा ।

सुलभ साहित्य सदन, पटना

सुलभ साहित्य सदन, पटना-१ के प्रकाशन कार्यालय का नया पता—राममनोहर लोहिया नगर, पटना-१६ ।

जिसका कोई मित्र नहीं

ग्रामीणों में साक्षरता के विकास के लिए गाँवों में पुस्तकालय खोले जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए उपराष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने लुधियाना में कहा कि जिसका कोई मित्र नहीं है, पुस्तकें उसकी मित्र हैं । श्री गिरि ने सात लाख रुपये की लागत से निर्मित पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का उद्घाटन कर रहे थे ।

लेनिनग्राद में पुस्तक प्रदर्शनी

सोवियत संघ के प्रमुख नगर लेनिनग्राद में गोर्की और तुर्गनेव की रचनाओं की भारतीय भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की प्रदर्शनी हो रही है । इस प्रदर्शनी के लिए पुस्तकें इस पते पर भेजी जा सकती हैं:—

—श्री प. अ. वारान्निकोव
मैत्री भवन, लेनिनग्राद (सोवियत संघ)

कृषि-ग्रंथावली

हिन्दी में आदर्श तकनीकी पुस्तकों की कमी के कारण तकनीकी ज्ञान हिन्दी में प्रदान करने में जो कठिनाई सामने आती है उसके हल के लिए पंतनगर स्थित उत्तरप्रदेश कृषि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय ने एक विशाल कार्यक्रम तैयार किया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत आदर्श पाठ्य-पुस्तकों तथा दूसरे तकनीकी प्रकाशनों का हिन्दी में अनुवाद किया जाएगा। विश्वविद्यालय ने तत्सम्बन्धी कार्य के लिए एक समिति का गठन किया है। इस समिति ने हिन्दी में अनुवाद के लिए कुछ विशिष्ट उपविषयों का चुनाव किया है। इन उप-विषयों में कृषि, पशुपालन, अभियंत्रण तथा आधारिक विज्ञान विषय भी सम्मिलित हैं। विश्वविद्यालय ने अनुवाद कार्य हेतु हर सम्भव सहायता की व्यवस्था की है। अनुवादकों को अच्छा पारिश्रमिक दिया जाएगा। विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ध्यानपालसिंह ने विश्वविद्यालय के विज्ञान-वेत्ताओं से अनुरोध किया है कि वह न केवल अतिरिक्त धनोपार्जन वरन् राष्ट्रीय सेवा की भावना से उत्प्रेरित हो कर अनुवाद कार्य को अपने हाथ में लें।

'हिन्दी प्रकाशक' के लिए

विज्ञापन की दरें

प्रथम पृष्ठ (आवरण) अनुबद्ध	
चतुर्थ पृष्ठ (आवरण)	९०.००
द्वितीय-तृतीय पृष्ठ (आवरण)	८०.००
साधारण पृष्ठ	६०.००
आधा पृष्ठ	४०.००
चौथाई पृष्ठ	२५.००

विशेष सुविधाएँ

वर्ष में ६ अंकों के अनुबन्ध पर १५ प्रतिशत और १२ अंकों के अनुबन्ध पर २० प्रतिशत छूट।

केवल 'संघ' के सदस्यों के लिए

(क) उपर्युक्त साधारण दरों पर १५ प्रतिशत छूट।

—'हिन्दी प्रकाशक'
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

आवश्यक सूचना

१५ फरवरी, सन् १९६८ से **इंडियन पब्लिशिंग हाउस** का थोक-बिक्री-केन्द्र **२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६** में स्थानान्तरित हो रहा है। सहयोगियों तथा बन्धुओं से निवेदन है कि वे सभी पत्र-व्यवहार एवं ऑर्डर आदि अब इस नये पते पर भेजें। फुटकर बिक्री-केन्द्र पहले की तरह नई सड़क पर ही रहेगा।

आवश्यक सूचना

'अ० भा० हि० प्रकाशक संघ' की ओर से प्रकाशित किये जाने वाले हिन्दी-पुस्तक विक्रेताओं तथा प्रकाशकों के पतों के सैट छप चुके हैं।

विवरण टाइटिल के तृतीय पृष्ठ पर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत

हिन्दी तथा संस्कृत के शोध-प्रबन्ध

हिन्दी

१. हिन्दी कवयित्रियों के काव्य में सौन्दर्य भावना : कु० शीला अग्निहोत्री

२. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की भाषा शैली का काव्य-शास्त्रीय अध्ययन : श्री रामकुमार मिश्र

३. करुणरस : विवेचन (भारतीय, संस्कृत व हिन्दी काव्य-शास्त्र और पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं मनोविज्ञान के आधार पर) : श्री कैलाशचन्द्र जैन

४. जैनाचार्य रविसेन कृत पद्मपुराण (संस्कृत) एवं तुलसीकृत रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन : श्री रमाकान्त शुक्ल

५. आधुनिक हिन्दी के छायावादी काव्य पर वैदिक दर्शन का प्रभाव : श्री प्रेमप्रकाश रस्तोगी

६. कुरुप्रदेश की स्वांग (सांग) कला : श्री इन्द्रसेन शर्मा

७. महाराज सवाई प्रतापसिंह 'ब्रजनिधि'—जीवन और साहित्य (सन् १७६४-१८०४ ई०)—श्री रामसिंह चौहान

८. तुलसी साहित्य में नारी : श्रीमती शारदाकुमारी त्यागी

९. हिन्दी छायावादोत्तर काव्य में ध्वनि : श्री कुन्दनलाल उप्रेती

१०. भक्तिरस का काव्यशास्त्रीय अध्ययन : श्री जगतनारायण

११. राहुलजी का कथा-साहित्य : श्री मुकटलाल गुप्त

१२. राधावल्लभ सम्प्रदाय के हिन्दी साहित्य में रस की स्थिति और उसकी भाषा : कुमारी सरला गोस्वामी

१३. तेलुगु और हिन्दी लोकोक्तियों का तुलनात्मक एवं भाषा वैज्ञानिक अध्ययन। कनूमूरी वीरा वेंकट लक्ष्मीनरसिंहराव

संस्कृत

१. गर्गसंहिता का समालोचनात्मक अध्ययन : श्रीकृष्णदत्त अवस्थी

२. श्रीमद्भगवद्गीता के वैष्णव टीकाकार एवं उनकी टीकाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन : श्री वासुदेव-कृष्ण चतुर्वेदी

३. ऋग्वेद में काव्य तत्व (संस्कृत अलंकारशास्त्र की दृष्टि से ऋग्वेद का आलोचनात्मक मूल्यांकन) : श्री निगम शर्मा

नव लेखन के एक सुर्ख हस्ताक्षर

डा० रणजीत की पाँच महत्वपूर्ण पुस्तकें

१. ये सपने : ये प्रेत (कविता संग्रह) मूल्य ४ रुपये
२. जमती बर्फ : खौलता खून (,,) मूल्य ३ रुपये
३. इतिहास का दर्द (,,) मूल्य ५ रुपये
४. प्रतिश्रुत पीढ़ी (प्रतिश्रुत कविता का तार सप्तक, आठ प्रतिश्रुत कवियों की सौ चुनी हुई कविताएँ) मूल्य ७-५० रुपये
५. गर्म लोहा : ठण्डे हाथ (कहानी संग्रह) मूल्य २-५० पैसे

शीघ्र प्रकाश्य

१. हिन्दी की प्रगतिशील कविता (शोध प्रबन्ध)
२. हिन्दी के प्रगतिशील कवि (समीक्षा पुस्तक)
३. प्रगतिशील कविता के मील-पत्थर (हिन्दी की सौ श्रेष्ठ प्रगतिशील कविताएँ)
४. एक काव्यशती (पिछले सौ वर्षों के हिन्दी काव्य सृजन की समस्त उपलब्धियों का समग्र संकलन, हिन्दी के लगभग दो सौ कवियों की चुनी हुई पांच सौ कविताएँ)
५. परिप्रेक्ष्य (समीक्षात्मक निबंध-संग्रह)

प्राप्ति स्थान

नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

किताब महल
चौड़ा रास्ता, जयपुर

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका पत्र

मानक-ग्रंथ-सूची

भारत सरकार
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का स्थायी
आयोग (शिक्षा मन्त्रालय)
वि० वि० अ० आयोग भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-१, १८ जनवरी, १९६८

प्रिय सम्पादक जी,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर की मानक ग्रंथ सूची प्रकाशित करने की योजना बनाई है और उसका प्रथम भाग प्रकाशित किया जा चुका है। उसकी एक-एक प्रति प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों को भेजी जा चुकी है।

आप इस बात से तो सहमत ही होंगे कि अब तक हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों के लिए प्रकाशकों द्वारा तैयार और प्रकाशित पुस्तकों का लेखा-जोखा प्रामाणिक रूप में उपलब्ध नहीं होगा तब तक हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न विषयों में आवश्यक पुस्तकें प्रकाशित करने की योजना सर्वांगीण दृष्टि से नहीं बनाई जा सकेगी। इस बारे में आयोग पिछले वर्ष से प्रयत्नशील है कि हिन्दी के प्रकाशकों ने जो पुस्तकें विश्वविद्यालय स्तर के लिए प्रकाशित की हैं उनकी एक प्रामाणिक सूची बनाई जाय। खेद के साथ कहना पड़ता है कि समाचार पत्रों में विज्ञापन देने के बावजूद और व्यक्तिगत रूप से प्रकाशकों को परिपत्र भेजने के बावजूद अभी तक हमारे पास ऐसी सूचना उपलब्ध नहीं हो पायी है।

मैं आशा करता हूँ कि इस काम में आप हमें सहयोग देंगे। यदि आपके सदस्य तुरन्त ही निम्नलिखित फार्म (प्रपत्र) के अनुसार सूचना भेज सकें तो इसको प्रकाशित करने में आयोग को आसानी रहेगी।

आपका
ओमप्रकाश शर्मा

—प्रकाशक बन्धुओं से अनुरोध है कि विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें प्रकाशित करने से अधिक आज उन पुस्तकों के लिए वातावरण बनाने की आवश्यकता है। लोगों को यह जानकारी हो कि हिन्दी में विश्वविद्यालय स्तर के साहित्य का अभाव नहीं है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने विश्वविद्यालय-स्तरीय-मानक ग्रंथ-सूची प्रकाशित की है जो उनसे पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। यद्यपि यह सूची अपूर्ण और त्रुटिपूर्ण है किन्तु इसका दोष आयोग का उतना नहीं जितना प्रकाशकों का है जिन्होंने उनकी इस पहल में हाथ नहीं बटाया। अब उन्हें चाहिए कि तत्काल निम्नांकित प्रपत्र के अनुसार सूचनाएँ भेजें और सूची को दोषरहित बनाये जाने की दृष्टि से पुस्तकों की एक-एक प्रति भी भेजें। आयोग को भेजे जाने वाले प्रपत्र तथा पुस्तकों की एक-एक प्रति 'हिन्दी प्रकाशक' को भी के-४०।६ भैरवनाथ, वाराणसी-१ के पते से भेजें। 'हिन्दी प्रकाशक' भी इस प्रकार की ग्रंथ-सूची प्रकाशित करेगा।

—सम्पादक

निम्नांकित प्रपत्र के अनुसार सूचना भेजनी चाहिए।

१. लेखक नाम
२. पुस्तक नाम
३. प्रकाशक का पता
४. अनुवादक का नाम (जहाँ उपलब्ध है)
५. संस्करण
६. पृष्ठ संख्या
७. मूल्य
८. परिचयात्मक टिप्पण
९. पुस्तक की उपयोगिता

लन्दन में हिन्दी प्रचार

"आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हिन्दी-प्रचार-परिषद्, लन्दन में भारत की राष्ट्रभाषा के प्रचार में कार्यरत है। परिषद् की ओर से नियमित रूप से हिन्दी कक्षाएं चलती हैं और समय-समय पर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। एक त्रैमासिक पत्रिका 'प्रवासिनी' का प्रकाशन भी जारी है और अब इसे शीघ्र ही मासिक बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

हिन्दी नाटकों का चाव भी प्रवासी भारतीयों में दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है और अब तक अकेले लन्दन में ही बीस हिन्दी नाटक खेले जा चुके हैं। ब्रिटेन के अन्य नगरों में भी हिन्दी-प्रचार का कार्य जोरों पर है। लन्दन में परिषद ने एक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना की है और पाठ्यक्रम की पुस्तकें, नाटक, उपन्यास, कहानी, भाषा-विज्ञान आदि सभी तरह की पुस्तकों की माँग है। आपसे निवेदन है कि आप हिन्दी भक्तों के समक्ष हमारा यह यह प्रस्ताव रखें कि वे समुद्री डाक से कम से कम हिन्दी की एक पुस्तक (किसी भी स्तर की) परिषद् के निम्न पते पर भेजने की कृपा करें—हिन्दी-प्रचार-परिषद, १४१ व्हिट-फील्ड स्ट्रीट, लन्दन, डब्ल्यू-१

राष्ट्रभाषा हिन्दी

में

● एलोपैथिक

● होमियोपैथिक

एवं

● आयुर्वेदिक

पुस्तकों का प्रकाशन प्रतिष्ठान

विशेष विवरण के लिए सूचीपत्र माँगें

मेडिकल पुस्तक भवन

गोलादीनानाथ, वाराणसी

एक नई घोषणा

एक नयी प्रकाशन संस्था :

दो श्रेष्ठ नये ग्रंथ

तुलसी-पूर्व राम-साहित्य

लेखक : डॉ० अमरपालसिंह

तुलसीदास के पूर्व सहस्रों वर्षों से राम-साहित्य का प्रचार रहा है, परन्तु उसके संबंध में सम्पूर्ण जानकारी देने वाला यह सर्वप्रथम शोध-ग्रंथ है।

सजिल्द : आकर्षक आवरण

मूल्य : बीस रुपये

प्रसाद के नाटकों में नियतिवाद

लेखक : डॉ० पद्माकर शर्मा

भूमिका : डॉ० नगेन्द्र

'नियतिवाद' प्रसादजी के नाटकों में सतत धारा की तरह प्रवाहित हुआ है। इसकी पूर्ण विवेचना प्रस्तुत करने वाला एक मात्र ग्रंथ।

सजिल्द : मनोहर आवरण

मूल्य : आठ रुपये

रचना प्रकाशन

५ खुसरूबाग रोड,

इलाहाबाद-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली-६, वाराणसी-५

गणदेवता (उपन्यास), लेखक ताराशंकर वन्द्योपाध्याय, अनुवादक—हंसकुमार तिवारी, प्र० सं० १९६७, मूल्य १६.००, पृष्ठ संख्या ६४० (डिमाई)।

भारतीय ज्ञानपीठ के एक लाख रुपये के सर्वोच्च पुरस्कार से पुरस्कृत 'गणदेवता' भारतीय नवजागरण काल की महागाथा है। श्रद्धा और संस्कृति के केन्द्र 'चण्डीमण्डप' (धर्म क्षेत्र) विनाश और सृष्टि की देवी माँ काली की पूजा स्थली और सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक उथल-पुथल का केन्द्र 'पंचग्राम' (कर्म क्षेत्र) इन दो केन्द्र प्रतीकों के माध्यम से एक ओर स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत भारतीय जनता और दूसरी ओर औद्योगीकरण के प्रसार के कारण बदलती और ढहती हुई पुरानी ग्रामीण परम्पराएँ तथा सामाजिक व्यवस्था। सचमुच शाश्वत चेतना से अभिभूत यह हमारे देश की जनता का महाकाव्य है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में वर्णित गाँवों के महाजनों, सूदखोरों और ताराबाबू के खेतिहर महाजन श्री हरिशेष में स्थान भेद का अन्तर भले ही हो, दोनों की मूल प्रवृत्ति एक ही है।

ग्रामीण तथा औद्योगिक संघर्ष की कहानी 'गणदेवता' देश का सजीव चित्र उपस्थित करता है जो न इतिहास में मिलेगा न भूगोल में। भारतीय जनता के मन पर भिन्न-भिन्न प्रभावों की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म प्रक्रिया-गाथा देखनी हो तो इस उपन्यास के संघर्षरत आदर्शवादी युवक देवू घोष, भूमिहीन तथा औद्योगीकरण से प्रभावित जीविकाहीन अनिरुद्ध लुहार को देखा जा सकता है। निश्चय ही यह उपन्यास देश की प्रत्येक साक्षर जनता को प्रेरणा प्रदान करेगा।

× × ×

एक समर्पित महिला : श्री नरेश मेहता, प्र० सं० १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० १२८ (क्राउन)।

'तथापि' के बाद 'एक समर्पित महिला' नरेश मेहता का दूसरा कहानी संग्रह है। नई कहानी पुरानी कहानी से कहाँ किस प्रकार भिन्न है इसका बोध इन कहानियों को पढ़कर सरलता से हो जाता है। कहानीकार की भाषा इतनी सजीव और घटना-विधान तथा चरित्र इतना संश्लिष्ट और सूक्ष्म है कि पाठक उसे अपनी अनुभूति मान लेने की भूल कर सकता है। आरम्भ में 'कहानी, एक चेष्टा' भूमिका में नरेश मेहता का यह कथन है, "रचना, प्रतिश्रुति है अपने भोगे हुए उस अनुभव की जिसे हमने अपने से पृथक् के लिए वाणी दी है।" संकलन की सभी छः कहानियाँ विशेषकर 'एक समर्पित महिला', 'श्रीमती मास्टन', 'अनबीता व्यतीत' लेखक के कथन को सर्वथा सार्थक करती हैं।

× × ×

अविराम चल मधुवन्ती : कवि-वीरेन्द्र मिश्र, प्र० सं० १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० ११२ (डिमाई)।

नवगीत तथा नई कविता के मध्य 'अविराम चल मधुवन्ती' कवि की १९५८ ई० से अब तक लिखी गई ६१ गेय कविताओं का संकलन है। संगीत लय, सहज अनुभूति तथा संवेदना से युक्त ये कविताएँ अनेक भावात्मक दृश्य बिम्ब तथा स्मृतिचित्र प्रस्तुत करती हैं। 'उपचेतन', 'बम्बई' और 'समुद्राकांक्षा', 'अविराम चल मधुवन्ती' ऐसे गीत हैं जिन्हें कंठ गुनगुनाते हैं, मन में कल्पना जगाते हैं।

× × ×

अपनी शताब्दी के नाम (१९५८ से १९६४ तक की रचनाएँ) : लेखक—दूधनाथ सिंह, प्र० सं० १९६७, मूल्य ४.००, पृ० सं० २०८ (क्राउन)।

'अपनी शताब्दी के नाम' लेखक की ४३ कविताएँ, दो कहानियाँ और ६ आत्मपरक निबन्धों का संकलन है। इनमें अनुभूति की तीव्रता उतनी नहीं है जितनी चिन्तन की प्रखरता। भारतीय मानस आज जो भोग रहा है उसकी झाँकी इन रचनाओं में सुलभ है।

× × ×

कुतुबशतक और उसकी हिन्दुई : लेखक—डॉ० माताप्रसाद गुप्त, प्र० सं० १९६७, मूल्य ७.००, पृ० सं० २१६ (डिमाई)।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त प्राचीन हिन्दी हस्तलेखों के पाठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धारण, संशोधन तथा सम्पादन के लिए विख्यात हैं। 'हिन्दुई' कुतुबशतक की प्रसिद्ध सूफी रचना है। जीवन में त्याग और बलिदान इस रसमय काव्य की मूल प्रेरणा है। डॉ० गुप्त ने पाठ-सम्पादन, रचना, कथा, भाषा सभी दृष्टियों से दक्खिनी भाषा में रचित 'हिन्दुई' का अध्ययन करते हुए मूल पाठ तथा अर्थ भी दिया है। यह एक शोध-कृति तो है ही, भावी शोध के लिए भूमिका भी प्रस्तुत करती है।

× × ×

मायादर्पण (कविता) : पंक्तिकार—श्रीकान्त वर्मा, केन्द्र से निकलने वाली १२५ काव्य रेखाओं का विकिरण, प्रथम संस्करण १९६७, मूल्य ३.५०, पृ० सं० १३६ (डिमाई)।

आकाश में, अन्तरिक्ष में, पृथ्वी पर कौंधती हुई भावनाएँ, उनसे पड़ी हुई दरारों-सी अनुभूतियाँ, अनूठेपन के लिए कहीं गुलाब के फूल-सा कहीं सेंहुड के रमणीय स्वरूप-सा आग्रह, पगडंडी-सी अकेली पूर्ण कविताएँ, पूरे आराम-सी खिली विवृत्तियाँ, आन्तरिक विस्फोट, बाह्य कंपन, आत्मसात किये जीवनचर्या, शैल-वन-पठार से संकुल बहुविध भावभूमि—कुछ ऐसा ही है 'मायादर्पण' संग्रह का काव्य-व्यक्तित्व। सूक्ति, सूत्रात्मकता एवं सुषमा का भी पर्याप्त संकलन विविध आकलनों से आसिंजित है। दर्शन के संदोहन और मनीषा की गहराई के लिए भी कवि सन्तोषजनक रूप से सचेष्ट है। असंयोजित वास्तुविधान के हामी नवीनता के सोपान पर आरूढ़ आज के संसार के उदग्र पर्यवेक्षण के लिए सुधी सहृदय इसका स्वागत करेंगे। मुद्रण तथा साजसज्जा भी अनवद्य है।

× × ×

सदाचार की ताबीज (व्यंग्य कथाएँ) : व्यंगकार—हरिशंकर परसाई, प्र० सं० १९६७, मूल्य ३.००, पृ० सं० १४४ (क्राउन)।

आज जीवन एक व्यंगमात्र रह गया है, जिसे हम सब झेलते हैं और अनुभव करते हैं किन्तु अभिव्यक्त नहीं कर पाते। परसाईजी इस कला में सिद्धहस्त हैं : उनका व्यंग्य केवल हास्य के लिए नहीं है, वह चोट करता है, चेलेंज देता है। 'सदाचार का ताबीज', 'हनुमान की रेलयात्रा', 'एअर कंडीशण्ड आत्मा', 'देवभक्ति', 'लिफ्ट' सभी अपने में एक व्यंग हैं, इन्हें अवश्य पढ़ें।

× × ×

प्रतिनिधि संकलन : सिंहल कहानियाँ : सम्पादक—भदन्त आनन्द कौसल्यायन, अनुवादक—भिक्षु सावंगी मेधकर, प्र० सं० १९६७, मूल्य ५.००, पृ० सं० २५२ (क्राउन)।

सिंहल देश और भारत के बीच में यद्यपि समुद्र है पर राम ने उस पर सेतु बनाया, बुद्ध ने धर्मकेतु फहराया और वह अलग होते हुए भी भिन्न नहीं रहा। २१ सिंहल कहानियाँ आधुनिक हिन्दी कहानियों के समान जीवन और चिन्तन के नये आयाम ढूँढ़ रही है। दोनों यद्यपि एक-दूसरे से अप्रभावित अपने परिवेश में विदेशी प्रभाव से प्रभावित हैं। इन कहानियों में पाठक को नया बोध प्राप्त होगा।

× × ×

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-७

कविताएँ १९६५ : रसउद्धार-संचय : सम्पादन—अजितकुमार तथा विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रकाशक—करोड़ीमल कॉलेज के निमित्त नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। प्रथम संस्करण १९६८ ई०, मूल्य ६.०० रु०, पृ० सं० २५६ (क्राउन)।

'अंचल' के वनमोगरे की आँखों-साँसों में रमते निजत्व गीत से कढ़ाई हुई १११ कविताएँ अपनी-अपनी विशेषताओं के लिए लालायित हैं। संग्रह सौंध में नवगीत की भी तीन-चार किरणें मिलेंगी—मृदंग मन्द्र वर्षामंगल (नागार्जुन), पं० माखनलाल चतुर्वेदी का नवस्वर-गुंजित पूँजीभूत प्रसाद (चाँदनी : एक अनुभव), अभिनव पुरातन के सतत सेतु निर्माता श्री मैथिलीशरण गुप्त की अंतिम कविताएँ। मुक्ति-बोध (बारह बजे रात के), शिवकुटीलाल वर्मा की (व्यक्तित्व) आदि कई रसकारों की लम्बी-चौड़ी रमणीय शक्तिमती शाद्वलता भी सन्निविष्ट है। सभी कविताएँ स्थायित्व तत्त्वों के जागरूक एवं प्रयत्नशील हैं—उनमें सफलता का दीप शनैः-शनैः अच्छी विभा अर्जित करता गया है। सरल वेशभूषा में चमत्कारिक फूलकारी किये बिम्ब वक्रता और भंगिमा लिये अभिव्यक्तियाँ, तथा दृश्यमानता के सभी पक्षों का संस्पर्श करती संवेदनाएँ पांखुरियों को स्पष्ट सुन्दर विकच प्रदान कर सकी हैं। उनके काव्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र में सभी वस्तुओं, भावनाओं तथा परिदृश्यों के परमाणुओं तक की मधुर खोज एवं मसृण मीमांसा समाई हुई है। देश और काल की भागती हुई ये फिल्में अमिट प्रभावों के निर्माण और संप्रेषण के लिए बड़ी ही आह्लादकर आवाहन करती दिखाई पड़ती हैं।

इस रस-जिजीविषा-संभरण से वैयक्तिक रूप से मुझे तो ऐसा लगता है कि नई कविता निखार और प्रौढ़ता के लिए गति और आयाम दोनों को समेटने के लिए अग्रसर है। लगता है मूर्तिभंजक सफल नये कवि काव्य-ब्रह्म की कोई बड़ी विराट् और भविष्यवाणियों से अपरिसीमित लघु-सूक्ष्म प्रतिमा गढ़ने के अनुभव-समृद्ध, अनुभूति उच्छ्वसित भावोपासना में निरत हैं।

लम्बी पुष्पिता के चार लेख साधारण पाठक को अच्छा करावलंब दे सकेंगे।

पंत, दिनकर तथा भारती को छोड़ देने का कारण 'विशेष खेद' की सफाई देने पर भी एकदम समझ में नहीं आता और जागरूक सर्वेक्षक पाठक के मन में एक असन्तुष्टि की पगध्वनि छोड़ जाता है।

पर इसमें सन्देह नहीं कि शिंजन और सुषमा का स्तवक सुन्दर बन पड़ा है।

× × ×

लालढाँग (उपन्यास)—लेखक—कृष्णचन्द्र शर्मा भिक्खु, प्र० सं० १९६८ ई०, मूल्य ७.००, ५० सं०, २८८ (क्राउन)।

भिक्खुजी हिन्दी के सुपरिचित उपन्यासकार हैं। 'भंवर जाल', 'सोने का मृग', 'नागफनी', 'सोम देवता की घाटी', 'महाश्रमण सुनें', और 'अस्तंगता' के बाद 'लाल ढाँग' एक नई कहानी प्रस्तुत करता है। बाँकेबिहारी के मंदिर के इर्दगिर्द घूमता कथानक जहाँ जीवन के रस से सराबोर है वहीं संसार की कुरूपताओं से संघर्षरत भी है। नारी रूप और पुरुष के अहंकार के द्वन्द्व में आधुनिक युग की सेक्स समस्या प्रमुख है। चरित्र वैचित्र्य के मध्य इसका सफल चित्रण भिक्खुजी की कृति में हुआ है। निश्चय ही इस उपन्यास की गणना इस वर्ष के विशिष्ट उपन्यासों में की जायेगी।

× × ×

सामयिक प्रकाशन, दिल्ली-६

हिन्दी प्रकाशन जगत में यह नया हस्ताक्षर श्री जगदीश भारद्वाज का है। अनेक वर्षों तक आप राजकमल प्रकाशन से सम्बद्ध थे। अब स्वतंत्र प्रकाशन आरम्भ किया है। सर्वप्रथम तीन पुस्तकें प्रकाशित की हैं। 'छायावाद' की समीक्षा नवम्बर अंक में प्रकाशित हो चुकी है, अन्य दो कृतियाँ हैं—**कोयले का टुकड़ा** (उपन्यास), लेखक—मु० वरदराजन, अनुवादक—एन० सुन्दरम्, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ५.५०, पृष्ठ संख्या १८४ (क्राउन)

तमिल लेखक वरदराजन की यह उपन्यास कृति दक्षिण वासियों का जीवन—ऊँच-नीच तथा गरीब-अमीर का संघर्ष प्रेम और स्नेह की छाया में प्रस्तुत करती है।

× × ×

नंददास (शोध-कृति), लेखक रमेशकुमार खट्टर, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य १५.००, पृष्ठ संख्या ४०२ (डिमाई)।

नंददास ब्रजभाषा के रससिद्ध कवि थे। इनकी कृतियों का फुटकर अध्ययन तो बहुत हुआ है किन्तु जीवन, शृंगार-वर्णन, भक्ति-दर्शन तथा काव्य-शिल्प की दृष्टि से सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत करने वाला यह प्रथम ग्रन्थ है। अपने अध्ययन को नंददास पर केन्द्रित रखते हुए लेखक ने नंददास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला है। विद्यार्थियों के लिए पठनीय, पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय।

× × ×

वोरा एण्ड कंपनी पब्लिशर्स प्रा० लि० बम्बई-२ : इलाहाबाद-१

आकाशपक्षी (उपन्यास), लेखक—अमरकान्त, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ७.००, पृष्ठ सं० २९६ (क्राउन)।

सामन्ती मान्यताओं में उलझी एक निर्दोष लड़की जो यह भूल जाना चाहती है कि वह एक राजकन्या है। सामन्तवाद जो अतीत हो चुका है, फिर भी अहंकार, श्रेष्ठता की भावना, भोगलिप्सा की प्रवृत्ति पुरातन के प्रति मोह कीचड़ के समान उसे घेरे रहते हैं। संघर्षरत जीवन की इस कथा का ही प्रतीक 'आकाशपक्षी' है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी का मन (उपन्यास), लेखक—विश्वम्भर 'मानव', प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ५.५०, पृ० सं० २१६ (क्राउन)।

सांकेतिक उपन्यासों के रचयिता 'मानव' का 'नारी का मन' करुण वेदना के आलोक में ऐसे मूल्य की ओर संकेत है जिस आलोक में जीवन के सभी मूल्य लीन हो जाते हैं। बलवंतसिंह यद्यपि पराया था किन्तु पालनेवाली माता के मन में उसके प्रति कितनी ममता थी जो उसकी अस्थियों का प्रवाह करते समय अपने प्राण भी प्रवाहित कर उठी। यह मर्मकथा अवश्य पढ़िए।

× × ×

श्रावणी (उपन्यास), लेखक—नीहाररंजन गुप्त, अनुवादक-वीरेन्द्रनाथ मिश्र, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ६.००, पृ० सं० २४४ (क्राउन)।

भारतीय नारी की सजीव प्रतिमूर्ति श्रावणी पाश्चात्य प्रभाव से आक्रान्त परिवेश में पतीत्व और मातृत्व की संघर्ष-गाथा है। पश्चिमी जीवन का थोथापन प्रकट करती श्रावणी स्वयं न बदलकर पति के जीवन में ही परिवर्तन ला देती है। नीहाररंजन बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार हैं, इनकी शैली शरत् का स्पर्श-स्मरण करा देती है।

× × ×

अन्य प्रकाशक

मालवीयजी के सपनों का भारत, सम्पादक—ईश्वरप्रसाद वर्मा, प्रकाशक किताबघर, गांधी नगर, दिल्ली-३१। प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य १०.००, पृ० सं० (डिमाई)।

महामना का स्वप्न कितना अद्‌भुत और विशाल था इसका प्रमाण आज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय है। प्रस्तुत कृति सात खण्डों—कामना, श्रद्धांजलि, काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय, लेख एवं उपदेश, जीवन-गाथा, कर्णधार तथा भारतीय संस्कृति—में विभाजित है। ये मालवीयजी के प्रति श्रद्धा ही अर्पित नहीं करते हैं, उनके व्यक्तित्व के बहिरंग तथा अन्तरंग पर भी प्रकाश डालते हैं। प्रत्येक युवक के लिए पठनीय।

× × ×

भारतीय संगीत का इतिहास : लेखक—भगवतशरण शर्मा, प्रकाशक—संगीत कार्यालय, हाथरस, प्र० सं० १९६७ ई०, मूल्य ५.००, पृष्ठ सं० १७६ (क्राउन)।

इस ग्रन्थ में भारतीय संगीत का ऐतिहासिक सिंहावलोकन करते हुए क्रमिक विकास दिखाया गया है। प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक युग की समस्त संगीत विधाओं का संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक का लक्ष्य है। संगीत प्रेमियों तथा विद्यार्थियों के लिए पठनीय।

× × ×

भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास : ले० चन्द्रबली त्रिपाठी, वितरक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, भैरवनाथ, वाराणसी, मूल्य १०.००, पृष्ठ संख्या ३३४ (डिमाई)।

सत्रह अध्यायों में बंटे हुए इस ग्रन्थ में भारतीय नारी आदर्शों के विकास को उसके समूचे परिप्रेक्ष्य में यथाशक्ति बड़े ऊहापोह के साथ निहारने की चेष्टा की गयी है। पुरुष-स्त्री सम्बन्ध, शिक्षा-दीक्षा, विवाह, विधवा-विवाह, नियोग, सती प्रथा, पर्दा, दहेज आदि के सर्वेक्षण में लेखक ने समीक्षात्मक पैठ का भी समावेश किया है।

परन्तु विवेचनों में सुष्ठु कालानुक्रम पद्धति का औत्सर्गिक रूप से अभाव है। समाजविज्ञान एवं नृतत्व के अनुसन्धान की स्वीकृत शैली के समर्थक ग्रन्थ की मानकता में कदाचित अपना विवेचनादर्श पूर्णोत्कर्ष पर न पा सकें, वैसे अनेक स्थानों पर सन्दर्भों एवं परिनिर्देशों की शास्त्रीय विधि भी अपनाई गई है।

भारतीय महिलाओं की बौद्धिक एवं भौतिक उपलब्धियों के कुछ अधिक विशद विश्लेषण से ग्रन्थ की वैयक्तिक विशेषता बढ़ गई होती। उसी प्रकार दिये हुए चित्रों के स्थान पर प्रत्न तथा मध्ययुगीन नारी विभूतियों के चित्र-विशेष श्लाघनीय रहे होते—यथा घोषा, ऊपाला, मैत्रेयी, गार्गी, लीलावती (काल्पनिक ही सही), रानी लक्ष्मीबाई, पद्मावती, रज़िया प्रभृति। जैन, सिक्ख, मुसलिम, ईसाई धर्मगत किंचित पर्यवेक्षण ग्रन्थ को और पूर्ण बना देता। विवाह-विच्छेद के सम्बन्ध में भी विशिष्ट और मूर्त समीक्षात्मक सूचनाओं के संकलन की भी अपेक्षा बनी रह गई है।

परिशिष्ट में संसार के तुलनात्मक अध्ययन से पाठक अच्छा आलोक अर्जित करता है और उसके कौतूहल, जिज्ञासा दोनों का पर्याप्त समाधान एवं परितर्पण होता है। उपयुक्त अनुक्रमणिका भी दी हुई है। परन्तु सन्दर्भ-ग्रन्थों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सूची को और तर्कप्रतिष्ठ अनुक्रम से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि ग्रन्थ का सौंदर्य, रोचकता और उपयोगिता तो अपने स्थान पर है ही। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की विचारक सी भूमिका से अलंकृत इस प्रबन्ध को स्वागतार्ह कहने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। भाषा भी साफ-सुथरी और अच्छी है।

मुद्रण तथा साज-सज्जा अंग्रेजी के उत्तम ग्रन्थों से टक्कर लेती है।

—मायाप्रसाद त्रिपाठी

× × ×

सहयोगी पत्र-पत्रिकाएँ

नवनीत (मासिक) ३४१ तारदेव, बम्बई-३४, वार्षिक १२-००, साधारण अंक का एक रुपया, दीपावली कला विशेषांक २-००

गत १६ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित 'नवनीत' (हिन्दी डाइजेस्ट) निश्चय ही अपने ढंग का एक मात्र मासिक है। प्रतिमास विविध रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक सामग्री कलात्मक रूप में प्रस्तुत करने में इसे अनुपम सफलता प्राप्त है। नवम्बर का दीपावली-कला विशेषांक भारत की विविध कला का इतिहास, प्रतिबिम्ब और बोध प्रस्तुत करता है। सर्वथा संग्रहणीय।

× × ×

संभावना (द्वैमासिक) : सम्पादक—माधव मधुकर, आनन्द-स्वरूप वर्मा, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी। प्रकाशक—१० पंजाब होटल, गोलघर, गोरखपुर। प्रथम अंक-प्रवेशांक, जनवरी-फरवरी १९६८, इस अंक का मूल्य सौ पैसे।

अकथ (मासिक) : सम्पादक—हरिदत्त, रमाशंकर जैतली, मणि मधुकर, आदिल मन्सूरी, रचना मणि। प्रकाशक—मनोहर बिल्डिंग, मिर्ज़ा इस्माइल रोड, जयपुर। प्रथम वर्ष, द्वितीय अंक, फरवरी १९६८। वार्षिक १०) एक अंक का एक रुपया।

दोनों पत्रिकाएँ समकालीन नवलेखन की दृष्टि से शुद्ध साहित्यिक बौद्धिक मंच की स्थापना के लिए प्रयत्नशील श्रमजीवी प्रयास है। पत्रिकाएँ चिरायु हों, यही हमारी कामना है।

× × ×

साहित्य परिचय (भाषा समस्या विशेषांक)—जनवरी-फरवरी १९६८ संयुक्तांक, सम्पादक-राजनाथ शर्मा, विनोद-कुमार अग्रवाल। प्रकाशक-विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा। वार्षिक शुल्क ५-००।

लोकसभा में भाषा विधेयक प्रस्तुत किये जाने के कारण भाषा-समस्या पर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता अनुभव हुई। आन्दोलनों, प्रस्तावों और उपद्रवों के बीच 'साहित्य परिचय' का यह 'भाषा समस्या विशेषांक' ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत करता है। राष्ट्रभाषा, शिक्षा का माध्यम भाषा, सम्पर्क भाषा, सभी दृष्टियों से विद्वानों ने इस पर विचार किया है। अन्त में राजभाषा (संशोधन) विधेयक, १९६७ मूल रूप में तथा लोकसभा द्वारा पारित रूप की प्रतिलिपि देकर इस अंक की उपयोगिता और बढ़ा दी है। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी के लिए पठनीय तथा संग्रहणीय। प्रकाशक अनेक बधाई के पात्र हैं।

× × ×

संगीत (मासिक)—तराना अंक, जनवरी १९६८, सम्पादक बालकृष्ण गर्ग, प्रकाशक संगीत कार्यालय, हाथरस, वार्षिक १०-००, इस अंक का ५-००

हिन्दी में संगीत साहित्य के प्रकाशन के लिए विख्यात 'संगीत' का तराना अंक संगीत-प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

पत्र-पत्रिकाएँ

दार्शनिक (त्रैमासिक) संपादक—यशदेव शल्य, प्रकाशक—अखिल भारतीय दर्शन परिषद्, डी १८ (ए) बापूनगर, जयपुर। वार्षिक १०-००, एक अंक २-७५।

गत १३ वर्षों से प्रकाशित, प्रस्तुत अंक ४, अक्तूबर १९६७।

विश्वभारती पत्रिका (त्रैमासिक), सम्पादक—डा० रामसिंह तोमर, प्रकाशक हिन्दी भवन, शान्तिनिकेतन। वार्षिक ८-००, एक अंक का २-५०।

ब्रह्मवाणी (मासिक)—सम्पादक कृष्ण मुनि प्रभाकर, प्रकाशक ११२७७ डोरी वाला, नई दिल्ली-५। वार्षिक

(शेष पृ० ५६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये प्रकाशन

शोध-ग्रंथ

तिवारी, डॉ० विश्वनाथ, छायावादोत्तर हिन्दी-गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	१५.००
दुबे, डॉ० लक्ष्मीनारायण, हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर (म० प्र०)	१५.००
गुप्त, डॉ० मदनगोपाल, मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	३५.००
ओझा, डॉ० मान्धाता, हिन्दी-समस्या-नाटक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	३५.००
स्नातक, डॉ० विजयेन्द्र, राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	३५.००
शर्मा, डॉ० प्रभातचन्द्र, प्रगतिवाद और हिन्दी उपन्यास, साहित्य सदन, देहरादून	२०.००
शर्मा, डॉ० सच्चिदानन्द, उदासी सम्प्रदाय और सन्त रेणु, साहित्य सदन, देहरादून	१२.५०

आलोचना, साहित्य, निबन्ध एवं भाषाविज्ञान

त्रिपाठी, मायाप्रसाद, अतीत का अभिनवालोक (निबन्ध-संग्रह), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	३.५०
वाजपेयी, किशोरीदास, हिन्दी की वर्तनी (भाषाविज्ञान), राजधानी ग्रन्थागार, दिल्ली	
विद्यार्थी, गणेशशंकर, कर्मवीर (निबन्ध-संग्रह), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	३.००
उमाकान्त, डॉ०, शकुन्तला नाटक तथा अन्य निबन्ध (निबन्ध-संग्रह), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	
यादव, राजेन्द्र, कहानी : स्वरूप और संवेदना (आलोचना), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	
पांडेय, गंगाप्रसाद, आज के लोकप्रिय कवि : महादेवी वर्मा (आलोचना), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	३.००
देवी, रत्नकुमारी, मधु संचय (डॉ० सेठ गोविन्ददास के साहित्य के संग्रहणीय अंश), किताब महल, इलाहाबाद	६.००
भट्ट, श्री कमलेश्वरप्रसाद, हिन्दी के प्रतिनिधि लेखकों की गद्य शैलियाँ (आलोचना), सूर्य प्रकाशन, दिल्ली	८.००
कौशिक, दिनकर, काल और कला (समीक्षा), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	८.००
मौर्य, डॉ० राजनारायण, भाषा-विज्ञान के तत्त्व (भाषा विज्ञान), साहित्य भवन, इलाहाबाद	२.७५
तिवारी, बद्रीनाथ, साहित्यिक निबन्ध (निबन्ध-संग्रह), साहित्य भवन, इलाहाबाद	३.७५
हरि, वियोगी (सं०), हमारी परम्परा (निबन्ध-संग्रह), सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली	२०.००
संसारचन्द्र, डॉ०, अपनी डाली के काँटे (निबन्ध-संग्रह), उमेश प्रकाशन, दिल्ली	३.००

उपन्यास

वाजपेयी, भगवतीप्रसाद, मोहत्याग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	६.००
वन्द्योपाध्याय, ताराशंकर, गणदेवता, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	१६.००
कृश्नचन्दर, मेरा जंगल मेरी बस्ती, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	५.००
वसु, मनोज, रात का मेहमान, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१२.००
लंडन, जैक, जंगल की पुकार, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	६.००
भट्टाचार्य, भवानी, लद्दाख की छाया, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	
वाजपेयी, निर्मला, काँटों के फूल, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभाकर, विष्णु, दर्पण का व्यक्ति, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०
ट्वेन, मार्क, इकलगेरी फिन के कारनामे, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
ट्वेन, मार्क, बहती धारा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
वन्द्योपाध्याय, ताराशंकर, बेगम, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
लिविस, सिंक्लेवर, ऐरास्मिथ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
वर्मा, भगवतीचरण, सीधी सच्ची बातें, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १५.००
मयूर, कन्हैयालाल, भाँग की पकौड़ी (हास्य उपन्यास), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००
भाटी, देशराजसिंह, अपना कौन (सामाजिक उपन्यास), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००
शुक्ल, शत्रुघ्नलाल, कल्पवृक्ष (सामाजिक उपन्यास), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००

कहानी-संग्रह

शुक्ल, शत्रुघ्नलाल (रूपान्तरकार), शेक्सपीयर के नाटकों की कथाएँ—भाग ४, उमेश प्रकाशन, दिल्ली ६.००
मेहता, नरेश, एक समर्पित महिला, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ३.००
यादव, राजेन्द्र, अपने पार···, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
प्रभाकर, विष्णु, मेरी तैंतीस कहानियाँ, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ८.००
एलनपो, एडगर, रहस्यपूर्ण कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६.००
सिन्हा, सुरेश, कई आवाज़ों के बीच, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ४.००
अरोड़ा, सुधा, बगैर तराशे हुए, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ४.००
जरासन्ध, तस्वीर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ४.५०

काव्य

शरण, अंजनीनन्दन, हनुमान बाहुक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी १.४०
मिश्र, वीरेन्द्र, अविराम चल मधुवंती (गीत-संग्रह), भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ३.००
सुमन, क्षेमचन्द्र, नारी तेरे रूप अनेक (कविता-संग्रह), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १५.००
पाण्डेय, गंगाप्रसाद, महादेवी वर्मा, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००

जीवन-चरित्र एवं संस्मरण

मोरेस, फेंक, जवाहरलाल नेहरू : एक जीवनी, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद १५.००
रोमांरोलां (लेखक), अज्ञेय, रघुवीर सहाय (अनु०), विवेकानन्द, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ७.५०
मधुप, श्यामलाल, कलाकार-संगम (फ़िल्मी कलाकारों की जीवनियाँ), हिन्दी सेवा सदन, मथुरा ५.००

साहित्येतर खण्ड

हक्सले, जूलियन, विकास की प्रक्रिया (मानवशास्त्र), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००
सिंह, सोरन, सामाजिक परिवर्तन और नियन्त्रण (समाजशास्त्र), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ४.५०
प्रभाकर, देवीशंकर, हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन (इतिहास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली ५.००
वुडबरी, डेविड ओ०, नवीन विज्ञान : १००१ प्रश्नोत्तर (विज्ञान), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ८.००

हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मिथ, केनेश एम०, जीवों के शत्रु : विषाणु (विज्ञान), आत्माराम एण्ड सन्स	५.००
माथुर, जगमोहनलाल, अफ्रीका : उसके देश और देशवासी (भूगोल), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१२.५०
वर्मा, मनोहरलाल, क्यों और कैसे (विज्ञान), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	५.००
देसाई, श्री मोरारजी, मेरी दृष्टि में (भाषण-संग्रह), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	८.००
मजूमदार, श्री प्रभातकुमार, योरोप का आधुनिक इतिहास (इतिहास), किताब महल, इलाहाबाद	६.००
प्रो० यजुर्वेदी, राजनीति का सरल अध्ययन (राजनीति), किताब महल, इलाहाबाद	२.५०
सिंह, बेचनप्रसाद, धातु-शिल्प (धातु विज्ञान), किताब महल, इलाहाबाद	४.५०
श्रीवास्तव, श्री रमेशचन्द्र, उद्यान-कला (बाग़वानी), किताब महल, इलाहाबाद	७.५०
दुबे, सुरेशचन्द, १००१ मनीमेकिंग फारमूले (इण्डस्ट्रियल), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	१५.००
गुप्ता, कालीचरण, स्माल मैन्युफैक्चरिंग गा० (इण्डस्ट्रियल), ,, ,,	८.२५
विजय, आर० सी०, लोकल ट्रांज़िस्टर रिसीवर (टैक्नीकल), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	४.५०
नाथ, प्रो० नरेन्द्र, रेडियो सर्विसिंग (टैक्नीकल), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	८.२५
रामअवतार व महावीर प्रसाद, सुन्दर हारमोनियम पुष्प० (संगीत), देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	४.५०
अग्रवाल, ऊषा, सुन्दर व आकर्षक कैसे बनें, स्त्री उपयोगी, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	४.५०
सत्यकाम, श्री दुर्गा सप्तशति, धार्मिक, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	३.५०
स्वामी सेवानन्द, योग आसन बड़ा, स्वास्थ्य उपयोगी, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	४.००
शर्मा, रतीराम, भृगु गुप्त प्रश्नोत्तरी, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	६.००
शर्मा, राजेन्द्र, हस्त रेखा विज्ञान, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	२.५०
शर्मा, पं० रतीराम, चमत्कार ज्योतिष, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	२.००
दुबे, सुरेशचन्द्र, माडर्न सोप एण्ड सोप पाउडर, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	१६.५०
दुबे, सुरेशचन्द्र, होम मनी मेकर्स, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	१२.००
राम, रती, अंक ज्योतिष, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	६.००
राम, गोविन्द, रमल ज्योतिष, ज्योतिष, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	८.२५
रत्ता, हरीचन्द, सचित्र इलैक्ट्रोनिक्स, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	३०.००
गुप्ता, कालीचरण, पेपरमेशी, मिट्टी का काम, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	६.००
बोहरा, आशारानी, बुनाई के ५० नमूने, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६	४.५०

साहित्येतर खण्ड

कुशवाहा, डी० एस०, आधुनिक अर्थशास्त्र के सिद्धान्त (दो भाग), (अर्थशास्त्र), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, (प्रत्येक भाग)	७.००
मित्रा, रवीन्द्रनाथ, राजनीतिशास्त्र के सिद्धान्त (राजनीतिशास्त्र), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	१५.००
श्रीवास्तव, श्री रमेशचन्द्र, उद्यानकला, किताब महल, इलाहाबाद	७.५०
सक्सेना, डॉ० उमेशकिशोर, मानचित्र-चित्रण एवं प्रयोगात्मक भूगोल (भूगोल), लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा	७.५०

बाल एवं किशोर-साहित्य

कुमार, सुशील, विश्वामित्र (किशोर उपन्यास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली	२.५०
मंजुला, उड़नेवाला घोड़ा (किशोर उपन्यास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली	३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेक, स्वामी दयानन्द (किशोर उपन्यास), उमेश प्रकाशन, दिल्ली २.००
नारखेड़े, जलवन्ती (बाल-उपन्यास), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली २.५०
विष्णुकान्त, चाचा नेहरू (पद्यात्मक जीवनी), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
रेड्डी, श्री बालशौरि, प्रकाश और परछाईं, साहित्य भवन, इलाहाबाद २.००

कोश तथा सन्दर्भ-ग्रंथ

सचित्र विश्वकोश (दस खण्डों में), राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली (प्रत्येक खण्ड) ७.००
अरुण, हास्य महाकोश, (चुटकुला-संग्रह), आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १२.००

एकांकी-नाटक

वर्मा, रामकुमार, जौहर की ज्योति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ३.५०

पॉकेट-पुस्तकें

पुष्पी कार्यालय, इलाहाबाद

वाजपेयी, प्रेम, वासना की आँच २.००
शर्मा, ओमप्रकाश, छुपे चेहरे २.००
अकेला, सोमनाथ, बदलते हमसफ़र २.००
इलाहाबादी, अकरम, स्वीट सैवनटीनर १.५०
वाजपेयी, प्रेम, दो रेखाएँ २.००

मधुर पॉकेट बुक्स, मथुरा

मधुप, श्यामलाल, लहर और किनारा २.००
सुलतानपुरी, शंकर, सिन्दूर की लाज २.००
शुक्ल, शत्रुघ्नलाल, प्यार का ख़ून २.००
भाटी, देशराजसिंह, अपना कौन
(सामाजिक उपन्यास) २.००

मधुप, श्यामलाल, रंगीन दुनिया २.००
मयूर, कन्हैयालाल, भाँग की पकौड़ी
(हास्य उपन्यास) २.००

(पृ० ५२ का शेषांश)

३-००, एक अंक का २५ पैसे।

जयकृष्ण पंथ की एक मात्र पत्रिका। सगुण भक्ति-साधना से लीन कहानी तथा लेख।

× × ×

विज्ञान प्रगति (मासिक) सम्पादक—कृष्ण मुरारी अग्रवाल तथा श्यामसुन्दर शर्मा, वार्षिक ५-००, प्रति अंक ५० पैसे, प्रस्तुत अंक दिसम्बर-जनवरी १९६८ का संयुक्तांक। विज्ञान कांग्रेस के अवसर पर प्रकाशित। भारत की समस्त राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं का सचित्र परिचय इस अंक की विशेषता है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेखा कार्यालय मोहर

A. O. Stamp

जारी होने पर आयताकार म० आ० मोहर

Oblong M. O. Stamp on Issue

महीना मोहर

Month-stamp

क्रमांक No. _____ दिनांक Date _____

रुपये के लिये जारी किया गया (शब्दों में)

Issued for Rs. (in words) _____

रक़म (अंकों में)
Amount (in figures)
रु० Rs. पै० P.

म० आ० क्लर्क M. O. Clerk

प्रेषक डाकपाल Issuing Postmaster

प्रेषक को भरनी चाहिए To be filled up by the remitter

रक़म (शब्दों में) Amount (in words) छः रुपये केवल 6/-

'तार में' या 'हवाई-डाक से' यदि आवश्यक हो तो ये शब्द लिख दें। Write "By Telegraph" or "By Air Mail" if required.

प्राप्तकर्ता का नाम व पूरा पता Name and address of the payee (in full)

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ
7/16 दरिया गंज दिल्ली-६

अदायगी अधिकार की गोल म० आ० मोहर
Round M. O. stamp authorising payment

दिनांक Date

प्रेषक के हस्ताक्षर Signature of remitter

अदायगी होने पर आयताकार म० आ० मोहर
Oblong M. O. stamp on payment

रुपये से जोड़ने पर नहीं Not above Rupees

50 100 200 300 400 500 600

(भारतीय डाक-तार विभाग) INDIAN POSTS

अखिल भारतीय प्रकाशक संघ दिल्ली-६

प्राप्तकर्ता का नाम Name of payee

छः रुपये केवल

रक़म Amount { शब्दों में In words 6/- अंकों में In figures रु० Rs. पै० P.

प्रेषक का नाम व पूरा पता Name and address of the remitter (in full)

प्राप्ति ACKNOWLEDGMENT

संदेश के लिए स्थान (प्रेषक का पता दूसरी तरफ लिखें)
Space for communication (Sender's address to be written overleaf)

रु० Rs. पै० P.

"हिन्दी प्रकाशक" के वार्षिक मूल्य के रूप में छः रुपये का मनीआर्डर भेज रहा हूं। मुझे आगामी अंक से इस पत्रिका का ग्राहक बना लें। इस कूपन के पीछे मेरा पता लिखा हैं

(हस्ताक्षर)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

म० आ०-8/M. O.-8

भारतीय मनीआर्डर INDIAN MONEY ORDER

बिक्री डाकघर की तारीख-मोहर
Date-stamp of office of sale

प्रेषक डाकघर की नाम-मोहर

Name-stamp of Office of Issue

म० आ० क्रम-संख्या...
No. of M. O.....

सेवा में To
डाकपाल The Postmaster _____ उप डाकघर S. O.
मुख्य डाकघर H. O.

यहाँ से मोड़िये FOLD HERE

पीछे लिखी रक़म प्राप्त की। Received the sum specified on the reverse.

प्राप्तकर्ता के स्याही में हस्ताक्षर या अँगूठा-निशान (यदि वह अनपढ़ हो)
Signature (in ink) of payee or thumb-impression (if payee is illiterate)

गवाह के हस्ताक्षर या अँगूठा-निशान (यदि वह अनपढ़ हो)
Signature of Witness or thumb-impression (if illiterate).

मैंने दिनांक.....को अदा किया
Paid by me on _____
हस्ताक्षर
Signature _____

पहचानकर्ता का प्रमाण पत्र IDENTIFIER'S CERTIFICATE
रुपया मेरे सामने दिया गया है। मैं प्राप्तकर्ता को जानता हूँ। उसका स्थायी पता यह है। The payment has been made in my presence and the payee is personally known to me and his permanent address is:—

पहचानकर्ता के हस्ताक्षर व पता Signature and address of identifier

यहाँ से मोड़िये FOLD HERE

पीछे लिखी रक़म दिनांक _____ को प्राप्त की
Received the sum specified on the reverse on

गवाह के हस्ताक्षर
Signature of Witness

अदायगी डाकघर की तारीख-मोहर
Date-stamp of office of payment

प्राप्तकर्ता के पूरे हस्ताक्षर (स्याही में) या अँगूठा-निशान
Signature (in ink) or thumb-impression of payee

दिनांक Date

डाकघर की जिम्मेदारी के लिए डाक-गाइड निर्देशिका का खण्ड 213 देखिये।
For responsibility of Post Office see Clause 213 of Post Office Guide, Part I.

प्रेषक डाकघर की नाम-मोहर
Name-stamp of the office of issue

यहाँ से मोड़िये FOLD HERE

प्रेषक का नाम व पूरा पता
Name and address of remitter

M.G.I.P.Ah.—1027—7-11-66—5,00,000 Pads. [M-3-29/56]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष सूचना

हिन्दी के पुस्तक-विक्रेताओं एवं प्रकाशकों को परिपत्र आदि भेजने के लिए पते टाइप कराने की अब आवश्यकता नहीं रही

'अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ' की ओर से हिन्दी की सामान्य-पुस्तकों के प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं के पतों की सूची छपकर तैयार है।

पूरी सूची में, ढाई सौ से अधिक नगरों में स्थित पुस्तक-व्यवसायियों के कुल ११५२ पते छपे हैं। ८" × १३" आकार के कागज़ के एक ओर पर छपे लगभग ७५ पृष्ठ।

छपे-छपाए पते काट कर वाँछित प्रचार सामग्री पर चिपकाइए और पोस्ट कीजिए।

मूल्य प्रति सूची—दस रुपये। अ० भा० हि० प्रकाशक संघ के सदस्यों के लिए रियायती मूल्य—सात रुपये। डाक-व्ययादि प्रति सूची—सवा रुपया अतिरिक्त।

• यह सूची वी० पी० द्वारा न भेजी जा सकेगी, इसलिए कृपया इसका मूल्य डाक-व्यय सहित • ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा भेजिए।

पत्र-व्यवहार का पता :—

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

देश और निवासी

इतिहास • व्यक्ति • घटनायें

राजनीति • प्रशासन • धर्म

वैज्ञानिक • आविष्कारक

हिन्दी में अपने ढंग का नया विश्वकोश

सचित्र विश्वकोश

विषयानुसार 10 पृथक् खण्डों में

1. पृथ्वी • आकाश • खनिज
2. जीव-जन्तु • पेड़ पौधे
3. मनुष्य : विकास • स्वास्थ्य • खेलकूद
4. राजनीति • प्रशासन • धर्म
5. कृषि • उद्योग • व्यापार • शिल्प
6. आविष्कार • खोज • हॉबी • पर्यटन
7. विज्ञान • वैज्ञानिक • आविष्कारक
8. साहित्य • कला • दर्शन • पुराणकथा
9. इतिहास : प्रमुख व्यक्ति • घटनाएं
10. देश और निवासी • प्रमुख नगर

प्रामाणिक और नवीनतम जानकारी तथा 2000 से अधिक चार-रंगे और दुर्लभ चित्रों से भरपूर अपने ढंग का अनूठा विश्वकोश

नयी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य
प्रत्येक खण्ड का मूल्य सात रुपये मात्र
दस खण्डों का पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च माफ

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त अमरनाथ द्वारा नवीन प्रेस, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६ में मुद्रित एवं ७/१६ दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित । सम्पादक : पुरुषोत्तमदास मोदी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ६, अंक २
जुलाई, १९६८

30-7-68

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

'राजकमल' के लोकप्रिय उपन्यास साहित्य
में
एक और सशक्त
हस्ताक्षर

श्रीलाल शुक्ल का
वृहद्
उपन्यास

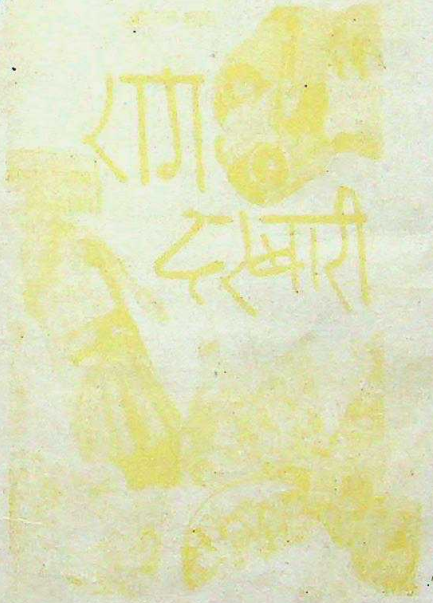

राग
दरबारी

गाँव की ज़िन्दगी से घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध होते हुए भी एक अत्यन्त 'अनांचलिक' उपन्यास। आज के भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को सहज निर्ममता के साथ अनावृत्त करता है—राग दरबारी

अगस्त में प्रकाश्य

मूल्य : १५.००

राजकमल

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

पटना-६ दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये प्रकाशन

शिक्षा सिद्धान्त और दर्शन : डॉ० विद्यावती मलैया १०.००
शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए इस विषय की सांगोपांग और उपादेय पुस्तक।

मध्ययुगीन रसदर्शन और समकालीन सौन्दर्यबोध : डॉ० रमेशकुन्तल मेघ १६.००
प्राचीन और अर्वाचीन काल के सौंदर्यबोध और उसके आधारों का शास्त्रीय और वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन।

कुछ जिन्दगियाँ बेमतलब : ओमप्रकाश दीपक ६.००
श्री दीपक का प्रथम उपन्यास, जो आज के जीवन की हताशा को सीधे-सादे शब्दों में तथा ईमानदारी से व्यक्त करता है।

यात्रा, और यात्रा : किरण जैन ४.५०
श्रीमती किरण जैन से हिन्दी-कविता के पाठक पहले से परिचित हैं। स्त्री-सुलभ भावों की निश्छल तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति इस संग्रह की कविताओं में पढ़ने को मिलेगी।

अपने स्टाक में इन पुस्तकों को निरन्तर रखिये, इनकी माँग बराबर बनी रहती है :

		पेपरबैक	पुस्तकालय-संस्करण
भाषाविज्ञान की भूमिका	: प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा	९-००[1]	११-००[1]
दो सौ नये निबन्ध	: सं० श्री कमलेश्वर	६-५०[1]	९-००[1]
निराला-काव्य का अध्ययन	: डॉ० भगीरथ मिश्र	—	४-००
तुलसी-काव्य-मीमांसा	: डॉ० उदयभानु सिंह	१६-००	१०-००[2]
प्रसाद का गद्य	: डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित	—	६-५०
हिन्दी-साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य	: सच्चिदानन्द वात्स्यायन	—	९-००
नन्ददास, विचारक रसिक कलाकार	: डॉ० रूपनारायण	—	१५-००
मुद्राराक्षस	: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, टीका : डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त	—	५-००
शिक्षा तथा मनोविज्ञान में अनुसन्धानोपयोगी सांख्यिकी	: डॉ० मनमोहन वर्मा	—	४-५०[1]

राधाकृष्ण मूल्यांकन-माला

लेखक	सम्पादक	पेपरबैक	पुस्तकालय-संस्करण	लेखक	सम्पादक	पेपरबैक	पुस्तकालय-संस्करण
बिहारी	डॉ० ओमप्रकाश	६-५०	८-५०	कबीर	डॉ० विजयेन्द्र स्नातक	६-५०	८-५०
दिनकर	डॉ० सावित्री सिन्हा	६-५०	८-५०	महादेवी	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	६-५०	८-५०
सूरदास	डॉ० हरवंशलाल शर्मा	६-५०	८-५०	जायसी	डॉ० रामपूजन तिवारी	३-७५	५-५०
तुलसी	डॉ० उदयभानुसिंह	६-५०	८-५०				

पुस्तक-विक्रेताओं को सन्तोषप्रद कमीशन

राधाकृष्ण प्रकाशन

२, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६
फोन : २७५८५१। तार : लोकप्रिय, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल कांगड़ी

हिन्दी प्रकाशक

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का मुखपत्र

वर्ष ६ : अंक २
जुलाई, १९६८

सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

मूल्य
प्रति अंक ०.६०, वार्षिक ६.००

सम्पादकीय कार्यालय
के ४०/६, भैरवनाथ, वाराणसी-१

प्रकाशन कार्यालय
हिन्दी प्रकाशक
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

सम्पादकीय

अभाव मनोवृत्ति का, पुस्तकों का नहीं

गत फरवरी से अप्रैल के बीच देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में विभिन्न परीक्षाएँ हुईं, इनमें स्नातक (बी० ए०) परीक्षा का परीक्षाफल उल्लेखनीय है, विशेषकर उन विश्वविद्यालयों का जहाँ अंग्रेज़ी की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई है। इन विश्वविद्यालयों के परीक्षाफल में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या में २५ से ४० प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। यह तथ्य यह विचार करने को प्रेरित करता है कि गत अनेक वर्षों से अंग्रेज़ी क्या हमारे युवकों के लिए निराशा, असन्तोष तथा कुण्ठा का कारण नहीं बनी हुई थी? अपने परिवेश से भिन्न उन्हें ऐसे भाषा-परिवेश में जीने के लिए बाध्य किया जा रहा था, जो उनके विकास को अवरुद्ध करता जा रहा था। यह तो इसी प्रकार का प्रयास रहा है जैसे ओक का वृक्ष सारे भारत में लगाने की हठवादिता की जाए। यदि प्रकृति में आमूल परिवर्तन कर सकना सम्भव नहीं तो किसी देश के संस्कारों को बदल सकना भी क्या सम्भव होगा?

कहा जाता है कि अंग्रेज़ी के बिना उत्तीर्ण छात्र का ज्ञान परिपक्व नहीं होता। इस प्रकार के भ्रम ही युवकों में हीनता, असन्तोष और विद्रोह की भावनाओं का सृजन करते हैं। न हम उन्हें २१ वर्ष की आज़ादी में अंग्रेज़ी का ज्ञान करा सके और न हमने उन्हें अपनी भाषा में ही पारंगत होने दिया।

विद्यार्थियों में यह थोथा अहंकार अवश्य भर दिया जाता है कि उन्होंने अंग्रेज़ी माध्यम से अध्ययन किया है और अंग्रेज़ी पढ़ी है, अतः वे हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक योग्य हैं। किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि न तो उन्हें अंग्रेज़ी का अच्छा ज्ञान होता है, और न अन्य विषयों का और हिन्दी का ज्ञान तो होता ही नहीं। इस प्रकार उनका ज्ञान उनके समक्ष एक प्रश्न-चिह्न बना खड़ा रहता है।

अपनी भाषा में दिया जाने वाला ज्ञान मात्रा में थोड़ा और स्तर में थोड़ा हल्का क्यों न हो वह उनके जीवन का अंग बन जाता है।

यह कहा जाता है कि हिन्दी में पुस्तकें नहीं हैं। यह आरोप उन लोगों द्वारा लगाया जाता है जो हिन्दी की प्रगति से अनभिज्ञ हैं, जिन्होंने हिन्दी की पुस्तकें देखने का कभी प्रयास नहीं किया। यदि उन्हें हिन्दी की पुस्तक दिखाई भी गई तो वे यही कहेंगे कि हिन्दी में ऐसे विषय पर लिखा ही नहीं जा सकता। ऐसे अज्ञानियों से आज देश की ज्ञान-जिज्ञासु पीढ़ी को बचाना है। आज यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि हिन्दी में स्नातक स्तर की लगभग सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। मानविकी के सभी विषयों में एक विषय पर एक नहीं अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं, विज्ञान के विषयों पर भी पुस्तकें हैं किन्तु उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी विविधता नहीं है क्योंकि अभी तक विज्ञान का अध्यापन स्नातक स्तर पर हिन्दी में नहीं हो रहा है। जब तक हिन्दी में विज्ञान का अध्यापन नहीं होगा, हिन्दी में विज्ञान की पुस्तकें अनेक सरकारी प्रयासों के बावजूद भी निकल न सकेंगी, वे स्तरानुकूल नहीं बन सकेंगी क्योंकि बिना अध्यापन-अभ्यास के हिन्दी में विज्ञान के विषयों पर सफल लेखन न हो सकेगा और अपनी भाषा में अपनी मिट्टी की गन्ध से ओत-प्रोत ज्ञान ही युवकों में अपने देश के प्रति कर्तव्य और निष्ठा की भावना जागृत कर सकता है।

शिक्षा के गिरते हुए स्तर के कारणों पर विचार किया जाए तो एक बहुत बड़ा कारण सामने आता है, वह है भाषा का अल्प ज्ञान। भाषा वह पात्र है जिसमें उँडेला हुआ ज्ञान आकार ग्रहण करता है। अंग्रेज़ी को माध्यम बनाये रखने के लिए विश्वविद्यालीय शिक्षा के आरम्भ से ही सामान्य अंग्रेज़ी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती रही है और अब जब हिन्दी को माध्यम बना दिया गया है इस बात की आवश्यकता है कि सभी विद्यार्थियों के लिए सामान्य हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जाए, उसके लिए पाठ्यक्रम बनाया जाए ताकि विद्यार्थियों का भाषा-स्तर उन्नत हो और वे हिन्दी में लिखी गई विविध विषयों की पुस्तकें पढ़ तथा समझ सकें। जब तक हमारे शिक्षाविदों की मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं होगा तब तक हमारे देश की शिक्षा अपने लक्ष्य तक न पहुँच सकेगी।

श्री भुवनेश्वरप्रसाद सिंह (स्वर्गीय)

अभिज्ञान प्रकाशन तथा पुस्तक भवन रांची के संस्थापक एवं संचालक श्री भुवनेश्वर प्रसाद सिंह का २४ मई, १९६८ की रात को एक बजे हृद्‌रोग से आकस्मिक निधन हो गया। उनकी अवस्था ५५ वर्ष की थी। वे अपने पीछे विधवा सहधर्मिणी श्रीमती लालपति देवी, दो पुत्र (१२ तथा ४ वर्ष), चार पुत्रियाँ (१७, १५, ९, ६ वर्ष) छोड़ गये हैं। वे रांची के ही नहीं, बिहार के प्रमुख पुस्तक-प्रकाशकों में से थे। उनकी मृत्यु के ६ दिन पूर्व १८ मई को इन पंक्तियों के लेखक को उनके कार्यालय में उनसे मिलने का सौभाग्य मिला था, उस समय यह कल्पना भी न की थी कि छह दिवस बाद उनका यह पार्थिव शरीर नहीं रहेगा, वे उस समय स्वस्थ थे। 'हिन्दी प्रकाशक' उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है। उनकी विधवा पत्नी और उनके छोटे-छोटे बच्चों को यह दुःख वहन करने की क्षमता दे प्रभु !

आलोक प्रकाशन, कुरुक्षेत्र
के
जगमगाते ग्रन्थ-रत्न

निराला काव्य-कोश : **डॉ० जयनाथ 'नलिन'**
निरालाजी के काव्य का निश्चित, सही अर्थबोध कराने वाला हिन्दी में एकमात्र ग्रंथ। मूल्य : १६.००।

काव्यपुरुष निराला : **डॉ० जयनाथ 'नलिन'**
निरालाजी के काव्य की सविस्तर, गहन, गम्भीर, निर्पेक्ष और सन्तुलित समालोचना। मूल्य : १६.००।

वादियों के रास्ते : **प्रो० मोहन चोपड़ा**
कुल्लू घाटी की सभ्यता, संस्कृति, कला, प्राकृतिक सुषमा और सामाजिक जीवन की अनुपम झाँकी। मूल्य : ४.००।

सभाईलाल : **डॉ० जयनाथ 'नलिन'**
सफ़ेदपोश, शिक्षित, आदर्शवादी व्यक्ति की शानदार धूर्तता, चटपटी चाटुकारिता, भव्य भ्रष्टाचार का व्यंग्यात्मक लेखा-जोखा। आकाशवाणी, जालंधर और विविधभारती से प्रसारित—असंख्य श्रोताओं द्वारा प्रशंसित। मूल्य : ४.००।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकप्रिय लेखकों की चुनी हुई प्रसिद्ध पुस्तकें

४५१. *वाम मार्ग* : **गुरुदत्त** ३.००

विख्यात उपन्यासकार के अत्यन्त लोकप्रिय ऐतिहासिक उपन्यास का सम्पूर्ण पाकेट संस्करण। शुरू से अन्त तक बहुत रोचक।

४५२. *जलावतन* : **अमृता प्रीतम** २.००

लोकप्रिय लेखिका का नई शैली में लिखा एकदम नया उपन्यास। बेहद रोचक। साथ में लेखिका की चुनी हुई प्रसिद्ध कहानियाँ।

४५३. *डाक बंगला* : **ए० हमीद** २.००

उर्दू के मशहूर उपन्यासकार का प्रसिद्ध रोमांटिक उपन्यास। प्रेम और कर्त्तव्य के संघर्ष की एक अमर कहानी। पढ़िये और पढ़ते चले जाइये।

४५४. *फरार* : **चन्दर** २.००

रोमांचकारी थ्रिलर उपन्यासों के प्रसिद्ध लेखक का नया विस्फोटक उपन्यास। गति, सनसनी, रहस्य और रोमांच का क्लासिक।

४५५. *वह कौन था* : **कर्नल रंजीत** २.००

उच्च कोटि के जासूसी उपन्यासों की श्रृंखला में एक नई और अनोखी वृद्धि। रातों की नींद उड़ा देने वाला अद्वितीय जासूसी उपन्यास।

४५६. *उल्टी सीधी* : **हरिशंकर परसाई** २.००

हिन्दी के आज के सबसे सशक्त और लोकप्रिय व्यंग्य-लेखक की चुनी हुई प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कहानियों का अनूठा संग्रह।

४५७. *काका कोला* : **काका हाथरसी** १.००

काका की नई हास्य-व्यंग्य कविताओं का फड़कता हुआ संग्रह। काका कोला की इस अनूठी बोतल में विनोद, परिहास, हास्य और व्यंग्य का सागर बन्द है।

४५८. *आत्मकथा* : **खान अब्दुल गफ्फार खां** २.००

सीमांत गांधी बादशाह खाँ की यह संसार की किसी भी भाषा में पहली बार प्रकाशित आत्मकथा एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है।

शीघ्र बिकने वाली
श्रेष्ठ पुस्तकों की पहचान

अपने नगर के पुस्तक-विक्रेता, रेलवे बुकस्टाल या रोडवेज़ बुकस्टाल से ख़रीदिए।
विस्तृत सूचीपत्र के लिए हमें लिखिए।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा०लि०, जी०टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-विक्रेताओं का संगठन और उसका स्वरूप

चम्पालाल रांका

आज समाज में संगठन की आवश्यकता सभी महसूस करते हैं। चाहे मज़दूर हो या व्यवसायी, छात्र हो या अध्यापक, राज्य कर्मचारी हो या अधिकारी, सभी यह अनुभव करने लगे हैं कि बिना संगठन के उनका सही स्थान समाज में नहीं हो सकता। संसार वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण जितनी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, उसमें यह और भी अधिक ज़रूरी हो गया है कि समाज का प्रत्येक वर्ग संगठित होकर अपना उत्तरदायित्व निभाये और अपने अधिकार भी प्राप्त करे। यही बात पुस्तक-विक्रेताओं पर भी लागू होती है।

भारत में पुस्तक-व्यवसायी अभी तक पूरी तरह संगठित नहीं हैं। अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशकों का संगठन कुछ वर्षों से कार्य कर रहा है। बम्बई में 'दि फ़ेडरेशन ऑफ़ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन इन इंडिया' के नाम से भारत के पुस्तक-व्यवसायियों का और पुस्तक-व्यवसायी संगठनों का एक संघ है। इन दो संगठनों के अलावा प्रान्तीय स्तर पर जो संगठन कार्य कर रहे हैं, उनमें पुस्तक-विक्रेताओं के संगठन कुछ ही जगह सक्रिय हैं। यों तो पुस्तक-विक्रेता गाँव-गाँव तक फैला हुआ है, लेकिन उसके महत्त्व के अनुपात में संगठन नहीं के बराबर है और यही कारण है कि आज उसे समाज में सही स्थान प्राप्त नहीं है। वह हर दृष्टि से पिछड़ा हुआ है।

इस भूमिका को ध्यान में रखते हुए हमें अपने संगठन के भावी स्वरूप पर विचार करना चाहिए। आज पुस्तक-विक्रेता सबसे अधिक संख्या में बड़े-बड़े शहरों में मौजूद हैं। साधारणतया एक लाख या इससे ऊपर की आबादी वाले शहर पुस्तक-विक्रेताओं के प्रमुख केन्द्र हैं। इसके अलावा संगठन की इकाई की दृष्टि से हमें गाँव या कस्बों के पुस्तक-विक्रेताओं के लिए आधार ज़िले को मानना पड़ेगा। इस तरह शहर और ज़िले के पुस्तक-विक्रेताओं के लिए अपनी-अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप हमें संगठन का रूप देना होगा। हम एकाएक न तो अखिल भारतीय स्तर पर पुस्तक-विक्रेताओं का शक्तिशाली संगठन आज चला सकते हैं और न गाँव या तहसील के स्तर पर। इसलिए प्रारम्भ की दृष्टि से हम दो बिन्दुओं पर ही ध्यान दें : शहर के पुस्तक-विक्रेता और इसके बाद ज़िले के पुस्तक-विक्रेता।

इस तरह जहाँ भी कम-से-कम दस पुस्तक-विक्रेता हों, उनको आधार बनाकर हमें अपना संगठन कायम करना चाहिए। इस संगठन की प्राथमिक आवश्यकताएँ हमारे सामने यदि स्पष्ट रहें तो संगठन को बनाना और आगे चलाना बहुत ही आसान हो जाएगा।

संगठन का संविधान छोटे-से-छोटा हो, ताकि अधिक उलझनों में न पड़ना पड़े। संविधान में सर्वमान्य उद्देश्य, सदस्यता के नियम, उसका शुल्क, कार्यकारिणी समिति, चुनाव का तरीका और हिसाब-किताब से सम्बन्धित मोटी-धाराएँ होनी चाहिए। लेकिन इन सबसे अधिक महत्त्व आज की परिस्थितियों में कार्यक्रम को देना चाहिए।

कार्यक्रम : प्रायः यह देखा गया है कि कार्यक्रम की दृष्टि से हम लोग भटक जाते हैं। ऊँचे-ऊँचे, खर्चीले कार्यक्रम बनाकर हम संगठन को जन्म देते ही जैसे खत्म करने की बात करने लगते हैं। कार्यक्रम में सबसे अधिक ध्यान इस बात पर दिया जाना चाहिए कि संगठन के सदस्यों की मुख्य दैनिक समस्याएँ क्या हैं, जिनका हल निकालने पर उन सदस्यों की रुचि संगठन के प्रति दिनों-दिन बढ़ती जायगी और वे इसे अपनी फर्म का एक हिस्सा मानने लगेंगे। उदाहरण के रूप में मैं 'कमीशन-बन्द' का प्रश्न आपके सामने रख रहा हूँ (जिसे हम नेट बुक एग्रीमेन्ट भी कहते हैं)। हर खुदरा पुस्तक-विक्रेता से इसका सम्बन्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सवाल पर सामान्यतया दो राय नहीं हो सकतीं कि पुस्तक छपे मूल्य पर बिकनी चाहिए। अगर संगठन का निर्माण होने के बाद कार्यक्रम की दृष्टि से कोई काम हाथ में लिया जाना चाहिए, तो यह एक काम हो सकता है। यदि एक शहर के २५ पुस्तक-विक्रेताओं को कमीशन बन्द की योजना से प्रतिदिन आर्थिक लाभ होता है तो कोई कारण नहीं कि उनकी रुचि इस संगठन में न बढ़े। लेकिन इस कार्यक्रम को हाथ में लेने से पहले संगठन की बुनियाद ऐसी होनी चाहिए कि इस प्रकार के कार्यक्रम बराबर सफलतापूर्वक चल सकें।

संगठन की बुनियाद के रूप में मैं मुख्य रूप से तीन बातें सोचता हूँ। पहली यह कि चन्दे से और विशेष सहायता से जो भी पैसे इकट्ठे होते हैं, उनको ध्यान में रखते हुए हैसियत के मुताबिक कार्यालय का स्थान लिया जाना चाहिए। दूसरी बात यह है कि उसे प्रतिदिन चलाते रहने के लिए (चाहे कुछ ही समय के लिए सही) वैतनिक कार्यकर्ता नियुक्त किया जाना चाहिए। और तीसरा यह कि बैठकों में चाहे छोटे-मोटे ही निर्णय किये जाएँ उन पर संजीदगी के साद अमल किया जाय। इस प्रकार यह देखा जा सकेगा कि सदस्य ऐसे निर्णयों को कार्यान्वित कर रहे हैं या नहीं अर्थात् संगठन का अनुशासन वे मानते हैं या नहीं।

इसके बाद **संगठन को गति** देने के लिए अन्य बातें भी की जानी चाहिए। महीने में दो-एक बैठकें कार्यकारिणी समिति की अवश्य होनी चाहिए। संगठन बिना शक्ल की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन दिखाई देने लायक एकाएक सामने आने वाली चीज़ भी नहीं है। संगठन का रूप हम इसी प्रकार आँकते हैं कि उसके कितने सदस्य हैं, कितना धन एकत्र होता है, किस कार्यक्रम पर खर्च होता है, कितनी बैठकें होती हैं, उसका प्रचार-कार्य कैसा हो रहा है, कार्यालय की गतिशीलता क्या है, निर्णयों पर अमल कैसे हो रहा है, संगठन के प्रति सदस्यों की दैनिक रूप से सक्रिय रुचि किस मात्रा में है। पुस्तक-विक्रेताओं के संगठन की परीक्षा तो इसी बात में है कि उसके सदस्य उस संगठन में कहाँ तक रुचि लेने लगे हैं। यदि आपस में भिन्न राय रखते हुए, किसी प्रश्न पर उलझते हुए, झगड़ते हुए भी संगठन को आगे बढ़ाने में और बहुमत के फैसले पर चलने में एकजुटता आ जाती है, तो उस संगठन का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

इसके साथ ही सवाल जुड़ा हुआ है, **संगठन में नेतृत्व** कहाँ से आए और उसका विकास कैसे हो। किसी भी संगठन में एकाएक शक्तिशाली नेतृत्व पैदा नहीं होता। नेतृत्व के जन्म का और उसके विकास का भी एक क्रम है। प्रस्ताव के रूप में हम जो कार्यक्रम तय करते हैं, जिसमें सबका समान रूप से हित है, उस कार्यक्रम पर दिल से चलने वाला और उसे आगे बढ़ाने वाला पुस्तक-विक्रेता ही उसके संगठन का नेतृत्व कर सकता है। सक्रिय रहने वाले लोग ही संगठन का नेतृत्व करते हैं। हमारे समाज में कथनी और करनी को मिलाने वाले लोगों की बहुत कमी है। इसलिए यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि जो कुछ कहा जाता है वह शत-प्रतिशत पूरा उतर जाएगा। उलटे होता यह है कि अधिकांशतः कही हुई बात का, पास किये हुए प्रस्तावों का, एक-तिहाई भी पूरा नहीं होता। ऐसी स्थिति में संगठन के सदस्यों को ऐसे लोगों को आगे लाना चाहिए या आगे आने देना चाहिए, जो कथनी और करनी में अधिक-से-अधिक ताल-मेल बिठा सकें। यह सही है कि इस क्रिया में कुछ समय लगता है, लेकिन सदस्यों की इतनी सजगता भी रह जाए कि कौन अधिक-से-अधिक सही ढंग से उनको आगे ले जा सकता है, तो नेतृत्व करने और उसका विकास करने का काम अपने-आप पूरा होता जायगा।

संगठन में जहाँ नेतृत्व के महत्त्व की बात छिपी हुई है वहीं एक तरफ़ बड़ा ख़तरा हममें पैदा होने वाली **विघटनकारी प्रवृत्तियों** का है। यदि आम सदस्यों की चेतना और समझ से अधिक आगे बढ़कर नेतृत्व दिया जाए तो एक दूसरा ख़तरा खड़ा हो जाएगा। इन बातों को हम और अधिक स्पष्ट रूप से समझ लें। काम करने वालों के विरुद्ध झूठा प्रचार करने वाले मैदान में उतर आते हैं; वे स्वयं तो संगठन को धन और समय देते नहीं, दूसरों को भी ऐसा करने से रोकते हैं। संगठन की तुलना में कई बार हम अपने-आपको, अकेले को बड़ा समझने का अहं पैदा करने से नहीं रोक सकते। अनेक बार सही बातों में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम कागज़ • सुन्दर छपाई • आकर्षक आवरण से सुसज्जित

पुष्पी पॉकेट बुक्स

सुप्रसिद्ध लेखकों के प्रत्येक माह लगभग पाँच ताज़े उपन्यास प्रकाशित होते हैं।

• प्रकाशित उपन्यास कमीशन ५० प्रतिशत

वासना की आँच	प्रेम वाजपेयी	२.००
दो रेखायें	"	२.००
पाप और प्यार	"	२.००
कुछ उजले कुछ धुँधले	"	२.००
दरवाजा खोल दो	"	२.००
औरत जब गिर जाती है	"	२.००
खिलाड़ी	"	२.००
कबूतरी	"	२.००
गेहूँ और ताजमहल	"	२.००
ये शरीफ़ज़ादियाँ	"	२.००
तनहाई और परछाइयाँ	"	२.००
ताश के महल	"	२.००
छुपे चेहरे	ओमप्रकाश शर्मा	२.००
कंचनगढ़ की सराय	"	१.००
रहस्यमय वैज्ञानिक	"	१.००
राजमहल का षड्यंत्र	"	१.००
आखिरी दाँव (उर्दू)	"	१.५०
काली घटा	आदिल रशीद	२.५०
देवता	"	०.७५
एक रात का पाप	गोविन्द सिंह	२.००
आधुनिक कामकला (सेक्स)	"	२.००
बदलते हमसफर	सोमनाथ अकेला	२.००
वासना	"	२.००
स्वीट सैवनटीन	अकरम इलाहाबादी	१.५०
स्वीट सैवनटीन (उर्दू)	"	१.५०
ज़िन्दा चट्टानें	"	१.५०
ज़िन्दा चट्टानें (उर्दू)	"	१.५०
रोम की नारी	अलबर्टो मोराविया	२.००
यौवन के दिन	" "	१.००
और वह हार गयी	आचार्य जगदीश मिश्र	१.७५
पचास सदी बाद	रेनौल्ड	१.००
लहू की पुकार (उर्दू)	बदनाम रफी	१.००
बेगुनाह मुजरिम (उर्दू)	"	१.००
शैतान का जाल (उर्दू)	"	१.००

पुष्पी कार्यालय

११९-बी, बाई का बाग़, इलाहाबाद-३

हम लोग नासमझी या लिहाज़ के कारण चुप रह जाते हैं। अगर नेतृत्व ठीक होगा तो इन सब बातों को धीरज के साथ सँभाल ले जाएगा और संगठन भी कमज़ोर न होगा। दूसरी बात यह हो कि यदि आम सदस्य दुकानें बन्द होने के बाद बैठकें किये जाने के पक्ष में हों तो बैठक उसके बाद ही होनी चाहिए। ज़रूरी-से-ज़रूरी मसले पर विचार करने के लिए भी सदस्यों की इच्छा के विरुद्ध यदि दूसरा समय तय कर लिया जाएगा तो बैठक नहीं चल सकेगी। इसी तरह सदस्यों की माँग पर किसी भी समय छोटे-से-छोटे आन्दोलन का रूप नया हो, इस पर भी सबकी समझ के अनुसार कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए और उसमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सब लोगों की एकता किस रूप में स्थापित होती है। अधिक गरम-गरम बोलने वाले भी उतने ख़तरनाक हो सकते हैं, जितने चुप रहकर संगठन को धोखा देने वाले; इसलिए इन ख़तरनाक प्रवृत्तियों से सावधान रहते हुए अगर हम अपने संगठन को आगे ले जाते हैं तो उसके फल हमें निश्चित रूप से मिलेंगे।

शहर और ज़िले के संगठन बनाने के साथ ही हमें अपने **प्रान्त के संगठन का निर्माण** भी करना पड़ेगा। पुस्तक-व्यवसाय के सामने जिस स्तर की समस्याएँ आती हैं उनका समाधान उस स्तर के संगठन ही कर सकते हैं। पुस्तक-विक्रेताओं की अनेक समस्याएँ प्रान्तीय स्तर की होती हैं। राज्य सरकार की नीति पुस्तक-क्षेत्र के विकास से कहाँ तक जुड़ी हुई है और राज्य सरकार अथवा राज्य के शिक्षा विभाग से पुस्तक-विक्रेता किन नीतियों का निर्माण करवा सकते हैं, जिनसे उनका हित भी हो और शिक्षा के क्षेत्र में वे अपना योगदान दे सकें, यह सब प्रान्तीय संगठन पर निर्भर है। आज यदि प्रान्तीय स्तर पर राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों के वितरण में अव्यवस्था है, सरकार यदि व्यवसायी बन करके भी व्यवसाय नहीं कर सकती और उल्टे छोटे-छोटे विक्रेताओं को परेशानी का सामना करना पड़ता है, यदि राज्य की शिक्षण-संस्थाएँ शिक्षण-विभाग की नीति के कारण पुस्तकों की 'सप्लाई' ठीक तरीके से नहीं ले सकतीं और पुस्तक-विक्रेताओं के सामने जगह-जगह एक ही ढंग की कठिनाइयाँ पैदा होती हैं, तो ऐसी स्थिति में प्रान्त के पुस्तक-विक्रेताओं का संगठन ही उनका हल निकाल सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसमें विचारणीय प्रश्न यही है कि या तो हम बड़े-बड़े शहरों में संगठन की शुरुआत करके प्रान्तीय संगठन का निर्माण करें या समर्थ पुस्तक-विक्रेता मिलकर प्रारम्भ में प्रान्तीय स्तर की कामचलाऊ-समिति का निर्माण करें। प्रत्येक स्थिति में समर्थ, अनुभवी और सूझ-बूझ वाले पुस्तक-विक्रेताओं को पहल करनी ही होगी। स्पष्ट है कि प्रारम्भ में उनका अधिक समय भी लगेगा, धन भी लगेगा और कई बार नुकसान भी उठाना पड़ेगा, लेकिन यह बात भी है कि भविष्य में उनकी अपनी अनेक समस्याओं का हल वही संगठन होगा। इसलिए नीतितः सभी पुस्तक-विक्रेताओं को यह बात मानकर चलनी चाहिए कि संगठन को खड़ा करो, तथा धन और शक्ति देकर सींचो और तब उसका फल प्राप्त करो। यदि संगठन को हम सींचते हैं तो संगठन हमारे काम को सींचने लग जाएगा। इसी क्रम में कुछ निर्णय इस प्रकार के भी किये जाने चाहिए कि सदस्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार उस संगठन को नियमित रूप से आर्थिक सहायता दे सकें और संगठन उन सदस्यों की, जो नियमित रूप से संगठन को आगे बढ़ाने में मदद देते हैं, समस्याओं का हल निकालता रहे। यह अन्योन्याश्रित सम्बन्ध बराबर चलता रहना चाहिए। तभी संगठन ज़िन्दा रह सकता है।

हमारे देश के पुस्तक-व्यवसाय को इस समय जिन परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है उन्हें देखते हुए ऐसा लगता है कि शहर, ज़िले या प्रान्तीय स्तर पर केवल पुस्तक-विक्रेताओं या केवल प्रकाशकों का संगठन सम्भवतः नहीं चल सकता। ऐसी स्थिति में **सभी प्रकार के पुस्तक-व्यवसायियों का एक मिला-जुला संगठन** कायम किया जाना चाहिए। पाठ्य एवं सामान्य पुस्तकों के पुस्तक-प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता—खुदरा विक्रेता, पुस्तकालयों में पुस्तकें 'सप्लाई' करने वाला विक्रेता, सहायक पुस्तकों के प्रकाशक एवं विक्रेता, कानूनी, मेडिकल टेक्नीकल आदि सभी प्रकार के पुस्तक-व्यवसायी ऐसे संगठन के सदस्य हो सकते हैं। साथ ही इस प्रकार के संगठन में प्रारम्भ से ही अलग-अलग प्रकार के धन्धों के अनुसार कुछ समितियों का निर्माण हो जाना उचित होगा, जैसे पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशक, सामान्य पुस्तकों के प्रकाशक, खुदरा विक्रेता, लाइब्रेरी में 'सप्लाई' करने वाले आपूर्तिकर्ताओं और थोक बिक्री करने वाले थोक-विक्रेताओं की अपनी-अपनी समितियाँ भी हों। उनके संयोजक अलग भी हो सकते हैं अथवा सुविधानुसार संगठन का रूप कायम किया जा सकता है। इस प्रकार जब प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय संगठन का निर्माण हो जाय तो अखिल भारतीय स्तर पर सभी प्रकार के पुस्तक-व्यवसायियों का अपना एक संघ हो सकता है। सम्भव हो तो एक प्रकार का धन्धा करने वाले पुस्तक-विक्रेता अथवा प्रकाशकों के अखिल भारतीय संगठन (भाषावार रूप से) हो सकते हैं। जो संगठन अभी हैं, वे कालान्तर में विकसित हो सकते हैं अथवा उनके नाम, संविधान और ढाँचे में परिवर्तन किया जा सकता है। अन्ततः राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक व्यवसायियों का एक राष्ट्रीय महासंघ होना आवश्यक है और उससे सम्बन्धित हर भाषा की पुस्तकों का व्यवसाय करने वाले व्यवसायियों का अखिल भारतीय संगठन।

पुस्तक-विक्रेताओं का इस प्रकार जो भी संगठन जिस स्तर पर भी हो उसका प्रभाव शिक्षा और पुस्तक-जगत् के समग्र क्षेत्र पर पड़ना अवश्यम्भावी है। समाज की सांस्कृतिक क्रान्ति में पुस्तक-विक्रेता का वही महत्त्व है, जो किसी शिक्षक और पुस्तकालयाध्यक्ष का है। इस तथ्य को जितना ही जल्दी समझ लिया जाय, उतनी ही जल्दी हमारे समाज की शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में प्रगति होना अवश्यम्भावी है। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले पुस्तक-विक्रेता अपने भावी कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने संगठन को बनाने का संकल्प लेकर जाएँगे हम यही आशा करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

दर्शन-धर्म-संस्कृति

हिन्दू देव परिवार का विकास डॉ० सम्पूर्णानन्द ६.५०

नानक वाणी रचयिता–गुरु नानक देवजी
टीकाकार–डॉ० जयराम मिश्र ३०.००

इस्लाम के सूफी साधक
रचयिता—रेनाल्ड ए० निकलसन
अनुवादक—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ४.००

संस्कृत के अमर ग्रन्थ

अमरुशतकम् रचयिता—महाकवि अमरु
अनुवादक—श्री कमलेशदत्त त्रिपाठी १०.००

कुट्टनीमतं काव्यम् रचयिता—दामोदर गुप्त
अनुवादक—श्री जगन्नाथ पाठक ७.५०

शतकत्रयम् (नीति, शृङ्गार एवं वैराग्य शतक)
रचयिता–भर्तृहरि, अनुवादक–श्रीकान्त खरे ३.००

जानकीहरणम् रच०—महाकवि कुमारदास
अनुवादक—श्री ब्रजमोहन व्यास २५.००

साहित्य एवं समालोचना

मधुमालती (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)
रचयिता–मंझन
सम्पादक–डॉ० माताप्रसाद गुप्त–राज संस्करण २०.००
साधारण संस्करण १२.००
विद्यार्थी संस्करण ८.००

मध्ययुगीन प्रेमाख्यान
लेखक—डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय १०.००

पद्मावत में लोकतत्त्व डॉ० रवीन्द्र भ्रमर ५.००

राउल वेल और उसकी भाषा
रचयिता—महाकवि रोड
सम्पादक–डॉ० माताप्रसाद गुप्त ५.००

निराला का कथा साहित्य
लेखिका–डॉ० कुसुम वार्ष्णेय ३.००

हिन्दी काव्य प्रवाह (संकलन)
श्रीमती पुष्पा स्वरूप २०.००

समाजशास्त्र

विवाह पद्धतियाँ ले०–एडवर्ड वेस्टर मार्क
अनु०–श्रीकान्त खरे ७.५०

आत्मकथा

जिक्रेमीर रचयिता—महाकवि 'मीर'
अनु०–श्री अजमल अजमली ३.००

कला

भारतीय चित्रकला ले०–श्री वाचस्पति गैरोला ५०.००

भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त परिचय
ले०–श्री वाचस्पति गैरोला ५.००

लोक-साहित्य

हमारे संस्कारगीत संकलन–श्रीमती राजरानी वर्मा ७.५०

जीवन-चरित्र

महात्मा गांधी ले०–डॉ० प्रफुल्लचन्द्र घोष ७.५०
(भूतपूर्व मुख्यमंत्री, प० बंगाल)

वैज्ञानिक

वन की पुकार (बालोपयोगी)
लेखक–स्वामी विश्वात्मानन्द ५.००

उपन्यास

चन्दन चाँदनी (मौलिक)
श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरेक्सा ४.००

चाँद बोला (मौलिक)
श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' २.००

जिन्दगी की जड़ें (मौलिक) श्री अनिरुद्ध पाण्डेय ४.००

तहरदार लौंडी (अनूदित)
ले०–मुंशी सज्जाद हुसैन, अनु०—श्री शमीम हनफ़ी ३.००

किस्सा चहार दर्वेश (अनूदित) रच०–मीर अम्मन
भाषान्तरकार डॉ० सैयद एजाज़ हुसेन ५.००

पिशाच की प्यास (अनूदित) ले०–ब्रेम स्टोकर
अनु०–श्री परमानन्द गौड़ ५.००

बारहवीं रात रचयिता—शेक्सपियर
रूपान्तरकार–श्री कुलदीप कपूर २.५०

अंकुर (अनूदित) रचयिता–एमिल जोला
अनुवादक–रमेश जोशी १०.००

जीने के लिए (अनूदित) रचयिता–एमिल जोला
अनुवादक–श्री सूर्यनारायण ४.००

लिज़ा (अनूदित) लेखक—तुर्गनेव
अनुवादक–श्री नेमिचन्द्र जैन २.५०

अग्निपरीक्षा (अनूदित) लेखिका–आशापूर्णा देवी
अनुवादक–श्री रामनारायण शुक्ल ३.५०

नाटक

नील-दर्पण रचयिता–दीनबन्धु मित्र
अनुवादक–डॉ० महादेव साहा ४.५०

उर्दू शायरी

जहरे इश्क़ रचयिता—नवाब मिर्ज़ा 'शौक'
भाषान्तरकार–डॉ० सैयद मुहम्मद अक़ील २.५०

प्रकाशक—(पुस्तक विभाग) मित्र प्रकाशन (प्रा०) लि०, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना भार

विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति

सुप्रसिद्ध कवि तथा साहित्यकार श्री शिवमंगलसिंह 'सुमन' विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त किये गये हैं। उज्जैन के माधव कालेज में आप सर्वप्रथम हिन्दी विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए थे, कुछ वर्षों तक आप नेपाल में भारत के सांस्कृतिक प्रतिनिधि भी थे। तत्पश्चात् आप माधव कालेज, उज्जैन के प्रिंसिपल हुए। अब प्रिंसिपल पद से आपने उपकुलपति पद ग्रहण किया है। हिन्दी के साहित्यकारों को विश्वविद्यालयों में उपकुलपति नियुक्त कर मध्यप्रदेश शासन ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

केनेडी पुस्तकालय को दान

'दि डेथ आफ़ प्रेज़ीडेंट' पुस्तक की आय से लेखक विलियम मैनचेस्टर तथा प्रकाशक हार्बर रो पब्लिशिंग हाउस ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय स्थित जान केनेडी स्मारक पुस्तकालय को ७॥ लाख डालर दान किया है।

सीनेटर एडवर्ड केनेडी ने, सीनेटर राबर्ट केनेडी की हत्या से पूर्व एक पत्र लिखकर इस दान के लिए धन्यवाद दिया था।

विश्व-प्रकाशन आँकड़े

संयुक्त राष्ट्र संघ की १९६७ की वार्षिकी के अनुसार सोवियत संघ में १९६६ में ७२९७७ पुस्तकें प्रकाशित हुईं, अमरीका में ५८५१७, जापान में ३०४५१ और ब्रिटेन में २८७८७।

स्वीडन में दैनिक समाचारपत्र सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। १९६६ के दौरान स्वीडन में प्रति एक हजार लोगों पर समाचारपत्रों की ५०१ प्रतियाँ बिकीं।

शिक्षा सलाहकार पैनल

योजना आयोग के सदस्य (शिक्षा) डा० बी० डी० नागचौधरी की अध्यक्षता में एक शिक्षा सलाहकार पैनल की स्थापना की गयी है।

यह पैनल शिक्षा योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करेगा तथा अगले १५-२० वर्षों में विकास की आवश्यकताओं का मोटे तौर पर अनुमान लगायेगा।

हरियाणा के पाँच जिलों में सार्वजनिक पुस्तकालय

आगामी तीन वर्षों में हरियाणा के रोहतक, जींद, गुड़गाँव, करनाल तथा हिसार जिलों में एक सार्वजनिक पुस्तकालय खोलने की योजना है। इस समय केवल अम्बाला और नारनौल में ही ऐसे पुस्तकालय हैं।

अम्बाला के सार्वजनिक पुस्तकालय को हरियाणा का केन्द्रीय सार्वजनिक पुस्तकालय बनाये जाने की योजना पहले ही मंजूर की जा चुकी है। एक चलता-फिरता सार्वजनिक पुस्तकालय भी खोला जायगा जो देहाती क्षेत्रों की पुस्तकालय आवश्यकता को पूरा करेगा।

विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदत डालने के लिए स्कूलों के पुस्तकालयों में भी सुधार करने की योजना है। सौ हाईस्कूल इस उद्देश्य के लिए चुने जायँगे और उनमें २००० रु० मूल्य की पुस्तकें प्रति पुस्तकालय को सरकार की ओर से भेजी जायँगी। समीप के मिडिल और प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों को इन पुस्तकालयों का प्रयोग करने की सुविधा दी जायगी।

नगरपालिकाओं के पुस्तकालयों को भी सुधारने की एक योजना सरकार के विचाराधीन है। प्रत्येक नगरपालिका के पुस्तकालय में एक प्रशिक्षित लाइब्रेरियन नियुक्त किया जायगा। इस समय समस्त हरियाणा में किसी भी नगरपालिका पुस्तकालय में प्रशिक्षित लाइब्रेरियन नहीं है। बड़े नगरों में वाचनालयों की संख्या बढ़ाई जायगी और उनमें समाचारपत्र और पत्रिकाओं को उचित ढँग से रखने का प्रबंध किया जायगा। सरकार इस उद्देश्य के लिए अनुदान का प्रबन्ध करेगी।

एक अन्य योजना के अंतर्गत राज्य के सार्वजनिक तथा नगरपालिकाओं के पुस्तकालयों की पुरानी पुस्तकों को रोहतक में एक स्थान पर एकत्रित किया जायेगा ताकि बेकार पुस्तकों को रद्दी में बेच दिया जाय और शेष को अच्छे ढँग से संदर्भ आदि के लिए सँभालकर रखा जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सके। संभवतः यह पुरानी पुस्तकों का पुस्तकालय गुरुकुल झज्झर में खोला जायगा जहाँ एक पुरातत्व संग्रहालय पहले ही खुला हुआ है।

इसी प्रकार पंचायती पुस्तकालयों का भी पुनर्गठन किया जायगा। इन पुस्तकालयों को प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में बदल देने की योजना सरकार के विचाराधीन है।

पाठ्य-पुस्तकों के लिए निगमों का सुझाव

राष्ट्रीय एकता परिषद के सदस्यों के विचारार्थ केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने एक सुझाव भेजा था जिसमें यह कहा गया था कि चौथे आयोजन-काल में पाठ्य-पुस्तकें तैयार कराने के लिए तथा वर्तमान पुस्तकों में सुधार कराने के लिए हर राज्य में एक-एक स्वशासित निगम स्थापित किया जाए।

सुझाव में यह भी कहा गया है कि स्कूली पाठ्य-पुस्तकों के लिए एक राष्ट्रीय मण्डल की स्थापना की जाए, जो इस क्षेत्र में किये गये प्रयासों में सामंजस्य बनाये रखने का प्रयत्न करे तथा सामान्य रूप से पाठ्य-पुस्तकों में सुधार करने और उन्हें विशेष रूप से राष्ट्रीय एकता की आवश्यकताओं को देखते हुए उपयुक्त बनाने के लिए जोरदार कदम उठाए।

मन्त्रालय का कहना है कि त्रिभाषा सूत्र से बच निकलने का न तो कोई उपाय है, न लाभ। क्षेत्रीय भाषाओं को पूरी तरह विकसित करना आवश्यक है जिससे वे सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम बनने में समर्थ हो सकें। इसी प्रकार जन-सामान्य में ज्ञान का प्रचार किया जा सकेगा। इसके साथ ही केन्द्र और राज्यों की भी यह विशेष ज़िम्मेदारी है कि वे दोनों सम्पर्क भाषाओं—हिन्दी और अंग्रेज़ी—को पुष्ट करने का प्रयास करें।

चौथी आयोजनावधि में त्रिभाषा सूत्र को सारे प्रदेशों में कार्यान्वित करने के लिए ज़ोरदार कदम उठाना आवश्यक है। इसके साथ-साथ उच्च शिक्षा-सम्बन्धी सभी संस्थाओं में हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों पढ़ाने की सुविधाएँ पैदा की जानी चाहिए।

शिक्षा की प्रणाली में परिवर्तन करने की तत्काल आवश्यकता है जिससे कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक कुशलता प्राप्त की जा सके और भाषा सीख पाना सम्भव हो।

हरियाणा शिक्षा विभाग

हरियाणा शिक्षा विभाग की नई विज्ञप्ति के अनुसार प्रारम्भिक तथा मिडिल विद्यालयों के लिए पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की योजना के अन्तर्गत अच्छी पुस्तकें अथवा पाण्डुलिपियाँ तैयार करने के लिए भावी प्रकाशकों, तथा लेखकों को अन्तिम तिथि १६-४-१९६८ से बढ़ाकर ३१-१२-१९६८ कर दी है। पुस्तकें अथवा पाण्डुलिपियाँ उक्त तिथि तक असिस्टेंट डायरेक्टर आफ़ पब्लिक इंस्ट्रकशन, सोशल एजुकेशन, के पास पहुँच जानी चाहिए।

पत्र-व्यवहार-पाठ्यक्रम

गोरखपुर विश्वविद्यालय इसी सत्र से पत्र-व्यवहार द्वारा पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहा है। फिलहाल यह पाठ्यक्रम बी० ए० में ही लागू होगा।

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ का चौथा वार्षिक अधिवेशन

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ का चौथा वार्षिक अधिवेशन जोधपुर में हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन राज्य के शिक्षा मन्त्री श्री शिवचरण माथुर ने किया।

इस अवसर पर एक विचार-गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें शिक्षा मन्त्री महोदय के अलावा राष्ट्रीयकरण पाठ्यपुस्तक मण्डल के सचिव श्री भारतभूषण भी उपस्थित थे।

१. पुस्तक के निर्माण, प्रकाशन और प्रसार का कार्य महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्य है। इसलिए इस कार्य में लगी हुई प्रतिभाओं को सम्मानित और पुरस्कृत किया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ यह माँग करता है कि केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें लेखकों के साथ-साथ प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं को भी प्रतिवर्ष सम्मानित और पुरस्कृत करने की योजना लागू करें।

२. पुस्तक-प्रकाशन और पुस्तक-प्रसार की सामाजिक सेवाओं को समाज में व्यापक मान्यता दी जाए। आज जब देश में होटल-जैसी संस्थाओं का विकास करने के लिए सर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर ऋण दे रही है तो पुस्तक-प्रकाशन और पुस्तक-प्रसार के कार्य को और विकसित करने के लिए भी उचित ब्याज पर ऋण दिये जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। वर्तमान में यदि कोई कठिनाई हो तो यह भी किया जा सकता है कि सरकारी और अर्द्धसरकारी संस्थाओं को जो रकम अनुदान के रूप में दी जाती है, वही रकम निजी क्षेत्र के पुस्तक-व्यवसायियों को लम्बी अवधि के लिए ऋण के रूप में दी जा सकती है। इससे सरकार पर किसी भी प्रकार का अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा। आगे चलकर राज्य में पुस्तक वित्त निगम की स्थापना होनी चाहिए।

३. पुस्तक क्षेत्र के विकास में रुचि रखने वाले लोग अब तक प्राय: मानने लगे हैं कि पुस्तकों की खरीद के लिए टेंडर पद्धति का अपनाया जाना किसी भी दृष्टि से घातक है। सन् १९६४ में राजस्थान सरकार ने टेंडर पद्धति की अनिवार्यता को खत्म करके एक सराहनीय कार्य किया था जिसकी प्रशंसा भारतवर्ष में जगह-जगह हुई। उसके बाद जहाँ तक उस आदेश की क्रियान्विति का सवाल है, राज्य के खरीद अधिकारी, विशेष रूप से शिक्षा अधिकारी, उसका पालन पूरी तरह नहीं कर रहे हैं। तत्कालीन शिक्षा संचालक श्री बी० बी० जान के अथक प्रयास से राज्य के कालेजों और कुछ पुस्तकालयों में टेंडर पद्धति को समाप्त किया गया। लेकिन राज्य-भर में फैली शिक्षण-संस्थाओं और ज़िला पुस्तकालयों, ज़िला निरीक्षकों के कार्यालयों में खरीद के लिए टेंडर-पद्धति आज भी भयंकर रूप से चालू है। हम यह अनुभव करते हैं कि वर्ष में कम-से-कम दो बार शिक्षा मन्त्रालय की ओर से शिक्षा अधिकारियों को कड़े निर्देश भेजे जाएँ और जब-जब प्रधानाध्यापकों तथा शिक्षा-अधिकारियों का सम्मेलन होता है, उसमें यह बात स्पष्ट की जाए कि पुस्तकों की खरीद के लिए टेंडर प्रणाली कतई न अपनाई जाए। तभी सही मायने में विभाग की शिक्षा नीति क्रियान्वित हो सकती है। ऐसा न होने से पुस्तक व्यवसाय अनेक तरह की व्याधियों से घिरा रहता है और सेवाओं का ह्रास होता है। पुस्तक क्षेत्र के विकास में प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता लेखक और शिक्षक की भाँति रुचि लेकर कार्य कर सकें, इस दृष्टि से टेंडर प्रणाली को जड़-मूल से समाप्त किया जाना चाहिए।

डॉ० महावीर दाधीच की दो नई पुस्तकें

अस्तित्ववाद

कीर्के गार्द, यास्पर्स, हेडेगर, सार्त्र, बूवर के चिन्तन का गम्भीर व आलोचनात्मक अध्ययन। इसके अतिरिक्त अस्तित्ववादी विचार और साहित्य पर एक मौलिक दृष्टि।

मूल्य ११ रुपये

आधुनिकता और भारतीय परम्परा

आधुनिकता और भारतीय परम्परा, मूल्य-संबंधी नवीन विचार, साहित्य और प्रतिबद्धता, भाषा, गीत आदि विषयों का विस्तृत और तर्कसंगत तात्त्विक विवेचन।

मूल्य ५ रुपये

सम्पर्क

शब्दलेखा प्रकाशन

५, डागा बिल्डिंग

बीकानेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ की ओर से इस वर्ष राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर एक स्मारिका तथा एक डायरेक्टरी व एक राजस्थानी शब्दकोष के प्रकाशन का भी निर्णय लिया गया।

अधिवेशन के द्विवर्षीय कार्यक्रम में राज्य के कोने-कोने से आए पुस्तक-व्यवसायियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अधिवेशन को सम्पन्न बनाने में जोधपुर के पुस्तक-व्यवसायियों का योगदान सराहनीय रहा। १९६८-६९ के लिए कार्यकारिणी का चुनाव इस प्रकार सम्पन्न हुआ :

अध्यक्ष : श्री द्वारकादास राठी।

उपाध्यक्ष : श्री जयकृष्ण अग्रवाल, श्री झुन्नीलाल जसोरिया तथा श्री लक्ष्मीनारायण विजय।

प्रधान मंत्री : श्री नरेन्द्र बाहरी।

उत्तर प्रदेश पाठ्य पुस्तकों के लिए दो निगमों का प्रस्ताव

उत्तर प्रदेश की चौथी पंचवर्षीय आयोजना की जो रूपरेखा तैयार की गई है उसकी मुख्य बात यह है कि दो निगमों की स्थापना की जाएगी तथा अधिक संख्या में स्कूल खोले जाएँगे और अधिकाधिक शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी। दोनों निगमों में से एक हाई स्कूल और इण्टर-मीडिएट कक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करेगा तथा दूसरा विश्वविद्यालय स्तर की हिन्दी पुस्तकें निकालेगा।

शिक्षा-सम्बन्धी कार्यकारी दल की बैठक में रविवार ७ जुलाई को ये निश्चय किये गये तथा इस बात का सुझाव दिया गया कि इन कार्यों पर एक अरब रुपये के खर्च की योजना बनाई जाए।

यह भी निश्चय किया गया कि चौथी आयोजनावधि में प्राथमिक कक्षाओं में नाम लिखाने वाले बालक-बालिकाओं की संख्या में पर्याप्त वृद्धि की सम्भावना देखते हुए काफी संख्या में प्रारम्भिक और जूनियर बुनियादी स्कूल गाँवों और शहरों में खोले जाएँ और अध्यापकों की यथेष्ट नियुक्ति की जाय। विचार यह हुआ कि अध्यापकों और छात्रों का अनुपात १ और ४५ का रहे।

अधिक संख्या में नये स्कूल भवनों का निर्माण करने, पुराने भवनों का जीर्णोद्धार करने और जूनियर बुनियादी स्कूलों में बालिकाओं के लिये अवस्थिति (कण्टीनुएशन) कक्षाएँ खोलने का भी सुझाव दिया गया।

कार्यकारी दल ने यह सुझाव दिया है कि गाँवों और शहरों में लड़कों और लड़कियों के लिए और सीनियर बुनियादी स्कूल खोले जाएँ तथा शिक्षक नियुक्त किये जाएँ। इसके अतिरिक्त ऐसे चार हजार स्कूलों में सामान्य विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध करने और निर्धन बालिकाओं के लिये पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था करने वाले पुस्तकालयों के लिये अनुदान देने का भी विचार किया गया।

परीक्षार्थियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट बोर्ड को और भी सुदृढ़ करने का सुझाव दल ने दिया है।

स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ने वाली बालिकाओं को विज्ञान (गैर प्राविधिक विषयों में) की शिक्षा में सुविधा देने तथा डिग्री कालेजों में खेल-कूद की व्यवस्था करने के लिये एक अधीक्षक रखने का भी सुझाव दिया गया।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की वित्तीय अवस्था एक तो यों ही गड़बड़ थी, दूसरे दिल्ली निगम द्वारा मिलने वाले ६० हजार रुपये के वार्षिक अनुदान में पचास प्रतिशत की कमी कर दिये जाने से उसे और भी आघात पहुँचा है।

सबसे बड़ी बात यह है कि यह कटौती गत वित्तीय वर्ष के अन्त में की गई जबकि इस उम्मीद पर कि अनुदान मिलेगा ही रकम खर्च की जा चुकी थी। पुस्तकालय को तीस हजार की रकम मार्च के मध्य में इस आश्वासन के साथ दी गई कि शेष रकम ३१ मार्च तक दे दी जायेगी। लेकिन अब जाकर सूचित किया गया है कि निगम की आर्थिक स्थिति खराब होने से अनुदान की रकम घटा दी गई है।

यह तो तस्वीर का एक पक्ष है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने विस्तार तथा अधिक संख्या में लोगों तक पहुँचने की बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई थीं जो पैसे की कमी से खटाई में पड़ गई हैं। इस समय इसकी सदस्य संख्या डेढ़ लाख है तथा करीब सात-आठ हजार पुस्तकें रोज़ सदस्य ले जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय की आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः केन्द्रीय सरकार के अनुदान से होती है। इससे प्रबन्धकों ने चालू वर्ष में २१ लाख रुपये की माँग की है लेकिन इसकी पूर्ति की सम्भावना कम ही है। पिछले वर्षों की भाँति इसका बजट १५ लाख रुपये के भीतर ही सीमित रखना पड़ा है। व्यवस्था-व्यय निरन्तर बढ़ते रहने तथा अनुदान में कोई वृद्धि न होने से पुस्तकों की खरीद काफी हद तक प्रभावित हुई है। इधर नई पुस्तकों की खरीद में कमी आ गई है। एक समय तो यह अपने बजट की चौथाई रकम नई पुस्तकों की खरीद पर व्यय करता था, लेकिन अब इस मद में बजट का पांचवाँ भाग भी नहीं लग पाता।

स्थान की कमी एक और बड़ी समस्या है। यह कठिनाई मुख्य पुस्तकालय भवन में ही नहीं देखने में आती वरन् करोल बाग, पटेल नगर, शाहदरा और लक्ष्मीबाई नगर की शाखाओं का भी यही हाल है। शाहदरा को छोड़कर अन्यत्र तो पुस्तकालय किराये के मकानों में हैं। इन भवनों में न तो परिवर्तन हो सकते हैं, न परिवर्द्धन।

पुस्तकालय के निदेशक श्री जगदीशचन्द्र मेहता का कहना है कि ठीक ढंग से काम करने वाले नई दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी के, दिल्ली कैन्टोनमेंट बार्ड के तथा अन्य पुस्तकालय यदि हमारे अधीन कर दिये जाएँ तो सभी को मिलाकर उत्तम व्यवस्था की जा सकती है।

महाराष्ट्र सरकार ने पुस्तकालयों के लिए एक अलग निदेशालय की स्थापना की है जो स्कूलों तथा कालेजों के पुस्तकालयों की व्यवस्था देखेगा। इस निदेशालय के निदेशक श्री के० डी० पुरानिक नियुक्त किये गये हैं। इस निदेशालय की स्थापना राज्य विधान सभा द्वारा पारित एक अधिनियम के अन्तर्गत की गई है।

बाल साहित्य प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने १४वीं बाल साहित्य प्रतियोगिता के लिए १६ अगस्त, १९६८ तक प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की हैं।

प्रतियोगिता के लिए १९६६, १९६७ तथा १९६८ में अब तक लिखी पुस्तकें व पाण्डुलिपियाँ भेजी जा सकती हैं। पाठ्य-पुस्तकों पर विचार नहीं किया जायेगा। कोई भी पुस्तक, जिसे केन्द्रीय या राज्य सरकारों अथवा सरकारी सहायता-प्राप्त संस्थाओं या अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा पुरस्कार मिल चुका है, प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जायेंगी।

लेखक और प्रकाशक अपनी प्रविष्टियाँ क्रमशः ३ रु० और ५ रु० के शुल्क के साथ सहायक शिक्षा सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, अनुभाग बी० एस० ई०-३ शास्त्री भवन, नई दिल्ली को भेज सकते हैं।

पुरस्कार की राशि अनुवाद कार्य के लिए

गुजरात विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा गुजरात के प्रसिद्ध कवि श्री उमाशंकर जोशी ने भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से अपने काव्य-संग्रह 'निशीथ' पर प्राप्त ५० हज़ार रुपया पुरस्कार की राशि भारतीय तथा अन्य विदेशी भाषाओं के काव्य-ग्रंथों का गुजराती में अनुवाद कराने के कार्य में व्यय करने की घोषणा की है।

●

पाठकों से

- यदि आपको किसी पुस्तक की जानकारी सर्वप्रथम 'हिन्दी प्रकाशक' से प्राप्त हुई है तो पुस्तक मँगाने के लिए उसके प्रकाशक को लिखते समय 'हिन्दी प्रकाशक' का उल्लेख अवश्य करें। इससे हमें प्रकाशकों का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त होगा।
- यदि आपको 'हिन्दी प्रकाशक' में कोई लेख पसन्द आया अथवा नहीं तो हिन्दी प्रकाशक के सम्पादक को अवश्य लिखें, आपका मत सम्पादक का मार्गदर्शन करेगा।
- 'हिन्दी प्रकाशक' से आप क्या अपेक्षा रखते हैं, कृपया अवगत कराएँ।
- 'हिन्दी प्रकाशक' को उपयोगी तथा सुन्दर बनाने के लिए आपके सुझाव आमंत्रित हैं।
- प्रकाशक-बन्धुओं से अनुरोध है कि अपने नये प्रकाशनों की सूचना प्रतिमास नियमित रूप से भेजा करें ताकि 'नये प्रकाशन' स्तम्भ में उन्हें सम्मिलित किया जा सके।

सम्पादक
हिन्दी प्रकाशक
के-४०/६, भैरवनाथ, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अभिनव प्रकाशन

आलोचनात्मक साहित्य

मध्ययुगीन काव्य साधना	डॉ० रामचन्द्र तिवारी	४.५०
समीक्षालोक	डॉ० भगीरथ दीक्षित	२०.००
कामायनी विमर्श	डॉ० भगीरथ दीक्षित	१०.५०
साहित्य का मूल्यांकन (Judgment in Literature)	ले० डब्ल्यू० बी० वर्सफोल्ड अनु० डॉ० रामचन्द्र तिवारी	३.००
रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय	डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह	१५.००
निबन्ध-नीहारिका	सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी	२.५०
लहरपंथी (निबन्ध)	डॉ० रामअधार सिंह	१.२५

कहानी, नाटक एवं कविता

कला का अनुवाद (कहानी)	पं० माखनलाल चतुर्वेदी	२.२५
स्वयंवर (कहानी)	विनोदचन्द्र पांडेय	२.२५
ज्वाला परचूनी (कहानी)	नरेन्द्र शर्मा	२.५०
जाने-अनजाने (संस्मरण)	विष्णु प्रभाकर	३.००
नाव के पाँव (कविता)	डॉ० जगदीश गुप्त	२.५०
बसन्त और पतझर (कविता)	विनोदचन्द्र पांडेय	१.५०
प्यासा निर्झर (कविता)	नरेन्द्र शर्मा	८.००
तन्दुल (कविता)	रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'	१.००
मुद्रिका (नाटक)	सद्गुरुशरण अवस्थी	१.००
भारत दुर्दशा (नाटक)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	१.००
चन्द्रावली (नाटिका)	लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	१.५०
काव्यधारा (कविता-संग्रह)	सं० डॉ० गोपीनाथ तिवारी तथा डॉ० रामचन्द्र तिवारी	३.००

स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तकें

कश्मीर में पन्द्रह दिन	श्री विट्ठलदास मोदी	१.२५
रोगों की सरल चिकित्सा	,,	५.००
जीने की कला	,,	१.५०
बच्चों के स्वास्थ्य और उनके रोग	,,	३.००
यूरोप यात्रा	,,	२.००
उपवास से लाभ	,,	१.५०
दुग्ध कल्प	श्री विट्ठलदास मोदी	१.००
स्वास्थ्य कैसे पाया ?	सं० ,,	२.००
कच्चा खाने की कला	डॉ० सत्यप्रकाश	०.७५
तन्दुरुस्त कैसे रहें ?	बर्नर मैकफेडन	३.००
उठो	स्वामी कृष्णानन्द	१.२५
आदर्श आहार	डॉ० सतीशचन्द्र दास	१.२५
सर्दी जुकाम खाँसी	डॉ० रैस्मस अलसेकर	१.००
योगासन	श्री आत्मानन्द	२.००
आहार चिकित्सा	अर्नाल्ड इहरिट	२.००
रोगों की नई चिकित्सा	लूई कूने	२.५०
प्राकृतिक जीवन की ओर	एडोल्फ जस्ट	४.००

इतिहास और संस्कृति

India Under Wellesely	*By P. E. Roberts*	15.00
Dupleix And Clive	*By H.H. Dodwell*	15.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ	श्री श्रीराम गोयल	६.००
भारतीय संस्कृति	डॉ० ललनजी गोपाल तथा ब्रजनाथसिंह यादव	५.००
आधुनिक योरप का इतिहास (१४५३ से १७८९ तक)	श्री राधाकृष्ण शर्मा (प्रश्नोत्तर)	३.५०

गणित और विज्ञान

Theory of Aggregates of Real Numbers	*Dr. K. B. Lal*	10.00
Vector Analysis	,, ,,	1.50
वैज्ञानिक अनुसंधान और आविष्कार	डॉ० रवीन्द्र प्रतापराव	३.००

अंग्रेजी और मनोविज्ञान

Fundamentals of General English	*B. M. Singh*	3.00
Constructive Guide to General English Vol. I & II	*By P.S. Mishra, Each*	1.00
A study of Educational Psychology	*By R. P. Bhatnagar*	7.50

प्राप्ति-स्थान

विश्वविद्यालय पुस्तक सदन, नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार विविधा

पाठ्य पुस्तकें राजनीतिज्ञों के चक्कर में

उत्तर प्रदेश तथा बाहर के दर्जनों प्रकाशक अनजाने ही राजनीति और दीर्घसूत्रता के शिकार हो गये हैं।

लगभग दो वर्ष हुए कि राज्य सरकार ने प्रकाशकों से पाठ्य-पुस्तकों के रूप में विचारार्थ पुस्तकें भेजने की माँग की। आज तक उन पुस्तकों पर विचार नहीं हो सका और अब फिर मामला एक वर्ष के लिए लटका दिया गया है।

प्रकाशकों का कहना है कि उनका करीब चालीस लाख रुपया इस प्रकार फँस गया है।

बात १९६६ की फरवरी की है। राज्य सरकार ने प्रकाशकों से हाई स्कूल और इण्टर के लिए अंग्रेज़ी, रसायनशास्त्र तथा कृषि की पाठ्य-पुस्तकों के रूप में पुस्तकें भेजने को कहा।

प्रकाशकों को इसका पूरा ब्यौरा दे दिया गया और उनसे कहा गया कि हाई स्कूल के लिए छः और इण्टर के लिए सत्रह पुस्तकें उपर्युक्त तीनों विषयों की भेजें।

इसके साथ एक शर्त यह भी लगी हुई थी कि हर पुस्तक के लिए समीक्षा-शुल्क भी रहना चाहिए। यह शुल्क विषय और कक्षा के अनुसार दो सौ से लेकर तीन सौ रुपये तक निश्चित किया गया था।

पुस्तकें जमा करने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर, १९६६ नियत थी। सचिवालय से यह तो तत्काल पता न चल सका कि कितने प्रकाशकों ने पुस्तकें जमा कीं, किन्तु अनुमानतः उनकी संख्या दो सौ से ऊपर है।

समीक्षा-शुल्क के रूप में प्रायः तीन लाख रुपये जमा हो चुके हैं।

पुस्तकें जब आमन्त्रित की गई थीं तब राज्य में कांग्रेस सत्तारूढ़ थी। उस समय तो मामला रह गया। बाद में जब संयुक्त विधायक दल की सरकार अस्तित्व में आई तो शिक्षामन्त्री रामप्रकाश ने तत्काल इस प्रश्न पर विचार करना स्थगित कर दिया।

२७ मई १९६७ को प्रकाशकों को एक अधिसूचना द्वारा बताया गया कि जब तक और कोई आदेश न जारी किया जाए तब तक के लिए वे पुस्तकों पर कोई निर्णय स्थगित समझें। तब से प्रकाशकों ने निर्णय में विलम्ब होने के प्रश्न को लेकर बराबर शिकायत की है लेकिन सब-कुछ व्यर्थ सिद्ध हुआ है।

अभी कुछ दिन हुए (गत १३ अप्रैल को) राज्य सरकार द्वारा एक और अधिसूचना जारी कर प्रकाशकों से कहा गया है कि पुस्तकों पर निर्णय अभी एक वर्ष तक और स्थगित रहेगा।

बताया गया है कि हर पाँच-छः वर्ष बाद शिक्षा की प्रणाली में हुए परिवर्तनों और विषय-विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पाठ्य-पुस्तकों में संशोधन किया जाता है, किन्तु उपर्युक्त तीन विषयों का जहाँ तक प्रश्न है पिछले दस वर्षों से पुस्तकें बिलकुल ही संशोधित नहीं हुई हैं।

पाठ्य-पुस्तकों सम्बन्धी इस भारी कुव्यवस्था के बारे में एक बात यह भी है कि राज्य सरकार ने प्रकाशकों से पुस्तकें आमन्त्रित करने के पूर्व ही इन तीनों विषयों में १९६७ से आरम्भ होने वाले शिक्षा-सत्र से नया पाठ्यक्रम घोषित कर दिया।

अब स्थिति यह है कि यद्यपि इन तीनों विषयों में संशोधित पाठ्यक्रम पिछले दो वर्षों से लागू हो गया है तथापि सरकार ने नवीनतम अधिसूचना द्वारा घोषित किया है कि पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार पुस्तकें आगे भी चालू रहेंगी।

इसका परिणाम यह होगा कि जहाँ छात्रों को विषयों की जानकारी तो रखनी होगी नये पाठ्यक्रम के अनुसार, वहाँ उनको पढ़ाई जाएँगी पुरानी ही पाठ्य-पुस्तकें। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति में बहुत-सी 'सहायक पुस्तकें' मैदान में आ गई हैं और छात्रों को उन्हीं पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

प्रकाशकों के बीच एक व्यापारिक आदर्श यह प्रचलित है कि जब वे कोई पुस्तक पाठ्य-पुस्तक के रूप में विचारार्थ भेजते हैं तो वे उसे तब तक न तो प्रकाशित करते हैं और न बिक्री के लिए बाज़ार में निकालते हैं जब तक कि समीक्षा समिति की रिपोर्ट नहीं मिल जाती।

लेकिन इस मामले में प्रकाशकों का धीरज अब छूट रहा है, अतः कुछ प्रकाशक सरकारी निर्णय प्राप्त होने के पूर्व भी पुस्तकें बिक्री के लिए बाज़ार में निकालने की बात सोचने लगे हैं।

उत्तर प्रदेश प्रकाशक संघ के संयुक्त सचिव श्री ओंकार सहाय ने बताया है कि यद्यपि समीक्षा-शुल्क अत्यधिक था तब भी प्रकाशकों ने यह सोचकर रकमें जमा कर दीं कि निष्पक्ष समीक्षाएँ तो की जाएँगी। हर पुस्तक पर प्रकाशकों का चार-चार हज़ार रुपये के करीब लगा है, अतः सरकार को तत्काल कुछ-न-कुछ निर्णय कर ही लेना चाहिए।

संविद सरकार में उपमुख्यमन्त्री तथा शिक्षामन्त्री श्री रामप्रकाश ने इस सम्बन्ध में पूछने पर बताया कि १९६७ में संविद सरकार पाठ्य-पुस्तकों के बारे में इसलिए कुछ निश्चय नहीं कर पाई कि समीक्षकों की रिपोर्टें जब प्राप्त हुईं तो शिक्षा-सत्र चालू हो चुका था।

उन्होंने यह भी बताया कि सरकार को कुछ समीक्षकों से घूस लेकर पक्षपातपूर्ण समीक्षाएँ लिख देने की भी शिकायत मिली थी, अतः सरकार ने उस समय यह विचार किया कि इन पुस्तकों की समीक्षा फिर से कराई जाए।

उन्होंने कहा कि निश्चय यह किया गया था कि चुने हुए समीक्षकों को एक दिन बुलाकर एक जगह इकट्ठा कर दिया जाए और उन्हें पुस्तकें देकर कहा जाए कि इन पर अपनी राय आप लोग अभी दें।

लेकिन इस योजना के कार्यान्वित होने के पूर्व ही संविद सरकार का अस्तित्व समाप्त हो गया।

एक सरकारी प्रवक्ता ने विलम्ब की बात स्वीकार की है और कहा है कि इसके लिए राजनीतिज्ञ ज़िम्मेदार हैं।

प्रवक्ता ने कहा—पुस्तकें प्रकाशित कराने का हमारा पूर्व निश्चय अब भी कायम है।

—'स्टेट्समैन' से

पाठ्य-पुस्तकों के मामले में घपला

पाठ्य-पुस्तकों से सम्बद्ध किसी घपले का यदि पता लगाना हो तो खोजियों को कहीं दूर न जाना पड़ेगा और न किसी गहराई में डुबकी लगानी पड़ेगी। इस सम्बन्ध की नवीनतम घटना, जिसका पता चला है—यद्यपि समय को देखते हुए वह नई नहीं है—उत्तर प्रदेश में घटित हुई है। फरवरी, १९६६ में तत्कालीन अधिकारियों ने, जबकि राज्य का शासनसूत्र कांग्रेस के हाथों में था, हाई स्कूल और इण्टर के लिए अंग्रेज़ी, रसायनशास्त्र तथा कृषि की पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशकों से भेजने के लिए कहा। पाठ्य-पुस्तकों के साथ समीक्षा-शुल्क के रूप में जो रकम ली गई वह अवश्य ही अत्यधिक थी। प्रति पुस्तक दो सौ से तीन सौ रुपये तक वसूल किये गए। लेकिन राज्य सरकार ने देश-भर के न जाने कितने ही प्रकाशकों से यह धन-राशि प्राप्त कर ली तथा अब उसे डकारकर चुप बैठी है। जब कांग्रेस की जगह संविद सरकार ने ली तो स्पष्टतः यह निश्चय किया गया कि सम्प्रति उक्त योजना आगे न बढ़ाई जाए, लेकिन रुपये लटका रखे गये। १९६७ की मई में एक अधिसूचना प्रकाशित की गई कि "जब तक कोई नया आदेश नहीं जारी होता, तब तक इन पुस्तकों पर निर्णय स्थगित रहेगा।" गत २५ फरवरी को संविद शासन का स्थान राष्ट्रपति शासन ने लिया लेकिन राष्ट्रपति के प्रतिनिधि ने भी लूट का माल वापस करने की कोई व्यग्रता न दिखाई। राष्ट्रपति-शासन-काल में १३ अप्रैल को एक नई अधिसूचना द्वारा पुस्तकों पर निर्णय एक वर्ष के लिए और टाल दिया गया। इधर प्रकाशक नियमानुसार उन पुस्तकों को उत्तर प्रदेश में या कहीं और बिक्री के लिए बाज़ार में नहीं ला सकते, यद्यपि उनके रुपये फँसे हुए हैं।

यह तो एक स्पष्ट उदाहरण सामने आया कि स्थिति कैसी चल रही है, किन्तु ऐसी घटना यह अकेली नहीं है। सच बात यह है कि किसी भी राज्य में पाठ्य-पुस्तकों को स्वीकृति प्रदान करने का पात्र, चाहे वह समितियों द्वारा हो या विभागीय विशेष अधिकारियों द्वारा, सन्तोषप्रद नहीं है। जो लोग पुस्तकों पर कोई निर्णय लेने में इतना समय लगाते हैं वही पुस्तकें जब माँगनी होती हैं तो बहुत ही कम समय देते हैं और इसके बाद यह कहकर उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वीकृत कर देते हैं कि इनमें छापे की भूलें हैं। पुस्तकों के कुछ अंश तो नामंजूर कर दिये जाते हैं और कुछ मंजूर। इसका परिणाम यह होता है कि छात्रों को क्रमिक रूप से जिस प्रकार शब्द-भण्डार से परिचित होते जाना चाहिए उससे वे वंचित रह जाते हैं हालाँकि पाठ्य-पुस्तक तैयार करने वाला क्रम को ध्यान में रखकर ही पुस्तक की रचना करता है। निर्णायकों में कितने ही व्याकरणानुरागी होते हैं जो पाठों में अनावश्यक हेर-फेर की माँग करते हैं, तो कितने ही शौकिया नीतिवादी होते हैं जो पाठों में और चित्रों के बारे में तरह-तरह की आपत्तियाँ उठाते रहते हैं। उस प्रकाशक का भगवान् ही भला करें जो अपने चित्रकार को यह छूट दे देता है कि वह किसी व्यक्ति को सिगरेट पीता प्रदर्शित करे। घूसखोरी और तरह-तरह के दबावों के आरोप तो इतने व्यापक हैं कि उनकी पुष्टि करने का प्रश्न ही नहीं उठता। और जब राज्य सरकार स्वयं पुस्तकें तैयार कराकर बाज़ार में लाती है तो फिर कुछ पूछिए मत। वे देर में आती हैं, खराब होती हैं तथा माँग-भर तो कभी पूरी पड़ती ही नहीं। इसमें कोई सन्देह ही नहीं कि इनके वितरण को लेकर ज़ोरों की चोरबाज़ारी चल पड़ती है।

एक तो इस कार्य से सरकार की स्थिति स्वयमेव हास्यास्पद हो गई है, दूसरे हालत और भी बिगड़ने वाली है। आगामी वर्ष से ऐसी योजना है कि अखिल भारतीय सेवाओं के लिए परीक्षाएँ १४ विभिन्न भाषाओं में ली जाएँ। किसी भी हालत में माध्यमिक और विश्वविद्यालयीय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में क्षेत्रवाद तीव्र गति से बढ़ेगा। फलतः नई पुस्तकों की माँग ही न बढ़ेगी वरन् इनकी आवश्यकता भी अधिक संख्या में होगी और पुरानी व्यवस्था की दृष्टि से ही नहीं नई व्यवस्था की दृष्टि से भी इनकी दर इतनी अधिक होगी कि कुछ बात न पूछिए। वर्तमान व्यवस्था के अन्तर्गत ये पाठ्य-पुस्तकें समय से सुलभ हो सकेंगी, ठीक-ठाक रहेंगी और सम्बद्ध भाषा में शुद्ध रूप में प्राप्त हो सकेंगी, साथ ही यथोचित रूप से सस्ती भी होंगी इसकी गुंजायश नहीं दिखाई देती। यह तो प्रश्न ही नहीं है कि वे समय से मिल पाएँगी और ईमानदारी के साथ उनका वितरण होगा तथा वे कुंजियों के साथ बाज़ार में न आएँगी।

('स्टेट्समैन' का सम्पादकीय)

अच्छी पुस्तकों का अभाव

२० साल में शिक्षा के क्षेत्र में हमने कितनी प्रगति की है इसका अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है कि हम अब तक स्कूलों के लिए अच्छी पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने में भी सफल नहीं हो सके हैं। न अच्छी पुस्तकें हैं और न अच्छे पुस्तकालय। हालत दिन-ब-दिन सुधरने की बजाय बिगड़ती जा रही है। कहने को दिल्ली विश्वविद्यालय के पास, जो देश का एक अच्छा विश्वविद्यालय माना जाता है, कभी एक अपना अच्छा पुस्तकालय था, मगर अब उसकी हालत भी खस्ता नजर आती है। ब्रिटेन के शिक्षा-शास्त्रियों की एक बैठक में यह सुझाव दिया गया था कि जिस विश्वविद्यालय में ३००० विद्यार्थी, १००० शोध-कर्ता और ५०० अध्यापक हों उसे अपने पुस्तकालय पर एक लाख पौंड प्रतिवर्ष खर्च करना चाहिए। इस खर्च में

हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेज़ी की श्रेष्ठ पुस्तकों का
दिल्ली में
सबसे बड़ा भण्डार
इंडियन पब्लिशिंग हाउस
२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज
दिल्ली-६
फोन : २७५२६७
तथा
नई सड़क, दिल्ली-६
फोन : २६२४२१
पुस्तक-विक्रेता व पुस्तकालयों को अपनी आवश्यकता की देश-भर के प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हमारे यहाँ से सुविधा से सुलभ हैं।
इंडियन पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय में काम आने वाले कर्मचारियों की तनख्वाहें शामिल नहीं हैं। भारत में तो इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक सीमित साधन और ऊपर से समितियों, आयोगों और सारहीन सम्मेलनों पर खर्च। नतीजा यह होता है कि शिक्षा-प्रणाली में सुधार की जितनी सिफारिशें की जाती हैं वे सब सिफारिशों तक ही सीमित रह जाती हैं। अपने-आपको निर्दोष साबित करने का तर्क सबके पास है। मन्त्री के पास भी, अध्यापक के पास भी और छात्र के पास भी।

('दिनमान' से)

आओ पढ़ें

हिमाचल प्रदेश की कक्षा ५ के बालक-बालिकाओं के लिए स्वीकृत पुस्तक 'आओ पढ़ें' (सम्पादक श्री महेन्द्र एम० ए०, पी-एच० डी०) में पाठ-संख्या १५ में 'क्या आप जानते हैं' के अन्तर्गत बच्चों को यह जानकारी दी गई है :

१. भारत में ७२ करोड़ रेलवे स्टेशन हैं।

२. भारतीय रेलों द्वारा प्रतिवर्ष एक अरब मनुष्य यात्रा करते हैं।

३. संसार का सबसे बड़ा रेलवे प्लेटफार्म सोनपुर का है।

जबकि तथ्य यह है कि

१. भारत में ६४६० रेलवे स्टेशन हैं।

२. भारतीय रेलों में प्रतिवर्ष एक अरब सत्तर करोड़ व्यक्ति यात्रा करते हैं।

३. सोनपुर भारत का सबसे लम्बा प्लेटफार्म है, न कि संसार का सबसे बड़ा प्लेटफार्म।

—विपिन शिवा, रुड़की

('नवभारत टाइम्स' से)

रेल से किताबें

दिल्ली रेलवे स्टेशन के पूर्व की ओर जाने वाली गाड़ियों के तीसरे दर्जे के गेट पर १३ जून की शाम को पाँच बजे गेट कीपर ने एक अद्भुत बात यह बताई कि रेल से पुस्तकें ले जाना वर्जित है।

होता यह है कि ये लोग एक बंडल या ट्रंक को भी रोककर यात्रियों को लौटकर तुलवाने के लिए कहते हैं। यदि वजन पाँच-सात किलो होता है तो कुछ और बहाना बनाते हैं ताकि यात्री अपनी गाड़ी के छूट जाने के डर से उन्हें कुछ दे-दिलाकर अपना रास्ता ले।

अपना यही नुस्खा उसने मुझ पर आज़माया और बाद में कोई उपाय नहीं रहा तो कह बैठा कि रेल से किताबें ले जाना निषिद्ध है। इस गेट पर यह व्यापार वर्षों से चल रहा है। लेकिन कोई रोकने वाला नहीं।

ट्रेफिक मैनेजर को ध्यान देना चाहिए। यदि वास्तव में किताबें भी ज्वलनशील पदार्थों के अन्तर्गत आती हैं तब उन्हें बाकायदा घोषणा करनी चाहिए, क्योंकि ऐसी भूल आम होती है। पुस्तकों के स्टाल भी प्लेटफार्मों पर हैं। यदि ऐसा नहीं है तो उस गेट कीपर के मामले की जाँच करनी चाहिए।

— चिरंजीलाल पाराशर,

गाजियाबाद

('नवभारत टाइम्स' से)

सर्वेक्षण

एक सर्वेक्षण द्वारा पता लगा है कि जापान में सात करोड़ से अधिक व्यक्ति स्वाध्याय में रुचि रखते हैं। पुस्तकें पढ़ने में इतनी अधिक रुचि पहले कभी नहीं देखी गई। विश्वकोष जैसे कीमती ग्रन्थों को ही ले लें। पाँच-छः साल पहले प्रकाशक विश्वकोष छापते घबराते थे। परन्तु इस समय १७ विश्वकोष पुस्तक-विक्रेताओं के पास हैं और पाठक यह सलाह लेने आते हैं कि कौन-सा विश्व-कोष उनके लिए अधिक उपयोगी होगा। विक्रेताओं के अनुसार एक दिन ऐसा आनेवाला है जब प्रत्येक जापानी गृहस्थ के पास एक बालकों के लिए और एक वयस्कों के लिए अलग-अलग विश्वकोष होगा। सर्वेक्षण के अनुसार अगस्त १९६७ में १४२० नई पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं और १६१६ पुनर्प्रकाशित पुस्तकें विक्रेताओं के पास आईं। इस प्रकार विक्रेताओं के पास इस महीने में १ करोड़ ९० लाख पुस्तकें पहुँचीं। इसी महीने १३४८ मासिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं जिनका सर्कुलेशन ८० लाख २४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार था। जापान में विकसित यूरोपीय देशों की भाँति 'ग्रामोफोन पुस्तकें' भी तैयार होती हैं। अगस्त में ३२ 'वाक्-पुस्तकें' प्रकाशित हुई थीं, जिनकी कुल तादाद ६ लाख ६० हज़ार थी।

'परिवार नियोजन' लेखकों का ?

आज हिन्दी साहित्य में कहानी, कविता, उपन्यास आदि विधाओं में नये-नये प्रयोग हो रहे हैं। कहानी तथा कविता के क्षेत्र में तो नये-नये ऊटपटाँग शिल्पगत प्रयोगों की भरमार है। हिन्दी कहानी तथा कविता ने पिछले कुछ वर्षों से एक 'नये' विशेषण के रूप में जो करवट ली है, उससे हिन्दी साहित्य के रंगमंच पर उच्च कोटि के मँजे साहित्यकार एकाध ही हुए हैं, लेकिन सैकड़ों प्रतिभाहीन 'विभूतियाँ' दंभ की भावना लेकर 'अवतीर्ण' ज़रूर हुई हैं। सच पूछा जाए तो कहानी और कविता के इस घटा-टोप माहौल में सबसे अधिक नुकसान सच्ची प्रतिभाओं का ही हुआ है। सस्ते वनस्पति घी को इन प्रतिभाओं के कारण आज शुद्ध घी की मेधाओं का चमत्कार तो विगत युग की कहानी मात्र बनकर रह गया है।

इन स्वयंभू लेखकों की छँटनी किये बिना हिन्दी भाषा की प्रगति का रथ किसी भी प्रकार आगे न बढ़ सकेगा। इसके लिए हिन्दी विद्वानों को साहित्य के मूल्यांकन के कठोर नियम अपनाने होंगे। निश्चित ही मूल्यांकन के इस कठोर 'परिवार नियोजन' के बिना हिन्दी साहित्य में बढ़ती हुई पुंसत्वहीन प्रतिभाओं की जनसंख्या को नहीं रोका जा सकता, नहीं तो ये प्रमादी हिन्दी भाषा की लुटिया डुबाकर ही छोड़ेंगे।

—विष्णुचन्द्र पाठक, जयपुर

सरकारी प्रकाशन

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों के सम्बन्ध में समाचारपत्रों में छपने वाले विज्ञापनों के अनुसार मैं प्राय: हिन्दी-मराठी के प्रकाशन उनका अग्रिम मूल्य भेजकर मँगवाता रहता हूँ। किन्तु उन प्रकाशनों को प्राप्त करना बड़ा कठिन है। उनके लिए सम्बन्धित अधिकारियों को कई बार पत्र भेजकर याद दिलानी पड़ती है।

सरकारी प्रकाशन व्यवसाय एक घाटे का उद्योग है। यह तथ्य आडिट रिपोर्ट के द्वारा कई बार स्पष्ट रूप से सामने आ चुका है। इसका मुख्य कारण है प्रकाशनों के ग्राहकों के प्रति विक्रय विभाग से सम्बन्धित अधिकारियों की लापरवाही और जब लापरवाही की कर्तव्य-विमुखता के कारण ये प्रकाशन दीमक के शिकार होने लगते हैं तब उन्हें रियायती मूल्य पर बेचना पड़ता है।

मैंने गत जनवरी मास में 'आजकल' का चन्दा मनी-आर्डर से भेज दिया था और पत्र के व्यवस्थापक को लिख दिया था कि मुझे जनवरी से ग्राहक बनाकर अंक भेजना शुरू कर दें। लेकिन अंक की अब तक प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

—यशवंतनारायण मोघे, एम० ए०,
ग्वालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नेशनल' के नये प्रकाशन—अगस्त

आस्था के चरण

डॉ० नगेन्द्र

१०१ समीक्षात्मक निबन्धों का महत्त्वपूर्ण संग्रह।

दो आँखों वाले चेहरे

सोमावीरा

सुप्रसिद्ध लेखिका की चुनी हुई कहानियाँ।

रानी लक्ष्मीबाई

श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पर प्रथम प्रामाणिक पुस्तक।

कर्तव्य

शान्ताकुमार

सेमुअल समाईलस की विश्वप्रसिद्ध पुस्तक 'ड्यूटी' का सरल हिन्दी भाषानुवाद।

अवमूल्यन

अमरनाथ अग्रवाल, कुन्दनलाल

हिन्दी में प्रथम बार अपने विषय पर अनूठी पुस्तक।

राष्ट्रीय गौरव के चिह्न

हरीकृष्ण देवसरे

राष्ट्र-चिह्न, राष्ट्र-ध्वज, राष्ट्र-गीत, राष्ट्रीय पंचांग, राष्ट्र-पक्षी और राष्ट्र-पुष्प की रोचक कहानियाँ।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध और समर्थन

१९२९ के दिसम्बर में लन्दन के पुस्तक-प्रकाशकों और विक्रेताओं की जो बैठक हुई थी उसमें व्यवसाय का सुचारु रूप से संचालन करने के बारे में कुछ निश्चय किये गये थे। इसमें सबसे मुख्य बात यह थी कि कोई भी विक्रेता मुद्रित से कम कीमत पर पुस्तकें न बेचेगा और यदि वह ऐसा करेगा ही तो प्रकाशक तथा थोक-विक्रेता उसे आगे पुस्तकें न देंगे।

कोई भी व्यवसाय तभी ठीक ढंग से चल सकता है जब कि उसमें लगे लोग व्यावसायिक ईमानदारी का परिचय दें और किन्हीं निश्चित सिद्धान्तों तथा नियमों का पालन करें। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उक्त व्यवसाय पनप नहीं सकता। आपस में ही लोग कट मरेंगे और उसकी चाहे समाप्ति न हो जाए लेकिन वह बढ़ न सकेगा।

लन्दन के पुस्तक व्यवसाय में भी उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कुछ ऐसे तत्त्व प्रविष्ट हो गये थे जो उसके विकास में बाधक सिद्ध हो रहे थे। इनमें सबसे बड़ी बात थी निर्धारित से कम दाम पर पुस्तकों को बेचना। इसे 'अंडर सेलिंग' कहते हैं। होता यह था कि प्रकाशक निश्चित दाम पर हर खरीदार (पुस्तक-विक्रेता) को पुस्तकें देते थे। लेकिन ये विक्रेता अपनी-अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए उसे सस्ते भावों पर बेच देते थे। नतीजा यह होता था कि प्रकाशक से यदि १०) की पुस्तक ८) में मिली तो उसे दुकानदार १०) में न बेचकर खर्च और बहुत मामूली मुनाफा रखकर १०) से नीचे किसी भी कीमत पर बेचा करते थे। इसका फल यह होता था कि कहीं वही पुस्तक ८.५० पर मिल रही है तो कहीं १०) पर या इसके बीच में किसी भी कीमत पर। यह स्थिति निस्सन्देह व्यावसायिक दृष्टि से असह्य थी। अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए कम कीमत पर पुस्तकें बेचने का जो धन्धा कुछ दुकानदारों ने चला रखा था उससे उन लोगों को नुकसान उठाना पड़ रहा था जो नियमपूर्वक और ईमानदारी के साथ काम करना चाहते थे। अतः इस प्रवृत्ति का विरोध होना स्वाभाविक था।

इसे लेकर पुस्तक-प्रकाशकों और विक्रेताओं की बैठकें १९२९ के बाद बराबर ही होती रहीं जिनमें ऐसी बातों की निन्दा की जाए और उसे रोकने का प्रयास किया जाए। १८४८ में लन्दन की पुस्तक-विक्रेता समिति ने इसके लिए नये सिरे से प्रयास किया और कुछ नये नियम बनाकर उन्हें लागू करना चाहा। इसके बाद ही चार प्रमुख प्रकाशक और थोक विक्रेता—लाँगमैन एण्ड कम्पनी सिम्पकिन, मार्शल एण्ड कम्पनी, ह्विटमैन एण्ड कम्पनी, तथा हेमिल्टन, एडम्स एण्ड कम्पनी ने विकर्स एण्ड बुश नामक पुस्तक-विक्रेता फर्म को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि 'अंडर सेलिंग' का धन्धा बन्द कर फर्म को ईमानदारी के साथ व्यवसाय चलाना चाहिए।

लेकिन प्रतीत होता है कुछ काम हुआ नहीं, इसलिए १८५० में फिर पुस्तक-विक्रेताओं की बैठक हुई और १८२९ के बाद से समय-समय पर जो व्यावसायिक नियम विफलतापूर्वक लागू किये जाते रहे उन्हें फिर से लागू करने का प्रयत्न किया।

पुस्तक व्यवसायी संघ के अध्यक्ष लाँगमैन ने १८५२ में बताया था कि "संघ की बैठकों या कार्रवाइयों का उद्देश्य इतना ही है कि ऐसी समान दर निश्चित की जाए जिस पर पुस्तकों की बिक्री हो जिसमें फुटकल बिक्री में जो धाँधली मची है और जो अनुचित प्रतिद्वन्द्विता चल रही है वह समाप्त की जा सके।"

यह तो नहीं कहा जा सकता कि कितने सदस्यों ने संघ की घोषणा पर हस्ताक्षर किए (यह संख्या कभी बतायी ही नहीं गयी), किन्तु यह जरूर है कि कुछ थोड़े-से व्यवसायी ही इस विषय में संघ का किसी प्रकार का अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार-क्षेत्र मानने से इनकार करते रहे। आगे चलकर कुछ तो झुक गये। जो नहीं झुके वे भी खुल्लमखुल्ला संघ के विरोध में खड़े नहीं रह सके या ऐसा कहिए कि इस प्रकार का विरोध नहीं कर सके। एक ही फर्म थी (विकर्स एण्ड बुश) जो डटी रही और जिसने किसी भी कीमत पर संघ की बात न मानी। इसकी कुछ ऐसे लोग सहायता भी करते रहे जो दिखावे के लिए संघ के साथ थे।

अन्त में इस प्रश्न को लेकर उभय पक्ष में गहरा विवाद छिड़ गया और मामला पंच निर्णय के लिए लार्ड कैम्पबेल की अध्यक्षता में गठित समिति के ज़िम्मे किया गया। उसने अपने निर्णय में संघ द्वारा जारी नियमों की आलोचना यह कहकर की कि ये "हानिकारक, परेशान करने वाले तथा स्वतन्त्र व्यवसाय के सिद्धान्त के साथ असंगत ठहरते हैं। अतः इन्हें रद्द कर दिया जाना चाहिए।"

इसका परिणाम यह हुआ कि १८५२ के मध्य तक पुस्तकों की बिक्री से सम्बन्धित सारे प्रतिबन्ध हटा लिये गये तथा आगे के पचास बरसों के लिए पुस्तक-प्रकाशन और विक्रय-सम्बन्धी मुक्त व्यापार के युग का आरम्भ हुआ।

लार्ड कैम्पबेल के निर्णय में एक विशेष बात यह कही गयी थी कि संघ के "बहुत-से सदस्य ऐसे हैं जो हैं तो ऊपर से उसके द्वारा जारी किये गये नियमों के पक्ष में, किन्तु भीतर से वे प्रतिबन्धों को पसन्द नहीं करते। कितने ही पुस्तक-विक्रेताओं ने हमें गुप्त रूप से सूचना दी है कि यदि बन्धनों से मुक्त कर दिये जाएँ तो हम प्रसन्न ही होंगे।"

इसका मतलब यह हुआ कि निर्धारित से कम कीमत पर पुस्तकें बेचने वालों की संख्या अवश्य उतनी रही होगी जितनी का अनुमान विकर्स एण्ड बुश ने किया था। लेकिन तब भी लन्दन के बहुत थोड़े पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों ने संघ में रहने से इनकार किया या आगे चलकर उसका त्याग किया। उस समय यह स्पष्ट न हो पाया कि कौन-कौनसे लोग संघ द्वारा जारी नियमों को रद्द किये जाने के पक्ष में हैं। कैम्पबेल अभिकरण के समक्ष जो गवाहियाँ हुईं उनमें कहा गया था कि नियमों के विरोधी केवल 'तीन ही व्यक्ति' हैं जो फुटकल बिक्री-सम्बन्धी सारी व्यवस्था के मार्ग के बाधक हैं। परन्तु एक अन्य अवसर पर बताया गया था कि नौ फर्मों के मालिक संघ के नियमों के विरोधी हैं। इनमें से छह ही ऐसे थे जो बार-बार और ज़ोरदार तरीके से नियमों के स्थगन के लिए आन्दोलन किया करते थे। इन छह में से तीन विकर्स चैपमैन और टेग की फुटकल बिक्री की बड़ी और चलती दुकानें थीं तथा शेष तीन मुख्यतः प्रकाशक और थोक विक्रेता थे।

कहते हैं कि विकर्स का व्यापार उस समय इसलिए अच्छी तरह चल निकला कि उक्त फर्म ने बहुत ही ज़ोरदार तरीके से तब नियमों के विरुद्ध काम किया जब कि अन्य व्यवसायी खुल्लमखुल्ला संघ के विरुद्ध जाने की हिम्मत न कर पाते थे।

संघ के एक सदस्य जान मरे ने उस समय 'टाइम्स' में एक पत्र लिखकर सूचित किया था कि यह कहना सर्वथा गलत है कि सस्ती पुस्तकें बेचने वाले पन्द्रह या दस प्रतिशत मुनाफा लेकर ही पुस्तकें बेचने को तैयार हैं। सच बात यह है कि लोग इस धन्धे में नये-नये आये हैं जो इस प्रकार के हथकंडे अपनाकर पुराने और प्रतिष्ठित रोज़गारियों के हाथ से कारबार छीन लेना चाहते हैं।

सम्भव है मरे का संकेत चैपमैन की ओर रहा हो, क्योंकि मरे को इस व्यवसाय में आये दस बरस भी नहीं हुए थे। जहाँ तक औरों का प्रश्न है विलियम टेग को छोड़कर किसी भी 'अंडर सेलर' फर्म का जीवन-काल तीस वर्ष से अधिक का न था।

पुराने संस्थानों से मरे का क्या मतलब था यह तो समझ में नहीं आता, किन्तु यदि ऐसा मान लिया जाए कि पीढ़ी-दो पीढ़ी पहले से यह व्यवसाय चलाने वाले इस श्रेणी में आते हों तो अवश्य ही सस्ती पुस्तकें बेचने वालों में विलियम टेग ही ऐसे थे जिनका परिवार इस धन्धे में पहले से लगा था। और लोग तो स्वयं ही पेशे में आये थे और वे मन्दी के बाद यह काम करने लगे थे।

प्रतिष्ठित पुराने संस्थानों और नये कारबारियों में एक अन्तर यह भी था कि १८२५-२६ के व्यावसायिक संकट को झेलकर जो बच रहे उन्होंने अपने को स्थायी और सुदृढ़ आधार पर स्थित व्यवसायी समझा और यह माना कि जो लोग इसके बाद इस धन्धे में प्रविष्ट हुए हैं उनको सुविधाओं का उपभोग करने का अधिकार पुरानी फर्मों की अपेक्षा

(शेष पृष्ठ २५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

पर आँखें नहीं भरीं : कवि डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन', द्वितीय संस्करण १९६७, प्रकाशक—आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६, मूल्य ४.०० रु०, पृष्ठ संख्या १२२ (डिमाई)।

'पर आँखें नहीं भरीं' सुमन की कविताओं के इस संकलन के श्रोता कहेंगे 'तृप्त नहीं हुए श्रवण'। रसभरे ओज-पूर्ण गीतों के गायक के रूप में 'सुमन' गुलाब के पुष्प का स्मरण करा देते हैं जिसमें रूप भी है, रस भी, गंध भी है और काल से जूझने के लिए काँटे भी हैं। इन कविताओं में रूपचित्र, ध्वनिचित्र, स्मृतिचित्र सभी अपनी कोमलता-सहित हैं। कवि के कण्ठ उन चित्रों को जब सजीव करते हैं तो श्रोता मुग्ध होकर दर्शन करता है और पगध्वनि भी सुनता है। 'नई कविता' के विपरीत 'सुमन' की मान्यता है—"काव्य में मैं दृष्टिहीनता, दिशाहीनता, कुंठा, आवर्जना, आदि की गर्वोक्ति का कभी कायल नहीं रहा।"

× × ×

बेगम (उपन्यास) : लेखक—ताराशंकर वन्द्योपाध्याय, अनुवादक—हंसकुमार तिवारी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६, मूल्य ५.०० रु०, पृष्ठ संख्या २८४ (क्राउन)।

बंगला के 'गन्ना बेगम' उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद शेर-ओ-शायरी की शौकीन खूबसूरत व मासूम बेगम की कहानी है, कहीं-कहीं इतनी करुण कि नेत्र सजल हो उठते हैं। दिल्ली सल्तनत के उजड़ते हुए दिनों का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। लाख रुपये के ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत ताराबाबू की यह कृति 'गण देवता' के समान ही स्मरणीय है।

× × ×

स्वप्न और सत्य (उपन्यास) : लेखक—बालशौरि रेड्डी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६, मूल्य ७.०० रु०, पृष्ठ संख्या ३४८ (क्राउन)।

श्री रेड्डी अहिन्दीभाषी क्षेत्र के होकर भी हिन्दी में लिखते आ रहे हैं, यह उनका छठा उपन्यास है। यथार्थ पर आधारित यह आदर्शोन्मुख उपन्यास पुरुष एवं नारी-मन के सूक्ष्म गह्वरों में प्रवेश करता है, कहीं-कहीं तो कवि की कल्पना-सा प्रतीत होता है, अत्यन्त रोचक यह उपन्यास प्रत्येक युवक के लिए पठनीय है।

× × ×

मनोमती (उपन्यास) : लेखक—रजनीकान्त बर्दलै, अनुवादक—लोकनाथ भरोली, प्रथम प्रकाशन १९६७, प्रकाशक—ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना-४, मूल्य ५.०० रु०, पृष्ठ संख्या १९६ (क्राउन)।

असमिया भाषा के प्रसिद्ध उपन्यास के हिन्दी अनुवाद 'मनोमती' में अहोम वंश के ह्रास, असम पर बर्मा के आक्रमण और तत्कालीन उथल-पुथल एवं संघर्ष की पृष्ठभूमि में एक रोमांस कथा का चित्रण अत्यन्त कोमलता एवं समीपता से हुआ है। उपन्यास की नायिका पदुमी, अपने देश-प्रेम, त्याग एवं बलिदान की प्रतीक है। युवा पीढ़ी में कर्त्तव्य-भावना जागृत करने में यह उपन्यास अत्यन्त सफल होगा।

× × ×

भारतीय काव्यशास्त्र : सम्पादक—डॉ० उदयभानु सिंह, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—सामयिक प्रकाशन, दिल्ली-६, मूल्य ८.०० रु०, पृष्ठ संख्या २६४ (डिमाई)।

प्रस्तुत ग्रंथ में भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्तों पर विषय के विशिष्ट अध्येताओं के संक्षिप्त एवं सारगर्भित लेख संगृहीत हैं। इस संकलन में डॉ० नगेन्द्र के रस-सिद्धान्त की समीक्षा तो है किन्तु उनके पक्ष का अभाव है। उनका भी एक लेख इस संकलन में होना चाहिए था। साहित्य-शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। संस्कृत साहित्यशास्त्र का विकास हिन्दी साहित्य में किस प्रकार हुआ इसका विविधपक्षीय अध्ययन इस कृति की विशिष्टता है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेपल : लेखक-प्रभाकर माचवे, प्रथम प्रकाशन १९६७, प्रकाशक—भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, मूल्य ३.००, पृष्ठ संख्या ७६ (डिमाई)।

'मेपल' माचवेजी की 'घर के बुद्धू घर को लौटे, पर होकर कुछ स्याने जरूर' के पूर्व विदेश प्रवास में लिखी गई ६४ कविताओं का संग्रह है। कवि की भाषा में 'मेपल' के छाया-रस-रंग के स्वभावानुसार इस संकलन की कविताएँ छायावादी, रसवादी और प्रगतिवादी तीनों ही हैं। कवि के 'लोफर' और 'सूफी', सर्वकामी और निष्काम सभी रूप हैं। कविता भी है, तुकबन्दी भी है—शिकागो दागो रागो भागो, रिमार्क शार्क डार्क न्यूयार्क हार्क जैसी तुकें भी हैं, देसी भी हैं विलायती भी। कवि के विदेश-प्रवास की यह स्मृति कवि के लिए अवश्य 'मेपल' है काव्य-रसिक के लिए चिन्तन कम मनोरंजन अधिक।

× × ×

सार्वजनिक वित्त : लेखक—पी० सी० जौहरी, प्रकाशक–दि यू० के० पब्लिकेशन्स, मुजफ्फरनगर, प्रथम प्रकाशन १९६८, पृष्ठ संख्या ३२०, मूल्य १०.०० (डिमाई)।

उपरोक्त पुस्तक बी० ए० के विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तक के रूप में लिखी गई है। राजस्व—भारतीय राजस्व से सम्बद्ध सभी विषयों पर सामग्री दी गई है। अंग्रेजी के उद्धरण इतने अधिक हैं कि पुस्तक अपना हिन्दी का स्वरूप स्थिर नहीं कर सकी है। कालिदास का उद्धरण और नाम तक अंग्रेजी में दिया गया है। फिर भी पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

× × ×

माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान शिक्षा की पद्धतियाँ : लेखक—एच० सेमुअर फाउलर, प्रकाशक—आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६, पृष्ठ संख्या १४८, मूल्य ३.०० (डिमाई)।

अधिगम का मनोविज्ञान : लेखक—राल्फ गैरी, प्रकाशक तथा अन्य विवरण उपर्युक्त।

प्राथमिक स्कूल की अध्यापन विधियाँ : लेखक रूबी एच० वार्नर, प्रकाशक तथा अन्य विवरण उपर्युक्त।

अध्यापन वृत्ति : लेखक—टी० एम० सिनेट, प्रकाशक तथा अन्य विवरण उपर्युक्त।

उपर्युक्त चारों पुस्तकें प्रसिद्ध अमरीकी पुस्तकों के अनुवाद हैं। सभी पुस्तकें अध्यापकों के लिए उपयोगी हैं। यदि इन पुस्तकों के आरम्भ में भारतीय शिक्षा पद्धति पर भी एक भूमिका लिख दी जाती तो पाठक को भारत के सन्दर्भ में अमरीकी शिक्षण-पद्धति को अनुकूलित करने का अवसर मिलता। फिर भी अमरीकी शिक्षण पद्धति के अध्ययन की दृष्टि से चारों पुस्तकें उपयोगी तथा संग्रहणीय हैं।

× × ×

भ्रष्टाचार : (उपन्यास) लेखक सम्पतलाल पुरोहित, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—युगछाया प्रकाशन, दिल्ली-६, पृष्ठ संख्या १५०, मूल्य ४.०० (क्राउन)।

जैसा कि नाम से ही प्रकट है सारी कथा भ्रष्टाचार के दृश्य प्रस्तुत करती है। रमानाथ और हरिसिंह दो पात्र इस भ्रष्टाचार से जूझते हैं और अन्त में एक पागल करार दिया जाता है और दूसरा आत्महत्या के आरोप में पकड़ लिया जाता है। लेखक ने इस भ्रष्टाचार से मुक्ति का दिशानिर्देश दिया होता तो उपन्यास अधिक प्रभावक होता।

× × ×

अतीत का अभिनवालोक : लेखक श्री मायाप्रसाद त्रिपाठी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, मूल्य ३.००, पृष्ठ संख्या १४०, (क्राउन)।

उपर्युक्त पुस्तक में लेखक ने संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में विद्यमान वैज्ञानिक तथ्यों की छानबीन की है और आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से उनकी तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत की है। पुस्तक मौलिक तथा विचारोत्तेजक है। छात्रों के लिए पठनीय है।

× × ×

अन्तरिक्ष की ओर : लेखक—महावीरप्रसाद अग्रवाल, वितरक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम प्रकाशन १९६८, पृष्ठ संख्या १५२ (डिमाई)। मूल्य अजिल्द ६.०० रुपये, सजिल्द ८.०० रुपये।

अन्तरिक्ष-यात्रा जैसे आधुनिकतम और महत्त्वपूर्ण विषय के विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक विवेचन करने वाली यह पुस्तक अपने ढंग की बेजोड़ है। इस विषय पर इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की यह प्रथम मौलिक कृति है।

पुस्तक में दस अध्याय हैं जिनके विषय इस प्रकार हैं—ब्रह्माण्ड, राकेट का संक्षिप्त इतिहास, राकेट-विज्ञान, गुरुत्वाकर्षण बल, मानवरहित अन्तरिक्ष, वाहनों द्वारा अन्तरिक्ष की खोज, मानव की अन्तरिक्ष उड़ान और अन्तरिक्ष स्टेशन, खतरे और कठिनाइयाँ, अन्तरिक्ष यात्री और उसका प्रशिक्षण, अन्तरिक्ष की गहराइयों में तथा भारत में अन्तरिक्ष अनुसन्धान।

पुस्तक में ३१ रेखाचित्र तथा १५ हाफटोन चित्र हैं। पुस्तक में जो अलभ्य सूचनाएँ तथा विषय-सामग्री है, वह अन्यत्र कहीं एक साथ उपलब्ध नहीं है। पुस्तक में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी वैज्ञानिक शब्दों का यथासम्भव प्रयोग किया गया है। अन्त में हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेज़ी पर्याय भी दिये गये हैं। विज्ञान के अध्यापकों और छात्रों के लिए तो यह पुस्तक पठनीय है ही, विज्ञान में रुचि रखने वाले साधारण जन भी इसे उतना ही रोचक और उपयोगी पाएँगे। यह पुस्तक सभी स्कूलों और पुस्तकालयों में रखी जाने योग्य है। ऐसी ही पुस्तकों से राष्ट्रभाषा हिन्दी का विज्ञान साहित्य समृद्ध हो सकता है। पुस्तक का गेट अप, कागज़, छपाई आदि भी प्रशंसनीय है।

× × ×

हिन्दी की वर्तनी तथा शब्द-विश्लेषण : लेखक—आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—राजधानी ग्रंथागार, नई दिल्ली-१४, मूल्य ३.००, पृष्ठ संख्या १३६ (क्राउन)।

वाजपेयीजी हिन्दी के कतिपय उन विद्वानों में से हैं जिन्होंने हिन्दी के परिष्कार एवं भाषा को व्याकरण-सम्मत स्वरूप प्रदान करने में अपना जीवन लगा दिया। प्रस्तुत पुस्तक वर्तनी में एकरूपता लाने में सहायक होगी। अत्यन्त तर्कपूर्ण ढंग से लेखक ने स्थापनाएँ की हैं। आपकी शैली भी व्यक्तित्व के समान थोड़ी उग्र है किन्तु प्रभावशाली है। प्रत्येक प्रकाशक, लेखक, प्रूफ़ संशोधक, मुद्रक तथा हिन्दी के विद्यार्थी को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

(पृष्ट २२ का शेष)

कम ही है।

संघ के सदस्यों में मरे को छोड़कर शेष सभी प्रकाशन और फुटकल बिक्री दोनों का काम करते थे। फुटकल बिक्री की ये दुकानें ही वस्तुतः झगड़े की जड़ थीं। संघ के विरोधियों का कहना था कि प्रकाशक केवल प्रकाशन और थोक विक्रय का कार्य करें, जनता के हाथ पुस्तकें वे सीधे-सीधे न बेचें।

प्रकाशकों द्वारा फुटकल बिक्री का विरोध तो था ही, थोक बिक्री का उनका ढंग भी ऐसा था जिसे फुटकल विक्रेताओं ने कभी पसन्द नहीं किया। इसके अलावा लन्दन के बाहर के प्रकाशकों की एजेन्सी लेकर पुस्तक व्यवसाय पर वे एकाधिकार स्थापित कर लेते थे। इससे फुटकल विक्रेताओं को दबा लेते थे, फलतः उनकी हानि तो होती ही थी।

'अंडरसेलर' व्यवसायियों की मुख्य शिकायतें संघ के आठ प्रमुख सदस्यों से थीं जो उनकी दृष्टि में 'व्यापार की समृद्धि के मार्ग में सबसे बड़े रोड़े थे।' लेकिन एक बात जान लेने की है कि संघ के अधिकारियों या प्रमुख सदस्यों के 'उत्पीड़न' के प्रश्न पर चाहे यह वर्ग एक हो गया हो अन्य समस्याएँ मिलकर हल करने की उनकी कोई प्रवृत्ति नहीं दिखायी पड़ी। हाँ, इस एक छोटे-से व्यापारिक विवाद को उन्होंने ज़रूर बहुत बड़े सार्वजनिक विवाद का रूप दे दिया। जो भी हो लार्ड कैम्पबेल ने जो निर्णय दिया वह 'अंडरसेलर' व्यवसायियों के ही अनुकूल उस समय गया क्योंकि बहुत-से लेखक भी उनके साथ थे।

प्रस्तुतकर्ता : पुरुषोत्तमदास मोदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक प्रकाशन द्वारा इस महीने के अन्त तक प्रकाशित ये महत्त्वपूर्ण प्रकाशन जो हर क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होंगे।

A DICTIONARY OF OFFICIAL TERMS (English to Hindi)

कार्यालय कोश : श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव

प्रस्तुत कोश के पहले भाग में विभिन्न प्रकरणों में प्रयुक्त होने वाले एक ही अंग्रेज़ी शब्द के उपयुक्त विभिन्न पर्याय दिये गये हैं, अंग्रेज़ी वाक्यांशों के हिन्दी-वाक्यांश भी दिये गये हैं। हिन्दी-पर्यायों का चयन इस प्रकार किया गया है कि वे सामान्यतया सभी प्रदेशों को ग्राह्य सिद्ध हों, इससे कोश की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। दूसरे भाग में अरबी तथा फारसी के अदालती शब्दों के हिन्दी-पर्याय भी दिये गये हैं। डिमाई आकार, आकर्षक कवर, पृष्ठ संख्या लगभग ३५०। मूल्य लगभग १० रु० मात्र।

समाज मनोविज्ञान : कृष्णदत्त द्विवेदी, एम० ए०

समाज मनोविज्ञान की प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है। प्रत्येक पाठ के अंत में अनेक विश्वविद्यालयों के विभिन्न प्रश्नपत्रों को भी सुलभ ढंग से दिया गया है। इस प्रकार जहाँ एक ओर यह पुस्तक शुद्ध रूप से एम० ए० तथा बी० ए० के छात्रों के लिए पाठ्य-पुस्तक का कार्य करती है, वहीं दूसरी ओर प्रत्येक पाठ के अन्त में प्रश्नावली दिये जाने से प्रश्नोत्तर का भी कार्य पूर्ण करती है। पुस्तक की शैली इतनी रोचक है कि विद्यार्थियों को इससे हर प्रकार से लाभ पहुँचेगा। सुन्दर छपाई, आकर्षक आवरण, डिमाई आकार। मूल्य मात्र : ६.०० रु०।

गुड़ियों का खेल : श्री समरेश बसु की कलम से लिखा हुआ यह बंगला उपन्यास पहले ही बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। अपनी पढ़ी-लिखी पत्नी सुप्रीति तथा अपने छोटे बच्चे मिठू को छोड़कर निखिलेश ने एक अन्धी लड़की मालती से दूसरा विवाह क्यों किया—सुप्रीति को घुट-घुटकर मरने के लिए मजबूर किसने किया, और अन्त में अपने बच्चे मिठू को उसे मालती के हाथों में सौंपने के लिए विवश क्यों होना पड़ा? इन सबका उत्तर यह उपन्यास पढ़कर ही आपको मिल पाएगा। उपन्यास इतने रोचक ढंग से लिखा गया है कि शुरू करने के बाद आप इसे समाप्त करके ही छोड़ पाएँगे। अनुवाद किया है श्री प्रबोधकुमार मजुमदार ने। मूल्य : ५.०० मात्र।

पूर्व प्रकाशित

छायावाद : सम्पादक डॉ० उदयभानु सिंह। डिमाई आकार. पृष्ठ २२५, मूल्य ६.५०।
भारतीय काव्यशास्त्र : सम्पादक डॉ० उदयभानु सिंह। डि० आकार; पृष्ठ २८०, मूल्य ८.००।
महाकवि विद्यापति : सं० स्वर्गीय डॉ० कृष्णनन्दन पीयूष। पीयूषजी का अन्तिम समीक्षात्मक संकलन। डिमाई आकार, पृष्ठ २७५, मूल्य ९.००।
नन्ददास : लेखक श्री रमेशकुमार खट्टर। डिमाई आकार; पृ० ४.००; मूल्य १५.००।
कोयले का टुकड़ा : ले० श्री मु० वरदराजन। तमिल से अनूदित उपन्यास। मूल्य ५.५०।

सितम्बर १९६८ में प्रकाशनीय

कामायनी का विवेचनात्मक अध्ययन : सम्पादक डॉ० उदयभानु सिंह।
साहित्य इतिहास और आलोचना : लेखक डॉ० विजयकुमार शुक्ल।
प्रेमचन्द : लेखक डॉ० प्रताप नारायण टण्डन।
अनमोल गाथाएँ, अमर गाथाएँ, साहसी गाथाएँ, किशोर गाथाएँ, शिक्षाप्रद गाथाएँ, मनोहर गाथाएँ।

इन सभी पुस्तकों पर पुस्तक-विक्रेताओं को भरपूर कमीशन की छूट दी जाती है।

सामयिक प्रकाशन

३५४३, जटवाड़ा, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

पाण्डेय, डॉ० श्याम मनोहर, **सूफी काव्य विमर्श**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	६.००
सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, **हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	१०.००
बाली, तारकनाथ, **दिनकर और कुरुक्षेत्र**, ,, ,, ,,	२.५०
एम० ए० राकेश, **कयमास वध : पृथ्वीराज रासो** ,, ,, ,,	२.५०
'इन्द्र', देवेन्द्र शर्मा, **बिहारी सतसई** ,, ,, ,,	५.००
बाली, तारकनाथ, **कबीर साखी सार** ,, ,, ,,	३.५०
शर्मा, श्री राजनाथ मित्तल, श्री एस० सी० } , **उत्तमा दिग्दर्शन गाइड, भाग १** ,, ,, ,,	१२.००
पाण्डेय, डॉ० शम्भूनाथ, **रस अलंकार पिंगल** ,, ,, ,,	२.५०
पाण्डेय, डॉ० शम्भूनाथ, **काव्यशास्त्र** ,, ,, ,,	३.००
तिवारी, डॉ० रामचन्द्र, **हिन्दी का गद्य-साहित्य**, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	१६.००
शर्मा, प्रो० कृष्णदेव, **अशोक साहित्य भूषण गाइड**, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	१२.००
प्रो० शर्मा और कपूर, **गोदान समीक्षा** ,, ,, ,,	३.००
शर्मा, राजनाथ, **साहित्यिक निबन्ध**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	९.००
वाजपेयी, किशोरीदास, **हिन्दी वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण**, राजधानी ग्रन्थागार, नई दिल्ली	३.००
चतुर्वेदी, डॉ० ब्रजमोहन, **महिम भट्ट**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	२५.००
खण्डेलवाल, डॉ० रामेश्वरलाल, **जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	३५.००
बोरा, राजमल, **भूषण और उनका साहित्य**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	१५.००
के० रामनाथन, डॉ०, **हिन्दी और तेलुगु भक्ति साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	१५.००
सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, **कामायनी में काव्य, संस्कृति, दर्शन** ,, ,, ,,	१०.००

साहित्येतर

नोव, एलेक, **सोवियत अर्थ व्यवस्था** (अर्थशास्त्र), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	१२.५०
हरि, बी० पी० और पाठक, पी० डी०, **भारतीय शिक्षा का इतिहास**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	१०.००
सिंह, एच० एन०, **भूगोल शिक्षण**, ,, ,, ,,	५.००
शेरी, जी० पी०, **गृह विज्ञान शिक्षण** ,, ,, ,,	६.००
माथुर, डॉ० एस० एस०, **सामान्य मनोविज्ञान** ,, ,, ,,	७.००
गोयलीय, अयोध्याप्रसाद, **मुगल बादशाहों की कहानी—उनकी ज़बानी (इतिहास)**, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी	६.००
भारद्वाज, दिनेशचन्द्र, **नवीन शिक्षा सिद्धान्त शिक्षण कला**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	३.००
चौधरी, सुमतीशचन्द्र, **सामान्य विज्ञान शिक्षण** ,, ,, ,,	१.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुबे, प्रो० सत्यनारायण, **शिल्प शिक्षण**	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	५.००
सक्सेना, उदयवीर, **बी० टी० सी० हिन्दी भाषा शिक्षण**	,, ,, ,,	१.५०
माथुर, डॉ० एस० एस०, **शिक्षण कला**	,, ,, ,,	७.००
रस्क, आर० आर०, **महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त**	,, ,, ,,	१०.००

गांधी, सरहदी, **आत्मकथा**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२ — २.००

मित्तल, एस० सी०, शर्मा, श्री राजनाथ, **मध्यमा अर्थशास्त्र गाइड**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा — ६.००

द्विवेदी, कृष्णदत्त, **समाज मनोविज्ञान**, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली — ५.००

श्रीवास्तव, श्री गोपीनाथ, **कार्यालय कोश**, (अंग्रेज़ी-हिन्दी) सामयिक प्रकाशन, दिल्ली — १०.००

विराज, **आदर्श विभूतियाँ**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली — ३.००

डॉ० नगेन्द्र, **तंत्रालोक से यंत्रालोक तक**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली — ३.००

उपन्यास

बसु, समरेश, **गुड़ियों का खेल**, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली		५.००
कुमार, वीरेन्द्र (अनु०) **झरोखे**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली		६.००
गुरुदत्त, **वाममार्ग**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२		३.००
अमृता प्रीतम, **जलावतन**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२		२.००
ए० हमीद, **डाक बँगला**	,, ,, ,,	२.००
चन्दर, **फरार**	,, ,, ,,	२.००
कर्नल रंजीत, **वह कौन था ?**	,, ,, ,,	२.००

नाटक

डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल, **सूर्यमुख**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली — ३.५०

संस्कृत

आचार्य, डॉ० रामकृष्ण, **मित्र सम्प्रति**, सटीक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा		२.५०
द्विवेदी, पारसनाथ, **काव्य प्रकाश**, प्रश्नोत्तर	,, ,, ,,	२.००

ज्ञान-विज्ञान

वेद मित्र, **संसार के अनोखे पुल**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली — ४.००

हास्य-व्यंग्य

परसाई, हरिशंकर, **उल्टी-सीधी**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली ३२		२.००
काका हाथरसी, **काका कोला**,	,, ,,	१.००

आगामी मास के प्रकाशन

आस्था के चरण, डॉ० नगेन्द्र, (निबन्ध-संग्रह)
दो आँखों वाले चेहरे, सोमावीरा, (कहानी-संग्रह)
कर्तव्य, सैमुअल समाईलस, (आत्म-विकास)
अवमूल्यन, अमरनाथ अग्रवाल : कुन्दनलाल, (अर्थशास्त्र)
रानी लक्ष्मीबाई, श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर, (जीवन-चरित्र)
राष्ट्रीय गौरव के चिह्न, डॉ० हरिकृष्ण देवसरे (बाल-साहित्य)

हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्तूबर, १९६८ में

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के प्रकाशक-सदस्यों एवं सार्वजनिक प्रकाशन-संस्थाओं के प्राप्य प्रकाशनों की सम्मिलित विषयानुसार सूची, डबल डिमाई १६-पेजी आकार में, पुस्तकों के अकारादि क्रम से प्रकाशित होगी। प्रत्येक पुस्तक के बारे में निम्नलिखित सूचनाएँ रहेंगी : लेखक, सम्पादक व अनुवादक, प्रकाशन-वर्ष, मूल्य तथा प्रकाशक का नाम। सूची में सम्मिलित होने वाली प्रत्येक पुस्तक के लिए केवल ३० पैसे का शुल्क है। जो प्रकाशक अभी तक संघ के सदस्य नहीं बने हैं, उनसे प्रार्थना है कि इस प्रकार के प्रचार-प्रसार के सामूहिक प्रयत्नों में भाग लेने के लिए अविलम्ब संघ के सदस्य बनें।

इस सूची में विज्ञापन भी लिए जाएँगे : दर होगी—एक पूरा पृष्ठ : ७५ रुपये; आधे पृष्ठ के विज्ञापन का : ४० रुपये।

प्रकाशकों से प्रार्थना है कि वे अपने प्रकाशनों की विषयानुसार सूचियाँ बनाकर (दो सूचियों को काटकर कागज पर चिपकाने से भी काम चलेगा) कार्यालय को भेजें। जो पुस्तकें किसी भी सरकार या संस्था द्वारा पुरस्कृत हुई हैं, उन्हें तारांकित कर दें।

आप अपनी सूचियाँ तथा शुल्क—विज्ञापन-शुल्क के सहित—शीघ्र-से-शीघ्र कार्यालय को भिजवा दें।

सूची में निम्नलिखित विषयों के अनुसार पुस्तकों के नाम (अकारादि क्रम से) दिये जाएँगे : आलोचना व शोध-प्रबन्ध, उपन्यास, एकांकी, कहानी-संग्रह, काव्य, जीवन-चरित्र व संस्मरण, नाटक, निबन्ध, बाल-साहित्य (कहानी, कविता, एकांकी, उपन्यास, जीवन-चरित्र आदि वर्गों में), भाषा-विज्ञान, यात्रा, साहस और खोज, व्यंग्य, लोक-साहित्य, साहित्यिक इतिहास, संदर्भ ग्रंथ एवं कोश, अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य, आयुर्वेद, इतिहास, उद्योग एवं तकनीकी, कृषि, क्रीड़ा-सम्बन्धी, गणित, गांधीवाद, धर्म, दर्शन व संस्कृति, भारत-दर्शन, मनोविज्ञान, राजनीति, विश्वपरिचय, विज्ञान, समाज-शास्त्र, शिक्षा, विभिन्न साहित्य (पॉकेट बुक्स, संस्कृत साहित्य, टीकाएँ एवं हिन्दी में प्रकाशित अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य)।

इस सामूहिक प्रयत्न को सहयोग देकर
सफल कीजिए।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ

७।१६, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्धन्य आलोक डॉ० नगेन्द्र
के
महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रस सिद्धान्त	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	१२.५०
देव और उनकी कविता	७.००
आलोचक की आस्था	७.००
रीतिकाव्य की भूमिका	५.५०
विचार और अनुभूति	४.५०
विचार और विवेचन	४.५०
विचार और विश्लेषण	६.००
अनुसन्धान और आलोचना	४.००
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४.५०
सियारामशरण गुप्त	७.५०
कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	३.००
काव्य-बिम्ब	४.००
चेतना के बिम्ब	५.००
तंत्रालोक से यंत्रालोक तक	३.००

डॉ० नगेन्द्र
का
नवीनतम बृहत् ग्रन्थ

आ स्था
के
च र ण

३० वर्षों की सर्जनात्मक साधना
का नवनीत

•

१०१ समीक्षात्मक निबन्धों का
महत्त्वपूर्ण संग्रह

•

बड़े आकार में साढ़े सात-सौ से अधिक पृष्ठ
सुमुद्रित : आकर्षक साजसज्जा

नैशनल पब्लिशिंग हाउस
२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त, अमरनाथ द्वारा नवीन प्रेस, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६ में मुद्रित एवं ७/१६, दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित। सम्पादक : पुरुषोत्तमदास मोदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का मुखपत्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक

वर्ष ६, अंक २

जुलाई, १९६८

2-8-68 धी

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

'राजकमल' के लोकप्रिय उपन्यास साहित्य में एक और सशक्त हस्ताक्षर

श्रीलाल शुक्ल का
वृहद्
उपन्यास

राग दरबारी

गाँव की ज़िन्दगी से घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध होते हुए भी एक अत्यन्त 'अनांचलिक' उपन्यास। आज के भारतीय जीवन की मूल्यहीनता को सहज निर्ममता के साथ अनावृत्त करता है—राग दरबारी

अगस्त में प्रकाश्य

मूल्य : १५.००

राजकमल

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

पटना-६ दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये प्रकाशन

शिक्षा सिद्धान्त और दर्शन : डॉ० विद्यावती मलैया — १०.००
शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए इस विषय की सांगोपांग और उपादेय पुस्तक।

मध्ययुगीन रसदर्शन और समकालीन सौन्दर्यबोध : डॉ० रमेशकुन्तल मेघ — १६.००
प्राचीन और अर्वाचीन काल के सौंदर्यबोध और उसके आधारों का शास्त्रीय और वैज्ञानिक तुलनात्मक अध्ययन।

कुछ जिन्दगियाँ बेमतलब : ओमप्रकाश दीपक — ६.००
श्री दीपक का प्रथम उपन्यास, जो आज के जीवन की हताशा को सीधे-सादे शब्दों में तथा ईमानदारी से व्यक्त करता है।

यात्रा, और यात्रा : किरण जैन — ४.५०
श्रीमती किरण जैन से हिन्दी-कविता के पाठक पहले से परिचित हैं। स्त्री-सुलभ भावों की निश्छल तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति इस संग्रह की कविताओं में पढ़ने को मिलेगी।

अपने स्टाक में इन पुस्तकों को निरन्तर रखिये, इनकी माँग बराबर बनी रहती है :

		पेपरबैक	पुस्तकालय-संस्करण
भाषाविज्ञान की भूमिका	: प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा	९-००[1]	११-००[1]
दो सौ नये निबन्ध	: सं० श्री कमलेश्वर	६-५०[1]	९-००[1]
निराला-काव्य का अध्ययन	: डॉ० भगीरथ मिश्र	—	४-००
तुलसी-काव्य-मीमांसा	: डॉ० उदयभानु सिंह	१६-००	१०-००[2]
प्रसाद का गद्य	: डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित	—	६-५०
हिन्दी-साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य	: सच्चिदानन्द वात्स्यायन	—	९-००
नन्ददास, विचारक रसिक कलाकार	: डॉ० रूपनारायण	—	१५-००
मुद्राराक्षस	: भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, टीका : डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त	—	५-००
शिक्षा तथा मनोविज्ञान में अनुसन्धानोपयोगी सांख्यिकी	: डॉ० मनमोहन वर्मा	—	४-५०[1]

राधाकृष्ण मूल्यांकन-माला

लेखक-सम्पादक		पेपरबैक	पुस्तकालय-संस्करण	लेखक-सम्पादक		पेपरबैक	पुस्तकालय-संस्करण
बिहारी	डॉ० ओमप्रकाश	६-५०	८-५०	कबीर	डॉ० विजयेन्द्र स्नातक	६-५०	८-५०
दिनकर	डॉ० सावित्री सिन्हा	६-५०	८-५०	महादेवी	डॉ० इन्द्रनाथ मदान	६-५०	८-५०
सूरदास	डॉ० हरवंशलाल शर्मा	६-५०	८-५०	जायसी	डॉ० रामपूजन तिवारी	३-७५	५-५०
तुलसी	डॉ० उदयभानुसिंह	६-५०	८-५०				

पुस्तक-विक्रेताओं को सन्तोषप्रद कमीशन

राधाकृष्ण प्रकाशन

२, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६
फोन : २७५८५१। तार : लोकप्रिय, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशक

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का मुखपत्र

वर्ष ६ : अंक २
जुलाई, १९६८

सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

मूल्य
प्रति अंक ०.६०, वार्षिक ६.००

सम्पादकीय कार्यालय
के ४०/६, भैरवनाथ, पराग्नी-१

प्रकाशन कार्यालय
हिन्दी प्रकाशक
७/१६, दरियागंज, दिल्ली-६

सम्पादकीय

अभाव मनोवृत्ति का, पुस्तकों का नहीं

गत फरवरी से अप्रैल के बीच देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में विभिन्न परीक्षाएँ हुईं, इनमें स्नातक (बी० ए०) परीक्षा का परीक्षाफल उल्लेखनीय है, विशेषकर उन विश्वविद्यालयों का जहाँ अंग्रेज़ी की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई है। इन विश्वविद्यालयों के परीक्षाफल में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या में २५ से ४० प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। यह तथ्य यह विचार करने को प्रेरित करता है कि गत अनेक वर्षों से अंग्रेज़ी क्या हमारे युवकों के लिए निराशा, असन्तोष तथा कुण्ठा का कारण नहीं बनी हुई थी ? अपने परिवेश से भिन्न उन्हें ऐसे भाषा-परिवेश में जीने के लिए बाध्य किया जा रहा था, जो उनके विकास को अवरुद्ध करता जा रहा था। यह तो इसी प्रकार का प्रयास रहा है जैसे ओक का वृक्ष सारे भारत में लगाने की हठवादिता की जाए। यदि प्रकृति में आमूल परिवर्तन कर सकना सम्भव नहीं तो किसी देश के संस्कारों को बदल सकना भी क्या सम्भव होगा ?

कहा जाता है कि अंग्रेज़ी के बिना उत्तीर्ण छात्र का ज्ञान परिपक्व नहीं होता। इस प्रकार के भ्रम ही युवकों में हीनता, असन्तोष और विद्रोह की भावनाओं का सृजन करते हैं। न हम उन्हें २१ वर्ष की आज़ादी में अंग्रेज़ी का ज्ञान करा सके और न हमने उन्हें अपनी भाषा में ही पारंगत होने दिया।

विद्यार्थियों में यह थोथा अहंकार अवश्य भर दिया जाता है कि उन्होंने अंग्रेज़ी माध्यम से अध्ययन किया है और अंग्रेज़ी पढ़ी है, अतः वे हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों से अधिक योग्य हैं। किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि न तो उन्हें अंग्रेज़ी का अच्छा ज्ञान होता है, और न अन्य विषयों का और हिन्दी का ज्ञान तो होता ही नहीं। इस प्रकार उनका ज्ञान उनके समक्ष एक प्रश्न-चिह्न बना खड़ा रहता है।

अपनी भाषा में दिया जाने वाला ज्ञान मात्रा में थोड़ा और स्तर में थोड़ा हल्का क्यों न हो वह उनके जीवन का अंग बन जाता है।

यह कहा जाता है कि हिन्दी में पुस्तकें नहीं हैं। यह आरोप उन लोगों द्वारा लगाया जाता है जो हिन्दी की प्रगति से अनभिज्ञ हैं, जिन्होंने हिन्दी की पुस्तकें देखने का कभी प्रयास नहीं किया। यदि उन्हें हिन्दी की पुस्तक दिखाई भी गई तो वे यही कहेंगे कि हिन्दी में ऐसे विषय पर लिखा ही नहीं जा सकता। ऐसे अज्ञानियों से आज देश की ज्ञान-जिज्ञासु पीढ़ी को बचाना है। आज यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि हिन्दी में स्नातक स्तर की लगभग सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। मानविकी के सभी विषयों में एक विषय पर एक नहीं अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं, विज्ञान के विषयों पर भी पुस्तकें हैं किन्तु उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी विविधता नहीं है क्योंकि अभी तक विज्ञान का अध्यापन स्नातक स्तर पर हिन्दी में नहीं हो रहा है। जब तक हिन्दी में विज्ञान का अध्यापन नहीं होगा, हिन्दी में विज्ञान की पुस्तकें अनेक सरकारी प्रयासों के बावजूद भी निकल न सकेंगी, वे स्तरानुकूल नहीं बन सकेंगी क्योंकि बिना अध्यापन-अभ्यास के हिन्दी में विज्ञान के विषयों पर सफल लेखन न हो सकेगा और अपनी भाषा में अपनी मिट्टी की गन्ध से ओत-प्रोत ज्ञान ही युवकों में अपने देश के प्रति कर्तव्य और निष्ठा की भावना जागृत कर सकता है।

शिक्षा के गिरते हुए स्तर के कारणों पर विचार किया जाए तो एक बहुत बड़ा कारण सामने आता है, वह है भाषा का अल्प ज्ञान। भाषा वह पात्र है जिसमें उँडेला हुआ ज्ञान आकार ग्रहण करता है। अंग्रेज़ी को माध्यम बनाये रखने के लिए विश्वविद्यालीय शिक्षा के आरम्भ से ही सामान्य अंग्रेज़ी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती रही है और अब जब हिन्दी को माध्यम बना दिया गया है इस बात की आवश्यकता है कि सभी विद्यार्थियों के लिए सामान्य हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जाए, उसके लिए पाठ्यक्रम बनाया जाए ताकि विद्यार्थियों का भाषा-स्तर उन्नत हो और वे हिन्दी में लिखी गई विविध विषयों की पुस्तकें पढ़ तथा समझ सकें। जब तक हमारे शिक्षाविदों की मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं होगा तब तक हमारे देश की शिक्षा अपने लक्ष्य तक न पहुँच सकेगी।

श्री भुवनेश्वरप्रसाद सिंह (स्वर्गीय)

अभिज्ञान प्रकाशन तथा पुस्तक भवन रांची के संस्थापक एवं संचालक श्री भुवनेश्वर प्रसाद सिंह का २४ मई, १९६८ की रात को एक बजे हृद्‌रोग से आकस्मिक निधन हो गया। उनकी अवस्था ५५ वर्ष की थी। वे अपने पीछे विधवा सहधर्मिणी श्रीमती लालपति देवी, दो पुत्र (१२ तथा ४ वर्ष), चार पुत्रियाँ (१७, १५, ९, ६ वर्ष) छोड़ गये हैं। वे रांची के ही नहीं, बिहार के प्रमुख पुस्तक-प्रकाशकों में से थे। उनकी मृत्यु के ६ दिन पूर्व १८ मई को इन पंक्तियों के लेखक को उनके कार्यालय में उनसे मिलने का सौभाग्य मिला था, उस समय यह कल्पना भी न की थी कि छह दिवस बाद उनका यह पार्थिव शरीर नहीं रहेगा, वे उस समय स्वस्थ थे। 'हिन्दी प्रकाशक' उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है। उनकी विधवा पत्नी और उनके छोटे-छोटे बच्चों को यह दुःख वहन करने की क्षमता दे प्रभु !

आलोक प्रकाशन, कुरुक्षेत्र
के
जगमगाते ग्रन्थ-रत्न

निराला काव्य-कोश : **डॉ० जयनाथ 'नलिन'**

निरालाजी के काव्य का निश्चित, सही अर्थबोध कराने वाला हिन्दी में एकमात्र ग्रंथ। मूल्य : १६.००।

काव्यपुरुष निराला : **डॉ० जयनाथ 'नलिन'**

निरालाजी के काव्य की सविस्तर, गहन, गम्भीर, निर्पेक्ष और सन्तुलित समालोचना। मूल्य : १६.००।

वादियों के रास्ते : **प्रो० मोहन चोपड़ा**

कुल्लू घाटी की सभ्यता, संस्कृति, कला, प्राकृतिक सुषमा और सामाजिक जीवन की अनुपम झाँकी। मूल्य : ४.००।

सभाईलाल : **डॉ० जयनाथ 'नलिन'**

सफ़ेदपोश, शिक्षित, आदर्शवादी व्यक्ति की शानदार धूर्तता, चटपटी चाटुकारिता, भव्य भ्रष्टाचार का व्यंग्यात्मक लेखा-जोखा। आकाशवाणी, जालंधर और विविधभारती से प्रसारित—असंख्य श्रोताओं द्वारा प्रशंसित। मूल्य : ४.००।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकप्रिय लेखकों की चुनी हुई प्रसिद्ध पुस्तकें

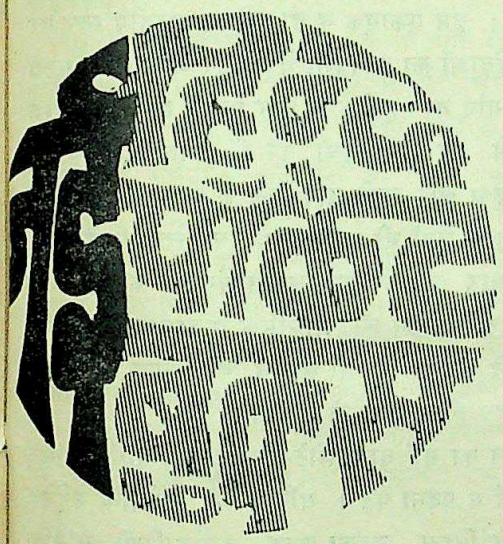

४५१. *वाम मार्ग* : **गुरुदत्त** ३.००

विख्यात उपन्यासकार के अत्यन्त लोकप्रिय ऐतिहासिक उपन्यास का सम्पूर्ण पाकेट संस्करण। शुरू से अन्त तक बहुत रोचक।

४५२. *जलावतन* : **अमृता प्रीतम** २.००

लोकप्रिय लेखिका का नई शैली में लिखा एकदम नया उपन्यास। बेहद रोचक। साथ में लेखिका की चुनी हुई प्रसिद्ध कहानियाँ।

४५३. *डाक बंगला* : **ए० हमीद** २.००

उर्दू के मशहूर उपन्यासकार का प्रसिद्ध रोमांटिक उपन्यास। प्रेम और कर्त्तव्य के संघर्ष की एक अमर कहानी। पढ़िये और पढ़ते चले जाइये।

४५४. *फरार* : **चन्दर** २.००

रोमांचकारी थ्रिलर उपन्यासों के प्रसिद्ध लेखक का नया विस्फोटक उपन्यास। गति, सनसनी, रहस्य और रोमांच का क्लासिक।

४५५. *वह कौन था* : **कर्नल रंजीत** २.००

उच्च कोटि के जासूसी उपन्यासों की शृंखला में एक नई और अनोखी वृद्धि। रातों की नींद उड़ा देने वाला अद्वितीय जासूसी उपन्यास।

४५६. *उल्टी सीधी* : **हरिशंकर परसाई** २.००

हिन्दी के आज के सबसे सशक्त और लोकप्रिय व्यंग्य-लेखक की चुनी हुई प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कहानियों का अनूठा संग्रह।

४५७. *काका कोला* : **काका हाथरसी** १.००

काका की नई हास्य-व्यंग्य कविताओं का फड़कता हुआ संग्रह। काका कोला की इस अनूठी बोतल में विनोद, परिहास, हास्य और व्यंग्य का सागर बन्द है।

४५८. *आत्मकथा* : **खान अब्दुल गफ्फार खां** २.००

सीमांत गांधी बादशाह खाँ की यह संसार की किसी भी भाषा में पहली बार प्रकाशित आत्मकथा एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज है।

शीघ्र बिकने वाली
श्रेष्ठ पुस्तकों की पहचान

अपने नगर के पुस्तक-विक्रेता, रेलवे बुकस्टाल या रोडवेज बुकस्टाल से खरीदिए।
विस्तृत सूचीपत्र के लिए हमें लिखिए।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा०लि०, जी०टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-विक्रेताओं का संगठन और उसका स्वरूप

चम्पालाल रांका

आज समाज में संगठन की आवश्यकता सभी महसूस करते हैं। चाहे मज़दूर हो या व्यवसायी, छात्र हो या अध्यापक, राज्य कर्मचारी हो या अधिकारी, सभी यह अनुभव करने लगे हैं कि बिना संगठन के उनका सही स्थान समाज में नहीं हो सकता। संसार वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण जितनी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, उसमें यह और भी अधिक ज़रूरी हो गया है कि समाज का प्रत्येक वर्ग संगठित होकर अपना उत्तरदायित्व निभाये और अपने अधिकार भी प्राप्त करे। यही बात पुस्तक-विक्रेताओं पर भी लागू होती है।

भारत में पुस्तक-व्यवसायी अभी तक पूरी तरह संगठित नहीं हैं। अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशकों का संगठन कुछ वर्षों से कार्य कर रहा है। बम्बई में 'दि फ़ेडरेशन ऑफ़ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन इन इंडिया' के नाम से भारत के पुस्तक-व्यवसायियों का और पुस्तक-व्यवसायी संगठनों का एक संघ है। इन दो संगठनों के अलावा प्रान्तीय स्तर पर जो संगठन कार्य कर रहे हैं, उनमें पुस्तक-विक्रेताओं के संगठन कुछ ही जगह सक्रिय हैं। यों तो पुस्तक-विक्रेता गाँव-गाँव तक फैला हुआ है, लेकिन उसके महत्त्व के अनुपात में संगठन नहीं के बराबर है और यही कारण है कि आज उसे समाज में सही स्थान प्राप्त नहीं है। वह हर दृष्टि से पिछड़ा हुआ है।

इस भूमिका को ध्यान में रखते हुए हमें अपने संगठन के भावी स्वरूप पर विचार करना चाहिए। आज पुस्तक-विक्रेता सबसे अधिक संख्या में बड़े-बड़े शहरों में मौजूद हैं। साधारणतया एक लाख या इससे ऊपर की आबादी वाले शहर पुस्तक-विक्रेताओं के प्रमुख केन्द्र हैं। इसके अलावा संगठन की इकाई की दृष्टि से हमें गाँव या कस्बों के पुस्तक-विक्रेताओं के लिए आधार ज़िले को मानना पड़ेगा। इस तरह शहर और ज़िले के पुस्तक-विक्रेताओं के लिए अपनी-अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप हमें संगठन का रूप देना होगा। हम एकाएक न तो अखिल भारतीय स्तर पर पुस्तक-विक्रेताओं का शक्तिशाली संगठन आज चला सकते हैं और न गाँव या तहसील के स्तर पर। इसलिए प्रारम्भ की दृष्टि से हम दो बिन्दुओं पर ही ध्यान दें : शहर के पुस्तक-विक्रेता और इसके बाद ज़िले के पुस्तक-विक्रेता।

इस तरह जहाँ भी कम-से-कम दस पुस्तक-विक्रेता हों, उनको आधार बनाकर हमें अपना संगठन कायम करना चाहिए। इस संगठन की प्राथमिक आवश्यकताएँ हमारे सामने यदि स्पष्ट रहें तो संगठन को बनाना और आगे चलाना बहुत ही आसान हो जाएगा।

संगठन का संविधान छोटे-से-छोटा हो, ताकि अधिक उलझनों में न पड़ना पड़े। संविधान में सर्वमान्य उद्देश्य, सदस्यता के नियम, उसका शुल्क, कार्यकारिणी समिति, चुनाव का तरीका और हिसाब-किताब से सम्बन्धित मोटी-धाराएँ होनी चाहिए। लेकिन इन सबसे अधिक महत्त्व आज की परिस्थितियों में कार्यक्रम को देना चाहिए।

कार्यक्रम : प्रायः यह देखा गया है कि कार्यक्रम की दृष्टि से हम लोग भटक जाते हैं। ऊँचे-ऊँचे, खर्चीले कार्यक्रम बनाकर हम संगठन को जन्म देते ही जैसे खत्म करने की बात करने लगते हैं। कार्यक्रम में सबसे अधिक ध्यान इस बात पर दिया जाना चाहिए कि संगठन के सदस्यों की मुख्य दैनिक समस्याएँ क्या हैं, जिनका हल निकालने पर उन सदस्यों की रुचि संगठन के प्रति दिनों-दिन बढ़ती जायगी और वे इसे अपनी फर्म का एक हिस्सा मानने लगेंगे। उदाहरण के रूप में मैं 'कमीशन-बन्द' का प्रश्न आपके सामने रख रहा हूँ (जिसे हम नेट बुक एग्रीमेन्ट भी कहते हैं)। हर खुदरा पुस्तक-विक्रेता से इसका सम्बन्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सवाल पर सामान्यतया दो राय नहीं हो सकतीं कि पुस्तक छपे मूल्य पर बिकनी चाहिए। अगर संगठन का निर्माण होने के बाद कार्यक्रम की दृष्टि से कोई काम हाथ में लिया जाना चाहिए, तो यह एक काम हो सकता है। यदि एक शहर के २५ पुस्तक-विक्रेताओं को कमीशन बन्द की योजना से प्रतिदिन आर्थिक लाभ होता है तो कोई कारण नहीं कि उनकी रुचि इस संगठन में न बढ़े। लेकिन इस कार्यक्रम को हाथ में लेने से पहले संगठन की बुनियाद ऐसी होनी चाहिए कि इस प्रकार के कार्यक्रम बराबर सफलतापूर्वक चल सकें।

संगठन की बुनियाद के रूप में मैं मुख्य रूप से तीन बातें सोचता हूँ। पहली यह कि चन्दे से और विशेष सहायता से जो भी पैसे इकट्ठे होते हैं, उनको ध्यान में रखते हुए हैसियत के मुताबिक कार्यालय का स्थान लिया जाना चाहिए। दूसरी बात यह है कि उसे प्रतिदिन चलाते रहने के लिए (चाहे कुछ ही समय के लिए सही) वैतनिक कार्यकर्ता नियुक्त किया जाना चाहिए। और तीसरा यह कि बैठकों में चाहे छोटे-मोटे ही निर्णय किये जाएँ उन पर संजीदगी के साद अमल किया जाय। इस प्रकार यह देखा जा सकेगा कि सदस्य ऐसे निर्णयों को कार्यान्वित कर रहे हैं या नहीं अर्थात् संगठन का अनुशासन वे मानते हैं या नहीं।

इसके बाद **संगठन को गति** देने के लिए अन्य बातें भी की जानी चाहिए। महीने में दो-एक बैठकें कार्यकारिणी समिति की अवश्य होनी चाहिए। संगठन बिना शक्ल की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन दिखाई देने लायक एकाएक सामने आने वाली चीज़ भी नहीं है। संगठन का रूप हम इसी प्रकार आँकते हैं कि उसके कितने सदस्य हैं, कितना धन एकत्र होता है, किस कार्यक्रम पर खर्च होता है, कितनी बैठकें होती हैं, उसका प्रचार-कार्य कैसा हो रहा है, कार्यालय की गतिशीलता क्या है, निर्णयों पर अमल कैसे हो रहा है, संगठन के प्रति सदस्यों की दैनिक रूप से सक्रिय रुचि किस मात्रा में है। पुस्तक-विक्रेताओं के संगठन की परीक्षा तो इसी बात में है कि उसके सदस्य उस संगठन में कहाँ तक रुचि लेने लगे हैं। यदि आपस में भिन्न राय रखते हुए, किसी प्रश्न पर उलझते हुए, झगड़ते हुए भी संगठन को आगे बढ़ाने में और बहुमत के फैसले पर चलने में एकजुटता आ जाती है, तो उस संगठन का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

इसके साथ ही सवाल जुड़ा हुआ है, **संगठन में नेतृत्व** कहाँ से आए और उसका विकास कैसे हो। किसी भी संगठन में एकाएक शक्तिशाली नेतृत्व पैदा नहीं होता। नेतृत्व के जन्म का और उसके विकास का भी एक क्रम है। प्रस्ताव के रूप में हम जो कार्यक्रम तय करते हैं, जिसमें सबका समान रूप से हित है, उस कार्यक्रम पर दिल से चलने वाला और उसे आगे बढ़ाने वाला पुस्तक-विक्रेता ही उसके संगठन का नेतृत्व कर सकता है। सक्रिय रहने वाले लोग ही संगठन का नेतृत्व करते हैं। हमारे समाज में कथनी और करनी को मिलाने वाले लोगों की बहुत कमी है। इसलिए यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि जो कुछ कहा जाता है वह शत-प्रतिशत पूरा उतर जाएगा। उलटे होता यह है कि अधिकांशतः कही हुई बात का, पास किये हुए प्रस्तावों का, एक-तिहाई भी पूरा नहीं होता। ऐसी स्थिति में संगठन के सदस्यों को ऐसे लोगों को आगे लाना चाहिए या आगे आने देना चाहिए, जो कथनी और करनी में अधिक-से-अधिक ताल-मेल बिठा सकें। यह सही है कि इस क्रिया में कुछ समय लगता है, लेकिन सदस्यों की इतनी सजगता भी रह जाए कि कौन अधिक-से-अधिक सही ढंग से उनको आगे ले जा सकता है, तो नेतृत्व करने और उसका विकास करने का काम अपने-आप पूरा होता जायगा।

संगठन में जहाँ नेतृत्व के महत्त्व की बात छिपी हुई है वहीं एक तरफ़ बड़ा खतरा हममें पैदा होने वाली **विघटनकारी प्रवृत्तियों** का है। यदि आम सदस्यों की चेतना और समझ से अधिक आगे बढ़कर नेतृत्व दिया जाए तो एक दूसरा खतरा खड़ा हो जाएगा। इन बातों को हम और अधिक स्पष्ट रूप से समझ लें। काम करने वालों के विरुद्ध झूठा प्रचार करने वाले मैदान में उतर आते हैं; वे स्वयं तो संगठन को धन और समय देते नहीं, दूसरों को भी ऐसा करने से रोकते हैं। संगठन की तुलना में कई बार हम अपने-आपको, अकेले को बड़ा समझने का अहं पैदा करने से नहीं रोक सकते। अनेक बार सही बातों में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम कागज़ • सुन्दर छपाई • आकर्षक आवरण
से सुसज्जित

पुष्पी पॉकेट बुक्स

सुप्रसिद्ध लेखकों के प्रत्येक माह लगभग पाँच
ताज़े उपन्यास प्रकाशित होते हैं।

• प्रकाशित उपन्यास	कमीशन ५० प्रतिशत	
वासना की आँच	प्रेम वाजपेयी	२.००
दो रेखायें	,,	२.००
पाप और प्यार	,,	२.००
कुछ उजले कुछ धुंधले	,,	२.००
दरवाजा खोल दो	,,	२.००
औरत जब गिर जाती है	,,	२.००
खिलाड़ी	,,	२.००
कबूतरी	,,	२.००
गेहूँ और ताजमहल	,,	२.००
ये शरीफ़ज़ादियाँ	,,	२.००
तनहाई और परछाइयाँ	,,	२.००
ताश के महल	,,	२.००
छुपे चेहरे	ओमप्रकाश शर्मा	२.००
कंचनगढ़ की सराय	,,	१.००
रहस्यमय वैज्ञानिक	,,	१.००
राजमहल का षड्यंत्र	,,	१.००
आखिरी दाँव (उर्दू)	,,	१.५०
काली घटा	आदिल रशीद	२.५०
देवता	,,	०.७५
एक रात का पाप	गोविन्द सिंह	२.००
आधुनिक कामकला (सेक्स)	,,	२.००
बदलते हमसफर	सोमनाथ अकेला	२.००
वासना	,,	२.००
स्वीट सैवनटीन	अकरम इलाहाबादी	१.५०
स्वीट सैवनटीन (उर्दू)	,,	१.५०
ज़िन्दा चट्टानें	,,	१.५०
ज़िन्दा चट्टानें (उर्दू)	,,	१.५०
रोम की नारी	अलबर्टो मोराविया	२.००
यौवन के दिन	,, ,,	१.००
और वह हार गयी	आचार्य जगदीश मिश्र	१.७५
पचास सदी बाद	रेनोल्ड	१.००
लहू की पुकार (उर्दू)	बदनाम रफी	१.००
बेगुनाह मुजरिम (उर्दू)	,,	१.००
शैतान का जाल (उर्दू)	,,	१.००

पुष्पी कार्यालय
११९-बी, बाई का बाग़, इलाहाबाद-३

हम लोग नासमझी या लिहाज़ के कारण चुप रह जाते हैं। अगर नेतृत्व ठीक होगा तो इन सब बातों को धीरज के साथ सँभाल ले जाएगा और संगठन भी कमज़ोर न होगा। दूसरी बात यह हो कि यदि आम सदस्य दुकानें बन्द होने के बाद बैठकें किये जाने के पक्ष में हों तो बैठक उसके बाद ही होनी चाहिए। ज़रूरी-से-ज़रूरी मसले पर विचार करने के लिए भी सदस्यों की इच्छा के विरुद्ध यदि दूसरा समय तय कर लिया जाएगा तो बैठक नहीं चल सकेगी। इसी तरह सदस्यों की माँग पर किसी भी समय छोटे-से-छोटे आन्दोलन का रूप नया हो, इस पर भी सबकी समझ के अनुसार कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए और उसमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सब लोगों की एकता किस रूप में स्थापित होती है। अधिक गरम-गरम बोलने वाले भी उतने ख़तरनाक हो सकते हैं, जितने चुप रहकर संगठन को धोखा देने वाले; इसलिए इन ख़तरनाक प्रवृत्तियों से सावधान रहते हुए अगर हम अपने संगठन को आगे ले जाते हैं तो उसके फल हमें निश्चित रूप से मिलेंगे।

शहर और ज़िले के संगठन बनाने के साथ ही हमें अपने **प्रान्त के संगठन का निर्माण** भी करना पड़ेगा। पुस्तक-व्यवसाय के सामने जिस स्तर की समस्याएँ आती हैं उनका समाधान उस स्तर के संगठन ही कर सकते हैं। पुस्तक-विक्रेताओं की अनेक समस्याएँ प्रान्तीय स्तर की होती हैं। राज्य सरकार की नीति पुस्तक-क्षेत्र के विकास से कहाँ तक जुड़ी हुई है और राज्य सरकार अथवा राज्य के शिक्षा विभाग से पुस्तक-विक्रेता किन नीतियों का निर्माण करवा सकते हैं, जिनसे उनका हित भी हो और शिक्षा के क्षेत्र में वे अपना योगदान दे सकें, यह सब प्रान्तीय संगठन पर निर्भर है। आज यदि प्रान्तीय स्तर पर राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकों के वितरण में अव्यवस्था है, सरकार यदि व्यवसायी बन करके भी व्यवसाय नहीं कर सकती और उल्टे छोटे-छोटे विक्रेताओं को परेशानी का सामना करना पड़ता है, यदि राज्य की शिक्षण-संस्थाएँ शिक्षण-विभाग की नीति के कारण पुस्तकों की 'सप्लाई' ठीक तरीके से नहीं ले सकतीं और पुस्तक-विक्रेताओं के सामने जगह-जगह एक ही ढंग की कठिनाइयाँ पैदा होती हैं, तो ऐसी स्थिति में प्रान्त के पुस्तक-विक्रेताओं का संगठन ही उनका हल निकाल सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसमें विचारणीय प्रश्न यही है कि या तो हम बड़े-बड़े शहरों में संगठन की शुरुआत करके प्रान्तीय संगठन का निर्माण करें या समर्थ पुस्तक-विक्रेता मिलकर प्रारम्भ में प्रान्तीय स्तर की कामचलाऊ-समिति का निर्माण करें। प्रत्येक स्थिति में समर्थ, अनुभवी और सूझ-बूझ वाले पुस्तक-विक्रेताओं को पहल करनी ही होगी। स्पष्ट है कि प्रारम्भ में उनका अधिक समय भी लगेगा, धन भी लगेगा और कई बार नुकसान भी उठाना पड़ेगा, लेकिन यह बात भी है कि भविष्य में उनकी अपनी अनेक समस्याओं का हल वही संगठन होगा। इसलिए नीतितः सभी पुस्तक-विक्रेताओं को यह बात मानकर चलनी चाहिए कि संगठन को खड़ा करो, तथा धन और शक्ति देकर सींचो और तब उसका फल प्राप्त करो। यदि संगठन को हम सींचते हैं तो संगठन हमारे काम को सींचने लग जाएगा। इसी क्रम में कुछ निर्णय इस प्रकार के भी किये जाने चाहिए कि सदस्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार उस संगठन को नियमित रूप से आर्थिक सहायता दे सकें और संगठन उन सदस्यों की, जो नियमित रूप से संगठन को आगे बढ़ाने में मदद देते हैं, समस्याओं का हल निकालता रहे। यह अन्योन्याश्रित सम्बन्ध बराबर चलता रहना चाहिए। तभी संगठन ज़िन्दा रह सकता है।

हमारे देश के पुस्तक-व्यवसाय को इस समय जिन परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है उन्हें देखते हुए ऐसा लगता है कि शहर, ज़िले या प्रान्तीय स्तर पर केवल पुस्तक-विक्रेताओं या केवल प्रकाशकों का संगठन सम्भवतः नहीं चल सकता। ऐसी स्थिति में **सभी प्रकार के पुस्तक-व्यवसायियों का एक मिला-जुला संगठन** कायम किया जाना चाहिए। पाठ्य एवं सामान्य पुस्तकों के पुस्तक-प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता—खुदरा विक्रेता, पुस्तकालयों में पुस्तकें 'सप्लाई' करने वाला विक्रेता, सहायक पुस्तकों के प्रकाशक एवं विक्रेता, कानूनी, मेडिकल टेक्नीकल आदि सभी प्रकार के पुस्तक-व्यवसायी ऐसे संगठन के सदस्य हो सकते हैं। साथ ही इस प्रकार के संगठन में प्रारम्भ से ही अलग-अलग प्रकार के धन्धों के अनुसार कुछ समितियों का निर्माण हो जाना उचित होगा, जैसे पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशक, सामान्य पुस्तकों के प्रकाशक, खुदरा विक्रेता, लाइब्रेरी में 'सप्लाई' करने वाले आपूर्तिकर्ताओं और थोक बिक्री करने वाले थोक-विक्रेताओं की अपनी-अपनी समितियाँ भी हों। उनके संयोजक अलग भी हो सकते हैं अथवा सुविधानुसार संगठन का रूप कायम किया जा सकता है। इस प्रकार जब प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय संगठन का निर्माण हो जाय तो अखिल भारतीय स्तर पर सभी प्रकार के पुस्तक-व्यवसायियों का अपना एक संघ हो सकता है। सम्भव हो तो एक प्रकार का धन्धा करने वाले पुस्तक-विक्रेता अथवा प्रकाशकों के अखिल भारतीय संगठन (भाषावार रूप से) हो सकते हैं। जो संगठन अभी हैं, वे कालान्तर में विकसित हो सकते हैं अथवा उनके नाम, संविधान और ढाँचे में परिवर्तन किया जा सकता है। अन्ततः राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तक व्यवसायियों का एक राष्ट्रीय महासंघ होना आवश्यक है और उससे सम्बन्धित हर भाषा की पुस्तकों का व्यवसाय करने वाले व्यवसायियों का अखिल भारतीय संगठन।

पुस्तक-विक्रेताओं का इस प्रकार जो भी संगठन जिस स्तर पर भी हो उसका प्रभाव शिक्षा और पुस्तक-जगत् के समग्र क्षेत्र पर पड़ना अवश्यम्भावी है। समाज की सांस्कृतिक क्रान्ति में पुस्तक-विक्रेता का वही महत्त्व है, जो किसी शिक्षक और पुस्तकालयाध्यक्ष का है। इस तथ्य को जितना ही जल्दी समझ लिया जाय, उतनी ही जल्दी हमारे समाज की शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में प्रगति होना अवश्यम्भावी है। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले पुस्तक-विक्रेता अपने भावी कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने संगठन को बनाने का संकल्प लेकर जाएँगे हम यही आशा करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

दर्शन-धर्म-संस्कृति

हिन्दू देव परिवार का विकास डॉ० सम्पूर्णानन्द ६.५०

नानक वाणी रचयिता–गुरु नानक देवजी
टीकाकार–डॉ० जयराम मिश्र ३०.००

इस्लाम के सूफी साधक
रचयिता—रेनाल्ड ए० निकलसन
अनुवादक—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ४.००

संस्कृत के अमर ग्रन्थ

अमरुशतकम् रचयिता—महाकवि अमरु
अनुवादक—श्री कमलेशदत्त त्रिपाठी १०.००

कुट्टनीमतं काव्यम् रचयिता—दामोदर गुप्त
अनुवादक—श्री जगन्नाथ पाठक ७.५०

शतकत्रयम् (नीति, शृङ्गार एवं वैराग्य शतक)
रचयिता–भर्तृहरि, अनुवादक–श्रीकान्त खरे ३.००

जानकीहरणम् रच०—महाकवि कुमारदास
अनुवादक—श्री ब्रजमोहन व्यास २५.००

साहित्य एवं समालोचना

मधुमालती (उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)
रचयिता–मंझन
सम्पादक–डॉ० माताप्रसाद गुप्त–राज संस्करण २०.००
साधारण संस्करण १२.००
विद्यार्थी संस्करण ८.००

मध्ययुगीन प्रेमाख्यान
लेखक—डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय १०.००

पद्मावत में लोकतत्त्व डॉ० रवीन्द्र भ्रमर ५.००

राउल बेल और उसकी भाषा
रचयिता—महाकवि रोड
सम्पादक–डॉ० माताप्रसाद गुप्त ५.००

निराला का कथा साहित्य
लेखिका–डॉ० कुसुम वार्ष्णेय ३.००

हिन्दी काव्य प्रवाह (संकलन)
श्रीमती पुष्पा स्वरूप २०.००

समाजशास्त्र

विवाह पद्धतियाँ ले०–एडवर्ड वेस्टर मार्क
अनु०–श्रीकान्त खरे ७.५०

आत्मकथा

ज़िक्रेमीर रचयिता—महाकवि 'मीर'
अनु०–श्री अजमल अजमली ३.००

कला

भारतीय चित्रकला ले०–श्री वाचस्पति गैरोला ५०.००

भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त परिचय
ले०–श्री वाचस्पति गैरोला ५.००

लोक-साहित्य

हमारे संस्कारगीत संकलन–श्रीमती राजरानी वर्मा ७.५०

जीवन-चरित्र

महात्मा गांधी ले०–डॉ० प्रफुल्लचन्द्र घोष
(भूतपूर्व मुख्यमंत्री, प० बंगाल) ७.५०

वैज्ञानिक

वन की पुकार (बालोपयोगी)
लेखक–स्वामी विश्वात्मानन्द ५.००

उपन्यास

चन्दन चाँदनी (मौलिक)
श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरेक्सा ४.००

चाँद बोला (मौलिक)
श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' २.००

ज़िन्दगी की जड़ें (मौलिक) श्री अनिरुद्ध पाण्डेय ४.००

तहरदार लौंडी (अनूदित)
ले०–मुंशी सज्जाद हुसेन, अनु०—श्री शमीम हनफ़ी ३.००

किस्सा चहार दर्वेश (अनूदित) रच०–मीर अम्मन
भाषान्तरकार डॉ० सैयद एजाज़ हुसेन ५.००

पिशाच की प्यास (अनूदित) ले०–ब्रेम स्टोकर
अनु०–श्री परमानन्द गौड़ ५.००

बारहवीं रात रचयिता—शेक्सपियर
रूपान्तरकार–श्री कुलदीप कपूर २.५०

अंकुर (अनूदित) रचयिता–एमिल जोला
अनुवादक–रमेश जोशी १०.००

जीने के लिए (अनूदित) रचयिता–एमिल जोला
अनुवादक–श्री सूर्यनारायण ४.००

लिज़ा (अनूदित) लेखक—तुर्गनेव
अनुवादक–श्री नेमिचन्द्र जैन २.५०

अग्निपरीक्षा (अनूदित) लेखिका–आशापूर्णा देवी
अनुवादक–श्री रामनारायण शुक्ल ३.५०

नाटक

नील-दर्पण रचयिता–दीनबन्धु मित्र
अनुवादक–डॉ० महादेव साहा ४.५०

उर्दू शायरी

जहरे इश्क़ रचयिता—नवाब मिर्ज़ा 'शौक'
भाषान्तरकार–डॉ० सैयद मुहम्मद अक़ील २.५०

प्रकाशक—(पुस्तक विभाग) मित्र प्रकाशन (प्रा०) लि०, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना सार

विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति

सुप्रसिद्ध कवि तथा साहित्यकार श्री शिवमंगलसिंह 'सुमन' विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त किये गये हैं। उज्जैन के माधव कालेज में आप सर्वप्रथम हिन्दी विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए थे, कुछ वर्षों तक आप नेपाल में भारत के सांस्कृतिक प्रतिनिधि भी थे। तत्पश्चात् आप माधव कालेज, उज्जैन के प्रिंसिपल हुए। अब प्रिंसिपल पद से आपने उपकुलपति पद ग्रहण किया है। हिन्दी के साहित्यकारों को विश्वविद्यालयों में उपकुलपति नियुक्त कर मध्यप्रदेश शासन ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

केनेडी पुस्तकालय को दान

'दि डेथ आफ़ प्रेजीडेंट' पुस्तक की आय से लेखक विलियम मैनचेस्टर तथा प्रकाशक हार्बर रो पब्लिशिंग हाउस ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय स्थित जान केनेडी स्मारक पुस्तकालय को ७।। लाख डालर दान किया है।

सीनेटर एडवर्ड केनेडी ने, सीनेटर रावर्ट केनेडी की हत्या से पूर्व एक पत्र लिखकर इस दान के लिए धन्यवाद दिया था।

विश्व-प्रकाशन आँकड़े

संयुक्त राष्ट्र संघ की १९६७ की वार्षिकी के अनुसार सोवियत संघ में १९६६ में ७२९७७ पुस्तकें प्रकाशित हुईं, अमरीका में ५८५१७, जापान में ३०४५१ और ब्रिटेन में २८७८७।

स्वीडन में दैनिक समाचारपत्र सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। १९६६ के दौरान स्वीडन में प्रति एक हजार लोगों पर समाचारपत्रों की ५०१ प्रतियाँ बिकीं।

शिक्षा सलाहकार पैनल

योजना आयोग के सदस्य (शिक्षा) डा० बी० डी० नागचौधरी की अध्यक्षता में एक शिक्षा सलाहकार पैनल की स्थापना की गयी है।

यह पैनल शिक्षा योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करेगा तथा अगले १५-२० वर्षों में विकास की आवश्यकताओं का मोटे तौर पर अनुमान लगायेगा।

हरियाणा के पाँच जिलों में सार्वजनिक पुस्तकालय

आगामी तीन वर्षों में हरियाणा के रोहतक, जींद, गुड़गाँव, करनाल तथा हिसार जिलों में एक सार्वजनिक पुस्तकालय खोलने की योजना है। इस समय केवल अम्बाला और नारनौल में ही ऐसे पुस्तकालय हैं।

अम्बाला के सार्वजनिक पुस्तकालय को हरियाणा का केन्द्रीय सार्वजनिक पुस्तकालय बनाये जाने की योजना पहले ही मंजूर की जा चुकी है। एक चलता-फिरता सार्वजनिक पुस्तकालय भी खोला जायगा जो देहाती क्षेत्रों की पुस्तकालय आवश्यकता को पूरा करेगा।

विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदत डालने के लिए स्कूलों के पुस्तकालयों में भी सुधार करने की योजना है। सौ हाईस्कूल इस उद्देश्य के लिए चुने जायँगे और उनमें २००० रु० मूल्य की पुस्तकें प्रति पुस्तकालय को सरकार की ओर से भेजी जायँगी। समीप के मिडिल और प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों को इन पुस्तकालयों का प्रयोग करने की सुविधा दी जायगी।

नगरपालिकाओं के पुस्तकालयों को भी सुधारने की एक योजना सरकार के विचाराधीन है। प्रत्येक नगरपालिका के पुस्तकालय में एक प्रशिक्षित लाइब्रेरियन नियुक्त किया जायगा। इस समय समस्त हरियाणा में किसी भी नगरपालिका पुस्तकालय में प्रशिक्षित लाइब्रेरियन नहीं है। बड़े नगरों में वाचनालयों की संख्या बढ़ाई जायगी और उनमें समाचारपत्र और पत्रिकाओं को उचित ढँग से रखने का प्रबंध किया जायगा। सरकार इस उद्देश्य के लिए अनुदान का प्रबन्ध करेगी।

एक अन्य योजना के अंतर्गत राज्य के सार्वजनिक तथा नगरपालिकाओं के पुस्तकालयों की पुरानी पुस्तकों को रोहतक में एक स्थान पर एकत्रित किया जायेगा ताकि बेकार पुस्तकों को रद्दी में बेच दिया जाय और शेष को अच्छे ढँग से संदर्भ आदि के लिए सँभालकर रखा जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सके। संभवतः यह पुरानी पुस्तकों का पुस्तकालय गुरुकुल झज्झर में खोला जायगा जहाँ एक पुरातत्व संग्रहालय पहले ही खुला हुआ है।

इसी प्रकार पंचायती पुस्तकालयों का भी पुनर्गठन किया जायगा। इन पुस्तकालयों को प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में बदल देने की योजना सरकार के विचाराधीन है।

पाठ्य-पुस्तकों के लिए निगमों का सुझाव

राष्ट्रीय एकता परिषद के सदस्यों के विचारार्थ केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने एक सुझाव भेजा था जिसमें यह कहा गया था कि चौथे आयोजन-काल में पाठ्य-पुस्तकें तैयार कराने के लिए तथा वर्तमान पुस्तकों में सुधार कराने के लिए हर राज्य में एक-एक स्वशासित निगम स्थापित किया जाए।

सुझाव में यह भी कहा गया है कि स्कूली पाठ्य-पुस्तकों के लिए एक राष्ट्रीय मण्डल की स्थापना की जाए, जो इस क्षेत्र में किये गये प्रयासों में सामंजस्य बनाये रखने का प्रयत्न करे तथा सामान्य रूप से पाठ्य-पुस्तकों में सुधार करने और उन्हें विशेष रूप से राष्ट्रीय एकता की आवश्यकताओं को देखते हुए उपयुक्त बनाने के लिए जोरदार कदम उठाए।

मन्त्रालय का कहना है कि त्रिभाषा सूत्र से बच निकलने का न तो कोई उपाय है, न लाभ। क्षेत्रीय भाषाओं को पूरी तरह विकसित करना आवश्यक है जिससे वे सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम बनने में समर्थ हो सकें। इसी प्रकार जन-सामान्य में ज्ञान का प्रचार किया जा सकेगा। इसके साथ ही केन्द्र और राज्यों की भी यह विशेष ज़िम्मेदारी है कि वे दोनों सम्पर्क भाषाओं—हिन्दी और अंग्रेज़ी—को पुष्ट करने का प्रयास करें।

चौथी आयोजनावधि में त्रिभाषा सूत्र को सारे प्रदेशों में कार्यान्वित करने के लिए ज़ोरदार कदम उठाना आवश्यक है। इसके साथ-साथ उच्च शिक्षा-सम्बन्धी सभी संस्थाओं में हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों पढ़ाने की सुविधाएँ पैदा की जानी चाहिए।

शिक्षा की प्रणाली में परिवर्तन करने की तत्काल आवश्यकता है जिससे कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक कुशलता प्राप्त की जा सके और भाषा सीख पाना सम्भव हो।

हरियाणा शिक्षा विभाग

हरियाणा शिक्षा विभाग की नई विज्ञप्ति के अनुसार प्रारम्भिक तथा मिडिल विद्यालयों के लिए पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की योजना के अन्तर्गत अच्छी पुस्तकें अथवा पाण्डुलिपियाँ तैयार करने के लिए भावी प्रकाशकों, तथा लेखकों को अन्तिम तिथि १६-४-१९६८ से बढ़ाकर ३१-१२-१९६८ कर दी है। पुस्तकें अथवा पाण्डुलिपियाँ उक्त तिथि तक असिस्टेंट डायरेक्टर आफ़ पब्लिक इंस्ट्रकशन, सोशल एजुकेशन, के पास पहुँच जानी चाहिए।

पत्र-व्यवहार-पाठ्यक्रम

गोरखपुर विश्वविद्यालय इसी सत्र से पत्र-व्यवहार द्वारा पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहा है। फिलहाल यह पाठ्यक्रम बी० ए० में ही लागू होगा।

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ का चौथा वार्षिक अधिवेशन

राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ का चौथा वार्षिक अधिवेशन जोधपुर में हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन राज्य के शिक्षा मन्त्री श्री शिवचरण माथुर ने किया।

इस अवसर पर एक विचार-गोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें शिक्षा मन्त्री महोदय के अलावा राष्ट्रीयकरण पाठ्यपुस्तक मण्डल के सचिव श्री भारतभूषण भी उपस्थित थे।

१. पुस्तक के निर्माण, प्रकाशन और प्रसार का कार्य महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्य है। इसलिए इस कार्य में लगी हुई प्रतिभाओं को सम्मानित और पुरस्कृत किया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में राजस्थान पुस्तक व्यवसायी संघ यह माँग करता है कि केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें लेखकों के साथ-साथ प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं को भी प्रतिवर्ष सम्मानित और पुरस्कृत करने की योजना लागू करें।

२. पुस्तक-प्रकाशन और पुस्तक-प्रसार की सामाजिक सेवाओं को समाज में व्यापक मान्यता दी जाए। आज जब देश में होटल-जैसी संस्थाओं का विकास करने के लिए सर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार ऋण दे रही है तो पुस्तक-प्रकाशन और पुस्तक-प्रसार के कार्य को और विकसित करने के लिए भी उचित ब्याज पर ऋण दिये जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। वर्तमान में यदि कोई कठिनाई हो तो यह भी किया जा सकता है कि सरकारी और अर्द्धसरकारी संस्थाओं को जो रकम अनुदान के रूप में दी जाती है, वही रकम निजी क्षेत्र के पुस्तक-व्यवसायियों को लम्बी अवधि के लिए ऋण के रूप में दी जा सकती है। इससे सरकार पर किसी भी प्रकार का अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ेगा। आगे चलकर राज्य में पुस्तक वित्त निगम की स्थापना होनी चाहिए।

३. पुस्तक क्षेत्र के विकास में रुचि रखने वाले लोग अब तक प्रायः मानने लगे हैं कि पुस्तकों की खरीद के लिए टेंडर पद्धति का अपनाया जाना किसी भी दृष्टि से घातक है। सन् १९६४ में राजस्थान सरकार ने टेंडर पद्धति की अनिवार्यता को खत्म करके एक सराहनीय कार्य किया था जिसकी प्रशंसा भारतवर्ष में जगह-जगह हुई। उसके बाद जहाँ तक उस आदेश की क्रियान्विति का सवाल है, राज्य के खरीद अधिकारी, विशेष रूप से शिक्षा अधिकारी, उसका पालन पूरी तरह नहीं कर रहे हैं। तत्कालीन शिक्षा संचालक श्री बी० बी० जान के अथक प्रयास से राज्य के कालेजों और कुछ पुस्तकालयों में टेंडर पद्धति को समाप्त किया गया। लेकिन राज्य-भर में फैली शिक्षण-संस्थाओं और ज़िला पुस्तकालयों, ज़िला निरीक्षकों के कार्यालयों में खरीद के लिए टेंडर-पद्धति आज भी भयंकर रूप से चालू है। हम यह अनुभव करते हैं कि वर्ष में कम-से-कम दो बार शिक्षा मन्त्रालय की ओर से शिक्षा अधिकारियों को कड़े निर्देश भेजे जाएँ और जब-जब प्रधानाध्यापकों तथा शिक्षा-अधिकारियों का सम्मेलन होता है, उसमें यह बात स्पष्ट की जाए कि पुस्तकों की खरीद के लिए टेंडर प्रणाली कतई न अपनाई जाए। तभी सही मायने में विभाग की शिक्षा नीति क्रियान्वित हो सकती है। ऐसा न होने से पुस्तक व्यवसाय अनेक तरह की व्याधियों से घिरा रहता है और सेवाओं का ह्रास होता है। पुस्तक क्षेत्र के विकास में प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता लेखक और शिक्षक की भाँति रुचि लेकर कार्य कर सकें, इस दृष्टि से टेंडर प्रणाली को जड़-मूल से समाप्त किया जाना चाहिए।

डॉ० महावीर दाधीच की दो नई पुस्तकें

अस्तित्ववाद

कीर्के गार्द, यास्पर्स, हेडेगर, सार्त्र, बूवर के चिन्तन का गम्भीर व आलोचनात्मक अध्ययन। इसके अतिरिक्त अस्तित्ववादी विचार और साहित्य पर एक मौलिक दृष्टि।

मूल्य ११ रुपये

आधुनिकता और भारतीय परम्परा

आधुनिकता और भारतीय परम्परा, मूल्य-संबंधी नवीन विचार, साहित्य और प्रतिबद्धता, भाषा, गीत आदि विषयों का विस्तृत और तर्कसंगत तात्त्विक विवेचन।

मूल्य ५ रुपये

सम्पर्क

शब्दलेखा प्रकाशन

५, डागा बिल्डिंग

बीकानेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ की ओर से इस वर्ष राष्ट्रीय पुस्तक मेले के अवसर पर एक स्मारिका तथा एक डायरेक्टरी व एक राजस्थानी शब्दकोष के प्रकाशन का भी निर्णय लिया गया।

अधिवेशन के द्विवर्षीय कार्यक्रम में राज्य के कोने-कोने से आए पुस्तक-व्यवसायियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अधिवेशन को सम्पन्न बनाने में जोधपुर के पुस्तक-व्यवसायियों का योगदान सराहनीय रहा। १९६८-६९ के लिए कार्यकारिणी का चुनाव इस प्रकार सम्पन्न हुआ :

अध्यक्ष : श्री द्वारकादास राठी।

उपाध्यक्ष : श्री जयकृष्ण अग्रवाल, श्री झुन्नीलाल जसोरिया तथा श्री लक्ष्मीनारायण विजय।

प्रधान मंत्री : श्री नरेन्द्र बाहरी।

उत्तर प्रदेश पाठ्य पुस्तकों के लिए दो निगमों का प्रस्ताव

उत्तर प्रदेश की चौथी पंचवर्षीय आयोजना की जो रूपरेखा तैयार की गई है उसकी मुख्य बात यह है कि दो निगमों की स्थापना की जाएगी तथा अधिक संख्या में स्कूल खोले जाएँगे और अधिकाधिक शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी। दोनों निगमों में से एक हाई स्कूल और इण्टर-मीडिएट कक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करेगा तथा दूसरा विश्वविद्यालय स्तर की हिन्दी पुस्तकें निकालेगा।

शिक्षा-सम्बन्धी कार्यकारी दल की बैठक में रविवार ७ जुलाई को ये निश्चय किये गये तथा इस बात का सुझाव दिया गया कि इन कार्यों पर एक अरब रुपये के खर्च की योजना बनाई जाए।

यह भी निश्चय किया गया कि चौथी आयोजनावधि में प्राथमिक कक्षाओं में नाम लिखाने वाले बालक-बालिकाओं की संख्या में पर्याप्त वृद्धि की सम्भावना देखते हुए काफी संख्या में प्रारम्भिक और जूनियर बुनियादी स्कूल गाँवों और शहरों में खोले जाएँ और अध्यापकों की यथेष्ट नियुक्ति की जाय। विचार यह हुआ कि अध्यापकों और छात्रों का अनुपात १ और ४५ का रहे।

अधिक संख्या में नये स्कूल भवनों का निर्माण करने, पुराने भवनों का जीर्णोद्धार करने और जूनियर बुनियादी स्कूलों में बालिकाओं के लिये अवस्थिति (कण्टीनुएशन) कक्षाएँ खोलने का भी सुझाव दिया गया।

कार्यकारी दल ने यह सुझाव दिया है कि गाँवों और शहरों में लड़कों और लड़कियों के लिए और सीनियर बुनियादी स्कूल खोले जाएँ तथा शिक्षक नियुक्त किये जाएँ। इसके अतिरिक्त ऐसे चार हजार स्कूलों में सामान्य विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध करने और निर्धन बालिकाओं के लिये पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था करने वाले पुस्तकालयों के लिये अनुदान देने का भी विचार किया गया।

परीक्षार्थियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट बोर्ड को और भी सुदृढ़ करने का सुझाव दल ने दिया है।

स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ने वाली बालिकाओं को विज्ञान (गैर प्राविधिक विषयों में) की शिक्षा में सुविधा देने तथा डिग्री कालेजों में खेल-कूद की व्यवस्था करने के लिये एक अधीक्षक रखने का भी सुझाव दिया गया।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की वित्तीय अवस्था एक तो यों ही गड़बड़ थी, दूसरे दिल्ली निगम द्वारा मिलने वाले ६० हजार रुपये के वार्षिक अनुदान में पचास प्रतिशत की कमी कर दिये जाने से उसे और भी आघात पहुँचा है।

सबसे बड़ी बात यह है कि यह कटौती गत वित्तीय वर्ष के अन्त में की गई जबकि इस उम्मीद पर कि अनुदान मिलेगा ही रकम खर्च की जा चुकी थी। पुस्तकालय को तीस हजार की रकम मार्च के मध्य में इस आश्वासन के साथ दी गई कि शेष रकम ३१ मार्च तक दे दी जायेगी। लेकिन अब जाकर सूचित किया गया है कि निगम की आर्थिक स्थिति खराब होने से अनुदान की रकम घटा दी गई है।

यह तो तस्वीर का एक पक्ष है। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने विस्तार तथा अधिक संख्या में लोगों तक पहुँचने की बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई थीं जो पैसे की कमी से खटाई में पड़ गई हैं। इस समय इसकी सदस्य संख्या डेढ़ लाख है तथा करीब सात-आठ हजार पुस्तकें रोज़ सदस्य ले जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय की आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः केन्द्रीय सरकार के अनुदान से होती है। इससे प्रबन्धकों ने चालू वर्ष में २१ लाख रुपये की माँग की है लेकिन इसकी पूर्ति की सम्भावना कम ही है। पिछले वर्षों की भाँति इसका बजट १५ लाख रुपये के भीतर ही सीमित रखना पड़ा है। व्यवस्था-व्यय निरन्तर बढ़ते रहने तथा अनुदान में कोई वृद्धि न होने से पुस्तकों की खरीद काफी हद तक प्रभावित हुई है। इधर नई पुस्तकों की खरीद में कमी आ गई है। एक समय तो यह अपने बजट की चौथाई रकम नई पुस्तकों की खरीद पर व्यय करता था, लेकिन अब इस मद में बजट का पाँचवाँ भाग भी नहीं लग पाता।

स्थान की कमी एक और बड़ी समस्या है। यह कठिनाई मुख्य पुस्तकालय भवन में ही नहीं देखने में आती वरन् करोल बाग, पटेल नगर, शाहदरा और लक्ष्मीबाई नगर की शाखाओं का भी यही हाल है। शाहदरा को छोड़कर अन्यत्र तो पुस्तकालय किराये के मकानों में हैं। इन भवनों में न तो परिवर्तन हो सकते हैं, न परिवर्द्धन।

पुस्तकालय के निदेशक श्री जगदीशचन्द्र मेहता का कहना है कि ठीक ढंग से काम करने वाले नई दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी के, दिल्ली कैन्टोनमेंट बार्ड के तथा अन्य पुस्तकालय यदि हमारे अधीन कर दिये जाएँ तो सभी को मिलाकर उत्तम व्यवस्था की जा सकती है।

महाराष्ट्र सरकार ने पुस्तकालयों के लिए एक अलग निदेशालय की स्थापना की है जो स्कूलों तथा कालेजों के पुस्तकालयों की व्यवस्था देखेगा। इस निदेशालय के निदेशक श्री के० डी० पुरानिक नियुक्त किये गये हैं। इस निदेशालय की स्थापना राज्य विधान सभा द्वारा पारित एक अधिनियम के अन्तर्गत की गई है।

बाल साहित्य प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने १४वीं बाल साहित्य प्रतियोगिता के लिए १६ अगस्त, १९६८ तक प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की हैं।

प्रतियोगिता के लिए १९६६, १९६७ तथा १९६८ में अब तक लिखी पुस्तकें व पाण्डुलिपियाँ भेजी जा सकती हैं। पाठ्य-पुस्तकों पर विचार नहीं किया जायेगा। कोई भी पुस्तक, जिसे केन्द्रीय या राज्य सरकारों अथवा सरकारी सहायता-प्राप्त संस्थाओं या अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा पुरस्कार मिल चुका है, प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जायेंगी।

लेखक और प्रकाशक अपनी प्रविष्टियाँ क्रमशः ३ रु० और ५ रु० के शुल्क के साथ सहायक शिक्षा सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, अनुभाग बी० एस० ई०-३ शास्त्री भवन, नई दिल्ली को भेज सकते हैं।

पुरस्कार की राशि अनुवाद कार्य के लिए

गुजरात विश्वविद्यालय के उपकुलपति तथा गुजरात के प्रसिद्ध कवि श्री उमाशंकर जोशी ने भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से अपने काव्य-संग्रह 'निशीथ' पर प्राप्त ५० हज़ार रुपया पुरस्कार की राशि भारतीय तथा अन्य विदेशी भाषाओं के काव्य-ग्रंथों का गुजराती में अनुवाद कराने के कार्य में व्यय करने की घोषणा की है।

●

पाठकों से

- यदि आपको किसी पुस्तक की जानकारी सर्वप्रथम 'हिन्दी प्रकाशक' से प्राप्त हुई है तो पुस्तक मँगाने के लिए उसके प्रकाशक को लिखते समय 'हिन्दी प्रकाशक' का उल्लेख अवश्य करें। इससे हमें प्रकाशकों का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त होगा।
- यदि आपको 'हिन्दी प्रकाशक' में कोई लेख पसन्द आया अथवा नहीं तो हिन्दी प्रकाशक के सम्पादक को अवश्य लिखें, आपका मत सम्पादक का मार्गदर्शन करेगा।
- 'हिन्दी प्रकाशक' से आप क्या अपेक्षा रखते हैं, कृपया अवगत कराएँ।
- 'हिन्दी प्रकाशक' को उपयोगी तथा सुन्दर बनाने के लिए आपके सुझाव आमंत्रित हैं।
- प्रकाशक-बन्धुओं से अनुरोध है कि अपने नये प्रकाशनों की सूचना प्रतिमास नियमित रूप से भेजा करें ताकि 'नये प्रकाशन' स्तम्भ में उन्हें सम्मिलित किया जा सके।

सम्पादक
हिन्दी प्रकाशक
के-४०/६, भैरवनाथ, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अभिनव प्रकाशन

आलोचनात्मक साहित्य

मध्ययुगीन काव्य साधना	डॉ० रामचन्द्र तिवारी	४.५०
समीक्षालोक	डॉ० भगीरथ दीक्षित	२०.००
कामायनी विमर्श	डॉ० भगीरथ दीक्षित	१०.५०
साहित्य का मूल्यांकन (Judgment in Literature)	ले० डब्ल्यू० बी० वर्सफोल्ड अनु० डॉ० रामचन्द्र तिवारी	३.००
रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय	डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह	१५.००
निबन्ध-नीहारिका	सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी	२.५०
लहरपंथी (निबन्ध)	डॉ० रामअधार सिंह	१.२५

कहानी, नाटक एवं कविता

कला का अनुवाद (कहानी)	पं० माखनलाल चतुर्वेदी	२.२५
स्वयंवर (कहानी)	विनोदचन्द्र पांडेय	२.२५
ज्वाला परचूनी (कहानी)	नरेन्द्र शर्मा	२.५०
जाने-अनजाने (संस्मरण)	विष्णु प्रभाकर	३.००
नाव के पाँव (कविता)	डॉ० जगदीश गुप्त	२.५०
बसन्त और पतझर (कविता)	विनोदचन्द्र पांडेय	१.५०
प्यासा निर्झर (कविता)	नरेन्द्र शर्मा	८.००
तन्दुल (कविता)	रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'	१.००
मुद्रिका (नाटक)	सद्गुरुशरण अवस्थी	१.००
भारत दुर्दशा (नाटक)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	१.००
चन्द्रावली (नाटिका)	लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	१.५०
काव्यधारा (कविता-संग्रह)	सं० डॉ० गोपीनाथ तिवारी तथा डॉ० रामचन्द्र तिवारी	३.००

स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तकें

कश्मीर में पन्द्रह दिन	श्री विट्ठलदास मोदी	१.२५
रोगों की सरल चिकित्सा	,,	५.००
जीने की कला	,,	१.५०
बच्चों के स्वास्थ्य और उनके रोग	,,	३.००
यूरोप यात्रा	,,	२.००
उपवास से लाभ	,,	१.५०
दुग्ध कल्प	श्री विट्ठलदास मोदी.	१.००
स्वास्थ्य कैसे पाया ?	सं० ,,	२.००
कच्चा खाने की कला	डॉ० सत्यप्रकाश	०.७५
तन्दुरुस्त कैसे रहें ?	बर्नर मैकफेडन	३.००
उठो	स्वामी कृष्णानन्द	१.२५
आदर्श आहार	डॉ० सतीशचन्द्र दास	१.२५
सर्दी जुकाम खाँसी	डॉ० रैस्मस अलसेकर	१.००
योगासन	श्री आत्मानन्द	२.००
आहार चिकित्सा	अर्नाल्ड इहरिट	२.००
रोगों की नई चिकित्सा	लूई कूने	२.५०
प्राकृतिक जीवन की ओर	एडोल्फ जस्ट	४.००

इतिहास और संस्कृति

India Under Wellesely	*By P. E. Roberts*	15.00
Dupleix And Clive	*By H.H. Dodwell*	15.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ	श्री श्रीराम गोयल	६.००
भारतीय संस्कृति	डॉ० ललनजी गोपाल तथा ब्रजनाथसिंह यादव	५.००
आधुनिक योरप का इतिहास (१४५३ से १७८९ तक)	श्री राधाकृष्ण शर्मा (प्रश्नोत्तर)	३.५०

गणित और विज्ञान

Theory of Aggregates of Real Numbers	*Dr. K. B. Lal*	10.00
Vector Analysis	,, ,,	1.50
वैज्ञानिक अनुसंधान और आविष्कार	डॉ० रवीन्द्र प्रतापराव	३.००

अंग्रेजी और मनोविज्ञान

Fundamentals of General English	*B. M. Singh*	3.00
Constructive Guide to General English Vol. I & II	*By P.S. Mishra, Each*	1.00
A study of Educational Psychology	*By R. P. Bhatnagar*	7.50

प्राप्ति-स्थान

विश्वविद्यालय पुस्तक सदन, नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार विविधा

पाठ्य पुस्तकें राजनीतिज्ञों के चक्कर में

उत्तर प्रदेश तथा बाहर के दर्जनों प्रकाशक अनजाने ही राजनीति और दीर्घसूत्रता के शिकार हो गये हैं।

लगभग दो वर्ष हुए कि राज्य सरकार ने प्रकाशकों से पाठ्य-पुस्तकों के रूप में विचारार्थ पुस्तकें भेजने की माँग की। आज तक उन पुस्तकों पर विचार नहीं हो सका और अब फिर मामला एक वर्ष के लिए लटका दिया गया है।

प्रकाशकों का कहना है कि उनका करीब चालीस लाख रुपया इस प्रकार फँस गया है।

बात १९६६ की फरवरी की है। राज्य सरकार ने प्रकाशकों से हाई स्कूल और इण्टर के लिए अंग्रेजी, रसायनशास्त्र तथा कृषि की पाठ्य-पुस्तकों के रूप में पुस्तकें भेजने को कहा।

प्रकाशकों को इसका पूरा ब्यौरा दे दिया गया और उनसे कहा गया कि हाई स्कूल के लिए छः और इण्टर के लिए सत्रह पुस्तकें उपर्युक्त तीनों विषयों की भेजें।

इसके साथ एक शर्त यह भी लगी हुई थी कि हर पुस्तक के लिए समीक्षा-शुल्क भी रहना चाहिए। यह शुल्क विषय और कक्षा के अनुसार दो सौ से लेकर तीन सौ रुपये तक निश्चित किया गया था।

पुस्तकें जमा करने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर, १९६६ नियत थी। सचिवालय से यह तो तत्काल पता न चल सका कि कितने प्रकाशकों ने पुस्तकें जमा कीं, किन्तु अनुमानतः उनकी संख्या दो सौ से ऊपर है।

समीक्षा-शुल्क के रूप में प्रायः तीन लाख रुपये जमा हो चुके हैं।

पुस्तकें जब आमन्त्रित की गई थीं तब राज्य में कांग्रेस सत्तारूढ़ थी। उस समय तो मामला रह गया। बाद में जब संयुक्त विधायक दल की सरकार अस्तित्व में आई तो शिक्षामन्त्री रामप्रकाश ने तत्काल इस प्रश्न पर विचार करना स्थगित कर दिया।

२७ मई १९६७ को प्रकाशकों को एक अधिसूचना द्वारा बताया गया कि जब तक और कोई आदेश न जारी किया जाए तब तक के लिए वे पुस्तकों पर कोई निर्णय स्थगित समझें। तब से प्रकाशकों ने निर्णय में विलम्ब होने के प्रश्न को लेकर बराबर शिकायत की है लेकिन सब-कुछ व्यर्थ सिद्ध हुआ है।

अभी कुछ दिन हुए (गत १३ अप्रैल को) राज्य सरकार द्वारा एक और अधिसूचना जारी कर प्रकाशकों से कहा गया है कि पुस्तकों पर निर्णय अभी एक वर्ष तक और स्थगित रहेगा।

बताया गया है कि हर पाँच-छः वर्ष बाद शिक्षा की प्रणाली में हुए परिवर्तनों और विषय-विशेष की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पाठ्य-पुस्तकों में संशोधन किया जाता है, किन्तु उपर्युक्त तीन विषयों का जहाँ तक प्रश्न है पिछले दस वर्षों से पुस्तकें बिलकुल ही संशोधित नहीं हुई हैं।

पाठ्य-पुस्तकों सम्बन्धी इस भारी कुव्यवस्था के बारे में एक बात यह भी है कि राज्य सरकार ने प्रकाशकों से पुस्तकें आमन्त्रित करने के पूर्व ही इन तीनों विषयों में १९६७ से आरम्भ होने वाले शिक्षा-सत्र से नया पाठ्यक्रम घोषित कर दिया।

अब स्थिति यह है कि यद्यपि इन तीनों विषयों में संशोधित पाठ्यक्रम पिछले दो वर्षों से लागू हो गया है तथापि सरकार ने नवीनतम अधिसूचना द्वारा घोषित किया है कि पुराने पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार पुस्तकें आगे भी चालू रहेंगी।

इसका परिणाम यह होगा कि जहाँ छात्रों को विषयों की जानकारी तो रखनी होगी नये पाठ्यक्रम के अनुसार, वहाँ उनको पढ़ाई जाएँगी पुरानी ही पाठ्य-पुस्तकें। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति में बहुत-सी 'सहायक पुस्तकें' मैदान में आ गई हैं और छात्रों को उन्हीं पर निर्भर रहना पड़ रहा है।

प्रकाशकों के बीच एक व्यापारिक आदर्श यह प्रचलित है कि जब वे कोई पुस्तक पाठ्य पुस्तक के रूप में विचारार्थ भेजते हैं तो वे उसे तब तक न तो प्रकाशित करते हैं और न बिक्री के लिए बाजार में निकालते हैं जब तक कि समीक्षा समिति की रिपोर्ट नहीं मिल जाती।

लेकिन इस मामले में प्रकाशकों का धीरज अब छूट रहा है, अतः कुछ प्रकाशक सरकारी निर्णय प्राप्त होने के पूर्व भी पुस्तकें बिक्री के लिए बाजार में निकालने की बात सोचने लगे हैं।

उत्तर प्रदेश प्रकाशक संघ के संयुक्त सचिव श्री ओंकार सहाय ने बताया है कि यद्यपि समीक्षा-शुल्क अत्यधिक था तब भी प्रकाशकों ने यह सोचकर रकमें जमा कर दीं कि निष्पक्ष समीक्षाएँ तो की जाएँगी। हर पुस्तक पर प्रकाशकों का चार-चार हजार रुपये के करीब लगा है, अतः सरकार को तत्काल कुछ-न-कुछ निर्णय कर ही लेना चाहिए।

संविद सरकार में उपमुख्यमन्त्री तथा शिक्षामन्त्री श्री रामप्रकाश ने इस सम्बन्ध में पूछने पर बताया कि १९६७ में संविद सरकार पाठ्य-पुस्तकों के बारे में इसलिए कुछ निश्चय नहीं कर पाई कि समीक्षकों की रिपोर्टें जब प्राप्त हुईं तो शिक्षा-सत्र चालू हो चुका था।

उन्होंने यह भी बताया कि सरकार को कुछ समीक्षकों से घूस लेकर पक्षपातपूर्ण समीक्षाएँ लिख देने की भी शिकायत मिली थी, अतः सरकार ने उस समय यह विचार किया कि इन पुस्तकों की समीक्षा फिर से कराई जाए।

उन्होंने कहा कि निश्चय यह किया गया था कि चुने हुए समीक्षकों को एक दिन बुलाकर एक जगह इकट्ठा कर दिया जाए और उन्हें पुस्तकें देकर कहा जाए कि इन पर अपनी राय आप लोग अभी दें।

लेकिन इस योजना के कार्यान्वित होने के पूर्व ही संविद सरकार का अस्तित्व समाप्त हो गया।

एक सरकारी प्रवक्ता ने विलम्ब की बात स्वीकार की है और कहा है कि इसके लिए राजनीतिज्ञ जिम्मेदार हैं।

प्रवक्ता ने कहा—पुस्तकें प्रकाशित कराने का हमारा पूर्व निश्चय अब भी कायम है।

—'स्टेट्समैन' से

पाठ्य-पुस्तकों के मामले में घपला

पाठ्य-पुस्तकों से सम्बद्ध किसी घपले का यदि पता लगाना हो तो खोजियों को कहीं दूर न जाना पड़ेगा और न किसी गहराई में डुबकी लगानी पड़ेगी। इस सम्बन्ध की नवीनतम घटना, जिसका पता चला है—यद्यपि समय को देखते हुए वह नई नहीं है—उत्तर प्रदेश में घटित हुई है। फरवरी, १९६६ में तत्कालीन अधिकारियों ने, जबकि राज्य का शासनसूत्र कांग्रेस के हाथों में था, हाई स्कूल और इण्टर के लिए अंग्रेजी, रसायनशास्त्र तथा कृषि की पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशकों से भेजने के लिए कहा। पाठ्य-पुस्तकों के साथ समीक्षा-शुल्क के रूप में जो रकम ली गई वह अवश्य ही अत्यधिक थी। प्रति पुस्तक दो सौ से तीन सौ रुपये तक वसूल किये गए। लेकिन राज्य सरकार ने देश-भर के न जाने कितने ही प्रकाशकों से यह धन-राशि प्राप्त कर ली तथा अब उसें डकारकर चुप बैठी है। जब कांग्रेस की जगह संविद सरकार ने ली तो स्पष्टतः यह निश्चय किया गया कि सम्प्रति उक्त योजना आगे न बढ़ाई जाए, लेकिन रुपये लटका रखे गये। १९६७ की मई में एक अधिसूचना प्रकाशित की गई कि "जब तक कोई नया आदेश नहीं जारी होता, तब तक इन पुस्तकों पर निर्णय स्थगित रहेगा।" गत २५ फरवरी को संविद शासन का स्थान राष्ट्रपति शासन ने लिया लेकिन राष्ट्रपति के प्रतिनिधि ने भी लूट का माल वापस करने की कोई व्यग्रता न दिखाई। राष्ट्रपति-शासन-काल में १३ अप्रैल को एक नई अधिसूचना द्वारा पुस्तकों पर निर्णय एक वर्ष के लिए और टाल दिया गया। इधर प्रकाशक नियमानुसार उन पुस्तकों को उत्तर प्रदेश में या कहीं और बिक्री के लिए बाजार में नहीं ला सकते, यद्यपि उनके रुपये फँसे हुए हैं।

यह तो एक स्पष्ट उदाहरण सामने आया कि स्थिति कैसी चल रही है, किन्तु ऐसी घटना यह अकेली नहीं है। सच बात यह है कि किसी भी राज्य में पाठ्य-पुस्तकों को स्वीकृति प्रदान करने का पात्र, चाहे वह समितियों द्वारा हो या विभागीय विशेष अधिकारियों द्वारा, सन्तोषप्रद नहीं है। जो लोग पुस्तकों पर कोई निर्णय लेने में इतना समय लगाते हैं वही पुस्तकें जब माँगनी होती हैं तो बहुत ही कम समय देते हैं और इसके बाद यह कहकर उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वीकृत कर देते हैं कि इनमें छापे की भूलें हैं। पुस्तकों के कुछ अंश तो नामंजूर कर दिये जाते हैं और कुछ मंजूर। इसका परिणाम यह होता है कि छात्रों को क्रमिक रूप से जिस प्रकार शब्द-भण्डार से परिचित होते जाना चाहिए उससे वे वंचित रह जाते हैं हालाँकि पाठ्य-पुस्तक तैयार करने वाला क्रम को ध्यान में रखकर ही पुस्तक की रचना करता है। निर्णायकों में कितने ही व्याकरणानुरागी होते हैं जो पाठों में अनावश्यक हेर-फेर की माँग करते हैं, तो कितने ही शौकिया नीतिवादी होते हैं जो पाठों में और चित्रों के बारे में तरह-तरह की आपत्तियाँ उठाते रहते हैं। उस प्रकाशक का भगवान् ही भला करें जो अपने चित्रकार को यह छूट दे देता है कि वह किसी व्यक्ति को सिगरेट पीता प्रदर्शित करे। घूसखोरी और तरह-तरह के दबावों के आरोप तो इतने व्यापक हैं कि उनकी पुष्टि करने का प्रश्न ही नहीं उठता। और जब राज्य सरकार स्वयं पुस्तकें तैयार कराकर बाज़ार में लाती है तो फिर कुछ पूछिए मत। वे देर में आती हैं, खराब होती हैं तथा माँग-भर तो कभी पूरी पड़ती ही नहीं। इसमें कोई सन्देह ही नहीं कि इनके वितरण को लेकर ज़ोरों की चोरबाज़ारी चल पड़ती है।

एक तो इस कार्य से सरकार की स्थिति स्वयमेव हास्यास्पद हो गई है, दूसरे हालत और भी बिगड़ने वाली है। आगामी वर्ष से ऐसी योजना है कि अखिल भारतीय सेवाओं के लिए परीक्षाएँ १४ विभिन्न भाषाओं में ली जाएँ। किसी भी हालत में माध्यमिक और विश्वविद्यालयीय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में क्षेत्रवाद तीव्र गति से बढ़ेगा। फलतः नई पुस्तकों की माँग ही न बढ़ेगी वरन् इनकी आवश्यकता भी अधिक संख्या में होगी और पुरानी व्यवस्था की दृष्टि से ही नहीं नई व्यवस्था की दृष्टि से भी इनकी दर इतनी अधिक होगी कि कुछ बात न पूछिए। वर्तमान व्यवस्था के अन्तर्गत ये पाठ्य-पुस्तकें समय से सुलभ हो सकेंगी, ठीक-ठाक रहेंगी और सम्बद्ध भाषा में शुद्ध रूप में प्राप्त हो सकेंगी, साथ ही यथोचित रूप से सस्ती भी होंगी इसकी गुंजायश नहीं दिखाई देती। यह तो प्रश्न ही नहीं है कि वे समय से मिल पाएँगी और ईमानदारी के साथ उनका वितरण होगा तथा वे कुंजियों के साथ बाज़ार में न आएँगी।

('स्टेट्समैन' का सम्पादकीय)

अच्छी पुस्तकों का अभाव

२० साल में शिक्षा के क्षेत्र में हमने कितनी प्रगति की है इसका अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है कि हम अब तक स्कूलों के लिए अच्छी पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने में भी सफल नहीं हो सके हैं। न अच्छी पुस्तकें हैं और न अच्छे पुस्तकालय। हालत दिन-ब-दिन सुधरने की बजाय बिगड़ती जा रही है। कहने को दिल्ली विश्वविद्यालय के पास, जो देश का एक अच्छा विश्वविद्यालय माना जाता है, कभी एक अपना अच्छा पुस्तकालय था, मगर अब उसकी हालत भी खस्ता नजर आती है। ब्रिटेन के शिक्षा-शास्त्रियों की एक बैठक में यह सुझाव दिया गया था कि जिस विश्वविद्यालय में ३००० विद्यार्थी, १००० शोधकर्ता और ५०० अध्यापक हों उसे अपने पुस्तकालय पर एक लाख पौंड प्रतिवर्ष खर्च करना चाहिए। इस खर्च में

हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेज़ी की श्रेष्ठ पुस्तकों का
दिल्ली में
सबसे बड़ा भण्डार
इंडियन पब्लिशिंग हाउस
२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज
दिल्ली-६
फोन : २७५२६७
तथा
नई सड़क, दिल्ली-६
फोन : २६२४२१
पुस्तक-विक्रेता व पुस्तकालयों को अपनी आवश्यकता की देश-भर के प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हमारे यहाँ से सुविधा से सुलभ हैं।
इंडियन पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय में काम आने वाले कर्मचारियों की तनख्वाहें शामिल नहीं हैं। भारत में तो इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक सीमित साधन और ऊपर से समितियों, आयोगों और सारहीन सम्मेलनों पर खर्च। नतीजा यह होता है कि शिक्षा-प्रणाली में सुधार की जितनी सिफारिशें की जाती हैं वे सब सिफारिशों तक ही सीमित रह जाती हैं। अपने-आपको निर्दोष साबित करने का तर्क सबके पास है। मन्त्री के पास भी, अध्यापक के पास भी और छात्र के पास भी।

('दिनमान' से)

आओ पढ़ें

हिमाचल प्रदेश की कक्षा ५ के बालक-बालिकाओं के लिए स्वीकृत पुस्तक 'आओ पढ़ें' (सम्पादक श्री महेन्द्र एम० ए०, पी-एच० डी०) में पाठ-संख्या १५ में 'क्या आप जानते हैं' के अन्तर्गत बच्चों को यह जानकारी दी गई है :

१. भारत में ७२ करोड़ रेलवे स्टेशन हैं।

२. भारतीय रेलों द्वारा प्रतिवर्ष एक अरब मनुष्य यात्रा करते हैं।

३. संसार का सबसे बड़ा रेलवे प्लेटफार्म सोनपुर का है।

जबकि तथ्य यह है कि

१. भारत में ६४६० रेलवे स्टेशन हैं।

२. भारतीय रेलों में प्रतिवर्ष एक अरब सत्तर करोड़ व्यक्ति यात्रा करते हैं।

३. सोनपुर भारत का सबसे लम्बा प्लेटफार्म है, न कि संसार का सबसे बड़ा प्लेटफार्म।

—विपिन शिवा, रुड़की

('नवभारत टाइम्स' से)

रेल से किताबें

दिल्ली रेलवे स्टेशन के पूर्व की ओर जाने वाली गाड़ियों के तीसरे दर्जे के गेट पर १३ जून की शाम को पाँच बजे गेट कीपर ने एक अद्भुत बात यह बताई कि रेल से पुस्तकें ले जाना वर्जित है।

होता यह है कि ये लोग एक बंडल या ट्रंक को भी रोककर यात्रियों को लौटकर तुलवाने के लिए कहते हैं। यदि वजन पाँच-सात किलो होता है तो कुछ और बहाना बनाते हैं ताकि यात्री अपनी गाड़ी के छूट जाने के डर से उन्हें कुछ दे-दिलाकर अपना रास्ता ले।

अपना यही नुस्खा उसने मुझ पर आजमाया और बाद में कोई उपाय नहीं रहा तो कह बैठा कि रेल से किताबें ले जाना निषिद्ध है। इस गेट पर यह व्यापार वर्षों से चल रहा है। लेकिन कोई रोकने वाला नहीं।

ट्रेफिक मैनेजर को ध्यान देना चाहिए। यदि वास्तव में किताबें भी ज्वलनशील पदार्थों के अन्तर्गत आती हैं तब उन्हें बाकायदा घोषणा करनी चाहिए, क्योंकि ऐसी भूल आम होती है। पुस्तकों के स्टाल भी प्लेटफार्मों पर हैं। यदि ऐसा नहीं है तो उस गेट कीपर के मामले की जाँच करनी चाहिए।

— चिरंजीलाल पाराशर,
गाजियाबाद

('नवभारत टाइम्स' से)

सर्वेक्षण

एक सर्वेक्षण द्वारा पता लगा है कि जापान में सात करोड़ से अधिक व्यक्ति स्वाध्याय में रुचि रखते हैं। पुस्तकें पढ़ने में इतनी अधिक रुचि पहले कभी नहीं देखी गई। विश्वकोष जैसे कीमती ग्रन्थों को ही ले लें। पाँच-छः साल पहले प्रकाशक विश्वकोष छापते घबराते थे। परन्तु इस समय १७ विश्वकोष पुस्तक-विक्रेताओं के पास हैं और पाठक यह सलाह लेने आते हैं कि कौन-सा विश्व-कोष उनके लिए अधिक उपयोगी होगा। विक्रेताओं के अनुसार एक दिन ऐसा आनेवाला है जब प्रत्येक जापानी गृहस्थ के पास एक बालकों के लिए और एक वयस्कों के लिए अलग-अलग विश्वकोष होगा। सर्वेक्षण के अनुसार अगस्त १९६७ में १४२० नई पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं और १६१६ पुनर्प्रकाशित पुस्तकें विक्रेताओं के पास आईं। इस प्रकार विक्रेताओं के पास इस महीने में १ करोड़ ६० लाख पुस्तकें पहुँचीं। इसी महीने १३४८ मासिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई जिनका सर्कुलेशन ८० लाख २४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ार था। जापान में विकसित यूरोपीय देशों की भाँति 'ग्रामोफोन पुस्तकें' भी तैयार होती हैं। अगस्त में ३२ 'वाक्-पुस्तकें' प्रकाशित हुई थीं, जिनकी कुल तादाद ६ लाख ६० हज़ार थी।

'परिवार नियोजन' लेखकों का ?

आज हिन्दी साहित्य में कहानी, कविता, उपन्यास आदि विधाओं में नये-नये प्रयोग हो रहे हैं। कहानी तथा कविता के क्षेत्र में तो नये-नये ऊटपटाँग शिल्पगत प्रयोगों की भरमार है। हिन्दी कहानी तथा कविता ने पिछले कुछ वर्षों से एक 'नये' विशेषण के रूप में जो करवट ली है, उससे हिन्दी साहित्य के रंगमंच पर उच्च कोटि के मँजे साहित्यकार एकाध ही हुए हैं, लेकिन सैकड़ों प्रतिभाहीन 'विभूतियाँ' दंभ की भावना लेकर 'अवतीर्ण' ज़रूर हुई हैं। सच पूछा जाए तो कहानी और कविता के इस घटा-टोप माहौल में सबसे अधिक नुकसान सच्ची प्रतिभाओं का ही हुआ है। सस्ते वनस्पति घी को इन प्रतिभाओं के कारण आज शुद्ध घी की मेधाओं का चमत्कार तो विगत युग की कहानी मात्र बनकर रह गया है।

इन स्वयंभू लेखकों की छँटनी किये बिना हिन्दी भाषा की प्रगति का रथ किसी भी प्रकार आगे न बढ़ सकेगा। इसके लिए हिन्दी विद्वानों को साहित्य के मूल्यांकन के कठोर नियम अपनाने होंगे। निश्चित ही मूल्यांकन के इस कठोर 'परिवार नियोजन' के बिना हिन्दी साहित्य में बढ़ती हुई पुंसत्वहीन प्रतिभाओं की जनसंख्या को नहीं रोका जा सकता, नहीं तो ये प्रमादी हिन्दी भाषा की लुटिया डुबाकर ही छोड़ेंगे।

—विष्णुचन्द्र पाठक, जयपुर

सरकारी प्रकाशन

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों के सम्बन्ध में समाचारपत्रों में छपने वाले विज्ञापनों के अनुसार मैं प्रायः हिन्दी-मराठी के प्रकाशन उनका अग्रिम मूल्य भेजकर मँगवाता रहता हूँ। किन्तु उन प्रकाशनों को प्राप्त करना बड़ा कठिन है। उनके लिए सम्बन्धित अधिकारियों को कई बार पत्र भेजकर याद दिलानी पड़ती है।

सरकारी प्रकाशन व्यवसाय एक घाटे का उद्योग है। यह तथ्य आडिट रिपोर्ट के द्वारा कई बार स्पष्ट रूप से सामने आ चुका है। इसका मुख्य कारण है प्रकाशनों के ग्राहकों के प्रति विक्रय विभाग से सम्बन्धित अधिकारियों की लापरवाही और जब लापरवाही की कर्तव्य-विमुखता के कारण ये प्रकाशन दीमक के शिकार होने लगते हैं तब उन्हें रियायती मूल्य पर बेचना पड़ता है।

मैंने गत जनवरी मास में 'आजकल' का चन्दा मनी-आर्डर से भेज दिया था और पत्र के व्यवस्थापक को लिख दिया था कि मुझे जनवरी से ग्राहक बनाकर अंक भेजना शुरू कर दें। लेकिन अंक की अब तक प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

—यशवंतनारायण मोघे, एम० ए०,
ग्वालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नेशनल' के नये प्रकाशन—अगस्त

आस्था के चरण

डॉ० नगेन्द्र

१०१ समीक्षात्मक निबन्धों का महत्त्वपूर्ण संग्रह।

दो आँखों वाले चेहरे

सोमावीरा

सुप्रसिद्ध लेखिका की चुनी हुई कहानियाँ।

रानी लक्ष्मीबाई

श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पर प्रथम प्रामाणिक पुस्तक।

कर्तव्य

शान्ताकुमार

सेमुअल समाईलस की विश्वप्रसिद्ध पुस्तक 'ड्यूटी' का सरल हिन्दी भाषानुवाद।

अवमूल्यन

अमरनाथ अग्रवाल, कुन्दनलाल

हिन्दी में प्रथम बार अपने विषय पर अनूठी पुस्तक।

राष्ट्रीय गौरव के चिह्न

हरीकृष्ण देवसरे

राष्ट्र-चिह्न, राष्ट्र-ध्वज, राष्ट्र-गीत, राष्ट्रीय पंचांग, राष्ट्र-पक्षी और राष्ट्र-पुष्प की रोचक कहानियाँ।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध और समर्थन

१६२६ के दिसम्बर में लन्दन के पुस्तक-प्रकाशकों और विक्रेताओं की जो बैठक हुई थी उसमें व्यवसाय का सुचारु रूप से संचालन करने के बारे में कुछ निश्चय किये गये थे। इसमें सबसे मुख्य बात यह थी कि कोई भी विक्रेता मुद्रित से कम कीमत पर पुस्तकें न बेचेगा और यदि वह ऐसा करेगा ही तो प्रकाशक तथा थोक-विक्रेता उसे आगे पुस्तकें न देंगे।

कोई भी व्यवसाय तभी ठीक ढंग से चल सकता है जब कि उसमें लगे लोग व्यावसायिक ईमानदारी का परिचय दें और किन्हीं निश्चित सिद्धान्तों तथा नियमों का पालन करें। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उक्त व्यवसाय पनप नहीं सकता। आपस में ही लोग कट मरेंगे और उसकी चाहे समाप्ति न हो जाए लेकिन वह बढ़ न सकेगा।

लन्दन के पुस्तक व्यवसाय में भी उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कुछ ऐसे तत्त्व प्रविष्ट हो गये थे जो उसके विकास में बाधक सिद्ध हो रहे थे। इनमें सबसे बड़ी बात थी निर्धारित से कम दाम पर पुस्तकों को बेचना। इसे 'अंडर सेलिंग' कहते हैं। होता यह था कि प्रकाशक निश्चित दाम पर हर खरीदार (पुस्तक-विक्रेता) को पुस्तकें देते थे। लेकिन ये विक्रेता अपनी-अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए उसे सस्ते भावों पर बेच देते थे। नतीजा यह होता था कि प्रकाशक से यदि १०) की पुस्तक ८) में मिली तो उसे दुकानदार १०) में न बेचकर खर्च और बहुत मामूली मुनाफा रखकर १०) से नीचे किसी भी कीमत पर बेचा करते थे। इसका फल यह होता था कि कहीं वही पुस्तक ८.५० पर मिल रही है तो कहीं १०) पर या इसके बीच में किसी भी कीमत पर। यह स्थिति निस्सन्देह व्यावसायिक दृष्टि से असह्य थी। अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए कम कीमत पर पुस्तकें बेचने का जो धन्धा कुछ दुकानदारों ने चला रखा था उससे उन लोगों को नुकसान उठाना पड़ रहा था जो नियमपूर्वक और ईमानदारी के साथ काम करना चाहते थे। अतः इस प्रवृत्ति का विरोध होना स्वाभाविक था।

इसे लेकर पुस्तक-प्रकाशकों और विक्रेताओं की बैठकें १६२६ के बाद बराबर ही होती रहीं जिनमें ऐसी बातों की निन्दा की जाए और उसे रोकने का प्रयास किया जाए। १८४८ में लन्दन की पुस्तक-विक्रेता समिति ने इसके लिए नये सिरे से प्रयास किया और कुछ नये नियम बनाकर उन्हें लागू करना चाहा। इसके बाद ही चार प्रमुख प्रकाशक और थोक विक्रेता—लाँगमैन एण्ड कम्पनी सिम्पकिन, मार्शल एण्ड कम्पनी, ह्विटमैन एण्ड कम्पनी, तथा हेमिल्टन, एडम्स एण्ड कम्पनी ने विकर्स एण्ड बुश नामक पुस्तक-विक्रेता फर्म को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि 'अंडर सेलिंग' का धन्धा बन्द कर फर्म को ईमानदारी के साथ व्यवसाय चलाना चाहिए।

लेकिन प्रतीत होता है कुछ काम हुआ नहीं, इसलिए १८५० में फिर पुस्तक-विक्रेताओं की बैठक हुई और १८२६ के बाद से समय-समय पर जो व्यावसायिक नियम विफलतापूर्वक लागू किये जाते रहे उन्हें फिर से लागू करने का प्रयत्न किया।

पुस्तक व्यवसायी संघ के अध्यक्ष लाँगमैन ने १८५२ में बताया था कि "संघ की बैठकों या कार्रवाइयों का उद्देश्य इतना ही है कि ऐसी समान दर निश्चित की जाए जिस पर पुस्तकों की बिक्री हो जिसमें फुटकल बिक्री में जो धाँधली मची है और जो अनुचित प्रतिद्वन्द्विता चल रही है वह समाप्त की जा सके।"

यह तो नहीं कहा जा सकता कि कितने सदस्यों ने संघ की घोषणा पर हस्ताक्षर किए (यह संख्या कभी बतायी ही नहीं गयी), किन्तु यह जरूर है कि कुछ थोड़े-से व्यवसायी ही इस विषय में संघ का किसी प्रकार का अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार-क्षेत्र मानने से इनकार करते रहे। आगे चलकर कुछ तो झुक गये। जो नहीं झुके वे भी खुल्लमखुल्ला संघ के विरोध में खड़े नहीं रह सके या ऐसा कहिए कि इस प्रकार का विरोध नहीं कर सके। एक ही फर्म थी (विकर्स एण्ड बुश) जो डटी रही और जिसने किसी भी कीमत पर संघ की बात न मानी। इसकी कुछ ऐसे लोग सहायता भी करते रहे जो दिखावे के लिए संघ के साथ थे।

अन्त में इस प्रश्न को लेकर उभय पक्ष में गहरा विवाद छिड़ गया और मामला पंच निर्णय के लिए लार्ड कैम्पबेल की अध्यक्षता में गठित समिति के ज़िम्मे किया गया। उसने अपने निर्णय में संघ द्वारा जारी नियमों की आलोचना यह कहकर की कि ये "हानिकारक, परेशान करने वाले तथा स्वतन्त्र व्यवसाय के सिद्धान्त के साथ असंगत ठहरते हैं। अतः इन्हें रद्द कर दिया जाना चाहिए।"

इसका परिणाम यह हुआ कि १८५२ के मध्य तक पुस्तकों की बिक्री से सम्बन्धित सारे प्रतिबन्ध हटा लिये गये तथा आगे के पचास बरसों के लिए पुस्तक-प्रकाशन और विक्रय-सम्बन्धी मुक्त व्यापार के युग का आरम्भ हुआ।

लार्ड कैम्पबेल के निर्णय में एक विशेष बात यह कही गयी थी कि संघ के "बहुत-से सदस्य ऐसे हैं जो हैं तो ऊपर से उसके द्वारा जारी किये गये नियमों के पक्ष में, किन्तु भीतर से वे प्रतिबन्धों को पसन्द नहीं करते। कितने ही पुस्तक-विक्रेताओं ने हमें गुप्त रूप से सूचना दी है कि यदि बन्धनों से मुक्त कर दिये जाएँ तो हम प्रसन्न ही होंगे।"

इसका मतलब यह हुआ कि निर्धारित से कम कीमत पर पुस्तकें बेचने वालों की संख्या अवश्य उतनी रही होगी जितनी का अनुमान विकर्स एण्ड बुश ने किया था। लेकिन तब भी लन्दन के बहुत थोड़े पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों ने संघ में रहने से इनकार किया या आगे चलकर उसका त्याग किया। उस समय यह स्पष्ट न हो पाया कि कौन-कौनसे लोग संघ द्वारा जारी नियमों को रद्द किये जाने के पक्ष में हैं। कैम्पबेल अभिकरण के समक्ष जो गवाहियाँ हुईं उनमें कहा गया था कि नियमों के विरोधी केवल 'तीन ही व्यक्ति' हैं जो फुटकल बिक्री-सम्बन्धी सारी व्यवस्था के मार्ग के बाधक हैं। परन्तु एक अन्य अवसर पर बताया गया था कि नौ फर्मों के मालिक संघ के नियमों के विरोधी हैं। इनमें से छह ही ऐसे थे जो बार-बार और ज़ोरदार तरीके से नियमों के स्थगन के लिए आन्दोलन किया करते थे। इन छह में से तीन विकर्स चैपमैन और टेग की फुटकल बिक्री की बड़ी और चलती दुकानें थीं तथा शेष तीन मुख्यतः प्रकाशक और थोक विक्रेता थे।

कहते हैं कि विकर्स का व्यापार उस समय इसलिए अच्छी तरह चल निकला कि उक्त फर्म ने बहुत ही ज़ोरदार तरीके से तब नियमों के विरुद्ध काम किया जब कि अन्य व्यवसायी खुल्लमखुल्ला संघ के विरुद्ध जाने की हिम्मत न कर पाते थे।

संघ के एक सदस्य जान मरे ने उस समय 'टाइम्स' में एक पत्र लिखकर सूचित किया था कि यह कहना सर्वथा गलत है कि सस्ती पुस्तकें बेचने वाले पन्द्रह या दस प्रतिशत मुनाफा लेकर ही पुस्तकें बेचने को तैयार हैं। सच बात यह है कि लोग इस धन्धे में नये-नये आये हैं जो इस प्रकार के हथकंडे अपनाकर पुराने और प्रतिष्ठित रोज़गारियों के हाथ से कारबार छीन लेना चाहते हैं।

सम्भव है मरे का संकेत चैपमैन की ओर रहा हो, क्योंकि मरे को इस व्यवसाय में आये दस बरस भी नहीं हुए थे। जहाँ तक औरों का प्रश्न है विलियम टेग को छोड़कर किसी भी 'अंडर सेलर' फर्म का जीवन-काल तीस वर्ष से अधिक का न था।

पुराने संस्थानों से मरे का क्या मतलब था यह तो समझ में नहीं आता, किन्तु यदि ऐसा मान लिया जाए कि पीढी-दो पीढ़ी पहले से यह व्यवसाय चलाने वाले इस श्रेणी में आते हों तो अवश्य ही सस्ती पुस्तकें बेचने वालों में विलियम टेग ही ऐसे थे जिनका परिवार इस धन्धे में पहले से लगा था। और लोग तो स्वयं ही पेशे में आये थे और वे मन्दी के बाद यह काम करने लगे थे।

प्रतिष्ठित पुराने संस्थानों और नये कारबारियों में एक अन्तर यह भी था कि १८२५-२६ के व्यावसायिक संकट को झेलकर जो बच रहे उन्होंने अपने को स्थायी और सुदृढ़ आधार पर स्थित व्यवसायी समझा और यह माना कि जो लोग इसके बाद इस धन्धे में प्रविष्ट हुए हैं उनको सुविधाओं का उपभोग करने का अधिकार पुरानी फर्मों की अपेक्षा

(शेष पृष्ठ २५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

पर आँखें नहीं भरीं : कवि डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन', द्वितीय संस्करण १९६७, प्रकाशक—आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६, मूल्य ४.०० रु०, पृष्ठ संख्या १२२ (डिमाई) ।

'पर आँखें नहीं भरीं' सुमन की कविताओं के इस संकलन के श्रोता कहेंगे 'तृप्त नहीं हुए श्रवण'। रसभरे ओज-पूर्ण गीतों के गायक के रूप में 'सुमन' गुलाब के पुष्प का स्मरण करा देते हैं जिसमें रूप भी है, रस भी, गंध भी है और काल से जूझने के लिए काँटे भी हैं। इन कविताओं में रूपचित्र, ध्वनिचित्र, स्मृतिचित्र सभी अपनी कोमलता-सहित हैं। कवि के कण्ठ उन चित्रों को जब सजीव करते हैं तो श्रोता मुग्ध होकर दर्शन करता है और पगध्वनि भी सुनता है। 'नई कविता' के विपरीत 'सुमन' की मान्यता है—"काव्य में मैं दृष्टिहीनता, दिशाहीनता, कुंठा, आवर्जना, आदि की गर्वोक्ति का कभी कायल नहीं रहा।"

× × ×

बेगम (उपन्यास) : लेखक—ताराशंकर वन्द्योपाध्याय, अनुवादक—हंसकुमार तिवारी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-६, मूल्य ५.०० रु०, पृष्ठ संख्या २८४ (क्राउन)।

बंगला के 'गन्ना बेगम' उपन्यास का यह हिन्दी अनुवाद शेर-ओ-शायरी की शौकीन खूबसूरत व मासूम बेगम की कहानी है, कहीं-कहीं इतनी करुण कि नेत्र सजल हो उठते हैं। दिल्ली सल्तनत के उजड़ते हुए दिनों का मार्मिक चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है। लाख रुपये के ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत ताराबाबू की यह कृति 'गण देवता' के समान ही स्मरणीय है।

× ×

स्वप्न और सत्य (उपन्यास) : लेखक—बालशौरि रेड्डी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली-६, मूल्य ७.०० रु०, पृष्ठ संख्या ३४८ (क्राउन)।

श्री रेड्डी अहिन्दीभाषी क्षेत्र के होकर भी हिन्दी में लिखते आ रहे हैं, यह उनका छठा उपन्यास है। यथार्थ पर आधारित यह आदर्शोन्मुख उपन्यास पुरुष एवं नारी-मन के सूक्ष्म गह्वरों में प्रवेश करता है, कहीं-कहीं तो कवि की कल्पना-सा प्रतीत होता है, अत्यन्त रोचक यह उपन्यास प्रत्येक युवक के लिए पठनीय है।

× × ×

मनोमती (उपन्यास) : लेखक—रजनीकान्त बर्दलै, अनुवादक—लोकनाथ भरोली, प्रथम प्रकाशन १९६७, प्रकाशक—ज्ञानपीठ प्रा० लि०, पटना-४, मूल्य ५.०० रु०, पृष्ठ संख्या १९६ (क्राउन)।

असमिया भाषा के प्रसिद्ध उपन्यास के हिन्दी अनुवाद 'मनोमती' में अहोम वंश के ह्रास, असम पर बर्मा के आक्रमण और तत्कालीन उथल-पुथल एवं संघर्ष की पृष्ठभूमि में एक रोमांस कथा का चित्रण अत्यन्त कोमलता एवं समीपता से हुआ है। उपन्यास की नायिका पदुमी, अपने देश-प्रेम, त्याग एवं बलिदान की प्रतीक है। युवा पीढ़ी में कर्त्तव्य-भावना जागृत करने में यह उपन्यास अत्यन्त सफल होगा।

× × ×

भारतीय काव्यशास्त्र : सम्पादक—डॉ० उदयभानु सिंह, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—सामयिक प्रकाशन, दिल्ली-६, मूल्य ८.०० रु०, पृष्ठ संख्या २६४ (डिमाई)।

प्रस्तुत ग्रंथ में भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्तों पर विषय के विशिष्ट अध्येताओं के संक्षिप्त एवं सारगर्भित लेख संगृहीत हैं। इस संकलन में डॉ० नगेन्द्र के रस-सिद्धान्त की समीक्षा तो है किन्तु उनके पक्ष का अभाव है। उनका भी एक लेख इस संकलन में होना चाहिए था। साहित्य-शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। संस्कृत साहित्यशास्त्र का विकास हिन्दी साहित्य में किस प्रकार हुआ इसका विविधपक्षीय अध्ययन इस कृति की विशिष्टता है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेपल : लेखक-प्रभाकर माचवे, प्रथम प्रकाशन १९६७, प्रकाशक—भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, मूल्य ३.००, पृष्ठ संख्या ७६ (डिमाई)।

'मेपल' माचवेजी की 'घर के बुद्धू घर को लौटे, पर होकर कुछ स्याने जरूर' के पूर्व विदेश प्रवास में लिखी गई ६४ कविताओं का संग्रह है। कवि की भाषा में 'मेपल' के छाया-रस-रंग के स्वभावानुसार इस संकलन की कविताएँ छायावादी, रसवादी और प्रगतिवादी तीनों ही हैं। कवि के 'लोफर' और 'सूफी', सर्वकामी और निष्काम सभी रूप हैं। कविता भी है, तुकबन्दी भी है—शिकागो दागो रागो भागो, रिमार्क शार्क डार्क न्यूयार्क हार्क जैसी तुकें भी हैं, देसी भी हैं विलायती भी। कवि के विदेश-प्रवास की यह स्मृति कवि के लिए अवश्य 'मेपल' है काव्य-रसिक के लिए चिन्तन कम मनोरंजन अधिक।

× × ×

सार्वजनिक वित्त : लेखक—पी० सी० जौहरी, प्रकाशक–दि यू० के० पब्लिकेशन्स, मुजफ्फरनगर, प्रथम प्रकाशन १९६८, पृष्ठ संख्या ३२०, मूल्य १०.०० (डिमाई)।

उपरोक्त पुस्तक बी० ए० के विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तक के रूप में लिखी गई है। राजस्व—भारतीय राजस्व से सम्बद्ध सभी विषयों पर सामग्री दी गई है। अंग्रेज़ी के उद्धरण इतने अधिक हैं कि पुस्तक अपना हिन्दी का स्वरूप स्थिर नहीं कर सकी है। कालिदास का उद्धरण और नाम तक अंग्रेज़ी में दिया गया है। फिर भी पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

× × ×

माध्यमिक स्कूलों में विज्ञान शिक्षा की पद्धतियाँ : लेखक—एच० सेमुअर फाउलर, प्रकाशक—आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६, पृष्ठ संख्या १४८, मूल्य ३.०० (डिमाई)।

अधिगम का मनोविज्ञान : लेखक—राल्फ गैरी, प्रकाशक तथा अन्य विवरण उपर्युक्त।

प्राथमिक स्कूल की अध्यापन विधियाँ : लेखक रूबी एच० वार्नर, प्रकाशक तथा अन्य विवरण उपर्युक्त।

अध्यापन वृत्ति : लेखक—टी० एम० सिनेट, प्रकाशक तथा अन्य विवरण उपर्युक्त।

उपर्युक्त चारों पुस्तकें प्रसिद्ध अमरीकी पुस्तकों के अनुवाद हैं। सभी पुस्तकें अध्यापकों के लिए उपयोगी हैं। यदि इन पुस्तकों के आरम्भ में भारतीय शिक्षा पद्धति पर भी एक भूमिका लिख दी जाती तो पाठक को भारत के सन्दर्भ में अमरीकी शिक्षण-पद्धति को अनुकूलित करने का अवसर मिलता। फिर भी अमरीकी शिक्षण पद्धति के अध्ययन की दृष्टि से चारों पुस्तकें उपयोगी तथा संग्रहणीय हैं।

× × ×

भ्रष्टाचार : (उपन्यास) लेखक सम्पतलाल पुरोहित, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—युगछाया प्रकाशन, दिल्ली-६, पृष्ठ संख्या १५०, मूल्य ४.०० (क्राउन)।

जैसा कि नाम से ही प्रकट है सारी कथा भ्रष्टाचार के दृश्य प्रस्तुत करती है। रमानाथ और हरिसिंह दो पात्र इस भ्रष्टाचार से जूझते हैं और अन्त में एक पागल करार दिया जाता है और दूसरा आत्महत्या के आरोप में पकड़ लिया जाता है। लेखक ने इस भ्रष्टाचार से मुक्ति का दिशानिर्देश दिया होता तो उपन्यास अधिक प्रभावक होता।

× × ×

अतीत का अभिनवालोक : लेखक श्री मायाप्रसाद त्रिपाठी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, मूल्य ३.००, पृष्ठ संख्या १४०, (क्राउन)।

उपर्युक्त पुस्तक में लेखक ने संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में विद्यमान वैज्ञानिक तथ्यों की छानबीन की है और आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से उनकी तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत की है। पुस्तक मौलिक तथा विचारोत्तेजक है। छात्रों के लिए पठनीय है।

× × ×

अन्तरिक्ष की ओर : लेखक—महावीरप्रसाद अग्रवाल, वितरक—विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम प्रकाशन १९६८, पृष्ठ संख्या १५२ (डिमाई)। मूल्य अजिल्द ६.०० रुपये, सजिल्द ८.०० रुपये।

अन्तरिक्ष-यात्रा जैसे आधुनिकतम और महत्त्वपूर्ण विषय के विभिन्न पहलुओं का वैज्ञानिक विवेचन करने वाली यह पुस्तक अपने ढंग की बेजोड़ है। इस विषय पर इस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की यह प्रथम मौलिक कृति है।

पुस्तक में दस अध्याय हैं जिनके विषय इस प्रकार हैं—ब्रह्माण्ड, राकेट का संक्षिप्त इतिहास, राकेट-विज्ञान, गुरुत्वाकर्षण बल, मानवरहित अन्तरिक्ष, वाहनों द्वारा अन्तरिक्ष की खोज, मानव की अन्तरिक्ष उड़ान और अन्तरिक्ष स्टेशन, खतरे और कठिनाइयाँ, अन्तरिक्ष यात्री और उसका प्रशिक्षण, अन्तरिक्ष की गहराइयों में तथा भारत में अन्तरिक्ष अनुसन्धान।

पुस्तक में ३१ रेखाचित्र तथा १५ हाफटोन चित्र हैं। पुस्तक में जो अदृश्य सूचनाएँ तथा विषय-सामग्री है, वह अन्यत्र कहीं एक साथ उपलब्ध नहीं है। पुस्तक में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी वैज्ञानिक शब्दों का यथासम्भव प्रयोग किया गया है। अन्त में हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेज़ी पर्याय भी दिये गये हैं। विज्ञान के अध्यापकों और छात्रों के लिए तो यह पुस्तक पठनीय है ही, विज्ञान में रुचि रखने वाले साधारण जन भी इसे उतना ही रोचक और उपयोगी पाएँगे। यह पुस्तक सभी स्कूलों और पुस्तकालयों में रखी जाने योग्य है। ऐसी ही पुस्तकों से राष्ट्रभाषा हिन्दी का विज्ञान साहित्य समृद्ध हो सकता है। पुस्तक का गेट अप, कागज़, छपाई आदि भी प्रशंसनीय है।

× × ×

हिन्दी की वर्तनी तथा शब्द-विश्लेषण : लेखक—आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, प्रथम प्रकाशन १९६८, प्रकाशक—राजधानी ग्रंथागार, नई दिल्ली-१४, मूल्य ३.००, पृष्ठ संख्या १३६ (क्राउन)।

वाजपेयीजी हिन्दी के कतिपय उन विद्वानों में से हैं जिन्होंने हिन्दी के परिष्कार एवं भाषा को व्याकरण-सम्मत स्वरूप प्रदान करने में अपना जीवन लगा दिया। प्रस्तुत पुस्तक वर्तनी में एकरूपता लाने में सहायक होगी। अत्यन्त तर्कपूर्ण ढंग से लेखक ने स्थापनाएँ की हैं। आपकी शैली भी व्यक्तित्व के समान थोड़ी उग्र है किन्तु प्रभावशाली है। प्रत्येक प्रकाशक, लेखक, प्रूफ़ संशोधक, मुद्रक तथा हिन्दी के विद्यार्थी को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

(पृष्ट २२ का शेष)

कम ही है।

संघ के सदस्यों में मरे को छोड़कर शेष सभी प्रकाशन और फुटकल बिक्री दोनों का काम करते थे। फुटकल बिक्री की ये दुकानें ही वस्तुतः झगड़े की जड़ थीं। संघ के विरोधियों का कहना था कि प्रकाशक केवल प्रकाशन और थोक विक्रय का कार्य करें, जनता के हाथ पुस्तकें वे सीधे-सीधे न बेचें।

प्रकाशकों द्वारा फुटकल बिक्री का विरोध तो था ही, थोक बिक्री का उनका ढंग भी ऐसा था जिसे फुटकल विक्रेताओं ने कभी पसन्द नहीं किया। इसके अलावा लन्दन के बाहर के प्रकाशकों की एजेन्सी लेकर पुस्तक व्यवसाय पर वे एकाधिकार स्थापित कर लेते थे। इससे फुटकल विक्रेताओं को [illegible] थे, फलतः उनकी हानि तो होती ही थी।

'अंडरसेलर' व्यवसायियों की मुख्य शिकायतें संघ के आठ प्रमुख सदस्यों से थीं जो उनकी दृष्टि में 'व्यापार की समृद्धि के मार्ग में सबसे बड़े रोड़े थे।' लेकिन एक बात जान लेने की है कि संघ के अधिकारियों या प्रमुख सदस्यों के 'उत्पीड़न' के प्रश्न पर चाहे यह वर्ग एक हो गया हो अन्य समस्याएँ मिलकर हल करने की उनकी कोई प्रवृत्ति नहीं दिखायी पड़ी। हाँ, इस एक छोटे-से व्यापारिक विवाद को उन्होंने ज़रूर बहुत बड़े सार्वजनिक विवाद का रूप दे दिया। जो भी हो लार्ड कैम्पबेल ने जो निर्णय दिया वह 'अंडरसेलर' व्यवसायियों के ही अनुकूल उस समय गया क्योंकि बहुत-से लेखक भी उनके साथ थे।

प्रस्तुतकर्ता : पुरुषोत्तमदास मोदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक प्रकाशन द्वारा इस महीने के अन्त तक प्रकाशित ये महत्त्वपूर्ण प्रकाशन जो हर क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होंगे।

A DICTIONARY OF OFFICIAL TERMS (English to Hindi)

कार्यालय कोश : श्री गोपीनाथ श्रीवास्तव

प्रस्तुत कोश के पहले भाग में विभिन्न प्रकरणों में प्रयुक्त होने वाले एक ही अंग्रेज़ी शब्द के उपयुक्त विभिन्न पर्याय दिये गये हैं, अंग्रेज़ी वाक्यांशों के हिन्दी-वाक्यांश भी दिये गये हैं। हिन्दी-पर्यायों का चयन इस प्रकार किया गया है कि वे सामान्यतया सभी प्रदेशों को ग्राह्य सिद्ध हों, इससे कोश की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। दूसरे भाग में अरबी तथा फारसी के अदालती शब्दों के हिन्दी-पर्याय भी दिये गये हैं। डिमाई आकार, आकर्षक कवर, पृष्ठ संख्या लगभग ३५०। मूल्य लगभग १० रु० मात्र।

समाज मनोविज्ञान : कृष्णदत्त द्विवेदी, एम० ए०

समाज मनोविज्ञान की प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है। प्रत्येक पाठ के अंत में अनेक विश्वविद्यालयों के विभिन्न प्रश्नपत्रों को भी सुलभ ढंग से दिया गया है। इस प्रकार जहाँ एक ओर यह पुस्तक शुद्ध रूप से एम० ए० तथा बी० ए० के छात्रों के लिए पाठ्य-पुस्तक का कार्य करती है, वहीं दूसरी ओर प्रत्येक पाठ के अन्त में प्रश्नावली दिये जाने से प्रश्नोत्तर का भी कार्य पूर्ण करती है। पुस्तक की शैली इतनी रोचक है कि विद्यार्थियों को इससे हर प्रकार से लाभ पहुँचेगा। सुन्दर छपाई, आकर्षक आवरण, डिमाई आकार। मूल्य मात्र : ६.०० रु०।

गुड़ियों का खेल : श्री समरेश बसु की कलम से लिखा हुआ यह बंगला उपन्यास पहले ही बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। अपनी पढ़ी-लिखी पत्नी सुप्रीति तथा अपने छोटे बच्चे मिठू को छोड़कर निखिलेश ने एक अन्धी लड़की मालती से दूसरा विवाह क्यों किया—सुप्रीति को घुट-घुटकर मरने के लिए मजबूर किसने किया, और अन्त में अपने बच्चे मिठू को उसे मालती के हाथों में सौंपने के लिए विवश क्यों होना पड़ा? इन सबका उत्तर यह उपन्यास पढ़कर ही आपको मिल पाएगा। उपन्यास इतने रोचक ढंग से लिखा गया है कि शुरू करने के बाद आप इसे समाप्त करके ही छोड़ पाएँगे। अनुवाद किया है श्री प्रबोधकुमार मजुमदार ने। मूल्य : ५.०० मात्र।

पूर्व प्रकाशित

छायावाद : सम्पादक डॉ० उदयभानु सिंह। डिमाई आकार, पृष्ठ २२५, मूल्य ६.५०।
भारतीय काव्यशास्त्र : सम्पादक डॉ० उदयभानु सिंह। डि० आकार; पृष्ठ २८०, मूल्य ८.००।
महाकवि विद्यापति : सं० स्वर्गीय डॉ० कृष्णनन्दन पीयूष। पीयूषजी का अन्तिम समीक्षात्मक संकलन। डिमाई आकार, पृष्ठ २७५, मूल्य ९.००।
नन्ददास : लेखक श्री रमेशकुमार खट्टर। डिमाई आकार; पृ० ४.००; मूल्य १५.००।
कोयले का टुकड़ा : ले० श्री मु० वरदराजन। तमिल से अनूदित उपन्यास। मूल्य ५.५०।

सितम्बर १९६८ में प्रकाशनीय

कामायनी का विवेचनात्मक अध्ययन : सम्पादक डॉ० उदयभानु सिंह।
साहित्य इतिहास और आलोचना : लेखक डॉ० विजयकुमार शुक्ल।
प्रेमचन्द : लेखक डॉ० प्रताप नारायण टण्डन।
अनमोल गाथाएँ, अमर गाथाएँ, साहसी गाथाएँ, किशोर गाथाएँ, शिक्षाप्रद गाथाएँ, मनोहर गाथाएँ।

इन सभी पुस्तकों पर पुस्तक-विक्रेताओं को भरपूर कमीशन की छूट दी जाती है।

सामयिक प्रकाशन

३५४३, जटवाड़ा, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

पाण्डेय, डॉ० श्याम मनोहर, सूफी काव्य विमर्श, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ६.००
सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १०.००
बाली, तारकनाथ, दिनकर और कुरुक्षेत्र, ,, ,, ,, २.५०
एम० ए० राकेश, कृष्णमास वध : पृथ्वीराज रासो ,, ,, ,, २.५०
'इन्द्र', देवेन्द्र शर्मा, बिहारी सतसई ,, ,, ,, ५.००
बाली, तारकनाथ, कबीर साखी सार ,, ,, ,, ३.५०
शर्मा, श्री राजनाथ / मित्तल, श्री एस० सी०, उत्तमा दिग्दर्शन गाइड, भाग १ ,, ,, ,, १२.००
पाण्डेय, डॉ० शम्भूनाथ, रस अलंकार पिंगल ,, ,, ,, २.५०
पाण्डेय, डॉ० शम्भूनाथ, काव्यशास्त्र ,, ,, ,, ३.००
तिवारी, डॉ० रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी १६.००
शर्मा, प्रो० कृष्णदेव, अशोक साहित्य भूषण गाइड, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली १२.००
प्रो० शर्मा और कपूर, गोदान समीक्षा ,, ,, ,, ३.००
शर्मा, राजनाथ, साहित्यिक निबन्ध, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ९.००
राजपेयी, किशोरीदास, हिन्दी वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण, राजधानी ग्रन्थागार, नई दिल्ली ३.००
चतुर्वेदी, डॉ० ब्रजमोहन, महिम भट्ट, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली २५.००
खण्डेलवाल, डॉ० रामेश्वरलाल, जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ३५.००
बोरा, राजमल, भूषण और उनका साहित्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १५.००
के० रामनाथन, डॉ०, हिन्दी और तेलुगु भक्ति साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १५.००
सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद, कामायनी में काव्य, संस्कृति, दर्शन ,, ,, ,, १०.००

साहित्येतर

नोव, एलेक, सोवियत अर्थ व्यवस्था (अर्थशास्त्र), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी १२.५०
हरि, बी० पी० और पाठक, पी० डी०, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १०.००
सिंह, एच० एन०, भूगोल शिक्षण, ,, ,, ,, ५.००
शेरी, जी० पी०, गृह विज्ञान शिक्षण ,, ,, ,, ६.००
माथुर, डॉ० एस० एस०, सामान्य मनोविज्ञान ,, ,, ,, ७.००
गोयलीय, अयोध्याप्रसाद, मुगल बादशाहों की कहानी—उनकी जबानी (इतिहास), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ६.००
भारद्वाज, दिनेशचन्द्र, नवीन शिक्षा सिद्धान्त शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३.००
चौधरी, सुमतीशचन्द्र, सामान्य विज्ञान शिक्षण ,, ,, ,, १.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुबे, प्रो० सत्यनारायण, **शिल्प शिक्षण**	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा	५.००
सक्सेना, उदयवीर, **बी० टी० सी० हिन्दी भाषा शिक्षण**	,, ,, ,,	१.५०
माथुर, डॉ० एस० एस०, **शिक्षण कला**	,, ,, ,,	७.००
रस्क, आर० आर०, **महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त**	,, ,, ,,	१०.००
गांधी, सरहदी, **आत्मकथा**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२		२.००
मित्तल, एस० सी०, शर्मा, श्री राजनाथ, **मध्यमा अर्थशास्त्र गाइड**, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा		६.००
द्विवेदी, कृष्णदत्त, **समाज मनोविज्ञान**, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली		५.००
श्रीवास्तव, श्री गोपीनाथ, **कार्यालय कोश**, (अंग्रेज़ी-हिन्दी) सामयिक प्रकाशन, दिल्ली		१०.००
विराज, **आदर्श विभूतियाँ**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली		३.००
डॉ० नगेन्द्र, **तंत्रालोक से यंत्रालोक तक**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली		३.००

उपन्यास

बसु, समरेश, **गुड़ियों का खेल**, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली		५.००
कुमार, वीरेन्द्र (अनु०) **झरोखे**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली		६.००
गुरुदत्त, **वाममार्ग**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२		३.००
अमृता प्रीतम, **जलावतन**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली-३२		२.००
ए० हमीद, **डाक बँगला**	,, ,, ,,	२.००
चन्दर, **फरार**	,, ,, ,,	२.००
कर्नल रंजीत, **वह कौन था ?**	,, ,, ,,	२.००

नाटक

डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल, **सूर्यमुख**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली		३.५०

संस्कृत

आचार्य, डॉ० रामकृष्ण, **मित्र सम्प्रति**, सटीक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा		२.५०
द्विवेदी, पारसनाथ, **काव्य प्रकाश**, प्रश्नोत्तर	,, ,, ,,	२.००

ज्ञान-विज्ञान

वेद मित्र, **संसार के अनोखे पुल**, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली		४.००

हास्य-व्यंग्य

परसाई, हरिशंकर, **उल्टी-सीधी**, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली ३२		२.००
काका हाथरसी, **काका कोला**,	,, ,,	१.००

आगामी मास के प्रकाशन

आस्था के चरण, डॉ० नगेन्द्र, (निबन्ध-संग्रह)
दो आँखों वाले चेहरे, सोमावीरा, (कहानी-संग्रह)
कर्तव्य, सैमुअल समाईलस, (आत्म-विकास)
अवमूल्यन, अमरनाथ अग्रवाल : कुन्दनलाल, (अर्थशास्त्र)
रानी लक्ष्मीबाई, श्रीनिवास बाल[illegible] (जीवन-चरित्र)
राष्ट्रीय गौरव के चिह्न, डॉ० हरिकृष्ण देवसरे (बाल-साहित्य)

हिन्दी प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078047

अक्तूबर, १९६८ में

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के प्रकाशक-सदस्यों एवं सार्वजनिक प्रकाशन-संस्थाओं के प्राप्य प्रकाशनों की सम्मिलित विषयानुसार सूची, डबल डिमाई १६-पेजी आकार में, पुस्तकों के अकारादि क्रम से प्रकाशित होगी। प्रत्येक पुस्तक के बारे में निम्नलिखित सूचनाएँ रहेंगी : लेखक, सम्पादक व अनुवादक, प्रकाशन-वर्ष, मूल्य तथा प्रकाशक का नाम। सूची में सम्मिलित होने वाली प्रत्येक पुस्तक के लिए केवल ३० पैसे का शुल्क है। जो प्रकाशक अभी तक संघ के सदस्य नहीं बने हैं, उनसे प्रार्थना है कि इस प्रकार के प्रचार-प्रसार के सामूहिक प्रयत्नों में भाग लेने के लिए अविलम्ब संघ के सदस्य बनें।

इस सूची में विज्ञापन भी लिए जाएँगे : दर होगी—एक पूरा पृष्ठ : ७५ रुपये; आधे पृष्ठ के विज्ञापन का : ४० रुपये।

प्रकाशकों से प्रार्थना है कि वे अपने प्रकाशनों की विषयानुसार सूचियाँ बनाकर (दो सूचियों को काटकर कागज पर चिपकाने से भी काम चलेगा) कार्यालय को भेजें। जो पुस्तकें किसी भी सरकार या संस्था द्वारा पुरस्कृत हुई हैं, उन्हें तारांकित कर दें।

आप अपनी सूचियाँ तथा शुल्क—विज्ञापन-शुल्क के सहित—शीघ्र-से-शीघ्र कार्यालय को भिजवा दें।

सूची में निम्नलिखित विषयों के अनुसार पुस्तकों के नाम (अकारादि क्रम से) दिये जाएँगे : आलोचना व शोध-प्रबन्ध, उपन्यास, एकांकी, कहानी-संग्रह, काव्य, जीवन-चरित्र व संस्मरण, नाटक, निबन्ध, बाल-साहित्य (कहानी, कविता, एकांकी, उपन्यास, जीवन-चरित्र आदि वर्गों में), भाषा-विज्ञान, यात्रा, साहस और खोज, व्यंग्य, लोक-साहित्य, साहित्यिक इतिहास, संदर्भ ग्रंथ एवं कोश, अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य, आयुर्वेद, इतिहास, उद्योग एवं तकनीकी, कृषि, क्रीड़ा-सम्बन्धी, गणित, गांधीवाद, धर्म, दर्शन व संस्कृति, भारत-दर्शन, मनोविज्ञान, राजनीति, विश्वपरिचय, विज्ञान, समाज-शास्त्र, शिक्षा, विभिन्न साहित्य (पॉकेट बुक्स, संस्कृत साहित्य, टीकाएँ एवं हिन्दी में प्रकाशित अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य)।

इस सामूहिक प्रयत्न को सहयोग देकर
सफल कीजिए।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ

७।१६, दरियागंज, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजिस्टर्ड नं० डी० 1318

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्धन्य आलोक डॉ० नगेन्द्र
के
महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

रस सिद्धान्त	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा	२०.००
भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	१२.५०
देव और उनकी कविता	७.००
आलोचक की आस्था	७.००
रीतिकाव्य की भूमिका	५.५०
विचार और अनुभूति	४.५०
विचार और विवेचन	४.५०
विचार और विश्लेषण	६.००
अनुसन्धान और आलोचना	४.००
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४.५०
सियारामशरण गुप्त	७.५०
कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	३.००
काव्य-बिम्ब	४.००
चेतना के बिम्ब	५.००
तंत्रालोक से यंत्रालोक तक	३.००

डॉ० नगेन्द्र
का
नवीनतम बृहत् ग्रन्थ

आस्था के चरण

३० वर्षों की सर्जनात्मक साधना
का नवनीत

•

१०१ समीक्षात्मक निबन्धों का
महत्त्वपूर्ण संग्रह

•

बड़े आकार में साढ़े सात-सौ से अधिक पृष्ठ
सुमुद्रित : आकर्षक साजसज्जा

नैशनल पब्लिशिंग हाउस
२।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निमित्त अमरनाथ द्वारा नवीन प्रेस, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६ में मुद्रित एवं ७/१६, दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित। सम्पादक : पुरुषोत्तमदास मोदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar